अनिल मोहन

बबूसा

देवराज चौहान सीरीज

नया उपन्यास

बबूसा

ISBN : 978-93-80871-51-6

लेखक से बातचीत के लिए ई-मेल
anilmohan012@yahoo.co.in
Now, Join me on Facebook:
facebook.com/anilmohan012
Join my page on Facebook:
facebook.com/anilmohanofficial

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनाएं काल्पनिक हैं। किसी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इनका कोई सम्बंध नहीं है। उपन्यास में स्थान आदि का वर्णन केवल कथ्य को विश्वसनीय बनाने के लिए किया गया है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है।

•
प्रकाशक
राजा पॉकेट बुक्स
330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611410, 27612036, 27612039
•
वितरक
राजा पॉकेट बुक्स
112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां,
दिल्ली-110006
फोन : 23251092, 23251109
•
मुद्रक
राजा ऑफसेट
1/51, ललिता पार्क
लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

BABOOSA : DEVRAJ CHOUHAN SERIES
ANIL MOHAN

मूल्य : साठ रुपए

सदूर ग्रह से रानी ताशा, अपने राजा देव (देवराज चौहान) को वापस अपने ग्रह पर ले जाने के लिए पोपा (अंतरिक्ष यान) में बैठकर पृथ्वी ग्रह पर आ पहुंची थी। परन्तु राजा देव के खास सेवक 'बबूसा' को ये बात रास नहीं आ रही थी। वो जानता था कभी रानी ताशा ने सदूर ग्रह पर राजा देव के साथ जबर्दस्त धोखा किया था और राजा देव को ग्रह के बाहर फिंकवा दिया था। ऐसे में 'बबूसा' चाहता था कि राजा देव को वो वक्त याद आ जाए, जिससे कि वो रानी ताशा के असली चेहरे को ठीक से समझ सके।

बबूसा

श्रृंखला-1

अनिल मोहन

देवराज चौहान सीरीज का नया उपन्यास

देवराज चौहान सीरीज का आगामी नया उपन्यास...

बबूसा और राजा देव

अनिल मोहन के राजा पॉकेट बुक्स में उपलब्ध उपन्यास

देवराज चौहान सीरीज

- ● मिस्ड कॉल
- ● मुखबिर
- ● जुआघर
- ● सावधान हिन्दुस्तान
- ● मैं पाकिस्तानी
- ☼ डॉन जी
- ☼ शिकारी
- ☼ 100 माइल्स
- ☼ भूखा शेर
- ☼ आदमखोर
- ☼ गोला-बारूद
- ☼ निशानेबाज
- ☼ जिंदा या मुर्दा
- ☼ डैथ वारंट
- ☼ रॉबरी किंग
- ☼ खाकी से गद्दारी
- ☼ ज्वालामुखी
- ☼ जांबाज
- ☼ खूंखार
- ☼ डॉलर मामा
- ☼ हाई जैकर
- ☼ माई का लाल
- ☼ गिरोह
- ☼ भगोड़ा
- ☼ हैवान
- ☼ गुर्गा
- ☼ मुखिया
- ☼ जिन्न
- ☼ आतंक का पहाड़
- ☼ अण्डरवर्ल्ड
- ☼ गैंगवार
- ☼ डंके की चोट
- ☼ मिस्टर हीरो
- ☼ दिल्ली का दादा
- ☼ जैक पॉट
- ☼ बारूद का ढेर
- ☼ पौ बारह
- ☼ दरिंदा
- ☼ दौलत का ताज
- ☼ गनमैन
- ☼ एक रुपए की डकैती
- ☼ डकैती के बाद
- ☼ डकैती
- ☼ टक्कर
- ☼ घर का शेर
- ☼ पहरेदार

देवराज चौहान और मोना चौधरी सीरीज

- ● वांटिड अली
- ● सबसे बड़ा हमला
- ● बंधक
- ☼ पोतेबाबा
- ☼ जथूरा
- ☼ मंत्र
- ☼ सरगना
- ● गुड्डी
- ☼ मास्टर
- ☼ हमला
- ☼ जालिम

मोना चौधरी सीरीज

- ☼ खबरी
- ☼ गिरगिट
- ☼ सुरंग
- ☼ नागिन मेरे पीछे
- ☼ दौलत बुरी बला
- ☼ एक तीर दो शिकार
- ☼ तू चल मैं आई
- ☼ मोना चौधरी खतरे में
- ☼ आ बैल मुझे मार
- ☼ बुरे फंसे
- ☼ एक म्यान दो तलवारें
- ☼ जान बची लाखों पाए

अर्जुन भारद्वाज (प्राइवेट जासूस)

- ☼ हिंसा का तांडव
- ☼ खतरनाक आदमी
- ☼ गैंगस्टर
- ☼ खतरे का हथौड़ा

जुगलकिशोर सीरीज

- ☼ दस नम्बरी
- ☼ दहशत का दौर

थ्रिलर सीरीज

- ☼ जुर्म का जहाज
- ☼ सीक्रेट एजेंट

आर.डी.एक्स. सीरीज

- ☼ आर.डी.एक्स.
- ☼ डॉन का मंत्री
- ☼ गुरु का गुरु

☼ इस निशान के उपन्यास का मूल्य 50/- ● इस निशान के उपन्यास का मूल्य 60/-

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, रोडवेज बुक स्टाल, ए.एच. व्हीलर एंड कंपनी व सभी रेलवे बुक स्टालों से खरीदें, न मिलने पर कोई भी दस उपन्यासों के मूल्य का मनीऑर्डर **राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084** के पते पर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ। कृपया M.O. पर अपना फोन नम्बर अवश्य लिखें।

दो शब्द——लेखक की कलम से

पाठकों को,

अनिल मोहन का नमस्कार!

'मिस्ड कॉ़ल' के बाद हाजिर हूं **'बबूसा'** के साथ। इस वक्त, जबकि मैं ये शब्द लिख रहा हूं **'मिस्ड कॉल'** अभी बाजार में नहीं आई है, बस आने ही वाली है ऐसे में **'मिस्ड कॉल'** के बारे में पाठकों की राय इस उपन्यास में नहीं दी जा सकती। उनके नाम आगामी उपन्यास में लिखूंगा। **'मुखबिर'** के बारे में पाठकों की राय इस वक्त मेरे पास आ रही है, उनके नामों का जिक्र मैंआगे करूंगा परंतु पहले **'बबूसा'** की बात करते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास **'बबूसा'** की कहानी के टुकड़े सालों से मेरे दिमाग में घूम रहे थे लेकिन उन्हें आकार देने की चेष्टा मैंने कभी नहीं की और अब मैंने दिमाग में घूमते टुकड़ों को पकड़कर, कहानी का रूप दिया और उसे नाम दे दिया 'बबूसा'। यह देवराज चौहान सीरीज की कहानी है परंतु इसमें **'बबूसा'** नाम का पात्र भी है, बबूसा के अलावा आपकी और भी दिलचस्प पात्रों से मुलाकात होगी, लेकिन धीरे-धीरे। **'बबूसा'** में धरा नाम की पात्रा भी है, जो कि आपको बबूसा की तरह ही पसंद आएगी। जैसा कि इस उपन्यास का नाम हटकर है, उसी प्रकार इसकी कहानी भी पुरानी लीक से हटकर है। 'बबूसा' के द्वारा आप देवराज चौहान के पूर्व जन्म से भी पूर्व जन्म में पहुंच जाएंगे। आप ठीक समझ रहे हैं, देवराज चौहान के पूर्व जन्म की कहानियां तो चल ही रही हैं, आप पढ़ ही रहे हैं, परंतु इस 'बबूसा' से उससे भी पूर्वजन्म में आपको ले जाया जा रहा है कि देवराज चौहान असल में कौन था और कहां-कहां से होता हुआ वह, इन जन्मों में आया, जो कि इस वक्त हम पढ़-लिख रहे हैं। जन्मों पहले, अपने सबसे पूर्व जन्म में देवराज चौहान क्या था और कहां से कैसे, यहां तक आ पहुंचा। जाहिर है, जब कहानी ऐसे आधार पर होगी तो दिलचस्पी का ढेरों तरीके का सामान भी होगा। बहुत कुछ होगा। मैंने लम्बी कोशिश और मेहनत के बाद **'बबूसा'** को आप तक पहुंचाया है, देखना ये है कि इसमें मैं कहां तक सफल रहा हूं।

इसके साथ एक और खास बात——प्रकाशक **राजा पॉकेट बुक्स** की तरफ से, देवराज चौहान सीरीज के इन **'बबूसा'** वाले उपन्यासों पर ईनामी प्रतियोगिता भी रखी गई है। वो ईनामी प्रतियोगिता क्या है, उसे आप उपन्यास के अंतिम पृष्ठों पर पढ़ पाएंगे।

एक खास बात और कि पहले मेरे पाठक इस बात की शिकायत करते थे कि मैं देवराज चौहान सीरीज के उपन्यास कम देता हूं उन्हें देवराज चौहान

सीरीज के ज्यादा उपन्यास पढ़ने को चाहिए और बीते ढाई-तीन सालों से मैं हर उपन्यास देवराज चौहान सरीज का दे रहा हूं तो अब पाठक दोस्त ये शिकायत करने लगे हैं कि मैं उन्हें हर उपन्यास देवराज चौहान सीरीज का क्यों दे रहा हूं उन्हें अन्य सीरीज पर भी उपन्यास दूं जैसे कि प्राईवेट जासूस अर्जुन भारद्वाज सीरीज, विजय बेदी सीरीज, आर.डी.एक्स सीरीज, मोना चौधरी सीरीज, जुगल किशोर सीरीज। एक पाठक ने यहां तक कह डाला कि मैं देवराज चौहान सीरीज के अलावा और कुछ लिख ही नहीं सकता। बहरहाल सबकी बातें सिर-माथे पर। ये 'बबूसा' वाले उपन्यासों का सिलसिला खत्म होने पर मैं आपको दूसरी सीरीज के उपन्यास भी जरूर दूंगा।

नंद किशोर साहब, मध्य प्रदेश, जालना से कहते हैं कि— *रोज-रोज मटर-पनीर (देवराज चौहान सीरीज) खाया जाए तो पेट खराब हो जाता है।* कोई बात नहीं पेट मैंने खराब किया है तो ठीक भी मैं ही करूंगा। तकलीफ के लिए क्षमा चाहता हूं।

तो अब बात करते हैं पाठकों की, जिनके ई-मेल भी आए और फेसबुक पर भी जिन्होंने लिखा।

पहले पाठक हैं चचंल धामी, पिथौरागढ़ उत्तराखंड से, ये लिखते हैं कि— *इन्हें देवराज चौहान और जगमोहन बहुत पसंद हैं। इनका उपन्यास हाथ में आ जाए तो कहना ही क्या।*

सुनील सचदेवा, दिल्ली से कहते हैं— **'मुखबिर'** *पढ़ा, जबर्दस्त लगा। एक ही बार में पढ़कर हटा। उपन्यास का अंत हटकर था परंतु सस्पेंस का पहले ही पता चल गया था।*

मुकेश कपूर, फरीदाबाद से कहते हैं कि— **'जुआघर'** *में माला का पात्र और भी आगे ले जाते तो ज्यादा अच्छा लगता। उपन्यास अच्छा था।*

सुधीर लॉर, चंडीगढ़ से कहते हैं कि— *आपके उपन्यास पढ़ते-पढ़ते ही बड़ा हुआ हूं। एक बार मैंने भी उपन्यास लिखने की चेष्टा की थी परंतु सफल नहीं हो पाया। अब आपको पढ़कर मजा आता है।*

रविकांत दूबे, मथुरा से लिखते हैं— **'सावधान हिन्दुस्तान'** *बहुत बढ़िया लगा परंतु 'जुआघर' में माला और जगमोहन का प्यार इन्हें पसंद नहीं आया।*

प्रेम सागर, दिल्ली से लिखते हैं कि— **'100 माइल्स'** *मुझे कहीं से नहीं मिला तो मुझे राजा पॉकेट बुक्स, बुराड़ी जाकर उपन्यास लाना पड़ा। शुक्रिया साहब।*

नितिन ओमारे, भुज से कहते हैं कि— *आपके उपन्यास आठ साल से पढ़ रहा हूं। हॉल ही में* **'मुखबिर'** *पढ़ा, कलाईमैक्स अच्छा था। ये चाहते हैं कि मैं अर्जुन भारद्वाज सीरीज के उपन्यास भी लिखूं।*

आनंद कत्याल जी लखनऊ से लिखते हैं कि—इन्हें मेरे उपन्यास बिल्कुल भी अच्छे नहीं लगते। इन्होंने ये भी लिखा कि अगर मैं सच्चा लेखक हूं तो ये बात मैं उपन्यास के पत्र में जरूर कहूं। आनंद जी, ये जरूरी नहीं होता कि हर चीज को हर कोई पसंद करे। आपने अपने विचार भेजे मुझे अच्छा लगा। अगर मुझे कोई फिल्मी हीरो पसंद है तो जरूरी नहीं कि वो दूसरे को भी पसंद आए। मेरे उपन्यासों को पढ़ने का शुक्रिया। पढ़ते रहें, शायद पसंद आने शुरू हो जाएं।

दीप, संदीप, अंशिका वाराणसी से लिखते हैं कि— **'मुखबिर'** इन्हें बढ़िया लगा। इन्हें पुराने नॉवल चाहिए। जिसके लिए आप लोगों को बता दिया गया है कि **'राजा पॉकेट बुक्स'** से सम्पर्क करें।

सोनिया बेदी, दिल्ली से लिखती हैं कि—देवराज चौहान इनका प्यारा हीरो है।

अश्वनी मनमानी, जयपुर से—इन्हें मेरे उपन्यासों की लिस्ट चाहिए। लेकिन वो तो मेरे पास भी उपलब्ध नहीं है। बहुत पाठक मेरे सारे उपन्यासों की लिस्ट मांग रहे हैं। मैं लिस्ट को जल्दी ही तैयार करने की कोशिश करूंगा।

सुहेल जी, बरेली से कहते हैं कि—इन्हें मेरे उपन्यास नहीं मिल रहे। ऐसा सम्भव नहीं है। आप रेलवे स्टेशन या रोडवेज बस अड्डे जाकर देखिए, जरूर मिलेंगे।

राज सिंह, आगरा से कहते हैं कि— **'मुखबिर'** ढूंढ़ने में इन्हें परेशानी आई। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर सिर्फ तीन नम्बर प्लेटफार्म से ही मिल पाया। अन्य प्लेटफार्म पर उपन्यास उपलब्ध नहीं था।

लोकेश्वर प्रधान, बारगढ़ उड़ीसा से लिखते हैं कि—इन्हें देवराज चौहान और मोना चौधरी के पूर्व जन्मों पर लिखे गए उपन्यासों की लिस्ट चाहिए। लिस्ट तैयार करके इन्हें जल्द ही भेज दी जाएगी।

सूरज सोनी, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश से कहते हैं कि—मुझे आपके सब उपन्यास बढ़िया लगते हैं। इन दिनों आपके उपन्यास देवराज चौहान सीरीज पर ज्यादा आ रहे हैं। ये कहते हैं कि आरडीएक्स सीरीज पर भी जल्दी उपन्यास लिखूं।

रंजन प्रताप, कोटा, राजस्थान से कहते हैं कि—मोना चौधरी को तो आप बिल्कुल ही भूले बैठे हैं। देवराज चौहान और मोना चौधरी को पूर्वजन्मों के उपन्यासों में लेते हैं, उसके बाद देवराज चौहान सीरीज, पर तो उपन्यास लिखते हैं परंतु मोना चौधरी सीरीज पर नहीं लिखते। मोना चौधरी से कोई दुश्मनी है क्या? रंजन जी, भला अपने पात्रों से मैं दुश्मनी कैसे कर सकता हूं। जल्दी मोना चौधरी सीरीज पर उपन्यास लिखूंगा।

हैरी उप्पल जी, बठिंडा (पंजाब) से लिखते हैं कि—*बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव जो कि अपनी-अपनी भाषा में बोलते हैं, इनकी भाषा साधारण कर दूं। ऐसी बात पहले किसी ने नहीं कहीं। मेरे खयाल में तो उन पात्रों की खूबसूरती ही, उनकी भाषा में है। अगर अन्य पाठकों ने भी इस बात का जोर डाला तो फिर मैं इस बात पर अवश्य गौर करूंगा।*

कमलेश जेठा, अहमदाबाद से लिखती हैं—*वो देवराज चौहान सीरीज की फैन हैं। मेरा यहां आपके उपन्यास ढूंढ़ने पर मिलते हैं, परंतु जैसे भी हो मैं आपके उपन्यास ढूंढ़ लेती हूं। हाल ही में इन्होंने* **'जुआघर'** *पढ़ा, जो कि इन्हें पसंद आया। ये कहती हैं कि नेपाल में दो बार जा चुकी हूं और आपने काठमांडू के जिन मंदिरों का जिक्र किया उपन्यास में, उन सबको मैं देख चुकी हूं।*

जगदीश जेठानी, मुम्बई से कहते हैं कि—मैं बचपन से ही आपके उपन्यास पढ़ रहा हूं और अब भी पढ़ता हूं। ये कहते हैं कि मैं ज्यादा-से-ज्यादा उपन्यास लिखूं और जल्द-से-जल्द प्रकाशित करवाऊं। जरूर, ऐसा ही होगा जगदीश जी।

तो दोस्तो, अभी और भी ऐसे कई नाम हैं, जिनका जिक्र करना बाकी है, परंतु मेरे पास जगह समाप्त होती जा रही है। ऐसे में बचे पाठकों का जिक्र मैं अगले नए उपन्यास **'बबूसा और राजा देव'** में करूंगा। तब तक और पाठकों के मैसेज भी आ जाएंगे। प्रस्तुत उपन्यास **'बबूसा'** के बारे में मैं पाठकों की ज्यादा-से-ज्यादा राय जानना चाहता हूं क्योंकि ये उपन्यास हटकर है और इसमें काफी कुछ नयापन है। मैं भी जान लेना चाहता हूं कि अपनी कोशिश में मैं कहां तक सफल हुआ हूं। **राजा पॉकेट बुक्स** से मेरा आगामी नया उपन्यास **'बबूसा और राजा देव'** है। अब जल्दी ही मुलाकात होगी।

नोट : मुझे खेद है कि **'मिस्ड कॉल'** उपन्यास के बारे में जिन दस पाठकों को मुझे अपनी राय सबसे पहले भेजनी थी और जिनकी फोटो पते सहित **'बबूसा'** में प्रकाशित होनी थी वह इस उपन्यास में प्रकाशित नहीं हो पाई क्योंकि 'बबूसा' का प्रकाशन 'मिस्ड कॉल' के मार्केट में पहुंचने से पहले ही हो चुका है। मेरा आपसे अनुरोध है कि 'मिस्ड कॉल' के बारे में आप अपनी राय मेरी फेस बुक पर शीघ्र से शीघ्र फोटो व पते सहित भेजें। प्रकाशक के निर्णयानुसार अब यह लिस्ट आगामी उपन्यास **'बबूसा और राजा देव'** में प्रकाशित की जाएगी।

—**अनिल मोहन**

बबूसा

वो अट्ठाइस वर्ष का युवक होटल के कमरे में समाधि लगाए बैठा था। शरीर पर सिर्फ अंडरवियर था। आंखें बंद थीं उसकी। समाधि की मुद्रा में अकड़ा-सा बैठा था। सिर के बाल पीछे की तरफ करके बांध रखे थे। इंच भर की चुटिया दिख रही थी। बालों की मोटी लट बाईं तरफ वाले गाल पर झूल रही थी। उसका शरीर बलिष्ठ था। ताकतवर था। बांहों और छाती का कटाव जबर्दस्त अंदाज में झलक रहा था। रंग सांवला था परंतु चेहरा आकर्षक था। शरीर पर जगह-जगह जख्मों के निशान थे, कुछ गहरे निशान थे जो कि कभी घातक रहे होंगे। वो शानदार व्यक्तित्त्व का मालिक था। उसका चेहरा इस वक्त सपाट और भावहीन दिख रहा था। बंद आंखों के पीछे पुतलियां बराबर हरकत करती महसूस हो रही थीं। वो बहुत देर से समाधि की इस मुद्रा में बैठा था।

सुबह के नौ बज चुके थे।

"तुम कहां हो राजा देव?" सरसराती आवाज में वो बड़बड़ा उठा था—'मैं कब से तुम्हारी तलाश कर रहा हूं और अब तुम्हारी गंध पा ली है मैंने, ओह उस तरफ, मैं आ रहा हूं राजा देव।'

▭ ▭

जगमोहन कॉफी का प्याला थामे किचन से बाहर निकला और सीधा देवराज चौहान के बेडरूम में जा पहुंचा। देवराज चौहान बेड पर गहरी नींद में था। ए.सी. की ठंडक कमरे में मौजूद थी।

"उठो।" जगमोहन पास पहुंचकर बोला—"कॉफी लो, मैं औरंगाबाद जा रहा हूं।"

देवराज चौहान ने आंखें खोलीं और उठ बैठा।

"तुम तो तैयार भी हो गए।" देवराज चौहान उससे कॉफी का प्याला लेते कह उठा।

"मैंने सोचा औरंगाबाद के लिए अभी निकल जाता हूं। वक्त क्यों खराब करूं।" जगमोहन बोला।

देवराज चौहान ने कॉफी का घूंट लेने के पश्चात कहा।

"आजम का काम जरूर पूरा करना। वो बढ़िया बंदा है, भविष्य में हमारे काम आ सकता है।"

"मैं समझता हूं।"

"काम के पैसे मत लेना। उस पर उधार रहने देना। इस तरह बातचीत का सिलसिला बना रहेगा।"

जगमोहन ने सिर हिलाकर कहा।

"मेरे खयाल में मैं कल रात तक या परसों तक आ ही जाऊंगा।"

"जो भी हालात हों, मुझे फोन पर बता देना।"

जगमोहन बाहर निकल गया। पांच-सात मिनट बाद कार स्टार्ट होने और जाने की आवाज आई। तब तक देवराज चौहान कॉफी समाप्त कर चुका था। वो बेड से उठा और सिग्रेट सुलगाकर ड्राइंग रूम में जा पहुंचा। चेहरे पर किसी भी तरह की सोच नहीं थी। वो सोफे पर बैठने जा रहा था कि एकाएक थम गया।

देवराज चौहान को लगा, वहां पर कोई है।

वो फौरन घूमा।

नजरें हर तरफ घूम गईं।

परंतु वहां कोई नहीं दिखा।

देवराज चौहान के चेहरे पर उलझन के भाव आ गए। उसे ये बात अजीब-सी लगी कि उसे यहां पर किसी और के होने का एहसास क्यों हुआ जबकि यहां कोई भी नहीं है।

वो सोफे पर जा बैठा। कश लिया। निगाह अभी भी हर तरफ घूम रही थी। आधा मिनट ही बीता होगा कि वो तेजी से उठा और पीछे की तरफ घूम गया। परंतु पीछे कोई नहीं था। लेकिन उसने स्पष्ट तौर पर सोफे के पीछे किसी के मौजूद होने का एहसास पाया था जैसे कोई बेहद पास हो।

ये क्या हो रहा है उसे?

देवराज चौहान के चेहरे पर कुछ उलझन दिखी।

अगले ही पल चिहुंककर तीन-चार कदम पीछे होता चला गया और उसके होंठों से निकला।

"कौन है?" अपने कानों के पास उसने किसी को सांस लेते सुना था। परंतु दिखाई नहीं दे रहा था कोई।

"राजा देव।" एक धीमी-सी मर्दानी आवाज उसके कानों में पड़ी।

देवराज चौहान स्तब्ध-सा रह गया। कुछ कह न सका।

"मेरी आवाज सुन रहे हो राजा देव?" वो ही धीमी आवाज पुनः देवराज चौहान के कानों में पड़ी।

"कौन हो तुम?" देवराज चौहान के माथे पर बल दिखने लगे।

"बबूसा हूं मैं।" वो ही आवाज पुनः देवराज चौहान को सुनाई दी।

"कौन बबूसा?"

"मैं आप ही का हिस्सा हूं राजा देव। आपका ही डीएनए, आपका ही खून, आपकी ही ताकत, सब कुछ आप ही का तो है मेरे में। मेरा तो जन्म ही आपका मुकाबला करने के लिए कराया गया है।" स्पष्ट आवाज देवराज चौहान ने सुनी।

"मैं नहीं समझ पाया कि तुम कौन हो और क्या कह रहे हो?" देवराज चौहान सतर्क स्वर में बोला।

"राजा देव, मैं...।"

"तुम मुझे राजा देव क्यों कह रहे हो?"

"क्या आप नहीं जानते? सब कुछ भूल चुके हैं?" बबूसा की आवाज आई।

"क्या। नहीं जानता?"

"ये ही कि आप कौन हैं, कहां से इस धरती पर आए हैं और तब क्या घटित हुआ था आपके साथ?"

"मैं इस धरती पर वहीं से आया, जहां से और लोग आए हैं। इसमें ऐसी क्या बात...।"

"नहीं राजा देव। आप सब कुछ भूल चुके हैं। आपको कुछ भी याद नहीं।"

"क्या याद नहीं मुझे?"

"ये बहुत लम्बी दास्तान है, मैं इस तरह आपसे नहीं कह पाऊंगा राजा देव।"

"तो कैसे कहोगे?"

"जब मैं आपके सामने आऊंगा।"

"तो क्या अब सामने नहीं हो?"

"नहीं। अभी मैं आपके सामने नहीं हूं। मेरे भीतर महापंडित ने जन्म के समय कुछ शक्तियां डाल दी थीं। उन्हीं शक्तियों के सहारे आपसे बात कर रहा हूं। महापंडित का कहना था कि राजा देव को ढूंढ़ने में ये शक्तियां मेरे काम आएंगी और उसने सही कहा था। महापंडित सच में ज्ञानी है। अब उन्हीं शक्तियों के दम पर मैं आपसे बात कर पा रहा हूं। उन शक्तियों ने आपकी गंध को ढूंढ़ निकाला है। आप मुझे बताएं, आप कहां पर रहते हैं राजा देव।"

"क्यों?"

"मैं आपके पास आऊंगा।"

"क्यों?"

"आपसे मिलूंगा। आपको देखूंगा। आपसे बहुत बातें करूंगा और...।"

"मैं तुम्हें नहीं जानता।"

"आपके लिए मुझे जानने को है ही क्या राजा देव। मैं आपका ही अंश हूं। आपका ही हिस्सा...।"

"मैं तुम्हें नहीं जानता कि तुम कौन हो।"

"मैं बबूसा...।"

"बबूसा कौन?"

"आप तो सब कुछ ही भूल चुके हैं राजा देव।"

देवराज चौहान खामोश रहा। चेहरे पर सख्ती के भाव थे।

"ढाई सौ साल पहले, अंतरिक्ष के एक छोटे-से ग्रह के राजा थे आप।" बबूसा की आवाज आई।

"मैं? राजा?"

"हां राजा देव। तब मैं आपका खास सेवक हुआ करता था। आप मुझ पर पूरा भरोसा करते थे।"

"फिर मैं यहां कैसे पहुंच गया?"

"रानी ताशा की वजह से।"

"रानी ताशा?"

"आपकी रानी। आपके ग्रह की सबसे खूबसूरत औरत...। याद आई रानी ताशा की?"

"नहीं।"

"रानी ताशा ने आपके साथ धोखा किया और आपको ग्रह के बाहर फिंकवा दिया।"

"ग्रह के बाहर फिंकवा दिया?" देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं—"कोई किसी को किसी ग्रह के बाहर कैसे फिंकवा सकता है।"

"फिंकवा सकता है। आपने बुरे लोगों को ग्रह के बाहर फेंक देने का एक रास्ता बनाया हुआ है। रानी ताशा ने आपके खिलाफ षडयंत्र रचा और आपको ग्रह के बाहर फेंक दिया।"

"तुम्हारी बातें सुनकर मुझे हैरानी हो रही है।"

"परंतु बाद में रानी ताशा अपने किए पर बहुत पछताई। अब वो आपको वापस उसी ग्रह पर ले जाना चाहती है। वो आपको लेने आपके बनाए पोपा (अंतरिक्ष यान) पर सवार होकर इस धरती पर कभी भी पहुंच सकती है। वो अपने किए पर शर्मिंदा है। आपसे माफी मांगना चाहती है और वापस ले जाएगी आपको।" बबूसा की आवाज कानों में पड़ रही थी।

"तुम्हारी अजीब-सी बातें मेरी समझ से बाहर हैं।"

"राजा देव। मैं आपका विश्वासी सेवक हूं। मैं आपसे धोखा नहीं कर सकता। जो कहा है सच कहा है। रानी ताशा हर हाल में आपको वापस,

आपके ग्रह पर ले जाना चाहती है। ये उसकी लम्बी योजना है। बहुत देर से वो ताने-बाने बुन रही है। अट्ठाइस साल पहले उसने मेरा जन्म कराया इस धरती पर।"

"इस धरती पर? तुम इसी धरती के हो?"

"हां राजा देव। मैं डोबू जाति से सम्बंध रखता हूं जो कि बर्फीले पहाड़ों पर बसती है। आपके ग्रह के, रानी ताशा के डोबू जाति से रिश्ते हैं। आपका बनाया पोपा (अंतरिक्ष यान) अक्सर हमारे ग्रह से, डोबू जाति के लोगों के पास आता है। रानी ताशा के भेजे लोग उसमें सवार होकर डोबू जाति से मिलने आते हैं। रानी ताशा को इस धरती के लोगों की सहायता की जरूरत पड़ेगी, इसी वजह से रानी ताशा ने डोबू जाति से दोस्ती कर रखी है। डोबू जाति वाले पोपा (अंतरिक्ष यान) से आने वाले लोगों से प्रभावित है कि वो आसमान से, कहां से आते हैं। रानी ताशा आपको वापस सदूर ग्रह पर ले जाना चाहती है और आपके इंकार करने की स्थिति में, रानी ताशा ने मेरा जन्म करवाया डोबू जाति में कि, मैं वक्त आने पर आपको संभाल सकूं। दो सौ सालों से रानी ताशा ने डोबू जाति से सम्बंध बना रखे हैं। महापंडित रानी ताशा की हर सम्भव सहायता कर रहा है। रानी ताशा का जीवन पूरा हो जाता है तो वो पुनः रानी ताशा का जन्म करवा देता है। रानी ताशा ने धोखेबाजी करके आपको ग्रह से बाहर फिंकवा दिया, इस पर भी महापंडित रानी ताशा का साथ दे रहा है। ये बुरी बात है। मुझे देखिए, मैं आपका सच्चा सेवक हूं। डोबू जाति से बाहर निकल आया हूं कि रानी ताशा की कोई ऐसी बात नहीं मानूंगा जो आपके खिलाफ हो। आप खुशी से अपने सदूर ग्रह पर वापस जाना चाहते हैं तो ठीक, नहीं तो मैं आपके साथ जबर्दस्ती नहीं होने दूंगा। रानी ताशा की एक न चलने दूंगा।"

"मेरे साथ कोई जबर्दस्ती नहीं कर सकता।" देवराज चौहान के होंठों से निकल गया।

"आप ये सोचकर भूल में हैं राजा देव।" बबूसा के स्वर में गम्भीरता थी—"रानी ताशा को डोबू जाति के लोगों का सहारा है और उस जाति में खतरनाक से खतरनाक योद्धा भरे पड़े हैं। आप उनका मुकाबला नहीं कर सकते क्योंकि आप में अब वो पहले वाली बात नहीं है। तब आप जैसा योद्धा सदूर ग्रह पर दूसरा नहीं था, वहां के बलशाली लोग, राजा बनने के लिए आपको चुनौती दिया करते थे और मैदान में फैसले के दौरान, आप उन्हें मार डालते थे आसानी से। परंतु अब आपकी ताकत कम हो चुकी है। डोबू जाति के एक योद्धा का भी आप मुकाबला नहीं कर सकते। फौरन हार जाएंगे। परंतु मैं डोबू जाति का मुकाबला कर

सकता हूं। मेरे होते वो आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। रानी ताशा ने गहरी साजिश रची है आपके खिलाफ कि आपको वापस सदूर ग्रह पर ले जा सके। परंतु ये बात मुझे पसंद नहीं आई कि मेरी जानकारी में कोई राजा देव के खिलाफ साजिश रचे। मैं उस धोखेबाज रानी ताशा की एक नहीं चलने दूंगा। उसने बहुत बुरा किया था आपके साथ और वो दोबारा आपको अपना बनाना चाहती...।"

"तुम्हारी कोई बात मुझे ठीक से समझ नहीं आ रही।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"सब समझ में आ जाएगा राजा देव। आप ये बताइए कि आप रहते कहां हैं?" बबूसा की आवाज आई।

"क्यों?"

"ताकि आपके पास आकर मैं बातें कर सकूं। सब कुछ आपको बता...।"

"मैं तुम्हें अपने रहने की जगह नहीं बता सकता।"

"क्यों राजा देव?"

"क्योंकि मैं तुम्हारे इरादों से वाकिफ नहीं हूं।"

"राजा देव, मैं बबूसा हूं। जिस पर आप आंख मूंदकर भरोसा करते थे। आप ये कैसे कह सकते हैं कि आपको मुझ पर भरोसा नहीं।"

"मैं तुम्हें नहीं जानता।"

"मैंने आपको बताया तो है कि आपके गिर्द क्या साजिश चल रही है। रानी ताशा पोपा (अंतरिक्ष यान) पर बैठकर, इस धरती पर आ रही है। आप खतरे में पड़ने वाले हैं राजा देव। परंतु मैं आपको बचाऊंगा—मैं...।"

"मुझे किसी की जरूरत नहीं है। मुझे तुम्हारी बातों का जरा भी भरोसा नहीं है।"

"ये कहकर आपने तो दिल तोड़ दिया राजा देव।"

"मैं देवराज चौहान हूं, राजा देव नहीं। मेरा कोई ग्रह नहीं है। मैं अपने पूर्व जन्मों के बारे में जानकारी रखता हूं कि पहले मैं कहां पर पैदा हुआ था। मैं अपने पूर्व जन्म में कई बार जा चुका हूं। वहां मैं किसी ग्रह का मालिक नहीं था। कोई रानी ताशा नहीं थी। कोई बबूसा नहीं था। तुम्हारी सब बातें झूठ...।"

"आपके पूर्व जन्मों की मुझे जानकारी है राजा देव। आपका पहला जन्म उस रहस्यमयी नगरी में हुआ था, जब नगरी की मालकिन मिन्नो से आपकी ठन गई थी। बहुत खून-खराबा हुआ आप दोनों में। आपके और उसके गुट बन गए। जबकि आपकी शादी मिन्नो की बहन बेला (अब नगीना) से

हुई थी। परंतु मिन्नो से लड़ते आप भी मारे गए और मिन्नो भी मारी गई। इस तरह आपके पहले जन्म का अंत हुआ था परंतु उस जन्म के आपके और मिन्नो के अधूरे काम करने रह गए थे, जो आप लोगों के हाथों ही सम्पूर्ण होने हैं। ये ही कारण है कि वक्त का पहिया आप दोनों को बार-बार पूर्वजन्म में खींच ले जाता है। मैंने ठीक कहा न राजा देव।"

देवराज चौहान चुप रहा।

"पहले जन्म की धरती का वो हिस्सा समय चक्र में फंसकर, रहस्यमय बन गया और दुनिया की निगाहों से छिप गया। कोई नहीं जानता कि इस धरती में आपके पहले जन्म की जमीन कहां पर है, परंतु कुछ शक्तियां ऐसी हैं, जो आपके और मिन्नो के बार-बार वहां जाने के लिए रास्ता बना देती हैं।"

"तुम काफी कुछ जानते हो।"

"मैंने अट्ठाईस साल आपके बारे में ही जानने पर लगाए हैं राजा देव। आपका दूसरा जन्म पंजाब के लुधियाना शहर में हुआ और आपकी पत्नी मिन्नो ही बनी। बहुत अच्छा और सुख वाला जीवन आपने बिताया। इस जन्म के बारे में जिक्र करने लायक कुछ नहीं है। परंतु तीसरा जन्म अब चल रहा है। इस जन्म में आप चोर हैं और पहले जन्म वाली बेला (नगीना) अब आपकी पत्नी है।" बबूसा की आती आवाज एक पल के लिए रुकी, उसके बाद फिर सुनाई देने लगी—"परंतु मैं जिस वक्त की बात कर रहा हूं, वो बात इन तीनों जन्मों से पहले की है। इन तीनों जन्मों से पहले आप सदूर ग्रह के राजा थे, रानी ताशा आपकी पत्नी थी। ग्रह की सबसे खूबसूरत औरत और आप उससे प्यार करते थे, परंतु उसने किले के सेनापति धोमरा के चक्कर में पड़कर आपसे धोखेबाजी की और आपको ग्रह से बाहर फिंकवा दिया। जब तक आप उसकी धोखेबाजी को समझ पाते, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। लेकिन उसके बाद रानी ताशा को बहुत दुख और पछतावा हुआ अपनी करनी का। वक्त हाथ से निकल चुका था और आपको वापस नहीं लाया जा सकता था। रानी ताशा ने खुद अपने हाथों से उस किले के सेनापति धोमरा को मार दिया था। रानी ताशा को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि आपको खो देने के बाद क्या करे, परंतु तब महापंडित ने रानी ताशा को बताया कि आप जीवित हैं अगर वो उसके कहने के मुताबिक इंतजार करे तो राजा देव से फिर से उसका सामना हो सकता है। रानी ताशा मान गई और महापंडित के इशारों का इंतजार करने लगी। उसका जीवन बार-बार पूरा होता रहा और महापंडित उसे पुनः नया जीवन देता रहा। आपकी तरह उसने भी कई जीवन जिए। परंतु हर जीवन में रानी ताशा अकेली ही रही। किसी

मर्द का साथ नहीं लिया। शायद ये उसका पश्चात्ताप था, जो उसने पहले आपके साथ किया था। अब महापंडित ने रानी ताशा को कह रखा है कि राजा देव से मिलने का समय निकट आता जा रहा है। रानी ताशा अपनी तैयारियां पूरी कर चुकी है। आज से अट्ठाईस वर्ष पहले मेरा जन्म करवा दिया था महापंडित ने मेरे में आपके ही अंश डाले गए। आपकी तरह ही मुझे ताकतवर बनाया गया। ये सब इसलिए किया गया कि जब रानी ताशा आपको लेने आए तो मैं आपको संभाल सकूं। आप पर कब्जा कर सकूं। सदूर ग्रह पर आप सबसे ताकतवर इंसान थे राजा देव। इसी कारण मेरा ज़न्म कराया गया।"

देवराज चौहान लम्बे पलों तक चुप रहा फिर बोला।

"एक मिनट के लिए मैं मान लूं कि तुम्हारी बातें सही हैं तो सवाल ये पैदा होता है कि इस भरी दुनिया में, रानी ताशा ने मुझे कैसे ढूंढ़ा। यहां किसी को ढूंढ़ पाना...।"

"महापंडित ने किया ये काम।" बबूसा की आवाज आई—"आपकी गंध से आपकी तलाश की, परंतु इस काम में उसे 250 वर्ष लग गए। ये ग्रह आपके सदूर ग्रह से बहुत बड़ा है। यहां पर ज्यादा लोग बसते हैं, ऐसे में आपको ढूंढ़ पाना आसान नहीं था, परंतु महापंडित ने पूरी मेहनत करके आपको ढूंढ़ निकाला। ये 28 वर्ष पहले की बात है। आपको ढूंढ़ लेने के पश्चात महापंडित ने रानी ताशा के कहने पर मेरा जन्म कराया और मुझे डोबू जाति के पास छोड़ दिया कि मैं यहां के हिसाब से पल सकूं। पोपा मुझे डोबू जाति के पास छोड़ गया था। तब मैं कुछ ही दिन का था और डोबू जाति के बच्चों में रहकर मैं पला, बड़ा हुआ। इस दौरान रानी ताशा आपको वापस सदूर ग्रह पर ले जाने का षडयंत्र तैयार करती रही और महापंडित आप पर नजर रखता रहा।

"कैसे नजर रखी उसने मुझ पर?"

"महापंडित ने अपनी दो शक्तियां आप पर छोड़ रखी हैं। वो आपका सारा हाल महापंडित को बताती रहती हैं।"

"फिर तुम्हें मेरा पता-ठिकाना पूछने की क्या जरूरत है। उन शक्तियों से मेरा पता पूछ...।"

"नहीं पूछ सकता।"

"क्यों?"

"वो शक्तियां महापंडित के अधिकार में हैं और मैं डोबू जाति से विद्रोह करके बाहर आ गया हूं। अब महापंडित से मेरी सीधे-सीधे बात नहीं हो सकती। अगर महापंडित चाहे तो वो मुझसे अवश्य बात कर सकता है।" बबूसा की आवाज आई।

देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।
“इस मुस्कान का क्या मतलब हुआ राजा देव?”
“तुमने अपनी बातों में मुझे उलझा दिया था, परंतु अब मैं फिर वर्तमान स्थिति में आ गया हूं और तुम्हारी कही किसी भी बात का मुझे यकीन नहीं है। तुम जाने क्यों ऐसी बातें करके मुझे फंसाने में लगे...।”
“राजा देव, मैं आपका सेवक हूं।”
“बकवास, तुम...।”
“आप मुझे यहां का पता बताइए, मैं आपके सामने हाजिर होकर, आपको हर बात का यकीन दिलाऊंगा।”
“तुम जो भी हो, जाओ यहां से। मैं इन बातों में नहीं पड़ना चाहता।”
“इन बातों में तो आपको पड़ना ही पड़ेगा राजा देव। पोपा पर सवार होकर रानी ताशा कभी भी इस धरती पर, डोबू जाति तक पहुंचेगी और उसके बाद डोबू जाति के योद्धाओं को लेकर आपके पास आएगी। रानी ताशा आपको हर हाल में वापस सदूर ग्रह ले जाना चाहती है। ऐसे वक्त में मैं ही तो आपके काम आ सकता हूं। मेरी ताकत का मुकाबला कर पाना उनके लिए कठिन होगा। काफी बुरा वक्त आने वाला है राजा देव, मेरी बात का यकीन कर लीजिए।”
“चले जाओ मेरे पास से।”
“आप मुझे अपना पता क्यों नहीं बता रहे राजा देव?” बबूसा की आवाज आई।
“क्योंकि मैं तुम्हें नहीं जानता। क्योंकि मैं ये नहीं जानता कि तुम मेरे भले के लिए हो या बुरे के लिए। क्योंकि मुझे तुम्हारी कही किसी भी बात का भरोसा नहीं। बेहतर होगा चले जाओ यहां से।”
“राजा देव, मेरी जानकारी के मुताबिक रानी ताशा का इस ग्रह पर आने का वक्त करीब आ चुका है।”
“मैं किसी रानी ताशा को नहीं जानता।” देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा।
“ये ही तो समस्या है कि आपको कुछ याद नहीं, परंतु आपको सब याद आ जाएगा राजा देव।”
“वो कब?”
“जब आप रानी ताशा को सामने देखेंगे। महापंडित ने ये बात मुझे तब बताई थी जब सदूर ग्रह पर आपके अनुरूप में मेरा जन्म कराने जा रहा था। उसने कहा था कि रानी ताशा के चेहरे पर ऐसी शक्तियां डाल देगा कि राजा देव जब रानी ताशा का चेहरा देखेंगे तो उन्हें सब कुछ याद आ जाएगा।” बबूसा की आवाज सुनाई दी।

"तो फिर तुम्हें उस वक्त तक का इंतजार करना होगा, जब मुझे सब कुछ याद आ जाए।"

"तब तक तो बहुत देर हो चुकी होगी राजा देव। आप रानी ताशा को नहीं जानते। वो रूप की जादूगरनी है। उसके रूप में पड़कर आप पहले भी धोखा खा चुके हैं, रानी ताशा आपके सामने पड़ गई तो तब जाने आपका क्या हाल होगा। कहीं आप फिर से उसके रूप भंवर में न खो जाएं। मैं आपको आगाह करना चाहता हूं कि...।"

"मेरी पत्नी नगीना के बारे में जानते हो।" देवराज चौहान बोला।

"हां राजा देव।"

"मैं अपनी पत्नी के अलावा, अपना दिल कहीं पर नहीं रखता।"

"इस बात का भी मुझे ज्ञान है।"

"ऐसे में मैं रानी ताशा की तरफ आकर्षित नहीं हो सकता।"

"आप ठीक कहते हैं परंतु आप रूप की जादूगरनी रानी ताशा को भूल चुके हैं। आपको कुछ भी याद नहीं। रानी ताशा आपके ग्रह की मामूली-सी लड़की थी, परंतु आपने उसे देखा तो आप उसके दीवाने हो उठे थे। रानी ताशा के साथ ब्याह करके ही आपने दम लिया था। जब तक वो आपको हासिल नहीं हुई, तब तक आपका चैन गुम रहा। उसे पा लेने के बाद भी आप उसके दीवाने रहे और रानी ताशा ने आपकी दीवानगी का फायदा खूब उठाया। किले के कर्मचारी उसकी मुट्ठी में आ चुके थे। कोई खबर आप तक नहीं पहुंचती थी। फिर आप पोपा का निर्माण करने के लिए चले गए। लम्बे वक्त तक आप पोपा के निर्माण में लगे रहे और रानी ताशा किले के सेनापति धोमरा के साथ मौजों में लगी रही। किले के लोगों का मुंह रानी ताशा ने बंद कर दिया था तो महापंडित आपको हकीकत बता सकता था, लेकिन वो भी चुप रहा।"

"अच्छा।" देवराज चौहान ने दिलचस्पी-भरे स्वर में कहा—"तब तुम कहां थे?"

"मैं तो आपके साथ ही पोपा (अंतरिक्ष यान) के निर्माण में लगा हुआ था।" बबूसा का सुनाई देने वाला स्वर शांत था—"आप मुझे अपना पता बता दीजिए। मैं मिलकर आपको हर बात का यकीन दिला दूंगा। अगर रानी ताशा इस ग्रह पर आ पहुंची और आपने उसे देख लिया तो मुझे डर है कि आप उसके रूप के दीवाने न हो जाएं। वो आपको वापस सदूर ग्रह पर ले जाएगी।"

"और तुम चाहते हो कि मैं वापस न जाऊं।" देवराज चौहान मुस्कराया।

"नहीं राजा देव। मैं ऐसा नहीं चाहता। मुझे तो बहुत खुशी होगी कि आप वापस अपने ग्रह पर चलें और वहां की जनता को संभालें। आप

जनता को खुश रखते हैं। परंतु मेरा इरादा ये है कि रानी ताशा अपनी खूबसूरती की वजह से सफल न हो सके। जो भी फैसला हो, आप होशो-हवास में लें। रानी ताशा अगर जबर्दस्ती आपको पोपा में बैठाकर, वापस ग्रह पर ले जाना चाहेगी तो मैं ये नहीं होने दूंगा। मैं चाहता हूं आपको सब कुछ याद आ जाए कि रानी ताशा ने आपके साथ क्या किया था। उसके बाद ही आप जो फैसला लेना चाहें, लें। मैं हर कदम पर आपके साथ हूं। बबूसा आपका सेवक है और हमेशा खास सेवक रहेगा। मुझ पर आप पूरा भरोसा...ओह...अभी मुझे जाना होगा राजा देव। कोई दरवाजे पर है। क्षमा चाहता हूं, पर मुझे जाना होगा...।”

उसके बाद बबूसा की आवाज नहीं आई।

देवराज चौहान इंतजार करता रहा, उसकी आवाज का।

परंतु दोबारा कुछ भी सुनाई नहीं दिया।

सिर घूम चुका था देवराज चौहान का उस बबूसा की बातें सुनकर। वो नजर नहीं आ रहा था। उसकी आवाज सुनाई दे रही थी। वो उसका पता पूछ रहा था, उसके पास आना चाहता था। क्या मालूम वो किस इरादे से उसके करीब आने की कोशिश में है। देवराज चौहान किसी नई मुसीबत को सिर पर लेने के पक्ष में नहीं था। वो उसके पूर्वजन्मों से भी पूर्व जन्म की बात कर रहा था कि वो किसी सदूर ग्रह का राजा था। रानी ताशा, महापंडित...देवराज चौहान ने आगे सोचना बंद कर दिया। उसे किसी भी बात पर भरोसा नहीं था, न ही बबूसा के व्यक्तित्व पर भरोसा था। वो इतना जानता था कि बबूसा की बातें महज बकवास थी। यकीन करने लायक कुछ भी नहीं था।

परंतु कुछ बात तो थी।

देवराज चौहान की सोचों को झटका लगा।

वो दिख नहीं रहा था। उसके कथन के मुताबिक वो कहीं और समाधि में था। परंतु वो उसके पास बातें कर रहा था। उसने कहा था कि उसकी गंध से उसने उसे ढूंढ़ लिया है।

देवराज चौहान के चेहरे पर उलझन ही उलझन दिखाई देने लगी। रानी ताशा के बारे में सोचा, लेकिन इस बारे में हर तरफ उसे कोहरा ही दिखा। रानी ताशा का नाम उसने कभी सुना ही नहीं था और बबूसा का कहना था कि वो उसके रूप का दीवाना था। वो सदूर ग्रह की सबसे खूबसूरत युवती थी। बकवास—वो ऐसी किसी बात को नहीं मानता। बबूसा बे-सिर-पैर की बातों में उलझाकर जाने क्या चाहता था। पिछले अट्ठाइस सालों से किसी महापंडित की दो शक्तियां उस पर नजर रखे हुए हैं। ऐसा कभी भी नहीं हो सकता।

देवराज चौहान ने सिर झटककर इन सोचों से अपने को दूर किया।

परंतु सोचें थी कि फिर सिर पर सवार हो गईं।

रानी ताशा पोपा पर सवार होकर आ रही है। अंतरिक्ष यान को बबूसा पोपा कहकर बुला रहा था। ये भी कहा कि पोपा उसने बनाया था। पता नहीं क्या-क्या कहा उसने। ये सब बातें देवराज चौहान ने दिमाग से निकाल फेंकने की कोशिश की, परंतु सफल होता नहीं दिखा। रानी ताशा का चेहरा देखते ही उसे अपना वो जन्म, वो वक्त याद आना शुरू हो जाएगा। वो उसे वापस अपने ग्रह पर ले जाना चाहेगी। साथ में डोबू जाति के योद्धा होंगे जो जरूरत पड़ने पर उसके साथ जोर-जबर्दस्ती भी कर सकते हैं।

'बेकार की बातें हैं। ऐसा कुछ भी नहीं है और न ही होगा।' देवराज चौहान बड़बड़ा उठा।

▭ ▭

समाधि लगाए वो युवक और कोई नहीं बबूसा ही था।

एकाएक बबूसा ने आंखें खोल दीं। आंखों में तीव्र चमक मौजूद थी। चेहरे पर चैन के भाव थे फिर उसने समाधि की मुद्रा को तोड़ा और खड़ा हो गया।

तभी पुनः दरवाजा थपथपाया गया।

अंडरवियर पहने ही वो दरवाजे की तरफ बढ़ा और दरवाजा खोला। सामने वेटर खड़ा था।

रोज ये ही वेटर बबूसा को नाश्ता कराता था। दोनों में दोस्ताना भाव पैदा हो चुके थे। तीन महीने से बबूसा इसी होटल के कमरे में रुका हुआ था। ऐसे में स्टाफ से बढ़िया पहचान हो जाना मामूली बात थी।

"गुड मॉर्निंग साहब जी।" वेटर मुस्कराकर बोला—"आज आप नाश्ते में लेट हो गए।"

बबूसा शांत भाव में मुस्कराया, फिर बोला।

"ले आओ।"

"क्या लाऊं आज?"

"अपनी पसंद से, रोज की तरह का बढ़िया नाश्ता ले आओ।" बबूसा ने कहा।

"ठीक है साहब जी। लाता हूं।" वेटर सिर हिलाकर चला गया।

बबूसा ने दरवाजा बंद किया। चेहरा शांत और सपाट था। आगे बढ़कर एक तरफ रखी कमीज और पैंट पहनने लगा। अब उसके चेहरे पर सोचें आ गई थीं।

'राजा देव।' बबूसा बड़बड़ा उठा—'मैं आपको ढूंढ़ निकालूंगा। आप मुझसे छिप नहीं सकते। महापंडित की दी कई शक्तियां हैं मेरे पास। मैं सब शक्तियों का इस्तेमाल करूंगा, आप तक पहुंचने के लिए। इससे पहले कि रानी ताशा आप पर अपनी खूबसूरती का जाल फेंके और आप मदहोश हो जाएं, मैं आप तक पहुंच जाऊंगा।"

▭ ▭

हिमाचल प्रदेश का सबसे ऊंचा इलाका—लाहुल स्पिति!

साल के बारहों महीने हर तरफ बर्फ ही बर्फ पड़ी नजर आती थी। बर्फ से ढकी पहाड़ों की चोटियां और पहाड़। बर्फ गिरने के सीजन में तो पेड़ भी बर्फ से ढक जाते थे। रास्तों पर भी बर्फ ही बर्फ दिखती थी। यातायात पूरी तरह ठप्प पड़ जाता था। अन्य शहरों से लाहुल स्पिति का इलाका कट जाता था। यूं भी लाहुल स्पिति का इलाका पहाड़ों पर बसा होने की वजह से दुनिया से कटा-सा ही रहता था। इसके एक तरफ चीन, तिब्बत लगते थे तो दूसरी तरफ जम्मू और कश्मीर का इलाका लगता था। जम्मू-कश्मीर का ऐसा इलाका, जहां बसता कोई नहीं था। वहां बर्फ और सर्दी ही इतनी ज्यादा थी कि, किसी के बसने का कोई मतलब नहीं था। मीलों तक जम्मू-कश्मीर का वो इलाका वीरान ही दिखता था। हर तरफ बर्फ की सफेदी ही नजर आती थी। जम्मू-कश्मीर ही नहीं, लाहुल स्पिति की सीमा वाले इलाके का भी कुछ ऐसा ही हाल रहता था। वहां से लाहुल स्पिति की आबादी मीलों दूर थी। अलबत्ता सैलानियों के लिए, ट्रेकिंग (खेल) के लिए, वो जगह मशहूर मानी जाती थी। कोई आबादी नहीं, हर तरफ बिछी बर्फ की मोटी चादर और पहाड़ों के रास्ते, ट्रेकिंग के लिए वो जगह बेहद सफल थी। इस इलाके में आ जाने का मतलब था दुनिया से अलग हो जाना। आप पर कोई भी मुसीबत आए, कोई सहायता नहीं मिल सकती। मोबाइल काम नहीं करते। वाहन नहीं पहुंच सकते। सिर्फ हैलीकॉप्टर की पहुंच यहां तक थी।

हिमाचल रोडवेज की वो नीली और पीली बस, जो कि इस वक्त बुरी हालत में लग रही थी, वो सड़क के बीचोबीच मध्यम रफ्तार से आगे बढ़ी जा रही थी। वो नाम की ही सड़क थी। सड़क के दोनों तरफ बर्फ गिरी हुई थी। बीच में इतनी ही जगह थी कि बस के टायर आ सकें। सड़क भी ऊबड़-खाबड़ और बुरे हाल थी। रह-रहकर खड्डों में बस उछल रही थी। ऐसा सफर करना खुद को मुसीबत में डालने जैसा था। परंतु सफर भी तो करना था लोगों को। बस किओमो नाम के कस्बे से टाकलिंग ला की तरफ जा रही थी। टाकलिंग ला, जो कि लाहुल स्पिति का सीमा के पास का आखिरी छोटा-सा कस्बा था। उसके बाद आबादी खत्म हो जाती

थी। और कई मील दूर, जम्मू-कश्मीर की सीमा शुरू हो जाती थी और ये कई मील बिल्कुल वीरान थे। घने जंगल थे जो कि बर्फ से घिरे थे। अंजान रास्ते थे कि एक बार जो भटक जाए फिर उसका सीधे रास्ते पर आना असम्भव था। कई जगह तो बर्फ के ऐसे-ऐसे गहरे गड्ढे थे कि ऊपर बर्फ की सतह पड़ी रहती। उस पर पांव रखा तो सीधे गहरे गड्ढे में और खेल खत्म। इस तरफ कोई नहीं आता था। यहां तक कि स्थानीय लोग भी नहीं आते थे। यहां इन्हें एक ही काम पड़ता था, जंगल से लकड़ियां लाने का काम कि चूल्हा जला सकें। खाना बना सकें।

इस काम के लिए आठ-दस लोग दल बनाकर ही इधर आते थे ताकि उन्हें एक-दूसरे का सहारा रहे। टाकलिंग ला कस्बे के लोगों का रोजगार धान की खेती, सब्जियां उगाना और गाय-भैंसों का दूध निकालकर, सुबह की बस से किओमो जाना और वहां बेचकर, कुछ पैसे कमा लाना। इसी तरह ये सब्जियां-चावल बेचते थे। ऐसी सर्दी में इनके लिए मांस खाना जरूरी हो जाता था तो ये बर्फीले जंगल में जाकर किसी-न-किसी जानवर का शिकार कर लाते। जैसे-तैसे टाकलिंग ला कस्बे के लोग अपना गुजारा कर रहे थे। इस तरह जीने की आदत पड़ चुकी थी इन्हें। मात्र एक हजार रुपया भी इनके लिए बड़ी अहमियत रखता था। यहां कुछ घर ही पक्के थे, नहीं तो हर तरफ झोंपड़ियां ही नजर आती थीं। परंतु झोंपड़ियां बेहद मजबूत और भीतर से गर्म रखने वाली थीं। दो-तीन-चार-चार कमरों वाली झोंपड़ियां। जिनकी दीवारें तो पहाड़ी पत्थरों की थीं और छत पर मजबूती से काम किया हुआ था कि अक्सर पड़ने वाली बर्फ और वर्षा उनका कुछ न बिगाड़ सके।

धरा पंचल हिमाचल रोडवेज की इसी नीली-पीली बस में किओमो से टांकलिंग ला के लिए बैठी थी। ढाई घंटे के इस सफर में धरा का बुरा हाल हो गया था। हाल तो उसका चार दिन से बुरा था। चार दिन से पहाड़ी सफर बसों पर तय करती वो टांकलिंग ला तक पहुंची थी।

सप्ताह-भर से वो सफर ही कर रही थी। मुम्बई से चली थी वो। तीन दिन उसे हिमाचल पहुंचने में लगे। तब वो मात्र छः घंटों के लिए एक होटल के कमरे में सोई थी और अगले दिन सुबह उसने सफर शुरू कर दिया था उसकी मंजिल लाहुल स्पिति का ये कस्बा टाकलिंग ला था। सामान के नाम पर उसके पास नीले रंग का बड़ा-सा बैग था। जिसे हाथ में भी पकड़ा जा सकता था और पीठ पर भी लादा जा सकता था। तब उसने राहत की सांस ली जब बस के कंडक्टर को कहते सुना कि टाकलिंग ला आ गया है। फिर कुछ देर बाद बस सड़क से उतरकर छोटे-से मैदान पर जाकर रुक गई।

वहां दो दुकानें बनी हुई थीं। एक रोटी का ढाबा और चाय मिलने की दुकान थी। दूसरी पान-सिग्रेट की दुकान थी। ये था टाकलिंग ला का बस अड्डा। वहां पर दूसरी कोई बस नहीं थी। इस बस में पच्चीस के करीब स्थानीय सवारियां थीं। वे सब नीचे उतरे और अपने-अपने रास्ते पर बढ़ गए। कुछ ने बस की छत पर लगे कैरियर पर बोरियों में सामान रखा हुआ था। वो लोग अपने सामान को उतारने के लिए बस की छत पर चढ़ने लगे।

धरा बैग कंधे पर फंसाए, बस से उतरी और ठिठकी-सी, हर तरफ नजर दौड़ाने के बाद उस दुकान पर जा पहुंची जहां रोटी और चाय मिलती थी। वहां चालीस वर्ष का एक व्यक्ति मौजूद था।

"भैया।" धरा बोली—"यहां रहने की जगह और गाईड कहां पर मिलेगा?"

"बस्ती में चली जाओ।" उसने कहा।

"किस तरफ?"

"अभी-अभी जिधर लोग गए हैं, इस तरफ।" उसने एक तरफ इशारा किया।

"शुक्रिया।" धरा ने कहा और बैग संभाले उसी तरफ बढ़ गई। हर तरफ बर्फ से ढकी चोटियां नजर आ रही थीं। आसपास भी बर्फ गिरी हुई थी। मध्यम-सी धूप निकली हुई थी। धरा को सर्दी महसूस हो रही थी। जींस की पैंट और कमीज के ऊपर तीन दिन पहले खरीदा पतला-सा काला स्वैटर पहन रखा था। जो कि यहां की ठंड को रोकने के लिए नाकाफी था। धरा 24 साल की युवती थी। सांवले रंग की खूबसूरत युवती थी। एक निगाह देखने पर महसूस हो जाता था कि उसके जीवन में भरपूर उत्साह है और वो कुछ करने की तमन्ना रखती थी। खूबसूरत वादियों के नजारों को देखती धरा, बैग को कंधे पर लादे उस पतली-सी पगडंडी पर आगे बढ़ी जा रही थी। आगे जाकर ढलान भी आई, सीढ़ियां भी आईं और चढ़ाई भी आई। पंद्रह मिनट बाद लोगों के रहने वाले मकान-झोंपड़ियां दिखने लगीं। पक्के मकान थे, कच्चे मकान थे और बड़ी-बड़ी झोंपड़ियां थीं। सब अलग-अलग बने थे। कहीं-कहीं पर कुछ झोंपड़ियां इकट्ठी भी थीं। धरा को खेत भी दिखे और वहां काम करते लोग भी नजर आए। तभी एक बहुत बड़ा बादल जमीन को छूता चला गया। आस-पास कोहरा छा गया। धरा को दिखना भी बंद हो गया तो वो ठिठक गई।

बादल रूपी कोहरा छंटा तो धरा पुनः आगे बढ़ने लगी। मजेदार मौसम था। धरा का दिल खुश हो गया था यहां आकर, परंतु वो अपने

काम के सम्बंध में सोच रही थी कि वो हो पाएगा या नहीं? जिसके लिए यहां आई है। इतना लम्बा सफर तय किया है। धीरे-धीरे धरा टाकलिंग ला की बस्ती में आ पहुंची थी। रास्ते में जो भी स्थानीय व्यक्ति या महिला मिलती, उसे गहरी निगाहों से देखती। किसी बाहरी व्यक्ति का टाकलिंग ला आना नई बात नहीं थी ट्रेकिंग के लिए लोग यहां आते रहते थे। गांव में किसी के घर में पैसे देकर ठहरते। गांव वालों में से कोई पैसा कमाने की खातिर, उनका गाइड बन जाता। इससे अच्छी कमाई हो जाती थी। कई गांव वालों ने तो ऐसे लोगों के लिए अलग से झोंपड़ियां बना रखी थीं। तभी धरा ने सामने से आते एक आदमी से पूछा।

"यहां रहने के लिए जगह कहां मिलेगी?"

"जगह है, मेरे झोंपड़े में एक कमरा खाली है।" वो बोला—"पचास रुपए रोज के देने होंगे।"

"ठीक है।" धरा सिर हिलाकर बोली।

"अकेली हो?"

"हां।"

"ट्रेकिंग के लिए तो लोग दो-तीन-चार के ग्रुप में आते हैं। लाओ, बैग मुझे दे दो।"

धरा उसे बैग देते बोली।

"मैं ट्रेकिंग के लिए नहीं, घूमने आई हूं।"

"आओ मेरे साथ।" बैग थामे वो धरा से बोला—"तुम्हारा नाम क्या है?"

"धरा।"

दोनों बस्ती की तरफ बढ़ गए।

"खाना भी खाओगी।"

"हां—तो?"

"उसके पैसे अलग से देने होंगे। सौ रुपए रोज के।"

"ठीक है। मैं दूंगी।"

"खाने में मीट भी मिलेगा और रोटी-सब्जी भी। जो भी तुम चाहो, वो मिल जाएगा।"

"रोटी-सब्जी खाऊंगी।"

"मिल जाएगी। मेरा नाम संतराम है और मेरी पत्नी का नाम बीना है। बच्चे भी हैं तीन।"

"यहां कब से रह रहे हैं आप?"

"मैं तो पैदा ही यहीं पर हुआ था।" संतराम मुस्कराकर बोला।

एकाएक आसमान पर काले बादल उमड़े और तेज हवा के साथ बरसात होने लगी। बीच-बीच में बादलों की जबर्दस्त गर्जना भी हो रही थी। कभी-कभी तो धरती कांपती लगती। दिल दहल-सा जाता। परंतु बरसात शुरू होने से पहले ही धरा, संतराम के साथ उसके घर पहुंच गई थी। वह संतराम की बीवी वीना से मिली जो कि चालीस-बयालीस साल की थी। तीन बच्चे थे। दो लड़के और एक लड़की। जो कि अट्ठारह साल की थी। झोंपड़े में आराम की हर चीज मौजूद थी। बरसात होने के साथ ही वातावरण में ठंडक-सी बढ़ गई थी। बीना ने धरा को गर्म मसाले वाली चाय बनाकर दी। तब तक मिलने-मिलाने की रस्म पूरी हो गई थी। बच्चे पुनः अपने-अपने कामों में व्यस्त हो गए थे। धरा ने चाय का घूंट भरा तो बीना बोली।

"कब तक रुकेंगी आप?"

"कई दिन लग सकते हैं।" धरा ने कहा—"मुझे आप न कहें, अपनी छोटी बहन समझकर बात करें।"

बीना जवाब में मुस्कराकर रह गई।

धरा ने संतराम को देखकर कहा।

"मुझे यहां घूमने के लिए गाईड की जरूरत है, जो मेरी मनचाही जगह तक मुझे ले जा सके।"

"मैं हूं।" संतराम ने कहा—"मैं आपको हर जगह घुमा दूंगा।"

"हर जगह?" धरा ने संतराम की आंखों में झांका।

"हां-हां, मैं यहां के सब रास्ते जानता हूं। यहीं का तो हूं मैं। कई लोगों के लिए गाईड का काम कर चुका हूं। एक दिन का दो सौ रुपया लूंगा। सब जगह अच्छी तरह घुमा दूंगा।"

"मैंने सुना है यहां कहीं डोबू जाति है।" धरा बोली।

संतराम बुरी तरह चौंका।

बीना ने फौरन संतराम को देखा।

धरा उन दोनों के चेहरों के भावों को महसूस कर चुकी थी।

"कौन हो तुम?" संतराम ने गम्भीर निगाहों से उसे देखा।

"मैं धरा हूं।" धरा ने मुस्कराने की चेष्टा की।

"डोबू के लोगों से तुम्हारा क्या मतलब? यहां आने वाले लोग उनके बारे में बात नहीं करते। तुम तो घूमने आई हो।"

"मैं सरकारी नौकर हूं और पुरातत्त्व विभाग के ऐसे विभाग से मेरा सम्बंध है जो हिन्दुस्तान में अभी तक बसी पुरानी जनजाति पर रिसर्च करता है। उन्हें तलाश करता है। उनसे सम्पर्क बनाने की चेष्टा करता है

और उसके बाद उन लोगों को किसी तरह अपनी दुनिया में शामिल करने की चेष्टा करता है।"

"तो तुम डोबू जाति के लिए यहां आई हो?"

"हां। मुझे कुछ ऐसा मिला कि पता चला इस तरफ कहीं डोबू जाति बसती है। मैं इस बारे में यकीन कर लेना चाहती हूं। जब मुझे यकीन हो जाएगा तो मेरे खबर करने पर, मेरे विभाग के और लोग भी यहां आ जाएंगे। यूं समझो कि अभी मैं जांच-पड़ताल करने आई हूं।" धरा ने संतराम और बीना को देखते हुए शांत स्वर में कहा।

संतराम ने व्याकुलता भरी निगाहों से धरा को देखा।

बीना खामोश बैठी रही।

धरा चाय का प्याला रखते हुए कह उठी।

"क्या बात है, आप इतने परेशान क्यों हो गए?"

"तुम्हारा साथ कोई नहीं देगा।" संतराम ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्यों?"

"डोबू जाति का नाम हमने भी सुन रखा है, परंतु कोई नहीं जानता कि वो कहां हैं। हम लोग उस तरफ कभी नहीं जाते।"

"किस तरफ?" धरा ने फौरन कहा।

"जिधर डोबू जाति के होने के बारे में सुनने में आता है। वहां से कोई जिंदा नहीं लौटता, कोई उधर पहुंच जाए तो...।"

"मैं वहां जाना चाहती हूं।"

"मैं नहीं जानता कि डोबू जाति कहां पर रहती है।"

"तुम जानते हो।"

"नहीं जानता। सच में नहीं जानता।"

"तो कौन जानता है। कोई तो यहां होगा जो डोबू जाति के बसने की जगह जानता...।"

"मुझे कुछ नहीं पता।" कहने के साथ ही संतराम उठ खड़ा हुआ।

बाहर तेज बरसात लगी थी। बादल गर्ज रहे थे। बिजली चमक रही थी।

"आप इसे जोगा भाई साहब से मिलवा दो।" खामोश बैठी बीना कह उठी।

"तुम समझती नहीं।" संतराम ने झल्लाकर कहा—"जोगाराम भी उधर नहीं जाएगा।"

"आपने ही तो बताया था कि दो-तीन साल पहले कुछ लोगों को लेकर जोगा भाई साहब उस तरफ गए...।"

"जोगाराम उन्हें दूर से ही रास्ता बताकर वापस आ गया था, परंतु वो

लोग कभी वापस नहीं लौटे। जोगाराम जानता है कि उधर जाने में कितना खतरा है। वो—वो नहीं जाएगा उधर।"

"जोगाराम है कौन?" धरा ने पूछा।

"जोगा भाई साहब इसी बस्ती के हैं और वो डोबू जाति के बारे में काफी कुछ जानते हैं, परंतु इस बारे में किसी से बात भी नहीं करते। उनके अलावा शायद ही कोई हो जो डोबू जाति के रहने की जगह जानता हो। जोगा भाई साहब वहां तक का रास्ता जानते हैं। पर मुझे भी लगता है कि वो तुम्हारी बात मानेंगे नहीं।" बीना ने कहा।

"मुझे जोगाराम से मिलवा दो। मैं उससे बात करूंगी।" धरा ने दृढ़ता-भरे स्वर में कहा।

"इसे जोगा भाई साहब के घर ले चलो। बाहर से ही घर दिखा देना।" बीना ने संतराम से कहा।

"बरसात रुकने दो।" संतराम ने गम्भीर स्वर में कहा।

बीना ने धरा को देखकर कहा।

"खाओगी क्या, तुम्हारे आने तक मैं खाना तैयार कर लूंगी।"

"जो तुम लोग खाते हो, मीट-मांस के अलावा, मैं सब खा लूंगी।" धरा ने कहा और जेब से दो पांच सौ के नोट निकालकर बीना को थमाते कहा—"ये हजार रखो, अभी मैं यहीं रहूंगी। हिसाब बाद में कर लेंगे।"

▭ ▭

आधे घंटे में बरसात रुक गई थी। काले बादल आसमान से छंट गए थे। मौसम साफ हो गया था। अब सफेद बादल आसमान में तैरते दिखाई दे रहे थे और कुछ दूर बर्फ से ढके पहाड़, चांदी की तरह नजर आ रहे थे। ठंडी हवा चल रही थी। बरसात के पानी का कहीं भी नामोनिशान नहीं था। ये कस्बा पहाड़ पर बसा था और पानी हाथोंहाथ ही नीचे की तरफ बह गया था। जमीन अवश्य गीली नजर आ रही थी।

दोपहर के दो बज चुके थे।

बीना, धरा के साथ घर से निकली और पहाड़ की पगडंडियां तय करती आगे बढ़ गई।

धरा की आंखें मौसम का नजारा कर रही थीं।

"यहां रहना कितना अच्छा लगता होगा।" धरा बोली।

"बहुत मुसीबतें हैं। पहाड़ पर जीवन बिताना बहुत कठिन है।" बीना बोली—"खाने-पीने का सारा सामान तो नीचे से ही आता है। ऊपर से मौसम की मार। बर्फ पड़नी शुरू हो जाए तो और भी बुरा हाल हो जाता है। कई बार तो भूखे-प्यासे रहकर वक्त निकालना पड़ता है। सड़कें बंद हो जाती हैं। कोई पहाड़ गिर जाए तो और भी बड़ी मुसीबत। दो-चार

दिन के लिए यहां रहना बहुत अच्छा लगता है, जीवन काटना हो तो सब बुरा ही बुरा है। बीमार होने पर दवा नहीं मिलती। हाथ-पांव टूट जाएं तो किओमो दौड़ना पड़ जाता है, जबकि कमाई का यहां खास कोई साधन नहीं है। तुम जैसे लोग बस्ती में आ जाते हैं तो कुछ कमाई हो जाती है। आड़े वक्त के लिए पैसा रख लेते हैं। बच्चों को पढ़ाना हो तो स्कूल नहीं और...।"

"जोगाराम के बारे में बताओ।" धरा कह उठी।

"क्या बताऊं, भला चंगा इंसान है।"

"परिवार है उसका?"

"हां। पत्नी है, तीन बच्चे हैं, दो बच्चे तो यहां से दूर कहीं स्कूल में पढ़ते हैं। वहीं रहते हैं। जोगाराम के बाप के पास पैसा होता था, मुझे तो लगता है कि वो ही पैसा बैठा खा रहा है।" बीना ने बताया।

"कुछ काम तो करता होगा?"

"जो काम मिल जाता है, यहां के लोग कर लेते हैं। पर यहां तो बहुत कम काम ही होते हैं जिससे दो पैसे मिलें।"

पांच मिनट में ही बीना एक जगह रुकती बोली।

"वो रहा जोगाराम का मकान।" उसने एक तरफ इशारा किया।

धरा ने उधर देखा।

पहाड़ी पत्थरों का बना मकान दिखा। दो-तीन कमरे पक्के थे और साथ लगी झोंपड़ियों से भी कमरे डाल रखे थे। उसके आस-पास भरपूर खुली जगह थी, वो जगह कहीं पर ऊंची थी तो कहीं ढाल के रूप में। उधर कई पेड़ खड़े नजर आ रहे थे। धरा को वहां एक आदमी कुछ काम में व्यस्त दिखा।

"वो जोगा भाई साहब ही दिख रहे हैं शायद।" बीना ने कहा—"तुम बात कर लो, फिर आ जाना। तब तक खाना बन चुका होगा।" कहने के साथ ही बीना पलटी और वापसी की तरफ बढ़ गई।

धरा उसी मकान की तरफ बढ़ गई।

पास पहुंची तो उस आदमी को स्पष्ट देखा।

वो पचपन-साठ साल का रहा होगा। सिर के ज्यादातर बालों में सफेदी थी। कुछ दाढ़ी बढ़ी हुई थी। कद छः फुट का रहा होगा। शरीर पर गर्म कमीज-पायजामा और ऊपर जैकिट पहन रखी थी।

वो गठे शरीर का मालिक लग रहा था। सख्त और मजबूत आदमी। रंग कुछ सांवला था पर चेहरे पर लाली थी। एक निगाह में ही वो पहाड़ी आदमी लगता था।

धरा गेट के रास्ते से भीतर प्रवेश कर गई।

वो मोटे तने से, कुल्हाड़ी से छोटी-छोटी लकड़ियां काट रहा था कि धरा को देखकर ठिठक गया।

"नमस्कार।" पास पहुंचती धरा हाथ जोड़ती मुस्कराकर कह उठी।

वो मुस्कराया। जिससे उसके चेहरे पर उम्र की लकीरें झलक उठीं।

"लगता है यहां आज ही पहुंची हो।" उसने कुल्हाड़ी एक तरफ रख दी।

"दो घंटे पहले। संतराम के यहां ठहरी हूं। उसने बताया आप यहां के सबसे बढ़िया गाईड हैं।"

"गाईड?" वो बोला—"बस, रास्तों की जानकारी है।"

"संतराम की पत्नी ने भी कहा कि जोगा भाई साहब से बढ़िया गाईड यहां पर कोई नहीं।"

"आजकल तो सब ही गाईड बनते जा रहे हैं।" जोगाराम पुनः मुस्कराया—"तुम ट्रेकिंग के लिए आई हो?"

तभी भीतर से औरत की आवाज आई और वो फिर दरवाजे पर दिखी।

"चाय तैयार हो गई है।" साथ ही औरत की निगाह धरा पर टिकी। "इस मेहमान के लिए भी चाय...।"

"हां-हां, आप भीतर तो आओ।" कहकर वो भीतर चली गई।

जोगाराम ने धरा से कहा।

"भीतर आ जाओ। चाय पी लेना। आज मौसम में कुछ ठंडक है, वरना इस मौसम को तो यहां की गर्मियां कहते हैं।"

▭ ▭

पंद्रह मिनट में ही धरा जोगाराम की पत्नी के साथ घुल-मिल गई थी। उसका नाम सुनीता था। उनकी बातों के दौरान जोगाराम के बोलने की गुंजाइश नहीं थी। ऐसे में जोगाराम उठकर बाहर निकल गया था। सुनीता ने उसे अपना सारा घर दिखाया तो जोगाराम का चौदह साल का बेटा सुनील एक कमरे में लकड़ियों से कुछ बनाता दिखा। धरा ने उससे भी बात की। सुनीता ने बताया कि उसका पास और बेटी किओमो के पास किआटो नाम की जगह में अपनी मासी के पास रहकर पढ़ते हैं और उनको पढ़ाने का खर्चा हम देते हैं। उनकी स्कूल की पढ़ाई समाप्त हो गई है और वे दोनों काजा (जगह का नाम) जाकर कॉलेज में पढ़ना चाहते हैं, परंतु पास में पैसा न होने की वजह से उन्हें आगे नहीं पढ़ा पा रहे और उन्हें इतनी पढ़ाई के दम पर ही, कोई अच्छी नौकरी कर लेने को कहा है।

"कॉलेज में पढ़ने के लिए कितना खर्चा होगा दोनों का?" धरा ने पूछा।

"कम-से-कम दस लाख। ढाई-ढाई लाख तो कॉलेज में एडमिशन के

लग जाएंगे। इंजीनियरिंग कॉलेज है वो। उसके बाद उनकी दो-दो साल की फीस मिलाकर, दस लाख तो लगेंगे ही। हमारे पास जितना पैसा था, हमने वो सब बच्चों की पढ़ाई पर लगा दिया। चाहते हुए भी हम उन्हें और नहीं पढ़ा सकते।"

धरा को पता चला कि बेटा और बेटी दोनों जुड़वा हैं।

उसके बाद धरा बाहर चली आई।

जोगाराम पेड़ के तने से कुल्हाड़ी से छोटी-छोटी लकड़ियां निकाल रहा था।

"ये लकड़ियां चूल्हा जलाने के लिए?" धरा ने पास पहुंचकर बोला।

"हां।" जोगाराम ने मुस्कराकर धरा को देखा—"छोटे-छोटे टुकड़े करके, पीछे झोंपड़े के कमरे में रख देंगे कि गीले न हो। उसके बाद ये चूल्हे में काम आती रहेंगी।"

"आपके घर आकर मुझे बहुत अच्छा लगा।"

जोगाराम मुस्कराया।

"मुझे आप जैसे गाइड की जरूरत है।" धरा मतलब की बात पर आती बोली।

"ट्रेकिंग का सारा सामान लाई हो? साथ में और कितने लोग हैं?" जोगाराम ने पूछा।

"मैं ट्रेकिंग के लिए नहीं, घूमने आई हूं।" धरा की नजर जोगाराम के चेहरे पर थी।

"कहां-कहां घूमना चाहती हो?"

"हर उस जगह, जो घूमने के काबिल हो।"

"घुमा दूंगा। जब भी चलना हो बता देना। कितने लोग हो तुम सब?"

"सिर्फ मैं। मैं अकेली हूं।"

जोगाराम की निगाह धरा पर जा टिकी।

"हैरानी है कि इतनी दूर अकेली आई हो। बता देना जब भी घूमने निकलना हो। बर्फ के पहाड़ों पर जाना है?"

धरा चुपचाप खड़ी रही फिर बेहद शांत स्वर में बोली।

"डोबू जाति के यहां जाना है।"

जोगाराम के जिस्म में हल्का-सा कम्पन उभरा फिर थम गया। नजरें धरा पर थीं।

"उन्हें करीब से देखना चाहती हूं। उन्हें समझना चाहती...।"

"ये कौन-सी जाति है?" जोगाराम के चेहरे पर अब किसी तरह का भाव नहीं था।

"डोबू जाति। प्राचीन जातियों में से बची जातियों में से एक जाति है

और मेरी जानकारी के मुताबिक डोबू जाति की तरफ जाने का रास्ता यहां से, इसी तरफ से जाता है।" धरा उसे देखती बोली।

"मैंने तो इस बारे में कभी नहीं सुना।" जोगाराम ने भावहीन स्वर में कहा।

धरा कुछ पल उसे देखती रही फिर मुस्कराकर बोली।

"मैंने अच्छी तरह सुन रखा है जोगाराम जी। आपने भी जरूर सुना होगा।"

"मुझे जानकारी नहीं है इस बारे में।" जोगाराम ने कुल्हाड़ी को तने के ऊपर रखा और कमरे की तरफ जाने को हुआ।

"डोबू जाति तक मुझे पहुंचाने के लिए अगर आप तैयार हो जाते हैं तो पच्चीस हजार रुपए दूंगी।" धरा बोली।

"इतना पैसा कमाकर मुझे बहुत खुशी होती, पर मैं अभी तक नहीं समझ पाया कि तुम कहां जाना चाहती हो। किसकी बात कर रही हो। मैं तो समझा था कि तुम यहां बर्फ और यहां की वीरानी जगहों का मजा लेने आई हो। एडवेंचर शौकीन हो। परंतु तुम तो जाने किसकी बात कर रही हो।" कहकर वो कमरे की तरफ बढ़ गया।

धरा वहीं खड़ी उसे देखती रही।

जोगाराम कमरे के खुले दरवाजे से भीतर जा चुका था।

धरा चंद पल वहीं रुकी रही फिर वापस चल पड़ी। वो सब समझ रही थी कि जोगाराम डोबू जाति के बारे में बात भी नहीं करना चाहता। उसकी मौजूदगी को भी मानना नहीं चाहता। उसके सामने अंजान बन रहा है तो ये तो उसे डोबू जाति तक ले जाने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं होगा। मुम्बई से चलते वक्त उसने सोचा भी नहीं था कि यहां पर उसे इस तरह की समस्या का सामना करना पड़ेगा। धरा ने मन-ही-मन तय किया कि वो कोई दूसरा आदमी (गाईड) तलाश करेगी। संतराम से इस बारे में बात करेगी।

▭ ▭

धरा, संतराम के झोंपड़े पर पहुंची तो बीना ने खाना तैयार कर रखा था। धरा को भूख लगी थी। सुबह नाश्ते में भी किओमो से चलते वक्त कुछ खास नहीं खाया था। तब संतराम घर पर नहीं था। धरा ने खाना खाया, तब तक संतराम भी आ गया। खाने से फारिग हुई तो संतराम ने ही बात शुरू की।

"जोगाराम से बात हुई?"

"वो तो इस बात को ही मानने को तैयार नहीं कि कहीं डोबू जाति है।" धरा बोली।

संतराम के चेहरे पर गम्भीरता आ गई।

"तुम्हें पहले ही कहा था कि उधर कोई नहीं जाएगा।" बीना बोली।

"क्यों?"

बीना की निगाह, संतराम की तरफ उठी।

संतराम खामोश रहा।

"मैं इस काम के लिए पच्चीस हजार रुपया देने को तैयार हूं।" धरा ने कहा।

"मुझे कुछ मत कहो।" संतराम ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैं डोबू जाति की तरफ का रास्ता नहीं जानता। मैंने उस बारे में सिर्फ किस्से-कहानियां ही सुनी हैं। इतना ही जानता हूं कि वो जगह खतरनाक है। रहस्यमय है। उस तरफ जो भी चला जाता है वो कभी भी जिंदा वापस नहीं लौटता। कभी बस्ती के छः-सात युवक डोबू जाति को देखने गए थे। परंतु वो कभी भी वापस नहीं लौटे। मैं इस बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानता। आकाश में अजीब-सी बिजली चमकती देखी है अपने जीवन में। ऐसा लगता था जैसे कोई चीज नीचे उतरती हो। परंतु नजर कुछ नहीं आया था। ये सब डोबू जाति के ठिकाने की ही तरफ होते देखा था। गांव के बुजुर्ग बताते थे कि उस दिशा की तरफ डोबू जाति बसती है। परंतु कुछ नहीं पता। सब सुनी-सुनाई बातें हैं। लेकिन जोगाराम इस बारे में बहुत कुछ जानता है। सिर्फ वो ही डोबू जाति के बारे में सही-सही जानकारी रखता है। एक बार वो कुछ लोगों को लेकर उधर गया था। सुना था कि उसे बहुत बड़ी रकम दी गई थी। कुछ दिनों बाद जोगाराम तो लौट आया परंतु उसके साथ जाने वालों में से कोई न लौटा। उनका क्या हुआ, कुछ पता नहीं। तब जोगाराम भी डरा-डरा सा रहता था। दो महीने तो घर से नहीं निकला, फिर काजा चला गया और सेबों के बाग में काम करने लगा। इससे पहले जब जोगाराम पच्चीस साल का रहा होगा, वो डोबू बस्ती की तरफ गया था। ये बात मुझे इसलिए पता है कि तब मैं और जोगाराम दोस्त होते थे। वो मेरे को बता के गया था। तब पच्चीस दिन बाद लौटा। एकदम कमजोर हो गया था। उसने बताया कि भूखा रहना पड़ा कई दिन। खाने को कुछ नहीं मिला। कई दिन पहाड़ की खोह में छिपकर बिताए पर डोबू बस्ती के बारे में पूछने पर भी उसने कुछ नहीं बताया था। यही कहा कि बेकार में चला गया। अब कभी उधर नहीं जाएगा।"

"लेकिन दूसरी बार वो गया—तुमने बताया।"

"हां। दो साल पहले ही कुछ लोगों को लेकर गया था। बहुत ज्यादा पैसा मिला होगा तभी तो...।"

"ये बात तो मानने में नहीं आती कि इस बस्ती में सिर्फ जोगाराम

ही है जो डोबू जाति तक पहुंचने का रास्ता जानता है। और लोग भी तो होंगे जो...।"

"औरों के बारे में मैं नहीं जानता। कोई उस तरफ गया भी है तो मुझे पता नहीं। जोगाराम के बारे में तो इसलिए पता है कि उससे कभी-कभार दोस्तों की तरह बात हो जाती है, परंतु डोबू जाति के बारे में वो मेरे से भी ज्यादा बात नहीं करता।"

संतराम के चेहरे पर नजरें टिकाए, धरा कह उठी।

"डोबू जाति के लोग कभी इधर आते हैं?"

"कभी नहीं। मैंने तो अपने जीवन में उन्हें देखा नहीं। सुना भी नहीं कि डोबू जाति के लोगों को किसी ने देखा है। सिर्फ डोबू जाति का नाम ही सुना जाता है कभी-कभार कोई यूं ही बात छेड़ बैठता है, बस।"

"अगर मैंने वहां तक जाना हो तो कैसे जाऊं?"

"मेरे पास तो एक रास्ता था, जोगाराम। उससे तुम मिल आई हो। दूसरा कोई रास्ता मैं नहीं जानता।"

"तुम पता करो।"

"कोई फायदा नहीं होगा।" संतराम ने गम्भीर स्वर में कहा—"डोबू जाति के बारे में कोई बात भी नहीं करेगा। मेरे खयाल में तो तुम्हें वापस चले जाना चाहिए। डोबू जाति तक शायद तुम कभी न पहुंच पाओ।"

"क्यों दिल तोड़ते हो बेचारी का।" बीना कह उठी—"भगवान ने चाहा तो कोई रास्ता निकल ही आएगा।"

▭ ▭

अगले दो दिनों तक धरा टाकलिंग ला की पहाड़ी बस्ती में घूमती रही और लोगों से मिलती रही। डोबू जाति तक जाने के लिए, किसी गाईड को पूछती रही। परंतु कोई फायदा नहीं हुआ। लोगों ने उसकी बात में दिलचस्पी ही नहीं ली। ऐसा कोई सामने नहीं आया, जो डोबू जाति तक उसे ले जाने को कहे। एक-दो अलग-अलग लोगों ने उसके सामने जोगाराम का नाम अवश्य लिया कि शायद जोगाराम डोबू जाति का रास्ता जानता है।

दूसरे दिन की रात को सोते समय धरा सोच रही थी कि जोगाराम के बिना उसका काम नहीं चलेगा। जोगाराम को किसी तरह रास्ते पर लाना होगा। इसी उधेड़बुन में लगी धरा की आंख लग गई। अगले दिन सुबह जल्दी ही उठ गई। बीना को बताया कि किसी काम से किओमो जा रही है, शाम की बस से लौट आएगी। बीना ने नाश्ता बना दिया। जल्दी-जल्दी धरा ने नाश्ता किया और बस अड्डे जाकर, किओमो जाने वाली बस ले ली। किओमो आने के पीछे उसका मतलब ये ही था कि मुम्बई फोन कर

सके। टाकलिंग ला या उसके आस-पास कहीं भी फोन करने का इंतजाम नहीं था और वहां मोबाइल काम नहीं करते थे। ढाई घंटे में वो किओमो पहुंच गई और वहां से मुम्बई एसटीडी कॉल की। उसने चक्रवती साहब से बात करनी थी। उधर से चक्रवती साहब ने ही बात की। उसके मोबाइल पर ही फोन किया था धरा ने।

"हैलो।" चक्रवती की आवाज कानों में पड़ी।

"चक्रवती साहब।" मैं धरा—धरा पंचल...।"

"पहचान लिया। तुम टाकलिंग ला पहुंच गई क्या? कई दिन से तुम्हारा फोन नहीं आया। मैं चिंता में था कि...।"

"टाकलिंग ला में फोन का कोई इंतजाम नहीं है। ढाई घंटे का सफर तय करके मुझे किओमो आना पड़ा, फोन करने के लिए।"

"डोबू जाति के बारे में कुछ पता चला?"

"वो कागज सही थे। डोबू जाति टाकलिंग ला के आगे कहीं है। परंतु यहां के लोग डोबू जाति से दूर रहना पसंद करते हैं। डोबू जाति से इन लोगों का कोई वास्ता नहीं है। मुझे अभी तक एक ही आदमी मिला है जो डोबू जाति तक गया है या वहां का रास्ता जानता है। परंतु मेरे सामने वो इस बात से इंकार करता है। वो वहां जाने को तैयार नहीं।"

"क्या नाम है उसका?" उधर से चक्रवती साहब ने पूछा।

"जोगाराम।"

"उसे पैसे का लालच दो कि तुम्हें वहां तक ले जाए।"

"पच्चीस हजार कहा था, परंतु उसने परवाह नहीं की।"

"पचास हजार कहो। लाख कहो।"

"मुझे नहीं लगता कि वो इस तरह मानेगा।"

"तो?"

"उसका बेटा-बेटी किओमो में पढ़ रहे हैं और अब काजा के इंजीनियरिंग कॉलेज में एडमिशन लेना चाहते हैं। परंतु उसके पास पैसा नहीं है कि बच्चों को आगे पढ़ा सके। इसमें दस लाख का खर्चा है।"

"दस लाख?"

धरा रिसीवर थामे खामोश रही।

"तुम दो घंटे बाद फोन करना। मैं विभाग के एकाउंटेंट से पता करता हूं कि हमें इतना पैसा मिल सकता है या नहीं?"

"ठीक है।" धरा ने कहा और रिसीवर रख दिया। पैसे देकर दुकान से बाहर आ गई।

दो घंटे तक धरा घूमती रही किओमो की सड़कों पर। छोटा-सा पहाड़ी इलाका था। आस-पास दिखती बर्फ की चोटियां चमक रही थीं। वातावरण

में ठंडक थी। छोटे से बाजार की एक दुकान में बैठकर समोसे खाए और चाय पी।

दो घंटे बाद चक्रवती साहब को फोन किया।

"तुम्हें दस लाख मिल जाएगा धरा, परंतु काम भी होना चाहिए। डोबू जाति के बारे में हमें पूरी जानकारी चाहिए। उनसे सम्पर्क बन जाना चाहिए। इस जाति को हम सामान्य लोगों में शामिल कर पाए तो ये बहुत बढ़िया काम होगा हमारे विभाग का।"

"चक्रवती साहब, मैं कोशिश कर रही हूं आगे क्या होता है, ये तो वक्त ही बताएगा।"

"प्रकाश को तुम्हारे पास भेज दूं?"

"अभी नहीं। प्रकाश की जब जरूरत पड़ेगी, मैं बता दूंगी। पैसा कब मिलेगा मुझे?" धरा ने पूछा।

"जब मर्जी ले लो। वहां एकाउंट खुलवा लो मैं ट्रांसफर कर देता हूं।"

"इस वक्त तो दोपहर हो रही है। बैंक बंद हो रहे होंगे। मैं पता करती हूं, उसके बाद फोन करूंगी।"

"अब तो जोगाराम तुम्हें डोबू जाति तक ले जाने को मान जाएगा। दस लाख रुपया कम नहीं होता।"

"पता नहीं, बात करने पर ही पता चलेगा कि वो मानता है कि नहीं।"

▭ ▭

उस रात धरा किओमो में ही रही। बैंक में एकाउंट खुलवा लिया था। चक्रवती साहब ने दस लाख रुपया अगले दिन ट्रांसफर करना था जो कि अगले दिन हो गया। धरा वापस टाकलिंग ला अगले दिन दोपहर को पहुंची। बादल छाए हुए थे। हल्की-हल्की बौछारें पड़ रही थी। बीना उसे देखते ही कह उठी।

"शुक्र है तुम आ गईं। मैं रात भर तुम्हारा इंतजार करती रही। कल क्यों नहीं पहुंची?"

"काम की वजह से किओमो में ही रुकना पड़ा।" धरा ने मुस्कराकर कहा—"कुछ खाने को है?"

"सब तैयार है। रोटियां उतार देती हूं।"

धरा ने आराम से खाना खाया। संतराम दूसरे कमरे में अपने बेटे के साथ, लकड़ी का कोई ढांचा ठोक रहा था। धरा उससे मिल आई थी। वो बीना से बोली।

"मैं जोगाराम के घर जा रही हूं।"

"कोई मिला नहीं डोबू जाति की तरफ जाने वाला?"

"नहीं।"

धरा बाहर निकली और पगडंडी पर पांच-सात मिनट पैदल चलकर, जोगाराम के घर पर पहुंच गई। आज भी जोगाराम कुल्हाड़ी से वहां पड़े तने से छोटी-छोटी लकड़ियां काट रहा था। परंतु अब वो तना थोड़ा-सा रह गया था। हल्की-हल्की बूंदा-बांदी अभी भी हो रही थी उसने धरा को देखा और फिर अपने काम पर लग गया।

"नमस्कार।" पास पहुंचकर धरा ने मुस्कराकर कहा।

जोगाराम ने धरा को देखा और सिर हिला दिया।

"जब से आप से डोबू जाति की बात की है आप मेरे से उखड़-से गए हैं।" धरा ने कहा।

जोगाराम फिर से लकड़ियां काटने लगा।

"अपने बच्चों को पढ़ाकर आपने बहुत अच्छा काम किया है। उनकी जिंदगी बन जाएगी। मेरे खयाल में तो उन्हें आगे भी पढ़ाना चाहिए। दो-तीन साल वो और पढ़ गए तो बहुत अच्छी नौकरी पा लेंगे।"

जोगाराम चुप रहा।

"तीसरे बेटे को क्यों नहीं पढ़ाया?"

"उसके लिए पैसे नहीं बचे।" जोगाराम ने शांत स्वर में कहा।

"तो जिन्हें पढ़ाया है, उनकी पढ़ाई बीच में ही छुड़वा रहे हो।"

"पैसे खत्म हो गए हैं।" जोगाराम ने शांत निगाहों से धरा को देखा।

"सुनीता आंटी ने बताया था कि उन दोनों की पढ़ाई का दस लाख का खर्चा है। वो काजा के इंजीनियरिंग कॉलेज में एडमिशन लेना चाहते हैं। दस लाख काफी बड़ी रकम होती है। पर मैं तुम्हें दे सकती हूं कि बच्चों को आगे पढ़ा सको।"

कुल्हाड़ी तने पर रखकर जोगाराम, धरा को देखने लगा।

"तुम चाहो तो कल सुबह मैं तुम्हें दस लाख दे दूंगी। किओमो के बैंक में मैंने पैसा रखा हुआ है। तुम मेरे काम आओ, मैं तुम्हारे काम आऊंगी। ये तो तुम भी समझ रहे हो कि दस लाख रुपया कितना ज्यादा होता है और बिना किसी मतलब के किसी को नहीं दिया जाता। मेरा मतलब क्या है, तुम समझते ही हो जोगाराम। मुझे डोबू जाति तक जाना है। उस जाति के लोगों से मिलना है। उनके बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानकारी पानी है। उनसे मेल-जोल बढ़ाना है परंतु वहां तक तुम ही मुझे ले जा सकते हो। सोच लो, तुम्हारे बच्चे पढ़ जाएंगे। तुम मेरे लिए कुछ करो, मैं तुम्हारे बच्चों के लिए कुछ करूंगी। बाकी बात मैं तुम्हारी पत्नी से भीतर जाकर कर लेती हूं। अपनी पत्नी से भी सलाह कर लेना। ये तुम्हारे बच्चों के भविष्य का सवाल है। मुझे डोबू जाति के ठिकाने तक ले जाकर तुम अपने दो बच्चों का भविष्य संवार लोगे।" धरा ने कहा और मकान के दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

अगले दिन सुबह जोगाराम, संतराम के घर पहुंचा। धरा कुछ देर पहले ही सोई उठी थी और अब चाय का प्याला लेकर, बाहर खुले में ही कुर्सी पर बैठी यहां के बदलते मौसम को देख रही थी। इस वक्त सुहावना मौसम था। धरा ने बीना को कह दिया था कि नहाने के लिए, पानी गर्म कर दे। जोगाराम को उसने आते देख लिया था। धरा के मन में आशा जगी कि शायद दस लाख का, या बच्चों की पढ़ाई का असर जोगाराम पर हो गया है, तभी वो इधर आया है।

धरा कुर्सी से उठ खड़ी हुई।

जोगाराम बाहर ही गेट पर रुकते हुए गम्भीर स्वर में बोला।

"मैं तुमसे बात करना चाहता हूं।"

"अभी आऊं या नहाकर।" धरा ने पूछा।

"नहाकर आ जाना।" कहकर जोगाराम पलटा और चला गया।

एक घंटे बाद धरा नीली कमीज-सलवार पहने जोगाराम के घर जा पहुंची। उसके सिर के बाल अभी भी गीले थे। जोगाराम उसी पेड़ के तने पर बैठा था, जिसे वो कई दिनों से काटने पर लगा था। अब वो मात्र दो फुट का ही बचा था। पास में दो कुर्सियां पड़ी थीं। धरा गीले बालों को संभालती एक कुर्सी पर जा बैठी।

जोगाराम के चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी।

"कहो।" धरा बोली।

"मेरी पत्नी सोचती है कि बच्चे पढ़-लिख जाएंगे तो बहुत अच्छा होगा।" जोगाराम बोला।

"तुम्हें भी ऐसा ही सोचना चाहिए। बच्चों को पढ़ाओ। उनका दिल मत तोड़ो।" धरा गम्भीर-सी कह उठी।

"डोबू जाति में तुम्हारी क्या दिलचस्पी है?" जोगाराम के चेहरे पर बेचैनी आ ठहरी।

"मैं सरकारी नौकर हूं। मैं पुरातत्त्व विभाग के उस डिपार्टमेंट में काम करती हूं जिसका काम पुरानी जन-जातियों के साथ सम्पर्क बनाना, उन्हें उपहार देना, मेल-जोल बढ़ाना, दोस्ती करना और फिर धीरे-धीरे उन्हें अपनी दुनिया में शामिल कर लेना है। इसलिए हम आज भी उन जातियों को खोजते हैं जो दुनिया से कटकर अलग रहती हैं।" धरा ने बताया।

"डोबू जाति का कैसे पता चला?" जोगाराम का स्वर तीखा हो गया।

"कबाड़ी की दुकान से, एक विदेशी पर्यटक की लिखी किताब मिली, जिसमें डोबू जाति के बारे में बताया गया था कि वो आज भी इस तरफ

बर्फीले पहाड़ों पर, कहीं पर, बसती है। वो ही पता करने यहां आ गई।"

जोगाराम धरा को देखता रहा फिर बोला।

"तो तुम डोबू जाति की तरफ जाना चाहती हो।"

"हां।"

"कोई फायदा नहीं।" जोगाराम ने सख्त स्वर में कहा—"वो खूंखार लोगों की बस्ती है और बाहरी लोगों को अपने आस-पास देखते ही खत्म कर देती है। वो कुछ अजीब-से लोग हैं। वहां जो भी गया, वो कभी भी वापस नहीं लौटा। इस बात का मुझे पूरा भरोसा है कि अगर तुम उस तरफ गई तो जिंदा नहीं बच सकोगी।"

"मैं उन्हें संभाल लूंगी।"

"वहम में मत रहो। वो खूंखार लोग हैं। तुम अभी कुछ नहीं जानती उनके बारे में। वो अपनी दुनिया से कभी बाहर नहीं आते और बाहर वाले को अपने पास नहीं देखना चाहते। उनकी गतिविधियां रहस्यमय हैं। डोबू जाति अपने आप में रहस्य है। वहां एक-दूसरे की जान ले लेना मामूली बात है। वो लोग जबर्दस्त योद्धा हैं। वो अपना पूरा जीवन योद्धा बनने में लगा देते हैं। अपने हथियारों का वो खुद ही निर्माण करते हैं। जैसे कि तलवारें, बड़े-बड़े चाकू और भी पचासों तरह के हथियार...।"

"वो पूरा जीवन योद्धा बनने में लगा देते हैं।" धरा कह उठी।

"हां।"

"योद्धा बनकर क्या करते हैं। किससे लड़ते हैं वो?"

"मैं नहीं जानता। पर उस जाति की पढ़ाई-लिखाई सिर्फ योद्धा बनना ही है। जो योद्धा नहीं बन सकते, वो वहां के अन्य कामों को देखते हैं। उनकी अपनी देवी है, उसकी पूजा करते हैं वो। जहां वो रहते हैं, वहां आकाश में मैंने अपने जीवन में दो-तीन बार चमक होती देखी है। उस चमक को मैं आज तक नहीं समझ पाया।"

"मैं वहां जाना चाहूंगी।"

"मारी जाओगी।" जोगाराम ने सख्त स्वर में कहा।

"ऐसा कुछ नहीं होगा। मुझे वहां जाना ही है।" धरा बोली—"इस तरह की दो जातियों से मेरा वास्ता पड़ चुका है और मैंने उन्हें संभाल लिया था। औरतों को ये लोग ज्यादा शक से नहीं देखते और...।"

"तुम मेरी बात समझ नहीं पा रही।" जोगाराम खीझकर कह उठा—"डोबू जाति रहस्यमय है। ये लोग बाहरी लोगों के साथ नहीं बात करते। देखते ही उन्हें मार देते हैं। बहुत क्रूर हैं ये।"

"मेरी चिंता मत करो।" धरा मुस्करा उठी—"तुम दूर से ही मुझे बता देना कि वो लोग उस तरफ रहते हैं। मैं चली जाऊंगी। तुम दो दिन मेरा इंतजार करना, मैं न आई तो तुम वापस चले आना।"

जोगाराम होंठ भींचे धरा को देखता रहा।

"तुम इतनी ज्यादा चिंता क्यों कर रहे...।"

"तुम उनकी बस्ती भी नहीं देख सकती।" जोगाराम ने कहा।

"क्या मतलब?"

"वो लोग अपने रहने के ठिकाने पर पहरा रखते हैं। ये उनकी सामान्य क्रिया है। वो भूतों की तरह छिपकर पहरा देते हैं और तुम्हारी गर्दन उड़ जाने के बाद तुम्हें पता लगेगा कि तुम्हारी मौत हो गई। वो ऐसे खतरनाक शिकारी योद्धा हैं। अपने हथियार से गर्दन पलों में ही अलग कर देते हैं। इस कला में उन्हें महारत हासिल है। वो बे-आवाज पास पहुंच जाते हैं और उनकी सांसों की आवाज भी तुम नहीं सुन सकतीं। तुम्हें पता ही नहीं चलेगा कि तुम्हें क्या हो गया है। गर्दन अलग हो चुकी होगी तुम्हारी। एक बार वो शिकार को देख लें तो, फिर वो जिंदा नहीं रह सकता। वो उसका अंत तक पीछा करते हैं और उसे मारकर ही दम लेते हैं। डोबू जाति का एक योद्धा हम बीस लोगों पर भारी पड़ता है और सबको मार देता है। वो बात नहीं करते। सीधा गला काटते हैं। अचानक सामने आकर वार करते हैं। तुम ये भी नहीं देख सकती कि वो कहां रहते हैं। उससे पहले ही वो तुम्हें खत्म कर देंगे।"

धरा जोगाराम के चेहरे को देखती रही फिर कह उठी।

"तुम मुझे डराना चाहते हो कि मैं वहां न जाऊं?"

"तुम मुझे मेरे बच्चों की पढ़ाई के लिए दस लाख रुपया दे रही हो। उसी दस लाख की खातिर मैं तुमसे बात कर रहा हूं। परंतु मैं तुम्हें अंधेरे में नहीं रखना चाहता। मैं जो कह रहा हूं वो सच है।" जोगाराम ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तुम चिंता मत करो। मैं उन लोगों को संभाल लूंगी।"

"बच्ची हो, जो मेरी बातों को समझ नहीं पा रही। तुम्हारे साथ कोई नहीं है?"

"अभी तो मैं अकेली हूं और डोबू जाति की खोज-खबर लेने आई हूं। एक मुलाकात कर लूं डोबू जाति के लोगों से उसके बाद मैं विभाग के बाकी लोगों को भी बुला लूंगी।" धरा ने कहा।

"मतलब कि तुम डोबू जाति की तरफ जाना चाहती हो। मेरी बातों का कोई असर नहीं हुआ तुम पर।"

"थोड़े-बहुत खतरे की मैं परवाह नहीं करती। पहले भी ऐसे खतरे उठा चुकी हूं।"

"ये थोड़ा-बहुत खतरा नहीं है।" जोगाराम गुस्से से बोला—"वो तुम्हें मार देंगे।"

"तुम्हें अपना डर नहीं है?"

"मैं पहले ही रुक जाऊंगा।" जोगाराम ने धरा को घूरा—"पर खतरा मुझे भी है। लेकिन मैं ये ही चाहूंगा कि तुम उधर मत जाओ। ऐसा कोई भी करिश्मा नहीं होगा कि तुम जिंदा लौट आओ। मत जाओ उधर।"

"मैं जाऊंगी। तुम मेरी ज्यादा चिंता कर रहे हो।"

"तो तुमने मरने का फैसला कर लिया है।"

धरा मुस्कराई। बोली।

"तुम्हें पैसे पहले चाहिए या बाद में?"

जोगाराम कठोर निगाहों से धरा को देखता रहा फिर कह उठा।

"पहले पैसे लूंगा। क्योंकि तुम जिंदा नहीं लौट सकोगी।"

"मेरे साथ किओमो चलो। बैंक से तुम्हें पैसे निकालकर दे देती हूं। बेशक आज चलो। आज पैसे ले लोगे तो कल हम डोबू जाति की तरफ रवाना हो सकते हैं। वक्त बर्बाद करने से क्या फायदा।" धरा ने कहा।

"तुम मेरी बात को जरा भी गम्भीरता से नहीं ले रहीं कि वहां से तुम जिंदा नहीं लौटोगी।" जोगाराम नाराजगी से बोला।

धरा ने जोगाराम को देखा फिर कह उठी।

"तुम दो साल पहले कुछ लोगों को उस तरफ ले गए थे। उनके साथ क्या हुआ?"

जोगाराम ने गहरी सांस ली और बोला।

"वो सब मर गए।"

"कैसे?"

"मेरे देखते-देखते ही वो मर गए।" जोगाराम ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी—"मेरी किस्मत अच्छी थी कि मैं बच आया।"

"हुआ क्या था?" धरा की निगाह जोगाराम के चेहरे पर थी।

"वो छः लोग थे। जाने कहां से डोबू जाति के बारे में मालूम करके आए थे। कहते थे डोबू जाति पर किताब लिखनी है, इसलिए उन्हें करीब से जानना है। मैंने उन्हें बहुत कहा कि वहां जाना मौत को दावत देना है। परंतु वो नहीं माने। उन्हें वहां तक ले जाने का मुझे अस्सी हजार रुपया मिला था।" जोगाराम गम्भीर और धीमे स्वर में कह रहा था—"रास्ते का खर्च उनका था।"

"रास्ते का खर्च?" धरा ने पूछा।

"घोड़े। घोड़े चाहिए थे। पहले दो दिन का सफर घोड़ों पर तय किया जाता है। उसके बाद बाकी के दो दिन पैदल चलना पड़ता है। किराए पर उन्होंने घोड़े लिए थे। परंतु घोड़ों के मालिक ने घोड़ों की पूरी कीमत ली थी कि वापस आने पर पैसे वापस हो जाएंगे। मैं उन छः लोगों को डोबू जाति के ठिकाने के करीब ले गया। ये तो पहले से तय था कि मैंने वहां करीब नहीं जाना है। दूर से ही रास्ता दिखा देना है, जब उस जगह के करीब पहुंच जाऊं। जब आधे-पौने घंटे का रास्ता रह गया तो मैंने उन्हें रास्ता बता दिया और खुद वहीं रुक गया। उन्होंने मुझे वहीं, वापसी तक इंतजार करने को कहा। परंतु मैं जानता था कि वो वापस नहीं लौट सकेंगे। मार दिए जाएंगे। जब वो आगे गए तो मैं काफी पीछे रहकर उन पर नजर रखता पीछे आने लगा कि देखूं तो सही कि उनके साथ होता क्या है। एक घंटे बाद जब वो डोबू जाति के काफी करीब पहुंच गए तो उस वक्त शाम हो चली थी। मैंने स्पष्ट तौर पर देखा कि उनके पीछे से एक आदमी भूत की तरह पेड़ से कूदा। उसके हाथ में फरसे जैसा कुछ था। पलक झपकते ही उसने अपने हथियार से दो की गर्दन काट दी। मैंने उनके सिरों को उछलकर दूर गिरते देखा। तुम सोच सकती हो कि ये देखकर मेरी क्या हालत हो गई होगी। तब तक बाकी के चारों सतर्क हो चुके थे। उन्होंने उस फरसेबाज का मुकाबला करना चाहा, परंतु वो इतना फुर्तीला था कि मैं दंग रह गया। उसने चारों को घायल कर दिया और फिर उन चारों की गर्दनें काट दीं। मैं दूर था, इसलिए बचा रह गया। मैंने उन छः को मरते देखा था। मेरी टांगें जवाब दे गईं। मैं वहां से भाग नहीं सका और वहीं बैठा रहा। आधी रात के बाद जाकर मुझे होश आया तो मैं पलटकर उस जगह से भाग निकला। मैं डर गया था। मेरा दिमाग खराब हो गया था। मुझे यकीन नहीं आया कि उन छः को मिनटों में गर्दन काटकर मार डाला गया है। मैं बर्फ के जंगल के वीरानों में भटकता रहा। मैं रास्ता भूल गया था अपनी बस्ती का। दहशत मेरे दिमाग पर सवार थी। भूखे पेट कई दिन मैं भटकता रहा। बस मुझे इतना पता है कि बीस दिन बाद ही मैं यहां वापस आ पाया। सूख कर पतला हो गया था। घर आते ही मैं घर में छिप गया। दो महीने तक तो मैं घर से बाहर नहीं निकला। गर्दन कटने का दृश्य मैं आज तक नहीं भूल पाता। उसके बाद से तो मैं उधर जाने की सोच भी नहीं सकता। अब तुम कहती हो कि वहां जाने के मुझे दस लाख दोगी। बच्चों की पढ़ाई के लिए मैं ये काम करने को तैयार हो रहा हूं। मेरी पत्नी भी ये ही चाहती है कि बच्चे पढ़ाई पूरी कर लें। कॉलेज में एडमिशन ले लें।"

धरा गम्भीर-सी जोगाराम के चेहरे को देखती रही।

जोगाराम के होंठ भिंचे थे। वो बेहद गम्भीर दिख रहा था।

"अगर मेरी बात सुनकर तुमने उधर जाने का प्रोग्राम छोड़ दिया है तो मुझे खुशी होगी।" जोगाराम कह उठा।

"मेरा प्रोग्राम नहीं बदला। मैं जाऊंगी।"

जोगाराम ने कुछ नहीं कहा। उसे देखता रहा।

"मारने वाले ने उन लोगों से कोई बात की थी?" धरा ने पूछा।

"मैं नहीं जानता। दूर था। शायद नहीं की थी।" जोगाराम विचलित स्वर में कह उठा।

"तुम्हें डोबू जाति के बारे में जानकारी कैसे मिली?"

जोगाराम चुप रहा।

"तुम्हारे कहने के हिसाब से डोबू जाति किसी से सम्बंध नहीं रखती तो तुम्हें कैसे पता कि वो अपना सारा जीवन योद्धा बनने में लगा देते हैं। तुम्हें कैसे पता कि उनकी बस्ती कहां है। तुम्हें कैसे पता कि...।"

"एक बार डोबू जाति की बस्ती के एक आदमी से मेरी बात हो गई थी। ये तब की बात है जब मैं बीस साल का था। उस तरफ निकल गया था तो बर्फ के जंगल में वो मुझे मिल गया था। उन लोगों की अपनी ही भाषा है, परंतु वो हमारी भाषा जानता था। उसने बताया कि वो अपनी जाति के कामों के सिलसिले में हमारी दुनिया में आता-जाता है। उसने बताया कि इन लोगों की बस्ती में सिर्फ कुछ लोगों को ही, बस्ती से बाहर जाने की इजाजत है। किसी में इतनी हिम्मत नहीं कि आज्ञा का उल्लंघन कर सके। उसने ही अपनी बस्ती के बारे में कुछ बातें बताईं मुझे, जिसमें ये बात भी थी कि पूरे चांद की रात को डोबू जाति पेट के बल लेट जाती है। वो लोग पूरे चांद की रात से डरते हैं, जबकि सब स्पष्ट नजर आता है। बेशक कुछ भी हो जाए, वो पूरे चांद की रात पेट के बल लेटकर बिताते हैं और उन्हें उठने का हुक्म नहीं होता।

"अजीब बात है।"

"ये डोबू जाति का नियम है। मैं जब भी पूरा चांद निकला देखता हूं तो डोबू जाति को जरूर याद करता हूं। फिर उन छः लोगों के सिर कटते नजर आते हैं तो कांपकर रह जाता हूं।"

"और क्या जानते हो डोबू जाति के बारे में?" धरा ने पूछा।

"डोबू जाति का सबसे जबर्दस्त, खूंखार योद्धा 'बबूसा' था। वो...।"

"था? था से तुम्हारा क्या मतलब?"

जोगाराम, धरा को देखने लगा फिर धीमे स्वर में बोला।

"अब उसने डोबू जाति छोड़ दी है। अपनी जाति से उसने विद्रोह कर दिया है। ये छः महीने पहले की बात है।"

"बबूसा ने विद्रोह क्यों किया अपनी जाति से?"

"मैं नहीं जानता।"

"छः महीने पहले की बात तुम्हें कैसे मालूम है।"

जोगाराम ने होंठ भींच लिए।

"बताओ। तुम्हारी बताई बातें मैं किसी से कहूंगी नहीं।" धरा कह उठी।

"उस जाति का वो आदमी, जो मुझे बीस साल की उम्र में मिला था, वो अब भी मिलता है कभी-कभी। हममें बातें होती रहती हैं। मैं अपनी बातें बताता हूं और वो अपनी बातें बताता है। कभी-कभी अपनी बस्ती की बातें भी बता देता है।"

"और क्या बताया उसने?"

"बहुत कुछ। बहुत बातें हैं। मैं तुम्हें सब बता दूंगा। बेहतर होगा कि तुम वहां न जाओ। मारी जाओगी।"

"मैं जाऊंगी।"

"तो बाकी बातें सफर के लिए जमा रखो। रास्ते के दौरान बातें होती रहेंगी। चार दिन का सफर है।"

"अब 'बबूसा' कहां है?"

"मैं नहीं जानता। डोबू जाति छोड़कर वो चला गया है। मैंने उसे कभी देखा नहीं। जानता नहीं। मुझे सिर्फ इतना पता है कि उसे रुकने के कठोर आदेश दिए गए। परंतु वो नहीं रुका और डोबू जाति में ऐसा कोई योद्धा नहीं था जो 'बबूसा' के सामने पड़ने की हिम्मत कर सकता। ऐसे में योद्धाओं को 'बबूसा' को पकड़ने का आदेश दिया गया, परंतु कोई भी बबूसा को पकड़ न सका। बारह लोगों को बबूसा ने उसी वक्त मार दिया जो उसकी तरफ बढ़े थे। तब सबको ये आदेश मिला कि बबूसा को न रोका जाए।"

"डोबू जाति बबूसा से डरती है।" धरा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"डोबू जाति में 'बबूसा' से बड़ा कोई योद्धा नहीं है। बबूसा किसी से नहीं डरता। बबूसा डोबू जाति के नियमों की परवाह नहीं करता। वो अपनी मनमर्जी की जिंदगी जीता आया है।"

"तुम्हें नहीं पता कि बबूसा ने अपनी जाति से विद्रोह क्यों किया?"

"ये नहीं पता।"

"डोबू जाति के उस अपनी पहचान वाले से तुम कैसे मिलते हो?"

"वो मेरे पास मेरे घर आ जाता है। परंतु ये बात उसकी जाति वाले नहीं जानते। ये जानकर कि उसके बाहरी लोगों के साथ सम्बंध हैं उसकी जाति वाले उसे मार देंगे।"

"तो वो खतरा उठाकर तुमसे क्यों मिलने आता है?"

"उसका कहना है कि मुझसे बातें करके उसे अच्छा लगता है।"

"क्या नाम है उसका?"

"उसका नाम बताकर मैं उसे खतरे में नहीं डालूंगा।"

"मुझे उससे मिलवा सकते हो?"

"कभी नहीं। हममें ये बात तय है कि उसके बारे में मैं किसी को नहीं बताऊंगा। अगर बताया तो वो मेरे पास आना बंद कर देगा। वो जैसा भी है मेरे से ठीक से पेश आता है। मैं बिना वजह उसे खोना नहीं चाहता।" जोगाराम ने गम्भीर स्वर में कहा।

"हम कल डोबू जाति की तरफ जा सकते हैं जोगाराम।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"अगर तुम मरना ही चाहती हो तो मुझे कोई एतराज नहीं।" जोगाराम ने रूखे स्वर में कहा—"जब मुझे पैसा मिल जाएगा, उससे अगले दिन हम अपना सफर शुरू कर देंगे।"

"10 लाख तुम्हें आज ही मिल जाएगा। तुम्हें मेरे साथ किओमो चलना होगा। वहां बैंक से पैसा निकालना है।" धरा कह उठी।

□ □
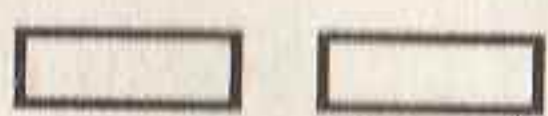
वो वीरान बर्फीली घाटी थी। आस-पास के पहाड़ों पर बर्फ बिछी हुई थी। लम्बे-ऊंचे-घने पेड़ बर्फ से ढके सफेद हुए पड़े थे। कोहरे के बादल इधर-उधर लहरा रहे थे। कोई रास्ता नहीं था। कोई पगडंडी नहीं थी। इस तरफ आम लोगों का आना-जाना नहीं होता था। या फिर यूं कह ले कि कोई इस तरफ आता ही नहीं था। कोई आबादी ही नहीं थी इस तरफ। साल के बारहों महीने बर्फ गिरती थी यहां। लाहुल स्पीति की सीमा थी इस तरफ, जो कि जम्मू-कश्मीर की सीमा से लगती थी। सीमा के उस पार जम्मू-कश्मीर वाले हिस्से में भी मीलों तक कोई नहीं बसता था। बर्फ की मार ही ऐसी थी कि इंसानों का वहां बस पाना सम्भव नहीं था।

उस बर्फ से ढकी घाटी में, घोड़ों के टापों की आवाजें गूंज रही थीं। सुरमई अंधेरा फैलने लगा था। शाम के पांच बज रहे थे। सूर्य तो दोपहर से ही गायब था। परंतु शाम को कुछ देर के लिए फिर आ गया था। कुछ ही देर में गहरा अंधेरा छा जाना था। बर्फीली जगहों पर रात जल्दी से हो जाती थी और दिन देर बाद निकलता था। घोड़ों पर जोगाराम और धरा थे। दोनों ने पीठों पर बैग लटका रखे थे। दो-एक थैले घोड़ों के साथ भी बांधे हुए थे। सुबह छः बजे सफर शुरू किया था और रास्ते में सिर्फ एक बार आधे घंटे के लिए रुके थे कि घोड़े सुस्ता सकें। तभी थोड़ा-बहुत कुछ खा लिया था। यानी कि दस-ग्यारह घंटों से लगातार सफर जारी

था। रास्ते में दो-तीन जगह पहाड़ों के हिस्से कटकर गिरे हुए थे। वहां से निकलने में काफी कठिनाई हुई थी। इस सफर के दौरान दोनों में कोई खास बात नहीं हुई थी। जोगाराम के चेहरे पर गम्भीरता नाच रही थी। एक दिन पहले दोनों किओमो गए थे और धरा ने बैंक से दस लाख निकालकर जोगाराम को दे दिया था। उसके बाद धरा ने चक्रवती साहब को, मुम्बई फोन किया कि वो कल सुबह जोगाराम के साथ डोबू जाति से मिलने जा रही है। चार दिन का सफर है। पैसे लेकर जोगाराम के चेहरे पर खुशी नहीं आई थी। क्योंकि वो जानता था कि इस सफर का अंत बुरा होने वाला है। टाकलिंग ला पहुंचकर उसने पैसे सुनीता के हवाले किए और दो बढ़िया घोड़ों का इंतजाम किया। घोड़ों के मालिक को जोगाराम ने धरा से दस हजार रुपया लेकर दिया और अपनी गारंटी दी कि महीने के भीतर उसे घोड़े वापस मिल जाएंगे। उसके बाद वो और धरा सफर की तैयारियों में ही रहे। सुनीता ने रास्ते के लिए ढेर सारे परांठे और अचार बांध दिया था। इस तरह सुबह सफर शुरू हुआ था। इस सफर से जोगाराम किसी भी तरफ से खुश नजर नहीं आया था। अब वे इतनी दूर आ गए थे कि दुनिया से कट चुके थे। यहां कोई इंसान नहीं था। अलबत्ता कभी-कभार कोई जानवर दिख जाता था जो कि इनकी आहट पाकर भाग जाता।

अब सर्दी और भी बढ़ गई थी। अंधेरा होता जा रहा था। आगे का सफर जारी रखना मुमकिन नहीं था। धरा को घुड़सवारी का ज्ञान नहीं था। सुबह के तीन घंटे घोड़े की पीठ पर बैठकर, कठिनता से बिताए थे। परंतु उसके बाद दौड़ते घोड़े पर बैठने की अभ्यस्त होती चली गई। लगाम का इस्तेमाल भी आता चला गया। घुड़सवारी के बारे में जरूरी बातें जोगाराम रास्ते में बताता जा रहा था। अब धरा को घुड़सवारी से कोई दिक्कत नहीं हो रही थी।

"अंधेरा होने वाला है।" धरा ने ऊंचे स्वर में कहा। घोड़े मध्यम गति से दौड़ रहे थे।

"आधा घंटा अभी और चलना है। फिर एक जगह आएगी जहां हम रात बिताएंगे।" जोगाराम ने कहा।

"परंतु अंधेरा तो पांच-दस मिनट में हो जाएगा।"

"उसकी तुम फिक्र मत करो।"

अंधेरा होते ही घोड़ों की रफ्तार बहुत कम कर दी गई।

"तुम अपना घोड़ा मेरे पीछे रखो।" जोगाराम ने कहा।

अब घोड़े दौड़ नहीं रहे थे। चल रहे थे। जोगाराम घोड़े पर आगे था। धरा पीछे। ठंड से भरे इस वीरान सन्नाटे में धरा का दिल तेजी से धड़क

रहा था। डर जैसा महसूस हो रहा था उसे। परंतु जोगाराम यहां के हर रास्ते से वाकिफ था। धरा को उस पर पूरा भरोसा था। गहरे अंधेरे में घोड़ों के हिनहिनाने की आवाजें उठ जाती थीं।

"कितना दूर जाना है?" धरा ने पूछा।

"कुछ देर और।"

"वहां रहने को क्या है?"

"पहाड़ी खोह है। वहां घोड़े भी आ जाएंगे। वरना इतनी सर्दी में घोड़ों की और हमारी जान निकल जाएगी। यहां की सर्दी जान ले लेती है। यूं समझो कि इस वक्त हम बर्फ के प्याले में बैठे हैं।" जोगाराम ने कहा।

शाम के इस अंधेरे में बर्फ से लदे सफेद पहाड़ चांदी की तरह चमकते नजर आ रहे थे। दोनों घोड़ों की पीठ पर बैठे आगे बढ़ते रहे। आसपास बर्फ से लदे पेड़ फैले थे। जमीन पर भी बर्फ पड़ी हुई थी। तभी पानी की एक मोटी-सी बूंद धरा की बांह पर गिरी।

"बरसात शुरू हो रही है।" धरा जल्दी से कह उठी।

जोगाराम ने जवाब में कुछ नहीं कहा।

पांच-सात मिनट बाद वे एक पहाड़ के करीब जा पहुंचे।

जोगाराम ने घोड़ा रोका। नीचे उतरा और घोड़े की पीठ थपथपाकर, घोड़े की जीन के साथ बांध रखे थैले में से एक ढक्कन वाली बोतल निकाली, जिसमें मिट्टी का तेल डालकर उसे लैम्प जैसा बना रखा था। ढक्कन के बीच में से बत्ती बाहर निकल रही थी। जिसे उसने जलाया तो लैम्प जैसी वो जल उठी। जिसे लिये सामने कुछ कदमों की दूरी पर पहाड़ की तरफ बढ़ गया तो धरा की हड़बड़ाई आवाज आई।

"मैं क्या करूं?"

"घोड़े पर ही रहो।" जोगाराम ने ऊंचे स्वर में कहा।

बरसात की मोटी-मोटी बूंदें पड़नी शुरू हो गई थीं। जानलेवा सर्दी थी। धरा रह-रहकर सर्दी की वजह से कांप रही थी। वो जोगाराम को देख रही थी। उसे ऐसा लगा जैसे जोगाराम पहाड़ के भीतर प्रवेश कर गया हो। हाथ में पकड़ी लैम्प जैसी रोशनी नजरों से ओझल हो गई थी। अंधेरे की वजह से पहाड़ की खोह धरा को नजर नहीं आ रही थी। वो जोगाराम को गायब होते पाकर कुछ डर-सी गई थी। एक-डेढ़ मिनट बाद उसे वापस आती रोशनी दिखी।

"घोड़े से नीचे उतरो।" जोगाराम की आवाज आई—"खोह ठीक है। रात हम यहीं रहेंगे।"

"घोड़े से उतरने में हाथ लगाओ मुझे। मेरी पीठ बहुत दर्द कर रही है।"

जोगाराम ने सहारा देकर धरा को नीचे उतारा।

"घोड़े की लगाम पकड़ लो और मेरे पीछे आओ।"

इस तरह वो घोड़ों सहित खोह में पहुंच गए। सामने से खुली और भीतर से कुछ गहरी थी। इस सर्दी के बुरे मौसम से बचने के लिए ये अच्छी जगह थी। लैम्प की रोशनी इस अंधेरे में बहुत बड़ा सहारा थी।

धरा दोनों हाथों से पीठ को थामे एक तरफ खड़ी हो गई। पीठ पर लदा बैग उतार दिया था।

जोगाराम ने अपना बैग उतारकर एक तरफ रखा, फिर घोड़ों की जींस के साथ बंधे थैलों को उतारकर नीचे रखा। उसके बाद घोड़ों की जीन को खोलकर घोड़ों से अलग किया और पास में रख दिया। ताकि रात भर घोड़े बिना बोझ के आराम कर सकें। झपकी ले सकें। फिर खोह के भीतरी हिस्से की एक जगह साफ की और जोगाराम ने बैग और थैले वहां रखे। दो चादरें निकालकर वहां बिछा दीं। कड़ाके की सर्दी में ये बिछौना बहुत कम था, परंतु सफर के हालात को देखते हुए ये आरामदायक था। जो मिल गया, वो ही बढ़िया।

धरा एक चादर पर बैठ गई।

जोगाराम ने अपने बैग से बोतल गिलास निकाला और गिलास तैयार करके शराब का घूंट भरा।

"तुम पीना चाहो तो...।"

"मैं नहीं पीती।" धरा बोली।

"तो खाना खा लो।"

"अभी आराम करूंगी।"

जोगाराम ने दो घूंट एक साथ भरे फिर बोला।

"सुबह हमने यहां से चल पड़ना है। यहां दिन छोटे होते हैं। जल्दी अंधेरा हो जाता है।"

"जब उठाओगे, उठ जाऊंगी। मैंने पहली बार घुड़सवारी की है। बहुत थक गई हूं।"

लैम्प की रोशनी में वे एक-दूसरे को स्पष्ट देख पा रहे थे।

"तुम यहां के सब रास्तों को जानते हो।" धरा बोली।

"इन रास्तों पर मैंने बहुत वक्त बिताया है।"

"अकेले?"

"हां। अकेले और भूखे प्यासे।"

"क्यों आते थे तुम इस तरफ?"

"डोबू जाति को देखने-समझने के लिए।"

"तो क्या देखा-समझा?"

"कुछ खास नहीं। ये लोग खतरनाक हैं। बेरहम हैं। बाहरी लोगों को जरा भी पसंद नहीं करते। देखते ही मार देते हैं।"

धरा चुप रही।

"तुम चाहो तो अभी भी वापस चल सकती हो। मैं तुम्हारे पैसे लौटा दूंगा।" जोगाराम बोला।

"मैं वापस जाने नहीं आई।"

"वो तुम्हें मार देंगे। देखते ही मार देंगे। मारने से पहले वो कोई बात भी नहीं करते।"

"मैं उनसे मिलूंगी। उन्हें समझाऊंगी कि...।"

"तुम कुछ नहीं समझा सकोगी। तुम्हें मौका ही नहीं मिलेगा कि उन्हें ठीक से देख पाओ। मेरी बात का यकीन करो कि वो वास्तव में भूतों की तरह सामने आते हैं, उनके करीब आने का भी पता नहीं लगता और दुश्मनों को मार देते हैं। वो ट्रेंड हैं इस तरह किसी की जान लेने के लिए। जो भी उन्हें आदेश देता है, उसने ये ही उन पहरेदारों से कह रखा है कि देखते ही मार दो। मैंने उन लोगों की गर्दन उड़ती देखी थी, ऐसे जैसे किसी फल को पेड़ से तोड़कर फेंका जाता है। वो सिर्फ एक था और उन पांचों को मिनट भर में खत्म कर दिया और गायब हो गया, वो...।"

"तुमने उनकी बस्ती को देखा है?" धरा ने एकाएक टोका।

जोगाराम ने धरा को देखा और गिलास से तगड़ा घूंट भरकर बोला।

"नहीं, कभी नहीं देखा...।"

धरा फौरन उठकर बैठ गई।

"नहीं देखा? ये कैसे हो सकता है कि तुम अभी तक उनकी बस्ती को नहीं देख पाए जबकि कई बार वहां गए हो।" धरा बोली।

"उनकी बस्ती को कोई नहीं देख पाता।"

"ये कैसे सम्भव...।"

"वो पहाड़ों के भीतर रहते हैं। उधर पहाड़ों की लम्बी श्रृंखला है। सब पहाड़ एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। कभी वो भीतर से खाली होंगे तो उन्हीं पहाड़ों में उन्होंने अपने रहने का स्थान बना लिया। मेरे खयाल में उन्होंने अपने सहूलियत के हिसाब से उन पहाड़ों को और भी खोखला कर लिया होगा। उनकी दुनिया पहाड़ों के भीतर बसती है। इस तरह वे बर्फ, सर्दी, बरसात से भी बचे रहते हैं। वे बाहर भी आते हैं खुले में, परंतु रहते वो पहाड़ों के भीतर ही हैं। मेरी जानकारी के हिसाब से पहाड़ों के भीतर जाने और आने का एक ही रास्ता है। दूसरा रास्ता है तो, वो मैं नहीं जानता।"

"हैरानी है कि वो पहाड़ों के भीतर रहकर अपना जीवन बिता रहे हैं।" धरा ने कहा।

"इन बर्फीली वादियों में पहाड़ों के भीतर रहना ही सुरक्षित है।"
"वो पहाड़ों से बाहर कब निकलते हैं?"
"जब दिल चाहे निकलते हैं। उनके बाहर निकलने पर कोई पाबंदी नहीं है।"
"ये सारी बात तुम्हें डोबू जाति वाले उसी दोस्त ने बताई?"
"हां।"
"डोबू जाति वाले और क्या-क्या करते हैं?"
"मैं समझा नहीं।"
"वो खाते क्या हैं?"
"पहले वो सिर्फ जानवरों को मारकर खाया करते थे। लेकिन उनकी संख्या बढ़ने की वजह से जानवर कम पड़ने लगे। ऐसे में अब वो भी हमारी तरह सब्जियां और दालें खाते हैं। उस जाति में कई लोगों का काम ही यही है कि बाहरी लोगों की तरह कपड़े पहनकर, उन जैसे लगकर, बस्ती-कस्बे में जाना और खाने का सामान खरीदकर...।"
"उनके पास पैसे कहां से आते हैं?"
"डोबू जाति में समझदार लोग भी हैं। उनके पास कीमती पत्थर हैं—वो...।"
"कीमती पत्थर?"
"हीरे-जवाहरात जैसी चीजें।"
"ओह।"
"वो जानते हैं कि हमारी दुनिया में उन पत्थरों की बहुत मांग है। वो अपनी जरूरत के मुताबिक उन्हें बेचकर पैसा हासिल करते हैं। उनके सब काम बहुत अच्छी तरह से, सिस्टम से चलते हैं।"
"वो हमारी तरह कपड़े पहनते होंगे?"
"किसी को कपड़ा हासिल हो जाए तो वो कपड़ा पहन सकता है। मनाही नहीं है। परंतु वे बिना कपड़ों के भी रहते हैं। वे कमर वाले हिस्से में कपड़ा अवश्य पहनते हैं। औरतें भी ऐसा करती हैं। उन्हें सर्दी का एहसास खास नहीं होता, क्योंकि सर्दी सहने की उनकी आदत हो चुकी है।" जोगाराम ने गिलास खाली किया और नया तैयार करने लगा।
"अब खाना खा लो।" धरा कह उठी।
"एक और पैग लूंगा। उसके बाद खाना खाऊंगा।" जोगाराम ने कहा।
"उनकी शादियां कैसे होती हैं?"
"उनमें शादियां नहीं होतीं। कोई भी किसी के साथ सम्बंध बना सकता है। आदमी-औरत दोनों की सहमति होनी चाहिए।"
"ओह।" धरा ने सिर हिलाया।

"डोबू जाति के बच्चों का कोई मां-बाप नहीं होता। बच्चे जाति की मिल्कियत होते हैं। सामूहिक तौर पर सब मिलकर उन्हें पालते हैं। उनकी परवरिश करते हैं। औरत ने बच्चा पैदा किया तो बच्चा जाति के अन्य बच्चों में शामिल कर दिया जाता है। बाद में किसी को पता भी नहीं चलता कि उसका पैदा किया बच्चा कौन-सा है। वो अन्य बच्चों के साथ पलता है और जब वो समझने के लायक हो जाता है तो उसकी शिक्षा शुरू हो जाती है।"

"शिक्षा?"

"युद्ध कला। बहुत कठोरता का इस्तेमाल करके उन्हें युद्ध कला सिखाई जाती है। परंतु कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जो युद्ध कला नहीं सीख पाते तो उन्हें जाति के अन्य काम सिखाने पर लगा दिया जाता है।"

"मतलब कि हर कोई युद्ध कला नहीं सीख सकता?" धरा ने पूछा।

जोगाराम ने गिलास से घूंट भरा और बोला।

"युद्ध कला सीखना बहुत मेहनत और लगन का काम है इस जाति में। सुलगते अंगारों पर चलाया जाता है, कीलों के नुकीले हिस्सों पर चलाया जाता है। हथियार चलाने की विशेष ट्रेनिंग और भी कठिन होती है। बहुत लम्बे वक्त के लिए आंखों पर कपड़ा बांध दिया जाता है या कानों में ऐसा कुछ डाल दिया जाता है कि लम्बे वक्त के लिए वो सुन न सके। ऐसा करके डोबू जाति वाले योद्धाओं की एक नई इंद्री विकसित करते हैं कि आपको कुछ नजर नहीं आ रहा और आसपास मौजूद दुश्मनों का मुकाबला उसी स्थिति में करना होता है। या आपको कुछ सुनाई नहीं दे रहा है और दुश्मन घात लगाए हर तरफ मौजूद है, उससे बचाना है खुद को।"

"ये सब सीखना तो बहुत कठिन है।"

"मुझे सब कुछ नहीं मालूम कि वो लोग और भी क्या-क्या करते हैं, परंतु इस जाति की जिंदगी की अहम वजह जीने की, युद्ध कला में मास्टर बनना होता है। बेहतरीन योद्धा बनने का जुनून होता है इन पर। सीखने के दौरान ये अपनी जान तक दांव पर लगाने में पीछे नहीं हटते। परंतु डोबू जाति में युद्ध की सारी कलाओं का ज्ञाता कोई नहीं बन सका, बबूसा को छोड़कर।"

"बबूसा?"

"एकमात्र बबूसा ही रहा, जो डोबू जाति की सारी युद्ध कला सीखने में नम्बर वन रहा। बबूसा जैसा योद्धा डोबू जाति में दूसरा नहीं। उससे दूसरे योद्धा भी डरते हैं, बल्कि डोबू जाति के बड़े भी उससे ठीक से पेश आते थे।"

"तुमने बताया था कि बबूसा जब विद्रोह पर उतरा तो कोई उसे रोक नहीं पाया।"

"हां। उसे रोकने की कोशिश की तो उसने कई योद्धाओं को खत्म कर दिया। बबूसा का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। ये बात डोबू जाति के बड़े जानते हैं, इसी कारण बबूसा के सामने से योद्धा हटा लिए गए।"

"मुझे ये समझ नहीं आ रहा कि इस प्रकार योद्धा तैयार करके ये लोग करते क्या हैं?"

"मैं नहीं जानता।"

"तुमने अपने उस दोस्त से पूछा नहीं था?"

"पूछा था, परंतु उसने कोई जवाब नहीं दिया था।"

"डोबू जाति के बारे में और कुछ बताओ।"

"ज्यादा नहीं जानता मैं। जब मैंने उससे डोबू जाति की भीतरी जानकारी लेनी चाही तो उसने सिर्फ इतना ही कहा कि वो जाति की भीतरी बातें नहीं बताएगा। परंतु उसने ये अवश्य कहा कि उसकी जाति, इस दुनिया के लोगों के लिए रहस्य की तरह है। हम ऐसा बहुत कुछ करते हैं जो हमारी दुनिया वाले सोच भी नहीं सकते।"

"बताया नहीं कुछ?"

"नहीं।" जोगाराम ने इंकार में सिर हिलाया।

"मतलब कि वो अपनी जाति के रहस्य तुम्हारे सामने नहीं खोलना चाहता।"

"हां। इस बारे में उसने स्पष्ट मना कर दिया था।"

"वो आदमी अपनी जाति के क्या काम करने बाहर जाता है?"

"वो कपड़े लेकर आता है। जाति के लोगों की जरूरतों का सामान लाता है। इसी तरह के काम...।"

"बबूसा ने विद्रोह क्यों किया अपनी जाति से?"

"ये बात पूछने पर भी उसने नहीं बताई थी। वो चुप हो गया था।"

"बबूसा के बारे में और बातें बताओ? मैं उसके बारे में जानना चाहती हूं।"

"बता ही चुका हूं कि बबूसा डोबू जाति का सबसे ताकतवर योद्धा है। अपनी जाति से विद्रोह करके कहीं चला गया है। विद्रोह की वजह कोई नहीं जानता। डोबू जाति में ऐसा पहली बार हुआ है कि किसी ने विद्रोह किया हो।"

"डोबू जाति के लोग किस भाषा में बात करते हैं?"

"उनकी अपनी भाषा है। परंतु जो लोग बाहर सामान लेने जाते हैं उन्होंने हमारी भाषा सीख रखी है।" जोगाराम ने गिलास खाली करते हुए कहा—"खाना निकालो। कुछ खा लें। सुबह फिर सफर शुरू करना है।"

तीसरे दिन सुबह के ग्यारह बजे जोगाराम ने अपना घोड़ा रोका तो धरा ने घोड़े की लगाम खींच ली। मौसम बहुत सर्द था। धूप का निमोनिशान नहीं था। सर्द हवा चल रही थी। रह-रहकर धरा सर्द लहर से कांप उठती थी। हालांकि सुनीता ने उसे गर्म ऊन का मोटा स्वैटर दिया था, परंतु उसमें भी ठंड लग रही थी। आगे बर्फ के पहाड़ नजर आ रहे थे। जाने को कोई रास्ता नहीं था। जोगाराम घोड़े से नीचे उतरता बोला।

"घोड़े आगे नहीं जा सकते। हमें यहां से पैदल ही चलना होगा।"

धरा घोड़े से नीचे उतर आई। ढाई दिन से घोड़े पर सवार रहने की वजह से कमर दर्द कर रही थी। उसने सोचा कि अच्छा ही हुआ जो घोड़ों से पीछा छूटा।

उसके बाद जोगाराम ने थैले से दो लम्बी रस्सियां निकालीं और घोड़ों के पांवों से बांधकर दूसरा सिरा पेड़ों से बांध दिया कि घोड़े टहल तो सकें, परंतु दूर न जा सकें। वापसी पर घोड़े यहीं रहें। फिर उसने घोड़ों को सामान से निकालकर चने की दाल खिलाई। इस दौरान जोगाराम के चेहरे पर गम्भीरता रही। वो रह-रहकर निगाह धरा पर मार लेता था जो कि दुखती कमर को ठीक करने में लगी थी।

"जानती हो मैं क्या सोच रहा हूं।" जोगाराम बोला।

"क्या?" धरा ने जोगाराम को देखा।

"वापसी पर तुम मेरे साथ नहीं होगी। जान गंवा चुकी होगी।" जोगाराम ने कहा।

धरा, जोगाराम को देखने लगी।

"तुम जान को खतरे में डाल रही हो। मत जाओ उधर। अभी भी मैं पैसे वापस करने को तैयार हूं।"

"तुम मुझे डरा रहे हो।"

"मेरी बहन।" जोगाराम ने संजीदा स्वर में कहा—"मैं सही कह रहा हूं। वो लोग किसी बाहरी आदमी को जिंदा नहीं छोड़ते। देखते ही मार देते हैं। तुम वहम में हो कि उनसे बात कर लोगी।"

"मैं उन्हें समझाकर अपनी दुनिया से जोड़ सकी तो...।"

"मुझे तुम्हारी जान की चिंता है। वो लोग तुम्हें मार देंगे।" जोगाराम दांत भींचकर बोला।

धरा उसे देखती रही। कहा कुछ नहीं।

"अगर इस पहाड़ के पार जाकर तुमने वापस चलने को कहा तो पैसे वापस नहीं दूंगा। अभी तुम्हारे पास मौका है अपनी जान बचाने का और पैसे वापस लेने का। हम अब डोबू जाति से ज्यादा दूर नहीं रहे। आज इस

पहाड़ को पार करके दूसरी तरफ पहुंच जाएंगे तो अंधेरा छा जाएगा। कल सुबह दो-तीन घंटे आगे बढ़ने के पश्चात हम डोबू जाति के ठिकाने के करीब पहुंच जाएंगे। सिर्फ चौबीस घंटों की बात है और तुम नहीं बचोगी। मैं तो पीछे ही रुक जाऊंगा तुम्हें आगे जाने का रास्ता बताकर। फिर तुम्हारे साथ क्या होगा, तुम्हें बता चुका हूं। भूत की तरह डोबू जाति का कोई योद्धा किसी पेड़ के ऊपर से, पहाड़ के पत्थर के पीछे से, झाड़ियों से, कहीं से भी प्रकट होगा और तुम्हारी गर्दन काट देगा। तुम ठीक से उसका चेहरा भी नहीं देख पाओगी।" जोगाराम दांत भींचे कह रहा था—"अपनी कही बात का मुझे पूरा यकीन है तभी तो तुम्हें बार-बार समझा रहा हूं। मैं नहीं चाहता कि तुम मरो।"

धरा गम्भीर निगाहों से जोगाराम के गुस्से से भरे चेहरे को देखने लगी।

"वहां सच में तुम्हारे लिए मौत है। डोबू जाति खतरनाक है। कोई उनकी तरफ जाए, ये उन्हें पसंद नहीं है। तुम क्यों मरना चाहती हो। मेरे समझाने पर भी तुम्हें समझ नहीं आ रहा।"

"तुम चाहते हो कि डोबू जाति के इतने करीब आकर वापस चली जाऊं?"

"तुम मौत के करीब जा रही हो। बात समझ में नहीं आती क्या?" जोगाराम झल्लाया।

धरा जोगाराम के चेहरे को देखती फिर गम्भीर स्वर में बोली।

"हम पहाड़ को पार करेंगे जोगाराम। मैं वापस नहीं जाऊंगी।"

▭ ▭

चौथे दिन, तेज धूप खिली हुई थी।

बर्फ से ढकी पहाड़ों की चोटियां धूप से चमक रही थीं। ऐसे में सर्दी से काफी राहत थी। आसमान में पहाड़ों की चोटियों को छूते सफेद बादलों के टुकड़े तैर रहे थे। आसमान नीला था। परंतु ठंडी हवा चल रही थी। हर तरफ बर्फ से ढंके पहाड़ ही पहाड़ नजर आ रहे थे। सब कुछ मिलाकर मौसम खुशगिजाज हो रहा था।

दिन के दस बजे थे।

जोगाराम और धरा एक गहरे जंगल में आगे बढ़ रहे थे। हर तरफ बिखरी बर्फ दिखाई दे रही थी। चार दिन के सफर ने उनके चेहरों और शरीर में थकान भर दी थी। इस वक्त उनके पास एक ही बैग था जो कि जोगाराम ने अपनी पीठ पर फंसा रखा था। जोगाराम खुश नहीं था और बार-बार दुखी निगाहों से धरा को देख लेता था। कल का सारा दिन तो उस पहाड़ को पार करने में लग गया था। धरा दो बार पहाड़ से फिसली

थी, परंतु खैर रही। पहाड़ पर बर्फ ही बर्फ थी। धरा के लिए बर्फ से ढके पहाड़ को पार करना अनोखा अनुभव रहा था। ठीक बात तो ये रही कि वो पहाड़ सीधा नहीं था। ढलान लिए हुए था, इसलिए धरा उस पर चढ़ पाई थी। जोगाराम तो जैसे पहाड़ पर चढ़ने का अभ्यस्त था।

"घोड़े इतनी सर्दी में खुले में रहेंगे।" धरा कह उठी।

"तुम्हें घोड़ों की फिक्र नहीं करनी चाहिए। उन्हें सर्दी सहने की आदत है।" जोगाराम बोला।

"कितनी देर का रास्ता है?"

"ज्यादा देर नहीं बचा। हम आ ही पहुंचे हैं। आधा या एक घंटा और।"

दोनों तेजी से पैदल आगे बढ़े जा रहे थे।

"तुम अब मरने वाली हो।" जोगाराम बोला।

धरा ने गम्भीर निगाहों से जोगाराम को देखा।

"जब रास्ते में बड़ी-बड़ी पहाड़ी चट्टानें आने लगें तो उससे आगे तुम्हें ही जाना होगा।" जोगाराम ने पुनः कहा—"वो पहाड़ देख रही हो।"

धरा ने नजरें घुमाकर पेड़ों के बीच में झलकते पहाड़ को देखा।

"वहीं वो रहते हैं। डोबू जाति के लोग। यहां पहाड़ ही पहाड़ हैं और आपस में जुड़े हुए हैं। वो खोखले हैं या उन्होंने उसे खोखला कर लिया है। उनकी दुनिया पहाड़ों के भीतर है, परंतु तुम वहां तक कभी नहीं पहुंच पाओगी। मेरी बात को तुमने कभी भी गम्भीरता से नहीं लिया कि वो लोग तुम्हें मार देंगे। पहरे के तौर पर डोबू जाति के योद्धा पहाड़ों के आसपास बिखरे रहते हैं। पहाड़ों में घिरा ये इलाका इतना गहरा है कि यहां ट्रेकिंग करते लोग भी नहीं आते, पर कभी वो भटककर जरूर इधर आ जाते होंगे और मारे जाते हैं। अक्सर खबर आती है कि ट्रेकिंग पर गए लोगों में से कुछ लापता हो गए। उन्हें हैलीकॉप्टर से ढूंढ़ा जा रहा है, परंतु वो कभी नहीं मिलते।"

धरा बेचैन दिखने लगी।

"मैंने तुम्हें दस लाख रुपया दिया है।" धरा गुस्से से बोली।

"तभी तो तुम्हें यहां तक लाया हूं।" चलते-चलते जोगाराम ने कहा।

"तुम्हें चाहिए कि मेरा साथ दो।"

"साथ दे तो रहा हूं।"

"तुम मुझे कमजोर कर रहे हो ये कहकर कि डोबू जाति मुझे मार देगी।"

"सच बात सुनने से तुम कमजोर हो जाती हो। मुझे नहीं पता था। जोगाराम गम्भीर था—"मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूं कि मुझे अकेले

ही वापस जाना होगा। तब मेरे दिल में ये बात जरूर होगी कि तुम्हारे जैसी बेवकूफ लड़की मेरी बात नहीं समझ सकी। कितना समझाया था मैंने। पता नहीं तुम कैसी सरकारी नौकरी करती हो। ऐसी नौकरी किस काम की कि तुम्हें जान खतरे में डालनी पड़े। जबकि तुम अकेली हो। किसी को पता भी नहीं चलेगा कि तुम मर गई या फिर कैसे मरी।"

धरा पांव पटककर रुक गई।

जोगाराम भी रुका।

"अब अगर तुम वापस जाना चाहो तो पैसे नहीं मिलेंगे। मैंने कल ही कह दिया था। परंतु तुम अपनी जान बचा सकती...।"

"मैं वापस जाने के लिए नहीं रुकी।" धरा ने तीखे स्वर में कहा।

"मुझे मालूम था कि तुम्हें मेरी बात समझ में नहीं आएगी।"

"तुम अपनी जुबान बंद रखो। थोड़ा-सा जो रास्ता है, वो पूरा कर लो।" धरा गुस्से में और परेशान थी।

उसके बाद जोगाराम ने कुछ नहीं कहा।

जोगाराम खामोशी से, धरा से दो-तीन कदम आगे चलता रहा।

करीब घंटे भर बाद जंगल खत्म होने लगा और वो जगह आ गई, जहां बड़े-बड़े पहाड़ के टुकड़े बिखरे पड़े थे। सामने ही बर्फ से ढका पहाड़ नजर आ रहा था। जो कि काफी बड़ा था और दूर तक जाता दिखाई दे रहा था। उस तक जाने के लिए ऊंचाई से भरा पहाड़ी मैदान नजर आ रहा था। जहां टेढ़े पेड़ खड़े दिख रहे थे और करीब आधे घंटे में वो रास्ता तय करके उस बर्फीले पहाड़ तक पहुंचा जा सकता था। जोगाराम वहीं रुक गया।

धरा ने जोगाराम को देखा।

जोगाराम ने पीठ पर टांग रखा बैग उतारकर नीचे रख दिया। उसका चेहरा सपाट था।

धरा व्याकुल हुई दिखी।

"तुम ठीक कहते हो।" धरा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरकर कहा—"कम-से-कम मुझे अकेले में ये खतरा नहीं उठाना चाहिए। इस काम में मेरे विभाग के और लोग भी साथ होने चाहिए थे। परंतु वो मेरी वजह से ही मेरे साथ नहीं हैं। मैंने ही उन्हें कहा कि एक बार मैं डोबू जाति से मिल आऊं फिर उन्हें बुलाऊंगी। पर तुम बार-बार ये बात कह रहे हो कि वो मुझे जिंदा नहीं छोड़ेंगे तो अब मेरे दिल में भी डर बैठने लगा है।"

"शुक्र है, दस लाख गंवाकर और चार दिन का ये बुरा सफर तय करके ही सही, पर तुम्हें मेरी बात समझ में तो आई। कम-से-कम तुम

अपनी बेशकीमती जान बचा सकती हो वापस जाकर।" जोगाराम ने फौरन कहा।

"गलत मत समझो।" धरा बोली—"मैं वापस जाने को नहीं कह रही।"

"तो?" जोगाराम ने उसे घूरा।

"पर मैं अपनी जान इस तरह खतरे में नहीं डालना चाहती।"

"कहना क्या चाहती हो?" जोगाराम उलझन में दिखा।

"तुमने बताया था कि पूरे चंद्रमा की रात डोबू जाति वाले पेट के बल लेट जाते हैं और सुबह तक नहीं हिलते।"

"हां, ये बात तो है, पर तुम...।"

"मान लो मैं पूरे चंद्रमा की रात का इंतजार करती हूं। कभी तो पूरा चंद्रमा निकलेगा और आसमान साफ होगा तो तब डोबू जाति वाले पेट के बल लेट जाएंगे, ऐसे में वो मुझे सामने पाएंगे तो क्या उठेंगे?"

जोगाराम के होंठ भिंच गए।

"बताओ, क्या वो उठेंगे?"

"मेरी जानकारी के मुताबिक तो पूरे चंद्रमा की रात वो पेट के बल लेट कर ही बिताते हैं।" जोगाराम ने अनमने भाव में कहा—"परंतु मैं दावा नहीं कर सकता कि तुम्हें देखकर वो उठेंगे कि नहीं।"

"मतलब कि ये रास्ता मेरे लिए लाभदायक है।"

जोगाराम, धरा को देखने लगा।

"डोबू जाति वाले मुझे देखते ही मार देंगे। ये तुम कहते हो।"

"क्योंकि पहले मैं जिन लोगों को इधर लाया था, उनके साथ ऐसा ही हुआ था।" जोगाराम ने बेचैनी से कहा।

"फिर तो पूरे चंद्रमा वाला मेरा आइडिया ज्यादा बेहतर है। उसमें बचने के चांस तो हैं। जैसा कि तुम कहते हो कि सम्भव है, वो उस रात न उठें। वैसे ही लेटे रहें। ऐसे में मैं एक निगाह पहाड़ों के भीतर जहां वो रहते हैं, मार सकती हूं। मेरे पास कैमरा है, वहां की तस्वीरें ले सकती हूं। इसी से ही मेरा काफी मतलब हल हो जाएगा। जिससे कि उन्हें समझा जा सकेगा। मैं सारी रिपोर्ट चक्रवती साहब को दे दूंगा, उसके बाद वो जो करना चाहे, वो कर...।"

"तुम पागल हो गई हो।"

"नहीं।" धरा ने सिर हिलाया—"मैं पागल नहीं हूं।"

"तुम इतना बड़ा खतरा उठाने को कह रही...।"

"जोगाराम। दस लाख खर्च करके, चार दिन का दुर्गम सफर तय करके, मैं खाली-खाली वापस जाने से तो रही। जिस काम के लिए आई हूं उसमें कुछ तो सफल होऊं। वापस जाकर मैं चक्रवती साहब को क्या

बताऊंगी कि मैंने विभाग के दस लाख रुपए जोगाराम को दे दिए कि वो अपने बच्चों को पढ़ा सके।"

जोगाराम के होंठ भिंच गए।

"मुझे भी आगे जवाब देना होता है कि दस लाख खर्च करके विभाग को ये फायदा हुआ। डर से मैं भाग नहीं सकती। पहले भी मैंने अंडमान निकोबार में एक द्वीप पर एक खतरनाक जाति का सामना किया था। वहां बाद में सब ठीक हो गया और यहां भी बाद में सब ठीक हो जाएगा। शुरू-शुरू में तो परेशानियां आती ही हैं।"

"तुम बेवकूफ हो जो ऐसा खतरनाक कदम उठाने की सोच रही हो। डोबू जाति को तुम ठीक से नहीं जानती कि...।"

"देखो जोगाराम।" धरा गम्भीर स्वर में बोली—"तुम्हारी बातें सुनकर ही मैंने आगे बढ़ने का विचार छोड़कर पूरी चंद्रमा वाली रात का इंतजार करने की सोची है। ऐसा मैंने तभी किया कि मुझे अपनी जान प्यारी है।"

"अगर अजनबी को अपने बीच आया पाकर, वो उस रात उठ गए तो...?"

"तो मैं उनसे बात करूंगी, उन्हें समझाऊंगी कि बाहर दुनिया बहुत बड़ी है, वो भी हमारा हिस्सा बनकर रहें। मैं उन्हें बाहर की दुनिया दिखाऊंगी। सब कुछ देखकर उनके मन जरूर बदलेंगे और...।"

"तुम बहुत बड़ी बेवकूफ हो।" जोगाराम परेशान हो उठा था।

"अगर वो लोग उस रात न उठे तो ये भी अच्छी बात है। मैं वहां से बाहर आ...।"

"वो तुम्हें छोड़ेंगे नहीं। ढूंढ़ लेंगे।"

धरा मुस्करा पड़ी। बोली।

"बस जोगाराम। तुम तो डरे हुए हो डोबू जाति से, परंतु मुझे और मत डराओ। हम पूरे चंद्रमा की रात का इंतजार करेंगे। मेरी बात मानने में तुम्हें एतराज तो नहीं होगा न?"

जोगाराम होंठ भींचे धरा को देखता रहा।

"डोबू जाति के पहरे से दूर तुम कोई जगह देख लो, जहां हम पूरे चांद की रात के इंतजार में वक्त काट सकें।"

"यहां गहरे बादल रहते हैं आसमान में। कई बार तो पूरा चांद निकलता होगा, पर दिखता नहीं होगा। ऐसे में तुम्हारा इंतजार जरूरत से ज्यादा लम्बा हो सकता है और हमारे पास इतना ही खाने-पीने का सामान है कि तीन दिन निकल सकें।"

"मैं भूखी रह लूंगी।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"तुम रह लोगे?"

जोगाराम ने बेचैन नजरों से धरा को देखा, पर कहा कुछ नहीं।

वहां से कुछ पास ही, पहाड़ से टूटकर गिरी चट्टान के भीतर, एक छोटी-सी खोह में उन्हें रहने का ठिकाना मिल गया था। हालांकि वो जगह पर्याप्त नहीं थी, परंतु काम चल सकता था। मात्र आठ फुट गहरी और पांच फुट चौड़ी जगह थी। जोगाराम और धरा दिन में वहां से बहुत कम बाहर निकलते थे। डोबू जाति के पहरेदारों द्वारा देख लिए जाने का खतरा था। रात में वे जरूर बाहर निकलते और चांद की दशा देखते कि वो पूरा है या नहीं? कभी चांद दिखता तो कभी नहीं दिखता। गहरे छाए बादलों की वजह से। कड़ाके की सर्दी में उनका ये वक्त बीत रहा था।

बारह दिन बीत चुके थे आज तेरहवें दिन की शाम थी।

खाने-पीने का सामान खत्म हो चुका था। जोगाराम किसी खास पेड़ की जड़ें तोड़ लाता था जो कि खाने में मीठी जैसी थीं। जोगाराम ने धरा को बताया था कि इन्हें खाकर पेट कुछ भरा जा सकता है। धरा की हालत ज्यादा बेहतर नहीं थी। तीखी सर्दी, भूखे पेट, बिना पानी के वो बेहाल हो चुकी थी। ऐसे में जोगाराम ने उसके सामने वापस चलने का प्रस्ताव भी रखा, परंतु धरा ने कहा कि वो इस तरह वापस नहीं जाएगी।

फिर ये ही तेरहवें दिन की रात उनके काम की निकली।

आसमान साफ था और चांद पूरा, गोल-गोल-सा ऊपर दिखा।

पूरे चांद को देखते ही जोगाराम का दिल धड़क उठा।

जबकि धरा खुश हो गई।

"पूरा चांद निकल आया जोगाराम।" धरा के होंठों से तेज स्वर निकला।

जोगाराम ने गम्भीर नजरों से धरा को देखा। गहरा अंधेरा छाया हुआ था।

"मुझे वहां कब जाना चाहिए?" धरा ने पूछा।

"अभी कुछ देर रुको।" जोगाराम ने गम्भीर स्वर में कहा—"घंटा भर बीत जाने दो।"

"कितने दिन इंतजार किया, पूरे चांद के लिए। मैं कैमरा निकालती हूं।" कहने के साथ ही धरा एक तरफ रखे बैग के पास पहुंची और उसे खोलकर कैमरे की तलाश में भीतर हाथ मारने लगी।

"तुम बहुत बड़े खतरे में दखल देने जा रही हो।"

"चुप रहो जोगाराम। मुझे डोबू जाति के बारे में जानकारी इकट्ठी करनी है। जो दस लाख तुम्हें दिया है, उसकी कीमत वसूलनी है।"

"मेरी बातों पर पूरा भरोसा मत करो। हो सकता है डोबू जाति वाले पूरे चांद की रात को अब पेट के बल लेटकर न बिताते हों और ये भी

हो सकता है कि तुम्हें देखकर वो उठें और तुम्हें मार दें।" जोगाराम ने व्याकुल स्वर में कहा।

धरा ने बैग में से कैमरा निकाल लिया।

"अब मैं डोबू जाति को पास से देखे बिना वापस जाने वाली नहीं। इसलिए तुम ऐसी बातें कहना बंद करो।"

जोगाराम ने कुछ नहीं कहा।

धरा ने आसमान पर निगाह मारी।

पूरा चांद चमक रहा था और उसकी रोशनी स्पष्ट तौर पर जमीन पर पड़ रही थी। आसमान में बादलों के छोटे-छोटे टुकड़े तैर रहे थे। तारे भी चमक रहे थे। परंतु सर्दी की तीव्र लहरें, शरीर को झिंझोड़े दे रही थीं।

"अब तक वो घोड़े वहीं पर बंधे होंगे?" धरा ने पूछा।

"वो वहीं होंगे।" जोगाराम बोला।

काफी वक्त बीत गया तो धरा बोली।

"मुझे अब जाना चाहिए जोगाराम।"

जोगाराम ने कुछ नहीं कहा।

"कैसे जाऊं, किधर से जाऊं, क्या कुछ आगे तक तुम मेरे साथ चलोगे?"

"नहीं।" जोगाराम ने स्पष्ट कहा—"मैं आगे नहीं जाऊंगा।"

"तो मुझे रास्ता बता दो। कितनी देर में मैं वहां पहुंच जाऊंगी?" धरा ने पूछा।

"बीस-तीस मिनट में।" कहने के साथ ही जोगाराम धरा को रास्ता समझाने लगा।

▭ ▭

सर्द हवाओं के थपेड़े सहती धरा, जोगाराम के बताए रास्ते पर आगे बढ़ रही थी। हाथ में कैमरा पकड़ रखा था। जींस की पैंट के साथ सुनीता का दिया स्वैटर पहना था। रात का अंधेरा उसके आगे बढ़ने में कुछ परेशानी पैदा कर रहा था, परंतु पूरे चंद्रमा की रोशनी जमीन पर पड़ती, उसे आगे बढ़ने में सहायता कर रही थी। जोगाराम ने बता दिया था कि कुछ आगे जाने पर, पहरेदारों का खतरा शुरू हो जाएगा और धरा कुछ आगे पहुंच चुकी थी।

परंतु सब ठीक था।

अभी तक कोई खतरा सामने नहीं आया था।

इस वक्त तो पहाड़ी जैसी जगह पर चढ़ रही थी जहां आस-पास पेड़ ही पेड़ खड़े थे। दिल धड़क रहा था धरा का। कुछ डर भी रही थी लेकिन आगे बढ़ी जा रही थी। वो चक्रवती साहब को दिखा देना चाहती थी कि

खर्चे दस लाख रुपए उसने बेकार नहीं किए। वो सफल होकर लौटना चाहती थी। डोबू जाति के बारे में पर्याप्त जानकारी पाकर वापस लौटना चाहती थी जबकि जोगाराम की बातें सुनकर वो मन-ही-मन विचलित थी। जोगाराम की बातों से जाहिर होता था कि डोबू जाति बेहद खतरनाक है और इनके पास जाना भी ठीक नहीं।

धरा आगे बढ़ती जा रही थी।

जल्दी ही वो चढ़ाई खत्म हो गई और वो ऊपरी हिस्से पर जा पहुंची। सामने बर्फ से लदा, पूरे चंद्रमा की रोशनी में, पहाड़ स्पष्ट रूप से चमक रहा था। हर तरफ वीरानी और सुनसानी थी। धरा ने पलटकर पीछे देखा तो लगा काफी फासला तय कर आई है। उसने सोचा कि क्या जोगाराम उसे देख रहा होगा। फिर वो सामने के पहाड़ की तरफ बढ़ गई। जमीन पर बर्फ ही बर्फ बिछी थी, ऐसे में चलने में कुछ परेशानी आ रही थी। आंखें फाड़े रास्ते को भी ठीक से देखना-समझना पड़ रहा था। कहीं कोई नजर नहीं आ रहा था, जबकि जोगाराम के मुताबिक अब तक पहरेदारों की तरफ से उस पर जानलेवा हमला हो जाना चाहिए था। क्यों नहीं हुआ ऐसा?

तो क्या पूरे चंद्रमा की वजह से सब पहाड़ के भीतर पेट के बल लेटे हैं। ऐसे क्यों करते हैं ये लोग? पूरे चंद्रमा को देखकर भयभीत हो जाते हैं या ये डोबू जाति की कोई रस्म है?

धरा के पास कोई जवाब नहीं था।

वो धीमे-धीमे बर्फीले रास्ते पर चलती, पहाड़ के बिल्कुल करीब पहुंच गई। पहाड़ के साथ करीब बीस फुट तक जमीन थी उसके बाद गहरी घाटी दिखाई देती थी। धरा उसी बीस फुट चौड़े रास्ते पर, पहाड़ के साथ-साथ आगे बढ़ने लगी। जोगाराम भी यहां के बारे में पूरा नहीं बता सका था, आधा-अधूरा ही ज्ञान था उसे। परंतु उसने ये जरूर बताया था कि पास ही पहाड़ के भीतर जाने का रास्ता है कहीं से।

धरा पांच मिनट ही आगे गई होगी कि एकदम ठिठक गई।

पहाड़ के भीतर का रास्ता उसके सामने था। वो देखती रह गई।

पंद्रह फुट ऊंचा और इतना ही चौड़ा रास्ता।

रास्ते पर कुछ आगे तक बर्फ पड़ी थी फिर बर्फ नहीं थी। भीतर मशालें जलती देखीं। मशालों की मध्यम-सी संतरी रोशनी वहां फैली थी। पहाड़ के भीतर, मशालों की रोशनी में उसने किसी को नीचे लेटे भी देखा। धरा ने मजबूती से कैमरा पकड़ा और धड़कते दिल के साथ भीतर प्रवेश कर गई। उसका दिल धाड़-धाड़ बज रहा था। मन-ही-मन सोच रही थी कि अगर जोगाराम साथ में होता तो और भी अच्छा रहता।

धरा भीतर पहुंची।

रास्ता बाईं तरफ मुड़ रहा था, परंतु वो पेट के बल जमीन पर लेटे व्यक्ति के पास जा पहुंची। उसने शरीर पर लंगोट जैसी कोई चीज बांध रखी थी। बाकी शरीर नंगा था।

"हैलो।" धरा उसके पास बैठती कह उठी—"तुम कौन हो?"

वो उसी प्रकार नीचे लेटा रहा। उसने सिर घुमाया, परंतु जमीन से उठाया नहीं।

"नाम क्या है तुम्हारा?"

उसने कोई जवाब नहीं दिया।

धरा को लगा वो उसकी बात को नहीं समझ पा रहा, उसने कैमरे से उसकी तस्वीर ली और बाईं तरफ मुड़ते रास्ते पर सावधानी से आगे बढ़ गई। पहाड़ के भीतर काफी खुली जगह थी। छत पच्चीस-तीस फुट ऊंची थी। जगह-जगह मशालें लगी हुईं, वहां रोशनी कर रही थीं। बाईं तरफ मुड़ते ही रास्ता दस फुट चौड़ा दिखा और उसके दोनों तरफ पहाड़ को काटकर तैयार किए गए बिना दरवाजों के कमरे दिखने लगे। फर्श पर सोने के लिए लकड़ियां बिछा रखी थीं कि सर्दी कम लगे। हर कमरे में लोग थे और पेट के बल लेटे हुए थे। किसी के शरीर पर पूरे कपड़े थे तो किसी ने लंगोट बांध रखा था। औरतों ने भी नीचे कपड़ा बांध रखा था। ऊपरी हिस्सा नंगा था तो किसी-किसी औरत ने ऊपर कमीज जैसा कपड़ा पहन रखा था। खास बात तो ये थी कि हर तरफ सुनसानी छाई हुई थी।

धरा ने वहां की, सबकी तस्वीरें खींची।

उनसे बात करने की चेष्टा की।

एक से उसकी बात हो गई जो कि उसकी भाषा को जानता था।

"हैलो।" धरा बोली—"तुम कौन हो?"

"तुम कौन हो?" जवाब में उस व्यक्ति ने पूछा। वो पेट के बल लेटा था और चेहरा भी जमीन से सटा था।

"मैं धरा हूं। मुम्बई से डोबू जाति से मिलने आई हूं। दोस्ती करने आई हूं। तुम लोग यहां कैसे...।"

"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यहां तक आ जाने की, तुम...।"

"मैं तुम लोगों की दोस्त हूं। धरा...।"

"तुम्हें अब जिंदा नहीं छोड़ा जाएगा। तुमने बहुत बड़ी भूल की यहां आकर।" वो क्रोध से बोला। परंतु बातों के दौरान उसकी मुद्रा में कोई फर्क नहीं आया था। वो पेट के बल वैसे ही लेटा था और चेहरा भी नीचे लगा हुआ था।

"ये तुम लोग क्या कर रहे हैं, इस प्रकार लेटकर...।"

"अपनी मौत से डरो लड़की। अब तुम बहुत जल्दी मार दी जाओगी। चली जाओ यहां से।"

"मुझसे डरो मत। मैं तुम लोगों से दोस्ती करने आई हूं। हम सब मनुष्य हैं। हमें एक-दूसरे के काम आना चाहिए। मैं तुम लोगों को इस वीराने से ले जाकर, किसी शहर में बसने का मौका दूंगी। रोजगार दूंगी। बढ़िया-बढ़िया खाने की चीजें मिलेंगी। हम सब मिलकर रहेंगे। यहां से दूर शहरों में बहुत कुछ होता है। तुम मेरी भाषा जानते हो तो तुमने हमारी दुनिया को भी देखा होगा। कितना अच्छा लगता है सब कुछ।"

वो चुप रहा।

"मेरी बात समझे तुम कि मैं क्या कह रही...।"

"तुम्हारी मौत आ चुकी है। तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ा जाएगा। हमारी इस जगह पर आज पहली बार बाहर के किसी इंसान ने कदम रखा है। तुम्हारी जान ले ली जाएगी। हमें पसंद नहीं कि तुम दुनिया को हमारे बारे में बताओ।"

"क्यों पसंद नहीं?"

उसने कुछ नहीं बोला।

"हम दोस्त हैं, तुम्हारा नाम क्या है?"

वो चुप रहा।

कई बार बुलाने पर भी वो कुछ नहीं बोला।

धरा वहां से आगे बढ़ गई। इस दौरान वो बराबर तस्वीरें लेती जा रही थी। दिल तेजी से धड़क रहा था वो रास्ता पार करने में पांच मिनट लगे कि धरा ने खुद को एक बहुत ही बड़े विशाल हॉल में पाया। पहाड़ को भीतर से काटकर बनाया गया था वो विशाल हॉल और वहां पर नजर पड़ते ही वो हैरान रह गई। सैकड़ों की संख्या में वहां औरतें-मर्द पेट के बल नीचे लेटे हुए थे। गहरी खामोशी छाई हुई थी वहां। उसकी मौजूदगी पाकर भी किसी ने सिर नहीं उठाया, न ही उठने की चेष्टा की थी। वहां सबसे आकर्षित करने वाली चीज थी वो मूर्ति।

पंद्रह-बीस फुट लम्बे-चौड़े चबूतरे पर वो मूर्ति खड़ी थी, जो कि पैंतीस फुट ऊंची रही होगी। किसी बड़े पहाड़ी पत्थर को काट-छांट कर वो मूर्ति तैयार की गई थी। वो पुरानी लग रही थी। किसी स्त्री की मूर्ति थी वो। वहां जल रही मशालों की रोशनी में वो चमक रही थी। उसका रंग मटमैला और काला-सा पड़ चुका था। सीधी खड़ी उस मूर्ति का हाथ उठा हुआ चेहरे के पास जैसे आशीर्वाद देने की मुद्रा में था। मूर्ति में स्त्री का चेहरा कुछ स्पष्ट नहीं था। मूर्ति को देखकर ऐसा लगता था जैसे शरीर पर कलाकार ने धोती जैसा कपड़ा लिपटा रखा हो अपनी कला के सहारे।

धरा चबूतरे के पास पहुंची और मूर्ति की कई तस्वीरें ले लीं। वहां लेटे लोगों की तस्वीरें लीं। उस सारी जगह को कैमरे में कैद कर लिया। लोग अपनी जगह पेट के बल स्थिर लेटे थे। कोई सिर उठाकर उसे नहीं देख रहा था। परंतु जिसे उसी मुद्रा में जो दिख जाता, उतना देख लेता था। तभी धरा की निगाह मूर्ति के पैरों में पड़ी बड़ी-सी किताब जैसी चीज पर पड़ी। वो तुरंत चबूतरे पर चढ़ी और पास पहुंचकर उसे देखने लगी। वो किताब जैसी चीज जरूर थी परंतु उसके पन्ने पत्तों के थे। सूखे पुराने पत्ते। उन पर कुछ लिखा था काली स्याही से। धरा ने उन पत्तों जैसे पन्ने को गिना। वो कुल आठ थे। धरा को समझ नहीं आया कि उन पत्तों पर किस भाषा में लिखा है। वक्त बर्बाद न करते हुए उसने उन आठों पत्तों को उठाकर अपने स्वैटर के बीच डाल लिया और चबूतरे से उतर आई। उसकी नजरें हर तरफ जा रही थीं।

फिर उसे उसी पहाड़ी हॉल के दूसरी तरफ आगे को रास्ता जाता दिखा तो वो उस तरफ बढ़ गई। धरा ये सब करते हुए सामान्य नहीं थी। वो गम्भीर, चिंतित व्याकुल थी। वो डर रही थी। दिल धड़क रहा था। कोई उठ गया तो उसे पकड़कर कैद कर लेगा। परंतु ये लोग जाने किस रस्म—किस क्रिया के तहत पूरे चंद्रमा की रात को पेट के बल लेट जाते थे और फिर किसी भी हाल में उठते नहीं थे।

धरा उस हाल से बाहर निकल आई।

आगे एक छोटा हॉल था।

परंतु वहां का नजारा देखते ही बुरी तरह चौंक गई। ठगी-सी खड़ी रह गई।

वहां पर पंद्रह-बीस लोग लेटे हुए थे पेट के बल। उस कमरे में एक तरफ दीवार पर दो बड़ी स्क्रीनें लगी थीं। जो कि इस वक्त बंद थीं। दीवार के पास काफी लम्बे हिस्से में पत्थर की शैल्फ जा रही थी जिस पर स्विच-बोर्ड लगे थे। तारें जाती दिखाई दे रही थीं। अजीब तरह के मीटर पड़े थे। मीटरों की सूइयां अभी भी धरा को थरथराते दिखाई दे रही थीं। शैल्फों पर मोटी-मोटी नॉबे थीं घुमाने वाली। और भी कई तरह की चीजें थीं, जो कि धरा की समझ से बाहर थे। धरा तो सिर्फ ये सोच रही थी कि इन चीजों की डोबू जाति वालों को क्या जरूरत? क्या समझ है इन चीजों की इन्हें। इससे ये क्या करते हैं। ये तो मशालों की रोशनी में काम करते हैं, ऐसे में तारों का क्या काम। यहां कहीं तो बिजली भी नहीं है?

एकाएक धरा को होश आया तो उसने फौरन कैमरा संभाला और वहां की तस्वीरें लेने लगी। वो यहां की हर चीज को कैमरे में कैद कर लेना चाहती थी। तभी उसकी निगाह छत की तरफ उठी तो उसे पहाड़ की

छत में एक बड़ा-सा छेद दिखा। धरा समझ गई कि यहां जलती मशालों के धुएं को बाहर निकालने के लिए वो छेद बनाया होगा और ऐसे छेद जगह-जगह होंगे।

धरा जानती थी कि उसके पास ज्यादा वक्त नहीं है। यहां ज्यादा देर रुकना ठीक नहीं था और उसे जल्दी ही यहां से चले जाना चाहिए। परंतु फिर भी वो आगे बढ़ी, उस जगह को पार करके पहाड़ों के भीतर ही आगे जाने को रास्ता था, उस तरफ बढ़ती वो आगे निकली।

आगे छोटा हॉल था और जगह-जगह आग की छोटी-छोटी भट्ठियां लगी थीं, जैसी कि लोहार लगाकर रखते हैं। वहां ढेर सारे चाकू, खंजर, तलवारों जैसे हथियार रखे थे। उनमें नन्हे-नन्हे मात्र डेढ़ इंच लम्बे फल के चाकू भी थे। धरा समझ गई कि ये डोबू जाति के हथियार बनाने की फैक्ट्री है।

धरा ने तस्वीरें लीं। वहां भी काफी लोग लेटे हुए थे। धरा को महसूस हो गया कि डोबू जाति की संख्या काफी है। ये हजार से ऊपर होंगे, या ज्यादा भी। धरा आगे निकली। आगे कमरों का हाल अजीब-सा था। जैसे यहां युद्ध लड़ा जाता हो। वहां कीलों का बनाया फर्श भी एक तरफ था। और भी ऐसा काफी कुछ था कि उसे जोगाराम की बात याद आ गई कि इन लोगों को बेहद कठोर ढंग से योद्धा का प्रशिक्षण दिया जाता है। इनके जीवन का मात्र ध्येय ही योद्धा बनना होता है। जिसके लिए ये जान तक दे देते हैं।

धरा हर जगह की तस्वीरें लेती जा रही थी।

धरा आगे गई तो ऐसा हॉल आया जहां सामूहिक खाना तैयार किया जाता हो। जगह-जगह चूल्हे बने हुए थे। बड़े-बड़े पतीले थे कि जिनमें एक आदमी आराम से बैठ सके। कड़छे थे पांच-पांच फुट बड़े। एक तरफ छोटे बर्तनों का ढेर लगा हुआ था। यहां भी औरतें-मर्द पेट के बल लेटे हुए थे। धरा उससे आगे बढ़ी तो अगले हॉल में सैकड़ों बच्चे पेट के बल लेटे थे। उनके शरीर पर लंगोट रूपी कपड़ा बंधा था। यहां की दुनिया धरा तस्वीरों में कैद करती जा रही थी। वहां से आगे गई तो कमरों की कतारें मिलीं। वहां लोग थे परंतु वो सभी पेट के बल लेटे हुए थे। आगे और भी रास्ता था। परंतु धरा अब यहां से निकलने के बारे में सोचने लगी। अब आगे न जाकर वो वापस पलटकर चल पड़ी। जाने क्यों उसे खतरा-सा महसूस होने लगा था। मन का डर भी बढ़ गया था। उसने स्वैटर के भीतर रखे आठों पत्तों को टटोला। यहां पर कई चीजें रहस्यमय थीं परंतु अभी वो कुछ भी सोचना नहीं चाहती थी और निकल जाना चाहती थी। उसने यहां का हाल जान लिया है। चक्रवती साहब को तस्वीरें दे देगी।

उसके बाद वो जैसा ठीक समझेंगे। कर लेंगे। अब धरा मूर्ति वाले हॉल से निकल रही थी तो एक जगह पांव रखते ही, वहां नीचे पड़े व्यक्ति ने एकाएक उसकी पिंडली मजबूती से थाम ली। धरा को जैसे कोई शिकंजा पिंडली से लिपटता महसूस हुआ।

धरा के होंठों से घबराहट भरी चीख निकली। वो लड़खड़ाई और नीचे जा गिरी। उसने अपना हाथ आगे न कर लिया होता तो उसे चोट लगनी थी। दूसरे हाथ में कैमरा सुरक्षित रहा।

धरा फौरन संभली।

परंतु औंधे लेटे व्यक्ति ने उसकी पिंडली अभी तक नहीं छोड़ी थी।

"छोड़ो मुझे।" धरा ने पिंडली छुड़ानी चाही।

उस व्यक्ति का चेहरा स्पष्ट नहीं दिख रहा था। मशालों की रोशनी का प्रकाश मध्यम था, फिर वो पेट के बल लेटा था और चेहरा भी नीचे की तरफ था। उसकी कठोर आवाज धरा के कानों में पड़ी।

"कौन हो तुम?"

"धरा नाम है मेरा।" धरा ने कहा।

"यहां तक कैसे आ पहुंची?"

"यूं ही घूमते-घूमते...।"

"झूठ मत बोलो। इस जगह पर कोई भी घूमते-घूमते नहीं आ...।"

"लेकिन मैं आ गई हूं।"

"कहां से आई हो?"

"मुम्बई से। मैं तुम लोगों से मिलने आई थी।"

"क्यों?"

"मैं सरकार के उस विभाग में काम करती हूं, जो विभाग अलग-थलग रह रही पुरानी जातियों को दुनिया के साथ जोड़ता है, उन्हें नई जिंदगी दिलाता है, इसलिए डोबू जाति के पास आई हूं। तुम लोगों का रहन-सहन ठीक नहीं है। खाना-पीना भी ठीक नहीं होगा। हमारी दुनिया में और भी बहुत कुछ होता है। तुम मेरी भाषा जानते हो तो हमारी दुनिया को भी जानते होंगे। हम तुम सबके भले के लिए तुम लोगों को अपनी दुनिया से जोड़ना...।"

"बकवास बंद करो। हम बहुत खुश हैं यहां...।"

"तुम मेरी बात समझे नहीं...।"

"सब समझ रहा हूं पर तू नहीं समझ रही कि तूने मौत के मुंह में कदम रख दिया है। मौत अब तुम्हारा भाग्य बन चुकी है। यहां पर कभी भी कोई बाहरी इंसान नहीं आ पाया। हम उसे यहां पहुंचने ही नहीं देते। परंतु तुम तो भीतर तक हो आई हो। ऐसे में तुम्हारी मौत निश्चित हो गई है। ये ही हमारा नियम है।"

"मैं तो तुम लोगों को दोस्त बनाने आई...।"
"हमें किसी की जरूरत नहीं है।"
"मेरी टांग छोड़ो।"
"नहीं। सुबह तक तुम्हें ऐसे ही रोके रखूंगा। दिन निकलने पर जब चांद छिप जाएगा तो हम उठेंगे और तुम्हें मार देंगे। अब तुम यहां से जा नहीं सकतीं।" उसने बेहद कठोर स्वर में कहा।
धरा के चेहरे पर घबराहट उभरी।
"तुम मुझे छोड़ोगे नहीं?" धरा परेशान हो उठी।
"नहीं। सुबह तक तुम्हें ऐसे ही रहना होगा।"
धरा ने पिंडली छुड़ानी चाही, पर नाकामयाब रही।
"तुम्हें कौन लाया यहां तक?"
"मैं अकेले आई हूं।"
"कोई भी बाहरी आदमी अकेले यहां नहीं पहुंच सकता। जरूर तुम्हें कोई लाया है।"
"मुझे कोई नहीं लाया।" धरा बेचैन-सी टांगें छुड़ाने की सोच रही थी—"उस कमरे में स्क्रीनें क्यों लगी हैं। वहां स्विच और बिजली की तारें देखी हैं मैंने, जबकि बिजली तो यहां नहीं है। तुम लोग उसका क्या करते हो?"
"तुम बच नहीं सकतीं।" वो गुर्रा उठा।
"मैं बच जाऊंगी।" धरा का दिमाग तेजी से काम कर रहा था—"मुझे बबूसा आकर बचा लेगा।"
"बबूसा?" उस व्यक्ति के होंठों से निकला और उसी पल पिंडली छोड़ दी।
धरा फौरन छिटककर पीछे हो गई।
उसने पुनः हाथ मारा धरा को पकड़ने के लिए, परंतु कोई फायदा नहीं हुआ।"
"तुम बबूसा को कैसे जानती हो? क्या उसने तुम्हें यहां भेजा है" उस व्यक्ति ने अजीब से स्वर में कहा।
"मैं बबूसा को नहीं जानती। उसे कभी देखा भी नहीं, इतना पता है कि वो अपनी जाति से विद्रोह करके चला गया है।"
"ये बात तुम्हें कैसे पता चली। ये तो हमारी बात है।"
"पता चल गई।" धरा उसे देखती कह उठी—"बबूसा ने अपनी जाति से विद्रोह क्यों किया?"
"तुम मरोगी।" वो दांत पीसकर कह उठा।
"बबूसा का नाम सुनते ही तुमने मेरी पिंडली से हाथ हटा लिया। इतना डरते हो उससे।" धरा उठ खड़ी हुई।

"तुम जिंदा बचने वाली नहीं। वो उसी स्वर में बोला।

"कभी मुम्बई देखी है?" धरा मुस्कराई।

"नहीं।"

"मुम्बई ऐसी जगह है कि जहां किसी को, एड्रेस के बिना नहीं ढूंढ़ा जा सकता। वहां की भीड़ में लोग खो जाते हैं और तुम सिर्फ मेरा नाम ही जानते हो। ऐसे में मुझे नहीं ढूंढ़ सकोगे। लेकिन मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि मैं फिर यहां आऊंगी। तब मेरे साथ मेरे विभाग के लोग होंगे और हममें लम्बी बातचीत होगी। तुम मुझे दुश्मन मत समझो। हम दोस्त हैं। मैं तुम लोगों को, तुम्हारी पूरी जाति को, दुनिया के साथ मिला दूंगी।" धरा ने विश्वास भरे स्वर में कहा—"हम सब इंसान हैं, हमें एक-दूसरे के काम आना चाहिए।"

"जवाब में वो व्यक्ति सिर्फ गुर्राकर रह गया।

धरा तेजी से वापस चल पड़ी। इस बार वो सतर्क थी कि कोई फिर से उसका पांव न पकड़ ले। परंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ और उस पहाड़ से बाहर आ गई।

बाहर आते ही कड़ाके की सर्दी से उसका सामना हुआ। वो कांप उठी। पहाड़ों के भीतर जरा भी ठंड का एहसास नहीं हो रहा था। धरा तेज-तेज, लगभग दौड़ने वाले अंदाज में वापस चल पड़ी। आसमान पर मौसम साफ था और पूरा चांद अपनी तेज रोशनी जमीन पर फेंक रहा था। बर्फीले पहाड़ चांद की रोशनी में चांदी की तरह चमक रहे थे। प्रकृति का शानदार नजारा था। लेकिन धरा को इस नजारे की परवाह नहीं थी। वो जल्दी-जल्दी जोगाराम के पास पहुंच जाना चाहती थी। उसने डोबू जाति के रहने की जगह को भीतर तक जाकर देखा था और मन-ही-मन इस बात को महसूस कर रही थी कि ये सामान्य लोग नहीं हैं। इनमें कुछ रहस्य तो है ही। वो स्क्रीनें। लम्बी शैल्फों पर लगे स्विच, वो बिजली की तारें—धरा को कुछ समझ नहीं आ रहा था।

▭ ▭
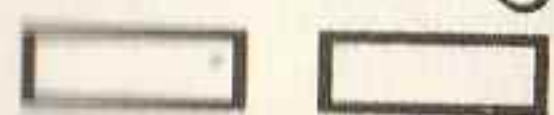
धरा कब उस जगह पर पहुंची, उसे न पता चला, वो वहां से और आगे निकल जाती अगर जोगाराम की आवाज उसके कानों में न पड़ती। वो फौरन ठिठकी। तेज सांसें ले रही थी वो।

"जोगाराम।" धरा जल्दी से कह उठी—"यहां से चलो।"

"वो लोग पीछे हैं क्या?" जोगाराम का स्वर व्याकुलता से भरा था।

"नहीं। सब ठीक है। पूरे चांद की वजह से वो सब छाती के बल लेटे हुए हैं। उठे नहीं। परंतु वो जरूर पीछे आएंगे। उन्होंने कहा है कि वो मुझे मार देंगे।" धरा ने पीछे देखते हुए कहा।

"आओ।" जोगाराम कह उठा—"अगर रात-रात में हम पहाड़ को पार कर गए तो खतरा कम हो सकता है।"

"बैग तो ले लो।"

"रहने दो। हमें जल्दी से पहाड़ पार करना है।"

दोनों तेजी से आगे बढ़ गए।

कैमरा धरा के हाथ में था।

"तुम दौड़ सकती हो?" जोगाराम ने पूछा।

"हां। पर ज्यादा तेज नहीं। यहां अंधेरा भी तो है।"

"मेरे पीछे दौड़ो। मैं चार कदम आगे दौड़ूंगा। समझ गई?"

"हां।"

अगले ही पल जोगाराम और धरा दौड़ने लगे।

"हम कब तक, पहाड़ के पास पहुंच जाएंगे?"

"आधे-पौने घंटे में, अगर इसी तरह दौड़ते रहे तो...।"

उनके दौड़ने की आवाजें सर्द सन्नाटे में गूंज रही थीं।

धरा हांफने लगी थी। परंतु उसका रुकने का इरादा नहीं था।

"वक्त क्या हुआ है?" धरा ने पूछा।

"रात के दो बजे हैं।"

"ओह। आते वक्त तो हमें पहाड़ पार करने में सात-आठ या नौ घंटे लग गए थे।" दौड़ते हुए धरा बोली।

"तब हमारे पीछे कोई नहीं था। अब हम खतरे में हैं तो जल्दी करना होगा ये काम।"

"वो कहते हैं कि सुबह चांद के छिपते ही वो उठेंगे और मुझे ढूंढ़कर मार देंगे।"

"ये खतरनाक बात है।" जोगाराम भी दौड़े जा रहा था।

"मुझे भूख लग रही है, पेट में दर्द हो रहा है।"

"अपने पर काबू रखो। ये जिंदगी और मौत का सवाल है। तुम भारी खतरे में हो। वो तुम्हें ढूंढ़ सकते हैं।"

"जानते हो वहां मैंने क्या देखा, वहां...।"

"अभी बातें मत करो। बात करने से शरीर की ताकत कम होती है, हमें जल्दी से पहाड़ पार करना है।"

"मैं तुम्हें सब कुछ बताऊंगी। मेरे पास उनकी चीजों की ढेरों तस्वीरें हैं। तुम ठीक कहते थे वो सच में रहस्यमय इंसानों की जाति है। वहां ऐसा बहुत कुछ है जो सोचने पर मजबूर करता है। आदिवासी जातियां अनपढ़, जाहिल होती हैं, परंतु ये डोबू जाति तो बहुत आगे है, जोगाराम पहाड़ों पर बिजली है, जहां ये रहते हैं?"

"नहीं।"

"तो इन्होंने एक जगह टी.वी. जैसी स्क्रीनें क्यों लगा रखी हैं। वहां स्विच भी हैं। जब लाइट नहीं है तो स्क्रीनें, स्विच, तारें किस काम की। मुझे तो लगता है कि वहां जरूर लाइट है।" धरा ने दौड़ते हुए कहा।

"असम्भव। हमारे कस्बे टाकलिंग ला से आगे कहीं भी लाइट नहीं है। ये बर्फीले पहाड़ तो वीरान हैं। इधर आता-जाता कोई नहीं। लोग नहीं बसते। डोबू जाति के बारे में अभी कोई जानता नहीं। यहां कोई लाइट नहीं है। कोई सड़क नहीं है। पगडंडी भी नहीं है। क्या तुमने वहां रोशनी देखी?"

"नहीं। मशालें जला रखी थीं।"

"अगर वहां लाइट होती तो वे मशालें क्यों जलाते, लाइट जलाते...।"

"परंतु वो स्क्रीन, बोर्ड पर ढेरों स्विच, वो बिजली की तारें, ये सब लाइट होने की तरफ इशारा करता है।"

"चुप रहो और तेज दौड़ने की कोशिश करो। हमारे पास ज्यादा वक्त नहीं है। चार घंटों तक दिन निकल आएगा। चांद भी छिप जाएगा। उससे पहले हमें पहाड़ पार कर लेना है।" जोगाराम ने ऊंचे स्वर में कहा।

"अगर हम पहाड़ पार कर लेंगे तो वो हमें नहीं पकड़ सकेंगे।"

जोगाराम ने कुछ नहीं कहा।

"बताओ जोगाराम। अगर हम पहाड़...।"

"वो कहीं भी पहुंच सकते हैं।" जोगाराम की आवाज आई—"उनके लिए कोई भी जगह दूर नहीं है। तुम उनके भीतर तक हो आई हो। पूरे चांद की वजह से वो लेटे रहने पर मजबूर होंगे। परंतु वो छोड़ेंगे नहीं तुम्हें। तुमने मुझे भी खतरे में डाल दिया है।"

"वहां के दो लोगों से मेरी बात हुई। एक मुझसे पूछ रहा था कि मुझे यहां तक कौन लाया।"

"तुमने क्या कहा?"

"मैंने कहा, मैं खुद ही आ पहुंची हूं, परंतु जैसे उसे मेरी बात पर यकीन नहीं आया।"

"वो मेरे बारे में भी जान लेंगे।" जोगाराम की आवाज में परेशानी आ गई थी।

"तुम मेरे साथ मुम्बई चलो। वहां ये लोग तुम्हें ढूंढ़ नहीं सकते।" वहां...।"

"तुम बहुत कम आंक रही हो डोबू जाति को। ये लोग बहुत समझदार, चालाक, खतरनाक हैं। योद्धा तो ये होते ही हैं परंतु दिमाग का इस्तेमाल करना भी जानते हैं। ऐसे में इनकी ताकत और पहुंच बहुत ज्यादा बढ़

जाती है। मुम्बई के बारे में तुम गलतफहमी मत पालो कि ये वहां नहीं पहुंच सकते। इनके पास दौलत और ताकत की कमी नहीं है। दिमाग भी है तो ये कहीं भी पहुंच सकते हैं। तुम्हें ये जरूर ढूंढ़ लेंगे।"

"तुम फिर मुझे डराने लगे।"

"जोगाराम डोबू जाति के बारे में सबसे ज्यादा जानता है। मेरी कही बातों का भरोसा करो।"

"यहां से निकलो। तुम डोबू जाति को ज्यादा ही बढ़ा-चढ़ाकर बता रहे हो। सब ठीक रहेगा। मैं फिर वापस आऊंगी अपने विभाग के लोगों के साथ। तब इनके साथ बातचीत की जाएगी।"

"मुझे दुख है कि अभी भी तुम मेरी बातों को या डोबू जाति को ठीक से नहीं समझीं।"

"मैंने बढ़िया काम किया है।" धरा अपने ही सपनों में थी—"चक्रवती साहब खुश हो जाएंगे। डोबू जाति की तस्वीरें और भीतरी जानकारी को सुनकर। तुमने मुझे काफी बातें बताई हैं। वो सब चक्रवती साहब को बताऊंगी।"

जोगाराम ने जवाब में कुछ नहीं कहा।

▭ ▭

पहाड़ के प्रवेश रास्ते पर उजाला चमका तो डोबू जाति के लोग उठने लगे। पूरे चांद की रात निकल गई थी। रात को एक ही मुद्रा में लेटे रहने की वजह से वो थके से महसूस कर रहे थे। कुछ तो उसी मुद्रा में नींद में डूब गए थे। ये सब उनके लिए नया नहीं था और पहली बार न हुआ था ऐसा। ये चलन कब से चालू था, उन्हें नहीं पता था। परंतु जब वो पैदा हुए तो बड़े-बुजुर्गों ने उन्हें ये ही समझाया था कि पूरे चांद की रात आसमान से आने वाले लोगों के आदर में पेट के बल लेट जाना है, जब तक कि चंद्रमा लुप्त नहीं हो जाता। इसके पीछे महज एक ही बात थी कि जब पहली बार आसमान से पोपा (अंतरिक्ष यान) में बैठकर दूसरे ग्रह के लोग उनके पहाड़ के बाहर उतरे थे तो वो रात पूरे चांद की रात थी। इसी वजह से उनके आदर के रूप में हर पूरे चांद की रात डोबू जाति वाले ऐसा करते थे। डोबू जाति का ये नियम इसलिए बन चुका था कि पोपा पर सवार होकर आने वाले लोगों से उनके सम्बंध मधुरता भरे बन गए थे। डोबू जाति उन लोगों को पसंद करते थे। यूं तो ऐसी सुबह होने पर सब उठकर अपने-अपने कामों पर लग जाते थे परंतु आज की सुबह का माहौल बहुत जुदा था।

रात उनकी जगह पर कोई घुस आया था।

एक युवती, जो अपना नाम धरा बताती थी और खुद को मुम्बई की

रहने वाली बता रही थी। वो भीतर आई और उनके बीच घूमकर, तस्वीरें लेकर, वापस चली गई।

ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।

पहले कोई बाहरी इंसान भीतर नहीं आया था। भीतर क्या, बाहर, आस-पास भी दिखा तो पहरे पर लगे योद्धा उन्हें पलक झपकते ही खत्म कर देते थे। इसका कारण सिर्फ इतना था कि डोबू जाति वाले बाहरी लोगों का उनके पास आना, जरा भी पसंद नहीं करते थे।

परंतु रात धरा आई और भीतर सब कुछ देखकर, तस्वीरें लेकर चली गई।

अब उठने पर डोबू जाति का हर इंसान, उसी वजह से एक-दूसरे को सवालिया निगाहों से देख रहा था। सब जानते थे कि ऐसे इंसान की सजा सिर्फ मौत ही थी।

डोबू जाति का सरदार ओमारू क्रोध में लाल-सुर्ख हो रहा था। उसने फौरन मूर्ति वाले हॉल में अपने बेहतरीन सात योद्धाओं को बुलाया। अन्य लोग भी आसपास थे।

सातों योद्धा भी क्रोध में नजर आ रहे थे।

"रात जो हुआ, बहुत बुरा हुआ।" ओमारू गुस्से से मुट्ठियां भींचता कह उठा। ये सब अपनी अंजान भाषा में बात कर रहे हैं। परंतु हम सब कुछ समझने के लिए अपनी सरल भाषा का ही इस्तेमाल करेंगे—"हमारी जाति के अलावा सब लोग श्रापित हैं। सब अपवित्र हैं। सब भटक चुके हैं। ऐसे लोगों में से कोई युवती हमारी पवित्र जगह पर आ गई। परंतु पूरे चंद्रमा की रात होने की वजह से हम उसे खत्म न कर सके। कितने बेबस हो गए थे हम रात को। वो हमारी जीवन-शैली देख गई है। वो, वो जगह भी देख गई है, जहां हमने वो उपकरण लगा रखे हैं, जिनके द्वारा हम सदूर ग्रह वाले अपने दोस्तों से बात करते हैं। वो सब कुछ हमें उन्होंने ही भेंट किया है। दीवार पर लगी स्क्रीन पर हम रानी ताशा के दर्शन करते हैं। उससे बातें करते हैं। हमने अपनी जीवन शैली गुमनाम-सी बना रखी है। परंतु वो धरा नाम की, मुम्बई में रहने वाली युवती, यहां आई और सब कुछ देखकर चली गई। बुरा हुआ, इससे पहले कि वो हमारे बारे में किसी को बताए, उसे मार दो।"

"हैरानी की बात है ओमारू कि वो यहां तक कैसे पहुंच गई?" एक ने कहा।

"वो जरूर टाकलिंग ला की तरफ से आई होगी और उसका कोई मार्गदर्शक भी जरूर होगा। टाकलिंग ला ही हमारी सबसे करीबी बस्ती है, वरना दूसरी दिशाओं में तो दूर-दूर तक बर्फ है और जंगल हैं। वो रात में

जरूर पहाड़ चढ़कर उस पार जाने के प्रयत्न में होगी अभी। उसे पकड़ो और मार दो। ये बहुत जरूरी है हमारे लिए। अपने साथ योद्धाओं को ले लो जितने चाहिए। उस युवती को किसी भी हाल में बचना नहीं चाहिए।"

"वो सदूर ग्रह की रानी ताशा के दिए उस इकरारनामे को भी ले गई है जो कि देवी की मूर्ति के आगे रखा था।"

"जब उसे मारा जाएगा तो उससे वो पत्ते भी ले लिए जाएंगे। तुम लोग...।"

तभी कहते-कहते ओमारू ठिठका।

उसकी निगाह होम्बी पर पड़ गई थी जो कि पास आ रही थी।

बाकी सबकी निगाह भी होम्बी की तरफ उठी।

होम्बी बूढ़ी थी। चेहरे पर, शरीर पर झुर्रियां नजर आ रही थीं। परंतु वो सात फुट लम्बी थी और सीधी खड़ी रहती थी। उसका बूढ़ा शरीर झुका हुआ नहीं था। सिर के बाल काले और कमर तक लम्बे थे। नाक के छेद में लोहे की बाली पहन रखी थी और दोनों कानों में भी लोहे की बालियां लटक रही थीं। उसने एक ऐसा कपड़ा लपेट रखा था जो कि उसकी छातियों से लेकर कूल्हे तक जा रहा था। पांवों में कुछ नहीं पहना था। नाक लम्बा और चोंचदार था। माथा चौड़ा था।

होम्बी पास आकर ठिठकी और ओमारू को देखते हौले-से हंसी।

"तुम लोग जाओ और उस युवती को ढूंढ़कर खत्म कर दो। फौरन चल दो यहां से।" ओमारू गुस्से से बोला।

वो सातों तुरंत वहां से चले गए।

"मजा तो आ रहा होगा ओमारू।" होम्बी ने व्यंग भरे स्वर में कहा।

"तुम आज अपने कमरे से बाहर कैसे आ गई जादूगरनी?" ओमारू कह उठा।

"तेरा चेहरा देखने आई हूं कि किसी बाहरी के यहां आ जाने से, तेरा क्या हाल हो रहा है।"

"उसे मार दिया जाएगा।"

"मैंने डोबू जाति के जाने कितने सरदार देखे हैं, परंतु तू पहला सरदार है जाति का कि जिसकी छत्रछाया में कोई बाहर का इंसान भीतर घुस आया। तेरी बहादुरी देखकर मैं बहुत खुश हूं।"

"जादूगरनी।" ओमारू ने नाराजगी से कहा।

"तू मेरी बात को कभी भी गम्भीरता से नहीं लेता ओमारू।" होम्बी ने कहा।

"ऐसा न कहो जादूगरनी। मैं हमेशा तुमसे सलाह लेता हूं।"

"पर उस सलाह पर चलता नहीं।"

"मैं हमेशा चला हूं।"

"मैंने तुझे पहले ही कह दिया था कि बबूसा को यहां से मत जाने देना। वो जाना चाहेगा। पर वो चला गया और तुमने...।"

"मैंने उसे रोकने की चेष्टा की थी। परंतु उसने मेरे योद्धाओं को मारना शुरू कर...।"

"तो क्या हो गया। तू ज्यादा बल का प्रयोग करके उसे रोक सकता था।"

"मैं उस पर सख्ती नहीं करना चाहता था।"

"क्यों?"

"वो पोपा (अंतरिक्ष यान) से आया था। उस पर सख्ती करता तो वो लोग बुरा मान जाते।"

"पर तू बबूसा को रोक लेता तो ज्यादा ठीक रहता।"

"वो मेरे से नाराज नहीं था। वो अपने ही लोगों से नाराज था। उस कमरे में बैठकर वो उनसे बात किया करता था और उस दिन गुस्से में वो यहां से जाने को कहने लगा। रानी ताशा से उसने विद्रोह कर दिया था। उसे ये बात पसंद नहीं आ रही थी कि रानी ताशा, राजा देव को जबर्दस्ती पोपा में बिठाकर, अपने ग्रह पर ले जाए।"

"बबूसा के जाने का नुकसान तेरे को भी होगा।"

"मेरे को क्या?"

"बहुत जल्दी सामने आ जाएगा। मुझे सब दिख रहा है।" होम्बी गम्भीर स्वर में कह उठी।

"तुम्हें क्या दिख रहा है, मुझे भी बता जादूगरनी।" ओमारू उसे देखता बोला।

"बबूसा का हमारे योद्धाओं से झगड़ा हो रहा है।"

"तो क्या बबूसा फिर यहां आने वाला है?"

"नहीं। तेरे योद्धा मुम्बई जाएंगे और वहां पर ये झगड़ा होगा।" होम्बी ने कहा।

"ये नहीं हो सकता। मुम्बई में बबूसा क्यों झगड़ा करेगा मेरे योद्धाओं से?"

होम्बी मुस्कराई।

ओमारू उसे देखता रहा।

"मैंने तुझे पहले ही कहा था कि पूरे चांद की रात जाति पर कोई मुसीबत आने वाली है। पर तूने मेरी बात को गम्भीरता से नहीं लिया। रात आई न मुसीबत। वो लड़की आई न?"

"वो क्या मुसीबत थी जादूगरनी।"

"अब वो ही तो तुम्हारे लिए मुसीबतें खड़ी करेगी।"

"मैं समझा नहीं।"

"उसी लड़की के कारण बबूसा तुम लोगों से दुश्मनी ले लेगा।" होम्बी बोली।

"परंतु वो लड़की तो अभी मार दी जाएगी।" ओमारू के होंठों से निकला।

होम्बी ने रहस्यमय मुस्कान के साथ ओमारू को देखा।

"ये तू सोचता है, सोच ले। परंतु भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है, वो तो समय-समय पर मुझे मालूम होता रहता है। मुझे सब कुछ पता चल जाता है। अगर मेरी बात मानकर तूने बबूसा को यहां से जाने से रोक लिया होता। अगर मेरी बात मानकर पूरे चांद की रात आने वाली मुसीबत के इंतजाम में तू तैयार रहता तो, सब ठीक से चलता रहता। परंतु अब बहुत कुछ होने वाला है। बबूसा अपनी तैयारी कर रहा है और रानी ताशा के पोपा (अंतरिक्ष यान) में बैठकर आ पहुंचने का वक्त भी करीब आता जा रहा है। सब कुछ एकदम इकट्ठा होगा और तूफान उठेगा तब।"

"मैं—मैं समझा नहीं जादूगरनी। मुझे स्पष्ट बताओ कि बात क्या है?" ओमारू कह उठा।

"बात समझने का वक्त अब निकल चुका है। अब तो सिर्फ इंतजार कर और देख आगे क्या होता है।" होम्बी ने कहा और अपने लम्बे काले बालों पर कंघी की तरह उंगलियां फेरते पलटी और आगे बढ़ गई।

▭ ▭

दिन निकल आया था। उजाला हर तरफ फैलना आरम्भ हो गया था। आकाश से चंद्रमा जाने कहां गायब हो गया था। गजब की सर्दी का एहसास हो रहा था। हाथ ठंडे होकर, बेजान से हो रहे थे। ऐसा लगता था जैसे चेहरे पर नाक रही ही न हो। पूरा बदन अकड़ा पड़ा था। परंतु धरा अपनी पूरी हिम्मत से काम ले रही थी। वो जानती थी कि जब तक इस इलाके में है, तब तक भारी खतरे में है। यहां से दूर हो जाना बहुत जरूरी था। धरा ने जोगाराम के साथ-साथ तेजी से पहाड़ चढ़ा था। जैसे वो मौत को दगा दे देना चाहती हो। इस बार एक बार भी नहीं फिसली नीचे की तरफ। वो बस तेजी से पहाड़ पार कर जाना चाहती थी।

जब दिन पूरी तरह फैले आधा घंटा गुजरा तो वे दोनों पहाड़ की चोटी पर जा पहुंचे थे। बर्फ और सर्दी ने शरीरों पर कहर बरपा रखा था। जोगाराम ने व्याकुल भाव से पीछे की तरफ देखा।

परंतु पीछे कुछ नहीं दिखा।

"क्या देख रहे हो?" धरा ने भी पीछे देखते हुए पूछा।

"पहाड़ उतरने में परेशानी नहीं आनी चाहिए। मेरे खयाल में पैंतालीस मिनट में हम नीचे पहुंच जाएंगे क्योंकि ये बर्फ का पहाड़ है। पहाड़ खुद ही नीचे पहुंचा देगा हमें।"

"चांद आसमान से गायब हो चुका है। डोबू जाति वाले अब क्या कर रहे होंगे?" धरा ने जोगाराम को देखा।

"वो तुम्हें हर हाल में ढूंढ़कर, मार देना चाहेंगे। शायद वो हमारे पीछे आ रहे हों।"

कहने के साथ ही जोगाराम ने बर्फ की ढलान पर छलांग लगाई और नीचे लुढ़कता चला गया।

धरा ने भी ऐसा ही किया।

▭ ▭

आधे घंटे में धरा और जोगाराम पहाड़ से नीचे पहुंच गए थे। घोड़े वहीं बंधे मिले और सर्दी में उनका बुरा हाल हुआ लग रहा था। जोगाराम ने पास पहुंचकर घोड़ों पर हाथ फेरा। उन्हें थपथपाकर गर्म किया। उनकी रस्सियां खोलकर समेटीं। उन पर जीन डाली। सब तैयारी करने के बाद उसने धरा को देखा जो गम्भीर-सी एक तरफ सोचों में डूबी खड़ी थी।

"आओ।" जोगाराम बोला—"घोड़े पर बैठो।"

"तुम सही कहते हो कि वो लोग बबूसा से बहुत डरते हैं।" आगे बढ़ती धरा कह उठी—"एक ने मेरी पिंडली पकड़ ली थी, वो छोड़ने को तैयार नहीं था। शायद मैं फंस ही जाती। परंतु तभी मैंने बबूसा का नाम लिया तो उसने फौरन पिंडली छोड़ दी और मैं बच गई।"

जोगाराम ने धरा को घोड़े पर बैठाया।

फिर खुद दूसरे घोड़े पर बैठा और उनका वापसी का सफर शुरू हो गया।

"घोड़े रास्ता जानते हैं।" जोगाराम ने ऊंचे स्वर में कहा—"बस इन्हें तेज भगाने की कोशिश करो। आज और कल का दिन हमें घोड़ों पर ही सफर करना है, तब हम टाकलिंग ला पहुंच सकेंगे।"

धरा ने लगाम से घोड़े को तेज भागने का इशारा करते हुए कहा।

"तुम्हारा क्या खयाल है कि इस वक्त डोबू जाति वाले क्या कर रहे होंगे?"

"जो भी करें। कम-से-कम हमारे पीछे न आएं।" जोगाराम ने बेचैन और गम्भीर स्वर में कहा।

घोड़ों की टॉपों की आवाज उस बर्फीली घाटी में गूंज रही थी। आस-पास हर तरफ बर्फ से ढके पहाड़ खड़े थे। कभी पत्थरीला रास्ता शुरू होता तो कभी सपाट। पहाड़ों की बड़ी-बड़ी चट्टानें हर तरफ गिरी नजर आ रही थीं। चारों तरफ घना जंगल ही दिखाई देता। पेड़ों के तने मोटे और पुराने थे। ऊंचाई जैसे आसमान को छूती थी। कुछ पेड़ घने थे तो कुछ सीधे, लम्बे खड़े थे। सर्द हवा के झोंके शरीर को उधेड़कर रख रहे थे। रात को वे सोए नहीं थे। खाया भी कुछ नहीं था। ऊपर से घुड़सवारी ने बुरा हाल कर रखा था। जोगाराम तो ये आसानी से सह रहा था परंतु धरा को तकलीफ हो रही थी खाली पेट घुड़सवारी करने की। उसका चेहरा पहले की अपेक्षा मुर्झा गया था। दो सप्ताह से ठीक से खाना नहीं खाया था और सोई भी नहीं थी। ऊपर से घोड़ों का पहाड़ी सफर। परंतु वो मन ही मन राहत से भरी थी कि उसकी मेहनत खराब नहीं गई। कुछ तो करके लौट रही है। घोड़े तेजी से दौड़े जा रहे थे। आगे जोगाराम का घोड़ा था, पीछे धरा का। शाम हो चुकी थी। सुबह चलने के बाद एक बार भी घोड़े रुके नहीं थे। जोगाराम वहां से ज्यादा-से-ज्यादा दूर निकल जाना चाहता था। धरा का मन रुककर कहीं आराम करने का था परंतु ये बात वो जोगाराम से कह नहीं सकी थी। अब कुछ ही देर में अंधेरा हो जाना था तो रात भर आराम करना ही था। धरा सोच रही थी कि गहरी नींद लेने की पूरी चेष्टा करेगी।"

इस वक्त घोड़े पहाड़ जैसी जगह से किनारे-किनारे मध्यम रफ्तार से आगे दौड़ रहे थे। जगह खतरनाक थी। दाईं तरफ तीस-चालीस फुट गहरी जगह थी, गिरे तो काम हो जाना था। परंतु घोड़े सधे हुए थे। ऐसे रास्ते पर सफर करने की उन्हें आदत थी। जबकि धरा इस सफर से थककर चूर हो चुकी थी।

"मैं थक गई हूं।" धरा ने ऊंचे स्वर में कहा।

"कुछ ही देर में अंधेरा हो जाएगा। तब तक चलती रहो।"

"अब तो हमें डोबू जाति वालों का डर नहीं रहा। हम काफी दूर आ चुके हैं।" धरा बोली।

"वहम में मत रहो। वो लोग कहीं भी पहुंच सकते हैं।"

"परंतु वो हमें ढूंढ़ेंगे कैसे, हम तो काफी दूर...।"

"ये हमारे लिए दूर है, उनके लिए कुछ भी दूर नहीं है। तुम उन्हें ठीक से जानती नहीं।"

तभी पहाड़ के किनारे का रास्ता समाप्त हुआ और पत्थरीला जंगल शुरू हो गया।

घोड़ों की रफ्तार जंगल में अब तेज हो गई।

"कल हम टाकलिंग ला पहुंच जाएंगे।" धरा ने ऊंची आवाज में कहा।

"हां। कल दोपहर तक पहुंचेंगे। परंतु खतरा वहां भी कम नहीं होगा। डोबू जाति वाले वहां हमारी तलाश में जरूर आएंगे। तुम मुझे भी खतरे में डाल चुकी हो। वो जान लेंगे कि मैं तुम्हारे साथ था।"

"तुम मेरे साथ मुम्बई क्यों नहीं चलते। कुछ वक्त बाद वापस आ जाना।"

"बच्चों जैसी बातें न करो। वो मुम्बई भी पहुंच जाएंगे।"

"उन्हें पता नहीं लगेगा कि हम मुम्बई में कहां पर हैं।"

"वो वहां भी ढूंढ़ लेंगे। उनके पास शक्तियां हैं।"

"कैसी शक्तियां?"

"उनके पास होम्बी है। होम्बी उनकी सहायता करती है।"

"होम्बी कौन?"

"जादूगरनी कह लो उसे। उसके पास बातें जानने की ताकत है। कई बातें वो पहले ही बता देती है उन्हें। डोबू जाति वाले जब भी मुसीबत में आते हैं तो वो ही अपनी राय पर उन्हें मुसीबत से निकालती है।"

"ये तुमने नई बात बताई।"

"होम्बी उन्हें बता देगी कि हम मुम्बई में कहां पर हैं।"

"वो सच में इतनी बड़ी जादूगरनी है।"

"मुझे जो पता है, वो ही तुम्हें बता रहा हूं।"

"वो मुझे वहां नहीं दिखी। वो भी पूरे चंद्रमा के कारण, औंधे ढंग से लेटी होगी तब...।"

"नहीं, उस पर डोबू जाति का कोई नियम लागू नहीं होता। वो आजाद है नियमों से। एक वो ही है जो पूरे चंद्रमा की रात पेट के बल नहीं लेटती। डोबू जाति के मेरे दोस्त ने मुझे ये बात बताई थी।"

"तो वो मुझे क्यों नहीं दिखी?"

"ये मैं नहीं जानता।"

"होम्बी देखने में कैसी है? खूबसूरत है?"

"वो बूढ़ी है। बहुत बूढ़ी, परंतु जवानों की तरह चलती है। चलने-फिरने और बातें करने में वो जवान है। वहां, डोबू जाति के लोग पैदा होते हैं। बड़े होते हैं, बूढ़े होकर मर जाते हैं परंतु होम्बी वैसी की वैसी ही रहती है। उसकी उम्र क्या है, कोई नहीं जानता। वो कब से डोबू जाति से जुड़ी है, कोई नहीं जानता। उसके पास अंजानी ताकतें हैं, परंतु वो डोबू जाति पर राज नहीं करती। वो सिर्फ उनकी सहायता करती है। खतरों से उन्हें आगाह करती है। मुसीबत में उनकी सहायता करती है।"

"ये तुमने अजीब बात बताई।"

"ये सच है।"

"पर वो मुझे नजर क्यों नहीं आई वहां। मैं उसकी भी तस्वीर खींच लेती।"

"तुम वहां से वापस लौट सकी, इस बात को तुम कम आंक रही हो। जबकि तुम्हारे लौटने पर मुझे हैरानी है और इस बात का पूरा डर है कि तुम जिंदा न रह सको। वो तुम्हें मार देंगे। मेरे लिए भी खतरा खड़ा हो गया है।"

"तुम डर रहे हो?"

"हां। इन हालातों में मुझे डरना पड़ रहा है।"

"पर मैं तो नहीं डर रही।"

"बच्चे को नहीं मालूम कि शेर क्या होता है। उसके सामने शेर आ जाए तो बच्चा खुश हो जाएगा और उसके साथ खेलने की कोशिश करेगा। तुम इस वक्त उसी बच्चे की तरह हो, जो समझ नहीं पा रहा कि शेर क्या होता है।"

धरा ने जवाब में कुछ नहीं कहा।

"होम्बी के बाल पूरे काले हैं जबकि सैकड़ों वर्ष की उम्र है उसकी।"

"ये सब तुम्हें डोबू जाति वाले, तुम्हारे दोस्त ने बताया?"

"हां।"

अब अंधेरा छाना शुरू हो गया था।

अगले आधे घंटे में पूरी तरह अंधकार छा जाना था।

दोनों घोड़े तेजी से दौड़ रहे थे।

तभी जोगाराम के मस्तिष्क को झटका लगा। पल भर के लिए उसने हवा में उड़ती किसी चीज को आते देखा अपनी तरफ। वो चीज लोहे की कुछ मोटी पत्ती का चौकोर टुकड़ा था जो कि हवा में तीर से भी तेजी से घूमता उसके पास आया और गर्दन पर जा लगा।

मात्र एक पल में ही उसकी गर्दन कटकर एक तरफ जा गिरी।

अब उसका गर्दन से बिना का शरीर घोड़े पर बैठा दौड़ता दिखा।

धरा की निगाह जोगाराम पर पड़ी तो उसकी आंखें हैरानी से फैल गईं।

"जोगाराम...।" धरा गला फाड़कर चीख उठी।

अगले ही पल जोगाराम का शरीर घोड़े से नीचे गिरता चला गया। घोड़ा रुक गया। परंतु उसका जूता रकाब में फंसा रह गया, ऐसे में उसका छाती वाला हिस्सा नीचे की तरफ था और रकाब में पांव फंसा ऊपर की तरफ। कटी गर्दन वाले हिस्से से, तेजी से खून बहता बाहर निकल रहा था।

धरा का चेहरा आतंक से, भयावह हो गया था। उसने जोगाराम की गर्दन कटे शरीर को घोड़े की सवारी करते अपनी आंखों से देखा था वो सिर से पांव तक खौफ में भर गई थी। अब जोगाराम की हर बात उसे सच लगने लगी कि उसने जो भी कहा वो सच था।

डोबू जाति वाले आस-पास ही हैं कहीं?

धरा ने पागलों की तरह घोड़े की लगाम को झटका देकर घोड़े को भागने का संकेत दिया तो घोड़ा और भी तेजी से भाग निकला। धरा घोड़े की पीठ पर बैठी जोर-जोर से उछलने लगी तो आगे को झुकती अपने घोड़े की गर्दन थाम ली। लेट-सी गई घोड़े की पीठ पर। वो आतंक में लिपटी हुई थी। जोगाराम की सिर कटी लाश आंखों के सामने घूम रही थी और अपनी मौत का डर सता रहा था। मस्तिष्क में एक ही बात थी कि डोबू जाति के खूंखार लोग आस-पास ही कहीं हैं। वो उसकी भी जान ले लेंगे। जोगाराम ठीक कहता था कि वो कहीं भी पहुंच सकते हैं। वो तो तभी से ही भागे जा रहे हैं। डोबू जाति वाले उनके लिए बाद में रवाना हुए होंगे परंतु उनके पास आ पहुंचे। धरा समझ नहीं पा रही थी कि आखिर क्या चीज फेंककर, उन्होंने जोगाराम पर वार किया कि गर्दन कट गई।

धरा उनकी फैक्ट्री जैसी जगह देख चुकी थी जहां, उनके हथियार बनते थे। उनके कई हथियार धरा की समझ से बाहर थे कि वे उनका इस्तेमाल कैसे करते हैं।

धरा इस वक्त खुद को घोड़े के हवाले कर चुकी थी। अब ये ही उसका साथी था। सरपट दौड़ा जा रहा था घोड़ा। धरा गर्दन थामे, उसकी पीठ से लिपटी हुई थी। चेहरा राख की तरह सफेद पड़ चुका था। अंधेरा फैलता जा रहा था। धरा नहीं जानती थी कि घोड़ा किस दिशा में जा रहा है, परंतु जोगाराम की बात उसे याद थी कि घोड़े अपना रास्ता पहचानते हैं। धरा मन-ही-मन सोच रही थी कि घोड़ा जरूर सही दिशा में, टाकलिंग ला की तरफ जा रहा होगा।

परंतु क्या डोबू जाति वाले अभी भी उसके पीछे हैं?

वो जरूर पीछे होंगे।

जोगाराम कहता था कि वो पीछा नहीं छोड़ेंगे।

वो कहीं भी पहुंच सकते हैं।

धरा सिहर उठी कि क्या अब वो मारी जाएगी। उसे जोगाराम की वो सब बातें याद आने लगीं जब वो समझाता था कि डोबू जाति खतरनाक है। उधर जाना ठीक नहीं। धरा पछता उठी कि वो उधर गई ही क्यों? वो तो जोगाराम की बातों को इसलिए हल्के में ले रही थी कि वो सोचती, जोगाराम उधर जाना नहीं चाहता। तभी बहाने बना रहा है।

जोगाराम की मौत का उसे बहुत दुख था।

परंतु इस वक्त तो उसे अपनी जान की चिंता थी कि डोबू जाति वाले पीछे ही कहीं हैं। वो लोग जबर्दस्त योद्धा हैं और दुश्मन की गर्दन काट देने में वो दक्ष हैं। जोगाराम की गर्दन सेकंडों में कैसे धड़ से गायब हो गई और उसे तब पता चला जब जमीन पर उसका सिर गिरने की आवाज गूंजी थी।

'हे भगवान।' धरा मन-ही-मन बड़बड़ा उठी।

अंधेरा छा गया था।

पूरी तरह अंधकार फैल गया था।

धरा घोड़े की पीठ पर गर्दन थामे लिपटी हुई थी। उसे अब कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। आज तो चांद भी नहीं निकला था कि उसकी रोशनी का सहारा होता। परंतु घोड़ा दौड़े जा रहा था। जानवरों में अंधेरे में देख लेने की शक्ति होती है, या उनकी आंखें देख लेती हैं अंधेरे में। कुछ भी हो, अंधेरा होने पर घोड़ा रुका नहीं था। ये भी हो सकता है कि घोड़े के मन में भी दहशत हो। उसने भी जोगाराम का गर्दन कटा शरीर देखा हो।

दौड़ता रहा घोड़ा।

▭ ▭

घोड़ा अब थकने लगा था। दो-तीन बार ठोकर खाकर गिरने को भी हुआ था। आखिरकार वो वक्त भी आया, जब घोड़ा रुक गया। धरा ने मन-ही-मन सोचा कि अंधेरा होने के बाद, तीन-चार घंटों तक दौड़ता रहा है घोड़ा और उस जगह से बहुत दूर आ चुका है, जहां पर जोगाराम की गर्दन कटी थी।

तो क्या वो खतरे से बाहर हो चुकी है।

डोबू जाति वाले पीछे रह गए हैं। उनके पास घोड़े तो होंगे नहीं।

धरा घोड़े की पीठ से नीचे उतरी। पूरा बदन टूट-फूट रहा था। शरीर के हर हिस्से से दर्द की लहरें उठ रही थीं। ठीक से खड़ा नहीं हुआ जा रहा था और आंखों के सामने जोगाराम की सिर कटी लाश घूम रही थी। वो बच गई। जोगाराम की जगह, उस समय उसका सिर भी कट सकता था।

धरा ने शरीर पर पड़े स्वैटर को टटोला। कैमरा स्वैटर के बीच फंसा था। और वो लिखे हुए सूखे पत्ते भी स्वैटर के भीतर फंसे, मौजूद थे। धरा ने वहां इधर-उधर नजर मारी। मन में डर नाच रहा था कि कहीं डोबू जाति के हत्यारे योद्धा न आ जाएं। गहरे अंधेरे के सिवाय कुछ भी नहीं दिखा। ये जंगल जैसी जगह थी और इधर-उधर चट्टानें बिखरी हुई

थीं। धरा ने पेड़ों को देखा कि कहां पर वो छिपकर रात बिता सकती है। मन-ही-मन उसे अपने पर गुस्सा आ रहा था कि ये काम अकेले करने की क्या जरूरत थी। क्यों उसने इतना बड़ा खतरा मोल लिया। जोगाराम के समझाने पर भी उसे समझ क्यों न आई। चक्रवती साहब से कहती कि विभाग के और लोगों को भी टाकलिंग ला भेज दें। उनके साथ ही सफर करती। उसे अकेले ये काम नहीं करना चाहिए था।

डोबू जाति दूसरी जातियों की तरह नहीं है। ये खतरनाक है।

पेड़ ऊंचे और घने थे। रात के अंधेरे में उन पर चढ़ने से धरा को डर-सा लगा। परंतु कोई जगह तो चाहिए थी कि रात बिता सके। यूं तो वो खुले में भी रात बिता सकती थी परंतु डोबू जाति के लोगों के आ जाने का खतरा था। जोगाराम की तरह वो उसका गला भी काट देंगे।

धरा मरना नहीं चाहती थी।

अब उसे जोगाराम की कमी महसूस हो रही थी। वो पास में था तो उसे चिंता नहीं थी।

धरा वहां बिखरी चट्टानों की तरफ बढ़ी और सोचा कि इनमें से किसी चट्टान की ओट में छिप सकती है। गहरा अंधेरा है। वो लोग आ भी गए तो उसे ढूंढ़ नहीं सकेंगे।

धरा कभी एक चट्टान के पास जाती तो कभी दूसरी। मुनासिब जगह देख रही थी कि कहां पर छिपे। जहां वो डोबू जाति वालों को नजर न आ सके।

तभी एक चट्टान के पास जा ठिठकी। वो उसे भीतर से खोखली सी लगी। रोशनी करके भीतर देखने का उसके पास कोई इंतजाम नहीं था। हाथों से चट्टान के मुंह को चैक किया तो पाया कि वो भीतर जा सकती है। थोड़ी तंग है परंतु भीतर चली जाएगी। लेकिन ये नहीं जानती थी कि वो भीतर से कितनी गहरी है। उसने चट्टान को देखा। वो सिर्फ छः फुट लम्बी थी और चार फुट चौड़ी थी। ऐसे में भीतर अगर जगह खाली भी है तो वो पर्याप्त नहीं है। लेकिन डोबू जाति वालों से बचने के लिए इस वक्त इससे बेहतर जगह कोई और नहीं हो सकती थी।

धरा डोबू जाति वालों से डरी हुई थी।

जोगाराम का अंजाम उसने अपनी आंखों से देखा था।

धरा सिकुड़कर चट्टान के भीतर जाने का प्रयत्न करने लगी। जगह वास्तव में तंग थी। ऊपर से गहरा अंधेरा था। पांच मिनट की चेष्टा के पश्चात वो चट्टान की खोह जैसी जगह के भीतर प्रवेश कर सकी। परंतु भीतर ज्यादा जगह नहीं थी। इतनी तंग जगह थी कि वो बेहद कठिनता से खुद को घुसा पाई। वहां सिर्फ बैठने की जगह थी। परंतु मन-ही-मन धरा

ने सोचा कि शुक्र है जो उसे ये जगह मिल गई। अगर डोबू जाति वाले यहां आते हैं तो उसे ढूंढ़ नहीं सकेंगे। किसी तरह कठिनता से वो चट्टान के भीतर उकडू-सी बैठ चुकी थी। वहां से उसे थोड़ा-बहुत बाहर का नजारा दिख रहा था। उसने सिर आगे करके बाहर देखा तो कुछ दूरी पर उसे घोड़े की टांगें दिखाई दीं।

▭ ▭
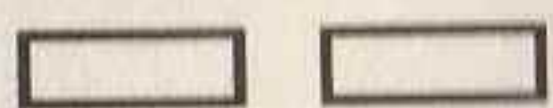
वो मध्यम-सी आहट थी जिसकी वजह से धरा की आंख खुल गई। वो उसी तरह उकडू बैठे-बैठे ही झपकी लगा बैठी थी और वो नहीं जानती कि कितनी देर वो सोई रही। अब आंखें बंद थीं। नींद में थी कि किसी मध्यम-सी आहट पर तुरंत उसकी नींद टूट गई थी।

डर की वजह से दिल धड़क उठा।

बाहर कोई था।

वरना उसकी नींद न टूटती आहट से।

अगले ही पल ये सोचकर उसने राहत भरी सांस ली कि बाहर घोड़ा है, उसकी तरफ से कोई आहट उभरी होगी। चट्टान में फंसी बैठी धरा ने थोड़ा-सा सिर झुकाया और बाहर देखा, घोड़े की टांगें वहीं पर देखीं, जहां उसने पहले देखी थी। धरा जानती थी कि घोड़ा ऐसा जानवर है जो कभी बैठता नहीं। वो खड़े होकर ही नींद लेता है। खड़े रहकर ही आराम करता है। सब काम वो खड़े रहकर ही करता है। तभी धरा ने घोड़े को हिलते, घूमते देखा।

धरा सतर्क हो गई।

तो क्या कोई है बाहर?

तभी धरा के होंठों से चीख निकलते-निकलते बची।

ठीक सामने, मात्र दो फुट की दूरी पर, इस पत्थर के बाहर किसी की टांगें दिखीं। घुटने से नीचे तक की टांगें। धरा फटी-फटी आंखों से मुंह पर हाथ रखे, उन पिंडलियों को देखती रही। सांस भी रोक लिया उसने।

तो डोबू जाति वाले उसकी तलाश में यहां तक आ पहुंचे हैं।

घोड़ा देखकर वो समझ गए होंगे कि वो आसपास ही है। वो उसे भी मार देंगे। उसी समय उस पत्थर के बाहर खड़ी टांगें वहां से हट गईं। धरा जान चुकी थी कि मौत का खतरा उसके सिर पर मंडरा रहा है। ये लोग उसे मार देना चाहते हैं। सहमी-सी धरा ने सिर पीछे किया और उकडू-सी बैठ गई। मन-ही-मन ये ही सोच रही थी कि क्या ये लोग उसे ढूंढ़ लेंगे? डर के मारे धरा का दिल जोरों से धड़कने लगा। मौत के खौफ से रह-रहकर शरीर में कंपकपी दौड़ने लगती। जोगाराम की सिर कटी लाश, घोड़े पर बैठी आंखों के सामने घूमी।

धरा जानती थी कि इस मंजर को वो कभी नहीं भूल सकेगी।

जोगाराम ठीक कहता था कि वो उन पांचों की मौत को नहीं भूल पा रहा था जिन्हें डोबू जाति की तरफ लेकर गया था और उसके देखते-ही-देखते एक व्यक्ति ने उनके सिर काट दिए थे। अब धरा समझ सकती थी कि जोगाराम ने तब कैसा दृश्य देखा होगा। उसे कैसा महसूस हुआ होगा।

परंतु धरा लाख सोचने पर भी समझ नहीं पा रही थी कि जोगाराम की गर्दन किस हथियार के फेंकने से पलक झपकते ही कट गई? उसे वो हथियार नजर-क्यों नहीं आया? न ही उसे वार करने वाला दिखा, जिसने कोई हथियार जोगाराम की तरफ फेंका था।

धरा समझ चुकी थी कि डोबू जाति की तरफ जाना उसकी भारी भूल थी। ये लोग खतरनाक हैं। दरिंदे हैं। युद्ध कला में बहुत तेज हैं। ये किसी बाहरी व्यक्ति का अपनी तरफ आना पसंद नहीं करते। धरा को तारों वाला कमरा याद आया। वो मूर्ति याद आई, जो चबूतरे पर खड़ी थी। डोबू जाति अन्य पुरानी जातियों से अलग है। रहस्यमय हैं ये लोग। पता नहीं ये करते क्या हैं और इनके जीने का मकसद क्या है? वो उनके वहां तक पहुंच गई तो अब ये लोग सजा के तौर पर उसे मार देना चाहते हैं।

तभी धरा सिहर-सी उठी।

बाहर उसे दो लोगों के बात करने की आवाज आई। मध्यम-सा स्वर उसके कानों तक पहुंच रहा था। समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या बात कर रहे हैं या फिर उनकी भाषा अलग थी जो उसकी समझ में नहीं आई। धरा सहमकर अपने आप में सिमट गई। जाने ये लोग कितने हैं। शायद उसे ढूंढ़े बिना न जाए। घोड़े के पास ही छिपकर उसने गलती कर दी। उसे कहीं दूर जाकर छिपना चाहिए था।

धरा वहीं दुबकी रही।

अपनी मौत का इंतजार करती रही।

▭ ▭

दिन निकल आया।

धरा का शरीर और अकड़ गया था। थकान भर गई थी। रात भर की कड़कती सर्दी ने उसकी हिम्मत को और भी तोड़ दिया था। वो एक पल के लिए भी सोई नहीं थी। वो नहीं जानती थी कि अब उस चट्टान के बाहर की स्थिति क्या है? वो लोग हैं या चले गए? सिर नीचा करके वो झांककर देख चुकी थी कि अब घोड़े की टांगें उसे कहीं नहीं दिखाई दी थीं। शायद वे लोग चले गए होंगे। घोड़ा भी ले गए होंगे।

परंतु घोड़े के जाने की आवाज तो उसे नहीं आई थी।

जो भी हो धरा की हिम्मत नहीं थी कि उस चट्टान के भीतर से बाहर निकलती। वो ये ही सोच रही थी कि वो आसपास ही छिपे हैं और उसके बाहर आते ही उसे मार देंगे। डर उस पर सवार था।

दिन और आगे बढ़ने लगा।

धरा बार-बार सूखे होंठों पर जीभ फेर रही थी। पेट पर हाथ रखे थी। भूख और प्यास ने उसकी ताकत छीन रखी थी। वो बेदम-सी हो रही थी। थकान से पूरा शरीर दर्द हो रहा था। बाहर सर्द मौसम था। सूर्य नहीं निकला था और ठंडी हवाएं चल रही थीं। धरा फैसला नहीं कर पा रही थी कि बाहर निकले या नहीं? डोबू जाति वाले बाहर छिपे तो नहीं होंगे? इस कशमकश में उलझी पड़ी थी वो।

दिन और आगे सरक गया।

उसने कलाई पर बंधी घड़ी में वक्त देखा, दस बज रहे थे।

जब ग्यारह बजे तो धरा ने बाहर निकलने की सोची। मन में ये ही चल रहा था कि कब तक इस तरह बैठी रहेगी। बाहर तो निकलना ही है उसे। घोड़ा भी नहीं दिखा उसे और धरा उस चट्टान के तंग मुहाने से बाहर निकली। बेहद कठिनता से सरक-सरककर। थोड़ा-सा कंधा भी छिल गया।

वो बाहर निकल आई।

भय भरी निगाहों से वो हर तरफ देखने लगी। पांच मिनट तक वहीं रही। न तो घोड़ा दिखा और न ही डोबू जाति का कोई इंसान दिखा। वो खड़ी हो गई। अभी भी डरी हुई थी। ये जंगल जैसी जगह थी और सामने पहाड़ नजर आ रहा था। तेज ठंडी हवा की वजह से वो कांप रही थी परंतु उससे भी ज्यादा वो ये सोचकर सिहर उठी कि उसे रास्ता नहीं मालूम। जाने वो किस तरफ से आई है और किधर जाना है। यहां सब रास्ते एक जैसे लग रहे थे। घोड़ा उसका मार्गदर्शक था। उसकी सवारी थी। उसका सहारा था, परंतु घोड़े को डोबू जाति वाले ले गए।

धरा के चेहरे का रंग फक्क पड़ गया।

किधर जाए?

वो तो इस सुनसान जगह पर भटककर मर जाएगी या डोबू जाति वालों के हाथ लग जाएगी और वो उसे मार देंगे। धरा तो जैसे पगलाई-सी वहां खड़ी आस-पास देखती रही। फिर जगह को समझने की चेष्टा में आगे बढ़ी और सोचने लगी कि रात किस तरफ से यहां पहुंची थी? घोड़ा यहां खड़ा था, वो उधर से आया होगा। हां उधर से ही आया होगा, यहां पर वो घोड़े से उतरी फिर उसने छिपने की जगह ढूंढ़नी शुरू...।

धरा की सोचें थम गईं।

तभी उसे घोड़े की हिनहिनाहट सुनाई दी।

खिल उठा धरा का चेहरा। घोड़ा है, यहीं है।

"घोड़े।" धरा खुशी से चिल्ला उठी और उस तरफ बढ़ी जिधर से हिनहिनाहट आई थी।

तीन-चार मिनट में ही वो घोड़े के पास जा पहुंची। वो पेड़ों के पास टहल रहा था।

"मेरे प्यारे घोड़े।" धरा की आंखों से आंसू निकल पड़े। उसने घोड़े पर हाथ फेरा। उसके माथे को चूमा। इस वक्त तो दुनिया में ये ही उसके लिए सब कुछ था—"मैंने सोचा डोबू जाति वाले तुझे ले गए।" वो घोड़े से बोली फिर आंसुओं को साफ करती लगाम को संभालकर पीछे की तरफ किया और रकाब में पांव फंसाकर कठिनता से उसकी पीठ तक पहुंची वरना पहले तो जोगाराम उसकी बैठने में सहायता कर देता था। जोगाराम की याद आते ही धरा का मन भारी हो गया। उसकी पत्नी सुनीता का चेहरा आंखों के सामने नाच उठा कि जोगाराम की मौत की खबर सुनकर उस पर क्या बीतेगी। धरा ने मन-ही-मन फैसला किया कि वापस टाकलिंग ला की बस्ती में नहीं जाएगी। वहां पर उसके लिए खतरा है। डोबू जाति वाले उसके इंतजार में वहां पर छिपे न हों। वो सीधा रोडवेज अड्डे पर जाएगी और किओमो की बस ले लेगी। अभी पूरा दिन पड़ा था और उसे एहसास था कि टाकलिंग ला यहां से ज्यादा दूर नहीं है, क्योंकि घोड़े ने रात को भी तीन-चार घंटों का सफर तय कर लिया था। ऐसे में वो वक्त पर टाकलिंग ला पहुंचकर बस पकड़ सकती है। वो जानती थी कि किओमो जाने के लिए टाकलिंग ला से आखिरी बस शाम चार बजे चलती है।

उसने घोड़े को प्यार भरी एड़ मारी तो घोड़ा आगे बढ़ने लगा।

"चल मेरे घोड़े।" धरा ने थके स्वर में कहा—"मुझे टाकलिंग ला पहुंचा दे।" साथ ही लगाम को झटका दिया।

और घोड़े ने रफ्तार पकड़ ली। तेजी से दौड़ने लगा। सफर पुनः शुरू हो गया।

▭ ▭

धरा अब रास्तों को पहचानने लगी थी और खुशी, उत्साह से भर उठी थी कि टाकलिंग ला समीप आता जा रहा है। घने जंगल समाप्त होते जा रहे थे। काफी हद तक साफ रास्ता शुरू हो गया था। उसने मन-ही-मन घोड़े को और भगवान को धन्यवाद दिया कि वो अपनी दुनिया में आ पहुंची है। डोबू जाति तक जाने का सफर बहुत ही खतरनाक रहा। अब सोचती है तो सिहर उठती है कि वो कैसी खतरनाक जगह चली गई थी

जोश-जोश में। मन-ही-मन उसने तय किया कि बेशक चक्रवती साहब कहें, वो दोबारा उस तरफ नहीं जाएगी। कैसे जाना है, ये भी चक्रवती साहब ही देखें।

धरा ने मन-ही-मन गहरी सांस ली।

रात तो मरते-मरते बची थी। वो छोटी-सी चट्टान के सुराख में छिपी थी और बाहर किसी की टांगें देखीं। इतने करीब कि उसे हाथ बढ़ाकर छू लेती।

वो जरूर डोबू जाति का योद्धा ही होगा, जो उसे ढूंढ़ रहा था। धरा सिहर-सी गई। कैसे बुरे वक्त से निकलकर आई है। जोगाराम की याद आते ही मन भारी हो गया। उसके साथ बहुत बुरा हुआ। दस लाख पाने और उसके काम आने की चाह में, उसने जान गंवा दी। नहीं तो वो भी साथ होता इस वक्त। धरा उसकी पत्नी सुनीता से मिलना चाहती थी। उसे जोगाराम के विषय में बताना चाहती थी नहीं तो वो हमेशा ही जोगाराम की वापसी का इंतजार करती रहेगी। परंतु धरा टाकलिंग ला की बस्ती में जाकर खतरा नहीं उठाना चाहती थी। उसे जोगाराम के बारे में बताना चाहती थी। डोबू जाति के लोग कहीं वहां छिपे बैठे, उसके इंतजार में मौजूद न हों।

कुछ देर बाद घोड़ा जंगलों से निकलकर एक पगडंडी पर पहुंच गया। धरा जानती थी कि यहां से पंद्रह-बीस मिनट का रास्ता है टाकलिंग ला की बस्ती का। अब वो किसी को नजर नहीं आना चाहती थी।

क्या पता डोबू जाति वाले उसके इंतजार में कहां पर छिपे हों? उसने घोड़े को रोका और नीचे उतर आई। घड़ी में वक्त देखा, बारह बज रहे थे।

घोड़े को थपथपाया। उसे चूमा बोली।

"तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया दोस्त। तुमने मेरी जान बचा ली और यहां तक पहुंचा दिया।" फिर वो पैदल ही आगे बढ़ गई। स्वैटर के भीतर डाल रखा कैमरा निकालकर हाथ में लिया। वो जानती थी कि इस वक्त कैमरे में जो तस्वीरें हैं, वो दोबारा कभी नहीं ली जा सकतीं। अपनी जान पर खेलकर इन तस्वीरों को पाया है। अब धरा को अपने पर हैरानी होने लगी कि उसने इतना खतरा कैसे उठा लिया?

तभी जोगाराम की शेर वाली बात याद आ गई कि बच्चे के सामने शेर आ जाए तो वो डरेगा नहीं, उससे खेलेगा। क्योंकि वो शेर के बारे में कुछ नहीं जानता। ऐसा ही कुछ उसके साथ हुआ। जोगाराम उसे डोबू जाति के खतरनाक होने के बारे में बताता रहा, परंतु उसने परवाह नहीं की। क्योंकि उस पर धुन सवार थी डोबू जाति तक जाने

की। उन्हें देखने की। परंतु अब उसे शेर के शेर होने के बारे में पता चल गया था और वो डरी बैठी थी। जोगाराम को वो कभी भी भूल नहीं पाएगी।

एक बजे वो पैदल चलती टाकलिंग ला के रोडवेज बस अड्डे पर पहुंची। कपड़े मैले हो चुके थे। पंद्रह दिन से ज्यादा हो गए थे, ये ही पहने थे। नहाई भी नहीं थी। खाना-पीना भी नहीं हुआ था। एक बारगी तो वो पहचानने में नहीं आ रही थी।

धरा को अपनी हालत का पूरी तरह एहसास था। मन में सोच रखा था कि किओमो पहुंचकर नए कपड़े ले लेगी। होटल में कमरा लेकर नींद पूरी करेगी और नहाएगी, खाएगी।

1.40 पर उसे किओमो जाने वाली बस मिल गई।

4.25 पर धरा किओमो पहुंच गई।

सबसे पहले उसने एस.टी.डी. बूथ से चक्रवती साहब को फोन किया।

"मैं डोबू जाति के यहां से हो आई हूं चक्रवती साहब।" बताते हुए धरा गम्भीर थी।

"वैरी गुड। तुमने बहुत बड़ा काम कर दिया। कैसे लोग हैं वो?" उधर से चक्रवती साहब ने खुशी से पूछा।

"बेहद खतरनाक। जबर्दस्त लड़ाके। युद्ध में एक्सपर्ट। हथियार चलाने में माहिर। दोबारा वहां जाना भी बहुत बड़ी गलती होगी।"

"क्या मतलब?"

"मैं आपको फोन पर सब कुछ नहीं बता सकती। इतना जान लीजिए कि मैं अभी तक नहीं समझ पा रही कि मैं कैसे जिंदा बच आई। जोगाराम जो मेरा गाइड बना था, वो मारा गया और...।"

"मारा गया?"

"मुम्बई पहुंचकर सब कुछ बताऊंगी चक्रवती साहब।"

"तुम इस वक्त कहां हो?"

"किओमो...।"

"तुम प्लेन से फौरन मुम्बई आ...।"

"ये पहाड़ी इलाका है। यहां प्लेन नहीं है। एयरपोर्ट नहीं है। लेकिन मैं जल्दी ही मुम्बई पहुंच जाऊंगी।" कहकर धरा ने फोन बंद किया और पैसे देकर दुकान से बाहर आई और एक दुकान से कमीज-सलवार खरीदा। जींस की पैंट और स्कीवी ढूंढ़ने में उसने वक्त खराब नहीं किया। वो बुरी तरह थकी हुई थी। एक जगह से थोड़ा-बहुत कुछ खाया और होटल में कमरा ले लिया। पैसे की उसे चिंता नहीं थी। पास में काफी पैसे थे।

पांचवे दिन धरा की ट्रेन मुम्बई सैंट्रल रुकी।

धरा स्टेशन से बाहर निकली। मुम्बई पहुंचकर वो बहुत खुश थी। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि सही-सलामत वो वापस आ पहुंची है, परंतु ये सच था। जब भी डोबू जाति के बारे में सोचती तो मन सिहर उठता। जोगाराम याद आता तो मन पर बोझ-सा आ जाता कि वो जान गंवा बैठा। कैमरा अभी भी उसके हाथ में था और शरीर पर किओमो से लिया, पहना कमीज-सलवार था। जो कि मैला हो चुका था। दूसरे हाथ में एक लिफाफा था जिसमें कि वो वाले आठ पत्ते थे, जो कि सूखे हुए थे। उन पर कुछ लिखा था। परंतु वो बड़े-बड़े पत्ते जाने कैसे थे कि सूखने के बाद भी, मुड़ने पर टूट नहीं रहे थे। वो सलामत के सलामत रहते थे। स्टेशन के बाहर पब्लिक बूथ से धरा ने चक्रवती साहब को फोन किया। अपना मोबाइल फोन तो संतराम के घर, सामान के बैग के साथ ही छूट गया था। चूंकि मोबाइल पर फोन किया था तो फौरन ही चक्रवती साहब से बात हुई। उनकी आवाज सुनते ही धरा ने खुशी भरे स्वर में कहा।

"चक्रवती साहब मैं मुम्बई पहुंच गई हूं।"

"तुम्हारे लिए बुरी खबर है धरा।"

"क-क्या?" धरा का स्वर कांप-सा उठा।

"कल शाम किसी ने घर पर तुम्हारी मां की हत्या कर दी।"

"न-हीं...।" धरा सिर से पांव तक कांप उठी।

"पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। परंतु हत्या का अंदाज देखकर पुलिस का कहना है कि हो सकता है ये हत्या दुश्मनी की वजह से की गई हो। तुम लोगों की किसी से दुश्मनी तो नहीं थी?"

"न-हीं। मैं और मेरी मां आराम से रहते थे। हमारा कोई दुश्मन नहीं था।" धरा सुबक उठी—"मैं अभी आ रही हूं।"

"अभी-अभी पोस्टमार्टम के बाद बॉडी हमें मिली है। हम सब ऑफिस वाले साथ हैं और तुम्हारी मां की बॉडी को लेकर घर पर ही जा रहे हैं, तुम घर पे ही आ जाना...।"

"कैसे मारा गया मम्मा को?" धरा की आंखों से आंसू बह रहे थे।

"गला काट दिया गया। किसी तेज हथियार से ये किया गया है। गर्दन अलग पड़ी और शरीर अलग...।"

"नहीं।" धरा सिर से पांव तक कांप उठी—"ये—ये न-ही हो सकता।" फटा-फटा-सा स्वर निकला।

"क्या मतलब?" उधर से चक्रवती साहब की आवाज आई।

"गर्दन अलग और बाकी का शरीर अलग?" धरा का स्वर खरखरा रहा था।

"हां। ऐसा ही हुआ, तभी तो पुलिस कह रही...।"

"ये—ये तो डोबू जाति वालों के मारने का ढंग है।"

"मैं समझा नहीं।"

"चक्रवती साहब।" धरा डर से फफक पड़ी—"ये डोबू जाति वालों के मारने का ढंग है। वो इसी तरह हत्याएं करते हैं। इस तरह की लाश मैं देखकर आ रही हूं वहां। जोगाराम की लाश। वो मुझे भी मारना चाहते थे परंतु मैं बच गई। भाग आई वहां से लेकिन वो मेरे से पहले मुम्बई पहुंच गए। उन्होंने मेरा घर ढूंढ़ लिया। ओह—हैरानी है। वो मुझे मारना चाहते हैं। वो मेरी जान के पीछे हैं। वो बहुत खतरनाक लोग हैं, वो...।"

"धरा तुम्हारी बात कुछ-कुछ मैं समझ रहा हूं परंतु वो...।"

"चक्रवती साहब।" धरा आंसुओं भरे चेहरे को साफ करते कह उठी—"आप सब लोग मिलकर मेरी मां का अंतिम संस्कार कर दीजिए। डोबू जाति के लोग वहां आस-पास हो सकते हैं। अगर मैं वहां पहुंची तो वो मुझे भी मार देंगे। वो मेरी ही जान लेना चाहते हैं। मां की जान तो उन्होंने यूं ही ले...।"

"तुम चिंता मत करो। मैं पुलिस को बुला...।"

"पुलिस कुछ नहीं कर सकती उनके सामने। आप कुछ नहीं समझेंगे। मेरी मां का संस्कार कर...।"

"लेकिन तुम कहां...।"

"मेरे पास कई जगह हैं रहने को। मैं आपको बाद में फोन करूंगी।" कहकर धरा ने रिसीवर रख दिया। चेहरा मुर्झा चुका था मां की मौत के बारे में सुनकर और डोबू जाति के लोगों के मुम्बई आ पहुंचने को लेकर। वो सोच रही थी कि बहुत फुर्ती दिखाई डोबू जाति के लोगों ने। उसके घर के बारे में कैसे पता चला उन्हें? तभी उसे ध्यान आया कि वो और जोगाराम जो बैग भागते वक्त, पहाड़ पर चढ़ने से पहले वहां छोड़ आए थे उसमें उसके ऐसे कार्ड थे जिन पर उसकी तस्वीर भी थी और पता भी लिखा था। वहीं से उसके घर का पता जाना होगा उन्होंने। तभी मां की याद आ गई। एक मां ही तो थी उसकी दुनिया में। वो भी अब नहीं रही। डोबू जाति के लोगों ने उसे मार दिया और अब उसे मारने के लिए ढूंढ़ रहे हैं। आंसू बह निकले आंखों से। उसने हाथों में पकड़ रखे कैमरे और लिफाफे को संभाला और टैक्सी लेकर अपनी सहेली के घर की तरफ चल पड़ी। सोच रही थी कि उसके सामने ऐसे हालात आ गए हैं कि अपनी मां का अंतिम संस्कार भी नहीं कर सकती। उसे पूरा यकीन था कि वहां पर डोबू जाति का कोई व्यक्ति जरूर मौजूद होगा कि वो उधर पहुंचे तो उसे खत्म कर दें, ताकि वो उनके बारे में किसी को न बता सके।

वो बबूसा था।

जो पैदल ही सड़क किनारे फुटपाथ पर चलता जा रहा था। और लोग भी आ-जा रहे थे। एक तरफ दुकानें थीं और दूसरी तरफ सड़क जिस पर तेजी से वाहन आ-जा रहे थे। बबूसा का सांवला चेहरा शांत था इस वक्त। कमीज-पैंट पहन रखी थी। शायद उसे कहीं पहुंचने की जल्दी थी, तभी तो तेज-तेज कदम उठा रहा था।

एकाएक बबूसा के मस्तिष्क को झटका-सा लगा।

वो ठिठक गया।

उसने दो-तीन गहरी-गहरी सांसें लीं जैसे कि कुछ सूंघ रहा हो और तभी उसकी निगाह सड़क की तरफ घूम गई। सामने से टैक्सी जा रही थी और पीछे वाली सीट पर धरा बैठी दिखाई दी। टैक्सी आगे निकल गई। बबूसा फौरन सड़क पर आया और आस-पास देखा। सामने ही उसके देखते-देखते मोटर साइकिल रुकी और उस पर से एक युवक उतरकर, मोटरसाइकिल को स्टैंड पर लगाने जा रहा था।

बबूसा मोटरसाइकिल की तरफ दौड़ा और सीधा उसकी सीट पर जा बैठा।

"ऐ, ये क्या कर रहे हो। मेरी मोटर साइकिल...।"

बबूसा ने युवक को धक्का दिया। चाबी घुमाकर मोटर साइकिल स्टार्ट की और युवक के संभलने से पहले ही वो मोटर साइकिल को दौड़ाता ले गया। पीछे से युवक के चिल्लाने की आवाजें सुनाई दी थीं।

अगले कुछ ही मिनटों में बबूसा ने धरा वाली टैक्सी को पा लिया और मोटरसाइकिल टैक्सी से आगे ले जाकर, टैक्सी को रुकने का इशारा करने लगा।

बबूसा ने कई बार कोशिश तो टैक्सी ड्राइवर ने सड़क किनारे टैक्सी रोक दी।

बबूसा मोटर साइकिल स्टैंड पर लगाकर फौरन टैक्सी के पास पहुंचा।

"क्या बात है सेठ?" टैक्सी ड्राइवर कह उठा।

बबूसा ने फौरन टैक्सी का पिछला दरवाजा खोला।

धरा जो पहले से ही परेशान थी, ये सब होता पाकर सहम-सी गई थी।

"क-क्या है?" धरा के होंठों से निकला।

टैक्सी ड्राइवर पीछे देखता कह उठा।

"अपुन की सवारी को हाथ मत लगाना सेठ। नेई तो दंगा हो जाएगा।"

तभी बबूसा का हाथ बिजली की सी गति से घूमा और ड्राइवर की कनपटी पर पड़ा।

ड्राइवर का सिर स्टेयरिंग पर जा लगा। वो बेहोश हो गया था।

ये देखकर धरा आतंक से भर उठी।

"तुम्हारे पास क्या है?" बबूसा ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"क-क्या?" धरा का स्वर कांप उठा।

"डोबू जाति की कौन-सी चीज तुम्हारे पास है?" बबूसा ने पुनः पूछा।

किसी अजनबी के मुंह से मुम्बई में डोबू जाति के बारे में सुनकर धरा कांप उठी।

"ड-डोबू जाति...मेरे पास कुछ नहीं है।" धरा जल्दी-से बोली—"मैं तो...।"

"सच कहो। मुझे गंध आ चुकी है कि तुम्हारे पास डोबू जाति की कोई चीज है। मुझे हैरानी है कि डोबू जाति की कोई चीज किसी बाहरी इंसान के पास कैसे पहुंच गई? बताओ क्या है तुम्हारे पास?"

धरा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी और कठिनता से कह उठी।

"त-तुम कौन हो?"

"बबूसा।"

सुनते ही धरा सिर से पांव तक कांप उठी। चेहरा पीला पड़ गया।

"बबूसा।" उसके होंठों से निकला।

उसका डरना बबूसा से छिपा नहीं रहा। वो बेहद नरम लहजे में बोला।

"लगता है जैसे तुमने मेरा नाम सुन रखा है। परंतु मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं। मैं...।"

"त-तुम तो डोबू जाति छोड़ चुके हो।" धरा ने डरे स्वर में कहा।

"हां।" बबूसा मुस्कराया—"तुम मेरे बारे में काफी कुछ जानती हो। मैंने गंध से पहचाना कि डोबू जाति की कोई चीज मेरे पास ही कहीं मौजूद है। तभी गंध तेज हो गई और मैंने टैक्सी को पास में जाते देखा तो समझ गया कि इसी टैक्सी में वो चीज है। बोलो क्या है तुम्हारे पास?"

धरा कुछ पल बबूसा को देखती रही।

"मुझसे डरो मत। मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगा। दिखाओ मुझे क्या है तुम्हारे पास?"

सहमी-सी धरा ने, सूखे होंठों पर जीभ फेरते लिफाफा उसकी तरफ बढ़ा दिया।

बबूसा ने फौरन लिफाफा खोलकर देखा। भीतर निगाह पड़ी तो बुरी तरह चौंका।

"य-ये तुम्हारे पास...?" बबूसा के होंठों से निकला।
धरा और भी डर गई।
"किसने दिया ये तुम्हें?"
"म-मैं लाई हूं। ड-डोबू ज़ाति से।" धरा ने भय से खरखराते स्वर में कहा।
"तुम—तुम डोबू जाति के भीतर गई। पहाड़ों के भीतर?" बबूसा के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।
धरा ने सहमति से सिर हिलाया।
"गई और वहां से बाहर आ गई। किसी ने तुम्हें देखा नहीं?" बबूसा हैरान था।
"देखा। परंतु उस रात पूरा चांद निकला हुआ था और डोबू जाति के सब लोग पेट के बल लेटे हुए...।"
"समझ गया। समझ गया।" बबूसा के होंठ भिंच गए—"परंतु ये तुमने ठीक नहीं किया। तुम डोबू जाति को नहीं जानती। वो तुम्हें मारे बिना चैन नहीं लेंगे। अब तक तो वो मुम्बई भी पहुंच गए होंगे। तुम्हारी जान नहीं बच सकती, परंतु मैं तुम्हें ज्यादा देर जिंदा रख सकता हूं। तुम मेरे साथ आओ।"
"क-कहां?" धरा का शरीर डर से कांपने लगा था।
"मुझ पर भरोसा रखो। मैं तुम्हें ज्यादा दिनों तक, उनसे बचाकर रख सकता हूं। जिस तरह मैंने गंध पाई है, उस तरह वो भी गंध पाकर तुम तक पहुंच जाएंगे। मेरे साथ चलो तुम।"
धरा घबराई-सी तुरंत टैक्सी से बाहर आ गई।

▭ ▭

बबूसा, धरा को होटल के कमरे में ले आया।
धरा के चेहरे पर घबराहट और परेशानी नाच रही थी। बबूसा ने उसे पानी पिलाकर पूछा।
"कुछ खाओगी?"
"भूख तो है पर खाने का मन नहीं है।" धरा ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा।
"ठीक है। बाद में खा लेना। अब मुझे सब कुछ बताओ कि तुम डोबू जाति तक कैसे पहुंची और क्या हुआ?"
धरा व्याकुल हो उठी। बबूसा को देखा।
"तुम किसी भी बात की चिंता मत करो। मेरे पास तुम ज्यादा देर तक सुरक्षित रहोगी।"
"बहुत ज्यादा देर तक? मैं समझी नहीं?" धरा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"डोबू जाति वाले तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ेंगे। परंतु मैं तुम्हें उनसे ज्यादा देर तक बचा सकता हूं।" बबूसा ने कहा।

"ज्यादा देर तक, मतलब कि तुम मुझे उनसे बचाए नहीं रख सकते?"

"ज्यादा देर तक बचाए नहीं रख सकता।" बबूसा ने सोच भरे स्वर में कहा—"पहले मुझे बताओ कि तुमने क्या किया?"

धरा ने सारी बात सच-सच बता दी।

बबूसा ने सब कुछ सुना और गम्भीर हो गया।

"उन्होंने मेरी मां को मार दिया।" धरा की आंखों से आंसू निकल गए—"मेरी मां ने उनका क्या बिगाड़ा...।"

"वो तब तक सबको मारते रहेंगे जब तक कि तुम्हें न मार दें।" बबूसा बोला।

"सबको मारने का क्या मतलब?"

"जो तुम्हारी पहचान के हैं। तुम्हारे करीब हैं। वो ऐसा ही करते हैं। अपने शिकार को वो बुरी तरह डरा देते हैं कि घबराहट में शिकार सामने आ जाए। तुम उनके ठिकाने के भीतर झांक आई हो। ये बात किसी को भी पसंद नहीं आएगी। मैंने नहीं सुना कभी कि कोई बाहरी व्यक्ति वहां पहुंचा हो और जिंदा बचा हो। ऐसे लोगों को वो तुरंत मार देते हैं। अगर वो रात पूरे चांद की रात न होती तो उन्होंने तुम्हें उसी वक्त मार देना था। लेकिन उस वक्त वो रानी ताशा के आदर में खुद को समर्पित किए हुए थे और उठ नहीं सकते थे।"

"रानी ताशा कौन?"

बबूसा ने धरा को देखा। कहा कुछ नहीं।

"रानी ताशा कौन है?"

"इस बात से तुम्हारा कोई मतलब नहीं कि रानी ताशा कौन है।" बबूसा बोला—"तुम्हें अपने बारे में चिंता करनी चाहिए। डोबू जाति के योद्धा तुम्हारी जान लेने के लिए मुम्बई पहुंच चुके हैं। ये भी जान लो कि वो कभी भी असफल नहीं होते। सफल होकर ही वापस लौटते हैं। मतलब कि वो तुम्हारी जान लेकर ही रहेंगे।"

धरा का चेहरा भय से पीला पड़ गया।

"तुम मुझे बचा लोगे न?"

"ज्यादा देर तक नहीं...।"

"ज्यादा देर तक क्यों नहीं?"

"वो ज्यादा हैं। उनकी संख्या ज्यादा है। मैं तुम्हें कितना भी बचाने की कोशिश कर लूं, परंतु उनका कोई न कोई वार तुम पर चल ही जाएगा। वार करने में वो माहिर हैं। बात सिर्फ मेरी होती तो मैं खुद को बचा लेता,

परंतु हर पल तुम्हारा ध्यान भी तो नहीं रख सकता। उनका कोई न कोई वार चल जाएगा तुम पर।"

"मैं मरना नहीं चाहती।"

"कोशिश करूंगा कि उनसे तुम्हें ज्यादा देर तक बचा सकूं।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"सच बात तो ये है कि इसमें मैं सारी गलती तुम्हारी ही मानता हूं। डोबू जाति के घर तक तुम्हें जाना ही नहीं चाहिए था। डोबू जाति की दुनिया में तुम्हारे दखल की गुंजाइश थी ही नहीं। सारी गलती ही तुम्हारी है।"

"मैं नौकरी ही ऐसी करती हूं कि ऐसी जगहों पर मुझे जाना पड़ता है।" धरा थके स्वर में बोली।

"जिसकी नौकरी करती हो, उससे कहो कि डोबू जाति के योद्धाओं से तुम्हें बचा लें।"

"मैं सरकारी नौकरी करती...।"

"तो सरकार से कहो तुम्हें बचा ले।" बबूसा मुस्करा पड़ा।

धरा बबूसा को देखने लगी।

"तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। तुम वहां जाकर बहुत बड़ी गलती कर चुकी हो। डोबू जाति को ये पसंद नहीं कि तुम उनके बारे में दूसरे लोगों को बताओ। वो गुमनाम रहना चाहते हैं। यहां की दुनिया में वो दखल नहीं देते और यहां के लोगों का दखल चाहते भी नहीं अपने में। तुमने उनके भीतर झांका है तो अब तुम्हारी सजा मौत है।"

"मैंने तो सुना है कि बबूसा डोबू जाति का सबसे खतरनाक आदमी है।" धरा बोली।

"तो?"

"तुम उन्हें मार सकते हो, जब वो मुझे मारने आएं। मुझे बचा सकते हो।"

"जरूर बचाऊंगा। उन्हें मार दूंगा। परंतु उनकी संख्या ज्यादा है। वो मरते रहेंगे आते रहें और कभी भी उनका सफल वार तुम पर हो जाएगा। वो अकेले शिकार की तरफ नहीं बढ़ते। झुंड बनाकर शिकार को घेरते हैं। अब वो मुम्बई दस-पांच की संख्या में मौजूद नहीं होंगे। बल्कि उनकी संख्या ज्यादा होती जा रही होगी। तुम तक पहुंचने में उन्हें जितनी देर हो रही है उतने ही योद्धा डोबू जाति से मुम्बई पहुंच रहे होंगे। तुम्हें अभी उनकी ताकत का अंदाजा नहीं।"

"तुम्हारा मतलब कि वो तुमसे ज्यादा ताकतवर हैं।"

"बेशक। उनकी संख्या ज्यादा है तो वो मुझसे ज्यादा ताकतवर हो जाते हैं। परंतु बात मेरी होती तो वो मुझसे कभी भी मुकाबला नहीं कर सकते।

उन्हें शिकस्त देने का तरीका मुझे आता है। क्योंकि मैं भी वहीं का हूं और वो भी वहीं के हैं। वो मेरे से डरते हैं परंतु जब उनका समूह बन जाता है तो मैं कमजोर हो जाता हूं।"

"तुमने जब डोबू जाति से विद्रोह किया मैंने सुना था कि वो चाहकर भी तुम्हें नहीं रोक सके थे।"

"ठीक सुना।"

"तब भी तो वो समूह में थे तुम्हें रोक सकते थे।"

"अवश्य रोक सकते थे। कैद कर सकते थे। मुझे रोकना चाहा तो मैंने सात-आठ योद्धाओं की जान ले ली। अगर वो समूह में मेरे सामने आ जाते और मुझे पकड़ते। मुझ पर काबू पाते तो मैं वहां ढेरों लाशें बिछा देता। ये बात डोबू जाति वाले भी जानते थे। डोबू जाति वाले इस तरह अपने योद्धाओं को खोना नहीं चाहते थे। क्योंकि एक-एक योद्धा के तैयार होने में योद्धा का आधा जीवन लग जाता है। योद्धा बनाने के पीछे बहुत लोगों की अथाह मेहनत होती है। फिर मुझे चले आने देने का मतलब था कि मैं रानी ताशा की तरफ से भेजा गया हूं और मेरी जिम्मेवारी रानी ताशा की है। ऐसे में...।"

"रानी ताशा कौन है?"

"उसके बारे में मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा।"

"क्यों?"

"सवाल मत पूछो ये।"

"रानी ताशा तुम्हारी क्या लगती है?"

"उसके सामने मेरी स्थिति नौकरों जैसी है।" बबूसा ने शांत स्वर में कहा।

"मतलब कि तुम रानी ताशा का हुक्म मानते हो?" धरा ने पूछा।

"मानता था, अब नहीं। डोबू जाति से मेरा विद्रोह, रानी ताशा के लिए ही था। डोबू जाति से मेरा खास वास्ता नहीं है।"

"मैं समझी नहीं।"

बबूसा चुप रहा।

"मुझे बताओ रानी ताशा के बारे में। मैं कुछ समझी नहीं कि...।"

"इस बारे में जानने की चेष्टा मत करो। मैं बताने वाला नहीं।"

धरा कुछ पल बबूसा को देखती रही फिर बोली।

"तुम डोबू जाति से बाहर क्यों निकले, क्या बात हो गई जो...।"

"तुम सवाल बहुत पूछती हो।"

"मैं सब कुछ जान लेना चाहती...।"

"तुम्हें अपनी जान की फिक्र करनी चाहिए। डोबू जाति के

योद्धा तुम्हारी मां को मार चुके हैं और अब तुम्हें मारेंगे। वो लोग कभी भी तुम तक पहुंच सकते हैं। तुम्हें अपनी जान बचाने की सोचनी चाहिए।"

धरा के चेहरे पर घबराहट उभरी। सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"अब हमें कुछ काम की बात कर लेनी चाहिए।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"काम की बात?"

"हां। मैं तुम्हें डोबू जाति के योद्धाओं से बचाऊंगा। क्योंकि मैं उनसे डरता नहीं हूं। मैं नाराज भी हूं उनसे। इसलिए जो भी तुम्हारे को मारने आएगा मैं उसका मुकाबला करूंगा। ऐसा करके मैं तुम पर कोई एहसान नहीं करूंगा। परंतु इसके बदले में मैं तुमसे कोई सहायता चाहता हूं।" बबूसा ने कहा।

"कैसी सहायता?"

"मुझे एक आदमी की तलाश है।"

"उसका पता क्या है?"

"वो मैं नहीं जानता कि...।"

"फिर तो कठिन बात है, उसे तलाश कर पाना। तुम्हारे पास उसका पता भी नहीं है।" धरा ने कहा।

"उसका नाम देवराज चौहान है और वो चोर है।"

"चोर है?"

"हां। बड़ी-बड़ी चोरियां करता है वो।"

"ये नाम तो मैंने कभी भी नहीं सुना।" धरा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"लोगों से पूछो पता चल जाएगा।" बबूसा बोला।

"एक चोर से तुम्हें क्या काम?"

"मेरा अपना मतलब है उससे।"

"उसका फोन नम्बर भी नहीं है?"

"नहीं।"

"चोर के बारे में तो पुलिस ही बता सकती है।" धरा ने बबूसा को देखा—"इस बारे में पुलिस से पूछना पड़ेगा।"

"ये तुम्हारा काम है तुम जानो कि पुलिस से कैसे पूछना है। तुम मेरा ये काम करो, मैं तुम्हें डोबू जाति के योद्धाओं से बचाऊंगा।"

धरा गम्भीर निगाहों से बबूसा को देखने लगी।

"क्या सोच रही हो?" बबूसा ने पूछा।

"अंजाने में मैंने कितनी बड़ी मुसीबत मोल ले ली।"

"इस मुसीबत से तुम कभी भी बाहर नहीं आ सकोगी। मैं कोशिश करूंगा कि तुम्हें ज्यादा देर तक बचाए रख सकूं।"

धरा बेचैन हो उठी।

"क्या अब तुम कोई काम करना चाहती हो?"

"हां। कैमरे से तस्वीरों के प्रिंट निकलवाने हैं फोटोग्राफर की दुकान पर जाकर।"

"मैं हर पल तुम्हारे साथ रहूंगा और तुमने मेरे पास रहना है। तभी तुम बची रह सकती हो, लेकिन इस बात की गारंटी तब भी नहीं है। डोबू जाति वाले दूर से ही अपने शिकार पर जानलेवा वार करने में माहिर हैं।"

"मुझे भूख लगी है।" धरा सोच-भरे स्वर में कह उठी।

"अभी खाना मंगवा देता हूं।"

▭ ▭

धरा ने फोटोग्राफर की दुकान से, कैमरे में मौजूद तस्वीरों के प्रिंट निकलवाए। सब तस्वीरें डोबू जाति की थीं। उन तस्वीरों को देखकर धरा को डोबू जाति का सफर याद आ गया। जोगाराम याद आया तो मां की मौत भी याद आई। वो महसूस कर चुकी थी कि उसकी जान पूरी तरह खतरे में है। बबूसा के बारे में पहले से ही सुन चुकी थी, इसलिए बबूसा पर उसने यकीन कर लिया था कि वो उसे बचा सकता है, परंतु वो भी इस बात की गारंटी नहीं ले रहा था। यही कहा कि ज्यादा लम्बे समय तक उसे बचा के रखेगा। मतलब कि आखिरकार वो मरेगी ही।

इस वक्त धरा कुछ भी समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे, क्या नहीं? जब तक वो फोटोग्राफर की दुकान पर रही, बबूसा दुकान के बाहर मौजूद रहा।

ऐसे बुरे वक्त में बबूसा का साथ पाकर धरा कुछ राहत में थी।

धरा तस्वीरों का लिफाफा थामे, कैमरा थामे बाहर निकली। उसका चेहरा उतरा हुआ था।

"और क्या करना चाहती हो तुम?" उसके पास आने पर बबूसा ने पूछा।

"चक्रवती साहब को तस्वीरें दिखानी हैं, लेकिन आज वो मेरी मां के दाह संस्कार में व्यस्त हैं।" धरा ने भारी स्वर में कहा।

"तुम वहां नहीं गईं?"

"मैंने सोचा वहां डोबू जाति वाले मौजूद न हों। मेरा इंतजार न कर रहे हों।"

"वो ऐसा जरूर कर रहे होंगे।" बबूसा ने सिर हिलाया—"वहां न जाकर तुमने अच्छा किया।"

"मैं वहां जाती तो वो मुझे भी मार देते न?" धरा का चेहरा लटक गया।

"तुम्हें ही तो मारना चाहते हैं वो।"

"उसके बाद वो क्या करेंगे?"

"वापस चले जाएंगे।"

अपनी मौत के बारे में सोचकर धरा पीली पड़ गई।

"उन पत्तों पर क्या लिखा है?" धरा ने पूछा।

"तुम नहीं पढ़ सकीं।"

"मुझे वो भाषा समझ में नहीं आई।"

"वो भाषा किसी को भी समझ नहीं आ सकती। वो इस धरती की भाषा नहीं है।" बबूसा ने सिर हिलाया।

"इस धरती की भाषा नहीं है?" धरा के होंठों से अजीब-सा स्वर निकला।

"हां। वो हमारे ग्रह की भाषा है। वो पत्ते भी हमारे ग्रह के हैं। उन पर रानी ताशा की तरफ से इकरारनामा लिखा है कि डोबू जाति वाले उनके दोस्त हैं। उनके लिए वो किसी की जान ले भी सकते हैं और जान दे भी सकते हैं। ढाई सौ वर्ष पहले जब पोपा (अंतरिक्ष यान) पर सवार होकर पहली बार रानी ताशा के लोग इस ग्रह पर आकर डोबू जाति से मिले तो वो पत्ते, वो इकरारनामा उन्होंने डोबू जाति वालों को सौंपा था। वो तब...।"

"पोपा क्या होता है?"

"जैसे यहां के लोगों का अंतरिक्ष यान।"

"ओह।" धरा हक्की-बक्की थी—"तुम अपने किसी ग्रह की बात कर रहे हो। मैं समझी नहीं? क्या तुम किसी दूसरे ग्रह से हो? तुमने अभी कहा कि वो हमारे ग्रह की भाषा है। बताओ मुझे—तुम...।"

"मैं इस ग्रह का नहीं हूं।"

"ये क्या कह रहे हो तुम?"

"मेरा जन्म मेरे अपने ग्रह पर हुआ था। फिर पोपा मुझे डोबू जाति में छोड़ गया। डोबू जाति के बच्चों में पला मैं और योद्धा बना। परंतु जन्म के समय मेरे भीतर महापंडित ने शक्तियां डाल दी थीं जिनसे मैं अब वाकिफ होता जा रहा हूं। वो शक्तियां अब खुद ही अपनी मौजूदगी का एहसास दिलाने लगी...।"

"महापंडित कौन?"

"हमारे ग्रह का सबसे बड़ा विद्वान। जीवन-मृत्यु को वो ही संभालता है और...।"

"तुम्हारा ग्रह कहां है?"

बबूसा ने धरा के हैरान चेहरे को देखा और कह उठा।

"ये इन बातों का समय नहीं है। तुम...।"

"तुमने मुझे हैरान कर दिया है ऐसी बातें कहकर, मुझे बताओ कि ये क्या हो रहा...।"

"सड़क पर खड़े होकर बात नहीं होती।"

"तो?"

"होटल के कमरे में चलेंगे, परंतु पहले पुलिस से देवराज चौहान नाम के चोर के बारे में पता करो कि वो कहां रहता है। मेरे लिए ये बहुत जरूरी बात है।" बबूसा ने कहा।

"वो देखो, वो सामने पुलिस वाला डंडा लेकर घूम रहा है, मैं उससे पूछती हूं।" कहकर धरा उधर बढ़ गई।

धरा पुलिस वाले के पास पहुंची।

"नमस्कार भैया।"

वो हवालदार था। उसने धरा को देखकर सिर हिलाया।

"भैया, आप देवराज चौहान नाम के चोर को जानते हैं?" धरा ने पूछा।

"देवराज चौहान नाम का चोर—क्यों?" हवालदार ने पूछा।

"वो—वो मेरा पर्स ले भागा कल, तो मैं...।"

"पर्स ले भागा तो उसका नाम तुम्हें कैसे पता चला?"

"उ-उसी ने बताया था।" धरा हड़बड़ाकर बोली—"कहा उसने कि उसका नाम देवराज चौहान है, अगर मुझे ढूंढ़कर मेरे पास आ जाओगी तो मैं तुम्हारा पर्स वापस दे दूंगा।"

"ऐसा कहा कमीने ने?"

"हां।"

"कहां छीना उसने तुम्हारा पर्स?"

"यहीं, पास के चौराहे पर। उसके बारे में कुछ जानते हो तो बता दो न?" धरा ने मुंह लटकाकर कहा।

"देवराज चौहान?" हवालदार सोच-भरे स्वर में बोला—"इस नाम का तो कोई चोर नहीं है। इलाके में नया आया होगा। साले को ढूंढ़ना पड़ेगा कि बिना इजाजत इधर धंधा करता है।"

"क्या कहा?"

"मैंने इस चोर का नाम नहीं सुना।"

"पक्का भैया नहीं सुना?"

"नहीं सुना।"

धरा वापस बबूसा के पास आ गई।

"पता लगा?" बबूसा ने पूछा।

"उसने देवराज चौहान नाम के चोर का नाम नहीं सुना।"

"तो किसी और से पता करो।"

"तुम्हें उससे क्या काम है? क्या उसने तुम्हारा कुछ चुराया है?" धरा बोली।

"मेरा कुछ नहीं चुराया।"

"तो फिर क्यों...?"

"जो बात मैं न बताना चाहूं, वो सवाल मुझसे दोबारा न पूछा करो।"

धरा चुप कर गई।

"देवराज चौहान के बारे में किसी और पुलिस वाले से पूछो।" बबूसा ने कहा।

"मैं थकी हुई हूं। आराम करना चाहती...।"

"रात को नींद ले लेना। मुझे देवराज चौहान का पता जानने की बहुत जरूरत है।"

▭ ▭

धरा, देवराज चौहान नाम के चोर के बारे में, पुलिस वालों से पूछती रही। अलग-अलग इलाकों के दो पुलिस स्टेशनों में भी गई। रात दस बजे के करीब कुछ सफलता हाथ लगी। एक सब-इंस्पेक्टर ने धरा को बताया कि देवराज चौहान तो मशहूर डकैती मास्टर है।

धरा ने फौरन ये बात बाहर खड़े बबूसा को जा बताई।

"हां वो मशहूर है। पुलिस उसे पकड़ लेना चाहती है, वो वो ही डकैती मास्टर होगा।" बबूसा फौरन कह उठा।

"चोर और डकैत में बहुत फर्क होता है।" धरा बोली।

"ये बात मुझे पता नहीं थी। कहां रहता है देवराज चौहान?" बबूसा ने पूछा।

"ज्यादा बात नहीं हो पाई थी। उस पुलिस वाले ने बताया वो डकैती मास्टर है तो ये बताने तुम्हारे पास आ गई। मैं अभी उससे और बातचीत करके पता करती हूं।" कहकर धरा पुलिस स्टेशन में चली गई।

बबूसा बाहर ही मौजूद रहा।

करीब एक घंटे बाद धरा बाहर आई।

"क्या पता लगाया?" उसके पास आते ही बबूसा ने पूछा।

"कोई पुलिस वाला नहीं जानता कि देवराज चौहान कहां रहता है। वो पुलिस से हमेशा छिपा रहता है। सब-इंस्पेक्टर ने बताया कि इंस्पेक्टर वानखेड़े के हाथ में उसका केस है। ज्यादा बातें तो वो ही बता सकता है।"

"इंस्पेक्टर वानखेड़े, ये कहां मिलेगा?"

"पता नहीं। उसका फोन नम्बर लाई हूं। बात हो सकती है उससे।

परंतु वो हमसे देवराज चौहान के बारे में फोन पर बात क्यों करेगा? क्यों हमें बताएगा कि वो कहां मिल सकता है या कहां नहीं मिल सकता।" धरा ने कहा।

"तुम फोन पर उससे उसका पता ले सकती हो?"

"पता, हां वो मैं ले लूंगी।" धरा ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"पता ले लो। हम उसके पास चलेंगे और मैं उसके मुंह से सब कुछ निकलवा लूंगा।"

"उसे मारोगे?" धरा ने बबूसा को देखा।

"वो नहीं बताएगा तो उसे जरूर मारूंगा।"

"यहां पुलिस वालों को मारना गम्भीर जुर्म माना जाता है।"

"मैं नहीं डरता किसी से।"

"तुम पुलिस वाले को मारोगे नहीं। तभी मैं तुम्हारा साथ दूंगी। मैं उससे बात करूंगी। देवराज चौहान का पता जानने की कोशिश करूंगी, परंतु तुम उसे मारोगे नहीं।" धरा ने सोच भरे स्वर में कहा।

"ठीक है। मैं तुम्हारी बात मानूंगा। अब तुम उसे फोन करो।"

"मेरे पास मोबाइल नहीं है। किसी फोन बूथ से फोन करना होगा।"

उसके बाद धरा ने फोन बूथ तलाशा जो कि पास की मार्किट में ही मिल गया। वहां से धरा ने इंस्पेक्टर वानखेड़े का वो नम्बर मिलाया, जो सब-इंस्पेक्टर ने दिया था। पहली बार में ही फोन लग गया।

"हैलो।" उधर से वानखेड़े की आवाज कानों में पड़ा।

बबूसा खुले बूथ के दरवाजे पर खड़ा था और बातें सुन रहा था।

"इंस्पेक्टर वानखेड़े साहब?"

"जी हां—आप कौन?"

"मेरा नाम धरा है और मैंने अभी खार के पुलिस स्टेशन के सब-इंस्पेक्टर से आपका नम्बर लिया है। मैं आपसे देवराज चौहान के बारे में कुछ बात करना चाहती हूं। क्या आप अपना पता बता सकते हैं या मिल सकते हैं?"

"देवराज चौहान के बारे में बात?"

"डकैती मास्टर देवराज चौहान—जानते हैं न आप उसे।"

"आपका देवराज चौहान से क्या वास्ता?"

"कुछ नहीं। बस मेरा आपसे मिलना जरूरी है।"

"अपने बारे में कुछ बताओ।" उधर से वानखेड़े ने कहा।

"मैं सरकारी विभाग पुरातत्त्व विभाग में काम करती हूं।"

"देवराज चौहान के बारे में आपने क्या बात करनी है?" दूसरी तरफ से वानखेड़े ने पूछा।

"ये मिलने पर ही बात होगी। क्या आप मिल सकते हैं मुझे?"
"क्यों नहीं...।"
"आप अपने घर का पता बता...।"
"आप कहां हैं इस वक्त?"
"खार की मार्किट में। तीसरे रास्ते पर जो मार्किट है, वहां।" धरा ने कहा।
"मैं आधे घंटे में वहां पहुंचता हूं।"
"पर मैं आपको पहचानूंगी कैसे?"
"आप मुझे बता दीजिए कहां पर हैं, मैं वहीं आ जाऊंगा।" उधर से वानखेड़े ने कहा।
"एक दुकान के बाहर पब्लिक बूथ है। मैं वहीं से बोल रही हूं।"
"उसी बूथ के पास रहिए। मैं आपको पहचान जाऊंगा।"
धरा ने रिसीवर रखा और बबूसा से बोली।
"इंस्पेक्टर वानखेड़े थोड़ी देर में यहां आएगा। उस पर हाथ उठाने की कोशिश मत करना।"

▭ ▭

रात के 11.45 हो रहे थे। मार्किट बंद हो रही थी। सड़क पर अभी भी लोगों का आना-जाना जारी था। धरा उसी बूथ के पास खड़ी थी। बबूसा कुछ दूरी पर मौजूद था। इंस्पेक्टर वानखेड़े वहां पहुंचा और सीधा धरा के पास आ गया। उसने सादी कमीज-पैंट पहनी थी। उसकी हालत बता रही थी कि वो व्यस्तता के दौर से गुजर रहा है।
"आप धरा हैं?" वानखेड़े ने पूछा।
"आप कौन?"
"इंस्पेक्टर वानखेड़े।"
"मैं धरा ही हूं परंतु आपने वर्दी नहीं पहनी हुई है।" धरा ने पूछा।
"मैं बहुत कम वर्दी पहनता हूं। मेरी ड्यूटी हैडक्वार्टर में होती है।"
"मैं आपकी आवाज से पहचान चुकी हूं कि मैंने आप ही से बात की थी।" कहने के साथ ही धरा ने बबूसा को पास आने का इशारा किया तो बबूसा पास आ गया।
वानखेड़े ने उसे गहरी निगाहों से देखा।
यहां पर दुकानों की मध्यम-सी रोशनी पहुंच रही थी।
"इंस्पेक्टर वानखेड़े साहब, ये बबूसा है।"
"बबूसा? बहुत अजीब-सा नाम है।"
"मेरा नाम बबूसा ही है।" बबूसा बोला।
वानखेड़े ने सवालिया नजरों से धरा को देखा।

"मुझे ये कहीं मिल गए हैं और देवराज चौहान को तलाश कर रहे हैं। उसे अपना रिश्तेदार बताते हैं।" धरा ने कहा।

"रिश्तेदार?" वानखेड़े कह उठा—"मेरे खयाल से तो उसके चाचा सांवरा चौहान के अलावा उसका कोई रिश्तेदार नहीं है।"

"मैं देवराज चौहान का रिश्तेदार हूं।" बबूसा बोला।

"तो मुझसे क्या चाहते हैं?"

"मुझे पता चला है कि आप देवराज चौहान के बारे में जानकारी रखते हैं।"

"हां—तो?"

"मुझे देवराज चौहान से मिलना है। उसका पता बता दीजिए।"

"मैं उसका पता जानता होता तो उसे गिरफ्तार कर चुका होता।" वानखेड़े ने कहा।

"मुझे देवराज चौहान से बहुत जरूरी काम है। आप मुझे उसका पता बता दीजिए।"

"मैं उसका ठिकाना नहीं जानता बबूसा साहब।"

"तो ऐसे किसी आदमी के बारे में बता दीजिए जो उसका पता जानता हो।"

"सोहनलाल उसका पता जानता है।" वानखेड़े गम्भीर स्वर में बोला।

"वो कहां रहता है?"

वानखेड़े ने सोहनलाल का पता बताया, फिर पूछा।

"आपकी देवराज चौहान से क्या रिश्तेदारी है?"

"वो मेरा सब कुछ है।" बबूसा बोला।

"सब कुछ?"

"वो मेरा मालिक है। मैं उसका सेवक हूं।"

"मैं अभी भी कुछ नहीं समझा बबूसा साहब।" वानखेड़े सच में उलझन में था।

"इसकी बातें मेरी समझ में भी नहीं आतीं।" धरा जल्दी-से कह उठी—"ये कुछ अजीब-सा है। मैं इसकी सहायता...।"

"ये आपको कहां मिला?" वानखेड़े ने धरा से पूछा।

"मुझे?" धरा का दिमाग तेजी से दौड़ा—"इसने मेरी सहायता की। एक बदमाश से मुझे बचाया तो मैं इसके लिए देवराज चौहान को ढूंढ़ने में लग गई।"

"सिर्फ इतनी ही बात थी तो ये बात फोन पर भी हो सकती थी।" वानखेड़े ने कहा।

"फोन पर आप बात ठीक से समझ नहीं पाते और मैं समझा भी नहीं

"नहीं। मुझे भूख पर काबू करना आता है। मैं महीना भर बिना खाए रह सकता हूं।"

"अब कुछ खाओगे न?"

"नहीं।" बबूसा अपनी कमीज उतारता बोला—"मैं नहाने जा रहा हूं फिर समाधि लगानी है। तुम्हारे लिए खाने को बोल दूं?"

"हां।"

बबूसा ने इंटरकॉम पर खाना बोला और बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

"यहां तो एक ही बेड पर, तुम कहां सोओगे?"

"बेड पर।" बबूसा मुस्कराया।

"और मैं?"

"तुम भी बेड पर।"

"मैं नीचे सो जाऊंगी।" धरा कह उठी।

"चिंता मत करो। तुम जो सोच रही हो, ऐसा कुछ नहीं होगा।" कहकर बबूसा बाथरूम में चला गया।

धरा ने कुर्सी पर बैठे आंखें बंद कर लीं।

अपने बीते वक्त पर सोचने लगी।

अंत में इसी नतीजे पर पहुंची कि डोबू जाति में दखल देकर उसने बहुत बड़ी गलती की और इस गलती को सुधारा नहीं जा सकता था। डोबू जाति के योद्धा उसकी जान के पीछे पड़े थे। वो इतने खतरनाक हैं कि उसके न मिलने पर उसकी मां की हत्या कर दी। अगर मां की हत्या गला कटने से न हुई होती तो वो समझ न पाती कि ये काम डोबू जाति ने किया है। जोगाराम का गला कटकर, अलग होकर गिरना उसे याद आता चला गया।

दस मिनट में बबूसा बाथरूम से नहाकर निकला। उसने अंडरवियर पहन रखा था।

"तुमने कपड़े क्यों नहीं पहने? कपड़े पहनकर मेरे सामने आओ।"

"अभी समाधि लगानी है। उसके बाद पहनूंगा।"

"समाधि किस बात की?"

"राजा देव से बात करनी है।" बबूसा ने शांत स्वर में कहा।

"राजा देव—ये कौन है?"

"देवराज चौहान।"

"तुम देवराज चौहान को राजा देव कहते हो?"

"वो राजा देव ही तो है।"

"समाधि लगाकर देवराज चौहान से कैसे बात कर सकते हो?" धरा उलझन भरे स्वर में कह उठी।

पाती। फिर भी आपको यहां तक आने की जो तकलीफ हुई, उसके लिए मैं माफी चाहती हूं।" धरा ने आभार भरे स्वर में कहा।
वानखेड़े वहां से चला गया।
"चलो।" बबूसा बोला—"सोहनलाल के पास चलो...।"
"ये वक्त नहीं है किसी के घर जाने का। कल सुबह चलेंगे।"
"परंतु मुझे देवराज चौहान से मिलने की जल्दी है।"
"जो भी हो, आधी रात को किसी के पास नहीं जाते। आगे जो भी होगा कल सुबह होगा। मैं जरा चक्रवती साहब से बात कर लूं।" कहकर धरा फोन बूथ में प्रवेश कर गई।
धरा ने चक्रवती साहब से बात की।
"मां का अंतिम संस्कार अच्छे से कर दिया चक्रवती साहब?" धरा का स्वर भर्रा उठा।
"सब ठीक से हो गया। तुम फिक्र मत करो।"
धरा के गालों पर आंसू आ गए।
"कल आऊंगी मैं ऑफिस में। आपको दिखाने को मेरे पास बहुत कुछ है।"
"तुम कहां हो। मुझे तुम्हारी फिक्र है। डोबू जाति वाले कहीं तुम्हारी जान भी न ले लें।"
"मैं सुरक्षित जगह पर हूं। कल मेरे लिए एक मोबाइल, नया नम्बर डाल के रखना आप। मेरा फोन वहीं पर छूट गया और इस वक्त मेरे पास कोई आई.डी. नहीं है कि नम्बर ले सकूं।" धरा बोली।
"ठीक है। कल तुम कब आओगी?"
"दोपहर में।" कहकर धरा ने रिसीवर रखा और मां को याद करते, आंसू पोंछते बाहर आ गई बूथ से।

बबूसा और धरा जब होटल के कमरे में पहुंचे तो रात का डेढ़ बज रहा था। धरा थकी हुई लग रही थी। उसे घर की बहुत याद आ रही थी। मां का चेहरा आंखों के सामने आ जाता था। वो नहीं जानती थी तब कि ये मां से उसकी आखिरी मुलाकात है। अब तो वापस घर जाना भी खतरे से खाली नहीं था। डोबू जाति का कोई योद्धा अवश्य उसके घर पर नजर रख रहा होगा कि शायद वो मां की मौत की खबर सुनकर, या वैसे ही घर आ पहुंचे।
धरा थकी-हारी कुर्सी पर जा बैठी।
"तुम्हें भूख लगी होगी?" बबूसा ने पूछा।
"तुम्हें नहीं लगी?"

"मेरे पास महापंडित की कुछ शक्तियां हैं। राजा देव की गंध मैं पहचान चुका हूं। अब उनसे बात करना आसान है।"

"अजीब बात है कि तुम चोर-डकैत को राजा देव कह रहे...।"

"इस जन्म में वो चोर-डकैत हैं।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"परंतु हकीकत में वो राजा देव हैं। अंतरिक्ष के एक ग्रह का राजा। मैं उनका सेवक हुआ करता था।"

"तुम अजीब बात कर रहे हो। तुमने रानी ताशा का नाम लिया था।"

"वो राजा देव की पत्नी है।"

"परंतु...।"

"अभी बातें मत करो।" बबूसा गम्भीर था।

"परंतु तुम तो ऐसी बातें करके मेरा दिमाग खराब कर रहे हो। कैसे विश्वास करूं तुम्हारी बात का?"

"मैं सच बातें कह रहा हूं। भरोसा करो या न करो, ये तुम पर है।"

धरा बबूसा के चेहरे पर निगाहें टिकाए बोली।

"तो तुम समाधि लगाकर देवराज चौहान से बातें करोगे?"

"हां।"

"तो क्या वो बातें मैं सुन सकूंगी?"

"नहीं। तब मैं राजा देव के पास, उनसे बात कर रहा होऊंगा। महापंडित की शक्तियां, मेरे भीतर से मुझे बाहर निकालकर राजा देव के पास पहुंचा देंगी। तब समाधि लगाए मेरे शरीर में सिर्फ सांसें चलती रहेंगी।"

"तुम सच में देवराज चौहान से समाधि के माध्यम से बात करने वाले हो?"

"हां।"

"तो उससे क्यों नहीं पूछ लेते कि वो कहां पर मिलेगा?"

"इस बारे में राजा देव मुझसे बात नहीं करते। वो अपना वो जन्म भूले बैठे हैं। मेरी बातों को समझ नहीं पा रहे। उन्हें मेरे वजूद पर भरोसा नहीं।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"जब देवराज चौहान को कुछ याद नहीं तो तुम क्यों चिंता में मरे जा रहे...।"

"मुझे चिंता होनी चाहिए। क्योंकि रानी ताशा कभी भी पोपा (अंतरिक्ष यान) में बैठकर इस धरती पर डोबू जाति के पास पहुंच जाएगी। वो राजा देव को वापस सदूर ग्रह पर ले जाना चाहती है। राजा देव जब रानी ताशा का चेहरा देखेंगे तो दो बातें हो जानी सम्भव है। एक तो राजा देव को सदूर ग्रह का जन्म, वहां की बातें सब कुछ याद आने लगेगा। ये अच्छी बात होगी। परंतु मुझे असल चिंता तो दूसरी बात की है।"

"क्या, दूसरी बात?"

"राजा देव हमेशा ही रानी ताशा पर मोहित रहे हैं। रानी ताशा सदूर ग्रह की सबसे खूबसूरत औरत है। मैं नहीं चाहता कि राजा देव, रानी ताशा पर फिर से मोहित होकर सब भूल जाएं। मैं चाहता हूं कि उनकी यादें रानी ताशा की धोखेबाजी तक जरूर पहुंचे। ऐसा होने पर राजा देव सही फैसला ले सकेंगे कि उन्हें वापस सदूर ग्रह पर रानी ताशा के पास जाना है कि नहीं। रानी ताशा ने आज से अट्ठाइस वर्ष पहले मेरा जन्म ही इसलिए कराया कि मैं राजा देव को वापस ग्रह पर ले जाने के लिए उनकी सहायता करता परंतु मैं तो राजा देव का खास सेवक हूं। मैं राजा देव से धोखा कैसे कर सकता हूं। ऐसे में मैंने राजा देव का सतर्क करने के लिए डोबू जाति से विद्रोह किया और वहां से चला आया।

धरा हक्की-बक्की-सी बबूसा को देखे जा रही थी। बोली।

"मुझे तो तुम पागल लग रहे हो।"

बबूसा बरबस ही मुस्करा पड़ा।

"तुम्हें मैं पागल ही लगूंगा। मेरी बातें तुम्हारी समझ में नहीं आएंगी। अगर तुम जीवित रहीं और मेरे साथ ही रहीं तो तुम्हें सब कुछ देखने-सुनने को मिलेगा।" बबूसा के होंठों पर मुस्कान थी।

"तुम मुझे डोबू जाति के योद्धाओं से बचा लोगे न?"

"तुम्हें ज्यादा देर तक बचाए रखने की पूरी चेष्टा करूंगा।" बबूसा गम्भीर हो गया—"मैं उनकी जाति के नियमों से बंधा हुआ नहीं हूं। क्योंकि मेरा जन्म मेरे सदूर ग्रह पर हुआ था और पोपा मुझे डोबू जाति में छोड़ गया कि मैं इस दुनिया को समझ सकूं और वक्त आने पर राजा देव को वापस सदूर ग्रह पर ले जाने के लिए, रानी ताशा की सहायता करूं।"

"लेकिन तुम ऐसा नहीं कर रहे।"

"नहीं, बिल्कुल भी नहीं। मैं राजा देव का खास सेवक हूं। राजा देव के हक में ही काम करूंगा।"

"तो क्या रानी ताशा नाराज नहीं होगी तुमसे?"

"इस मामले में मैं रानी ताशा की परवाह नहीं करता। रानी ताशा हर हाल में राजा देव को वापस ले जाना चाहती है और मैं चाहूंगा कि राजा देव इस हकीकत से वाकिफ जरूर रहे कि रानी ताशा ने उनके साथ क्या धोखेबाजी की थी।"

"क्या धोखेबाजी की थी?"

बबूसा ने धरा को देखा, कुछ चुप रहकर बोला।

"ये बात मैं तुम्हें नहीं बता सकता।"

"क्यों?"

"ये राजा देव और रानी ताशा के बीच की बात है।"

"बताने में क्या हर्ज है।"

"तुम्हें ये बात जानने की जरूरत भी नहीं है। मैं तो...।"

तभी दरवाजा थपथपाया गया।

बबूसा ने दरवाजा खोला तो नाइट ड्यूटी वाला वेटर खड़ा था।

"नमस्कार सर।"

बबूसा ने सिर हिलाया और पीछे हट गया।

वेटर ने भीतर आकर खाना टेबल पर लगाया और बाहर चला गया।

बबूसा ने दरवाजा बंद करते हुए कहा।

"तुम खाना खाओ। मैं समाधि लगाकर राजा देव से बात करने जा रहा हूं। शोर मत करना। मुझे परेशान मत होने देना।"

धरा ने सिर हिलाते हुए कहा।

"मुझे हैरानी है कि तुम एक डकैती करने वाले को, राजा देव कह रहे हो।"

बबूसा ने कुछ नहीं कहा और कमरे के कोने में समाधि की मुद्रा में जा बैठा। धरा कुछ पल सोच भरी निगाहों से बबूसा को देखती रही फिर उठकर खाने की टेबल के पास पड़ी कुर्सी पर जा बैठी।

□ □
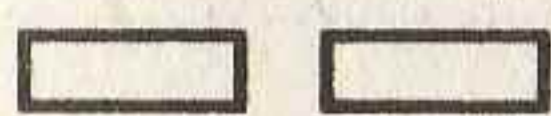
रात के दो के ऊपर का वक्त हो रहा था।

देवराज चौहान बंगले में, बेड पर गहरी नींद में था। ए.सी. की ठंडक कमरे में फैली हुई थी और जगमोहन बगल के अपने बेडरूम में टी.वी. पर फिल्म देखने में व्यस्त था। कल के लिए वो फुर्सत में था। ऐसे में सुबह जल्दी उठने की कोई वजह नहीं थी। इसलिए आधी रात तक भी आराम से बैठा मूवी देख रहा था।

एकाएक वो चौंका। तुरंत आस-पास देखा।

परंतु वहां कोई नहीं था।

जबकि जगमोहन को वहां किसी के चलने-फिरने का एहसास हुआ था।

'बबूसा' उसके मस्तिष्क में कौंधा।

देवराज चौहान उसे बबूसा के बारे में सब कुछ बता चुका था।

अब वहां कहीं भी कोई एहसास नहीं हो रहा था चलने का। जगमोहन को लगा उसे धोखा हुआ होगा और वो अपना ध्यान टी.वी. पर लगाने लगा। परंतु जाने क्यों बेचैनी मन में आ गई थी। टी.वी. में उसका मन नहीं लगा। वो अपने को यकीन दिलाने लगा कि उसने पक्का किसी के चलने की आवाज सुनी थी। एकाएक वो उठा और अपने कमरे

से निकलकर, देवराज चौहान के बेडरूम का दरवाजा खोलकर भीतर गया।

देवराज चौहान गहरी नींद में था।

चंद पल देवराज चौहान को देखते रहने के पश्चात बाहर निकला और दरवाजा बंद कर दिया। कमरे में नाइट बल्ब का प्रकाश रोशन था। ए.सी. की ठंडी हवा में देवराज चौहान गहरी नींद में था।

तभी कमरे में किसी के चलने की आवाज उभरी।

परंतु देवराज चौहान सोया रहा।

फिर एक तरफ का बेड कुछ दबा, जैसे कि कोई उस पर बैठा हो।

"राजा देव...।" एकाएक बबूसा की मध्यम-सी आवाज उभरी।

देवराज चौहान गहरी नींद में रहा।

"राजा देव।"

देवराज चौहान की मुद्रा में कोई फर्क नहीं आया।

फिर बेड के दबाव से महसूस हुआ कि जैसे बैठने वाला उठ गया हो। चलने की आवाज उभरी।

"राजा देव।"

नींद में डूबे देवराज चौहान को लगा जैसे कुछ उसके कान में बोला हो।

उसका सोया दिमाग जाग उठा।

राजा देव?

बबूसा? ये तो बबूसा है।

देवराज चौहान ने फौरन आंखें खोली, कमरे में निगाह दौड़ाई।

कोई न दिखा।

"मैं हूं राजा देव। आपका सेवक बबूसा।"

देवराज चौहान फौरन उठ बैठा।

"आप तो बहुत गहरी नींद में सोए हुए थे राजा देव।" बबूसा की आवाज उभरी।

"तुम।" देवराज चौहान बोला—"तुम फिर आ गए?"

"मुझे तो आना ही है राजा देव। आपका सेवक जो ठहरा।" बबूसा की आवाज उभरी।

देवराज चौहान उठा और लाइट जलाकर, सिग्रेट सुलगाई।

"तुम कोई धोखेबाज हो।"

"वो कैसे राजा देव?"

"मैं किसी बबूसा को नहीं जानता।"

"कैसे जान सकते हैं। अभी तो आपको कुछ भी याद नहीं। जब आप

रानी ताशा का चेहरा देखेंगे तो उसके बाद से आपको याद आना शुरू होगा। रानी ताशा पोपा (अंतरिक्ष यान) में बैठकर कभी भी इस ग्रह पर पहुंच सकती है। रानी ताशा आपको वापस ले जाने के लिए यहां आ रही है। लेकिन आपने तब तक वापस नहीं जाना है, जब तक कि आपको, सदूर ग्रह का वो जीवन याद न आ जाए। रानी ताशा ने आपको धोखा दिया था। ये ठीक है कि रानी ताशा पश्चात्ताप की आग में जल रही है, परंतु आपको पूरी जानकारी होनी चाहिए कि उसने आपके साथ क्या किया था। मैं नहीं चाहता कि आप धोखे में रहकर उसके साथ वापस सदूर ग्रह पर चले जाएं और बाद में जब आपको रानी ताशा की उस सच्चाई का पता लगे तो आप परेशान हो जाएं।"

"तुम तो मेरे शुभचिंतक हो।"

"अवश्य राजा देव...मैं आपका खास सेवक हूं।" बबूसा की आवाज आई।

"तुम ही क्यों नहीं बता देते कि रानी ताशा ने मेरे साथ क्या धोखेबाजी की थी?" देवराज चौहान बोला।

"कोई फायदा नहीं होगा राजा देव।"

"क्यों?"

"जिस तरह अब आप मेरी कही बातों पर विश्वास नहीं कर रहे, उसी तरह उस बात का कैसे विश्वास करेंगे। सुनकर आप सिर हिला देंगे और बाद में कहेंगे कि आप मुझ पर भरोसा नहीं करते।"

"तो तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी बातों का भरोसा नहीं करता।"

"पिछली बार जब मैंने आपसे बात की थी तो सब बातें सुनने के बाद आपने ऐसा ही कहा था।"

"अब क्यों मेरे पास आए?"

"ये सोचकर कि शायद मेरे प्रति आपका विचार बदल गया हो।" बबूसा की धीमी आवाज कानों में पड़ रही थी।

"मैं तो तुम्हें भूल भी बैठा था।"

"ये तो गलत बात है राजा देव। मुझे आपकी चिंता है और आप मुझे भूल गए।"

"तुम्हारी बातों पर कोई भी भरोसा नहीं करेगा कि...।"

"महापंडित ने मुझमें इस बार आपका ही रूप डाला है। आपकी ताकत, आपका बल, एक-एक चीज आपकी डालने के बाद ही मेरा जन्म कराया गया। मैं इस बार आप ही का रूप लेकर पैदा हुआ हूं। फर्क सिर्फ इतना है कि आप राजा देव हैं और मैं आपका सेवक बबूसा। ये मेरा ही चेहरा है। मैं आपकी सेवा करना चाहता हूं हमेशा की तरह।"

"तुम्हारा नाम मैंने कभी नहीं सुना। रानी ताशा को नहीं जानता मैं। महापंडित जाने कौन...।"

"आप सदूर ग्रह के राजा देव हैं। आप उस ग्रह के मालिक हैं।"

"ये बकवास है तुम्हारी।"

"ऐसा मत कहिए राजा देव। आप एक बार मुझे सेवा का मौका तो दें।"

"कैसे?"

"मुझे बताइए आप कहां हैं। मैं आपके पास आता हूं और हर बात का आपको यकीन दिलाऊंगा। इस वक्त तो मैं सिर्फ आपकी गंध पहचान कर ही आपसे बात कर पा रहा...।"

"मैं तुम्हें अपने पास नहीं देखना चाहता।"

"ऐसा क्यों राजा देव?"

"क्योंकि तुम जिस जन्म का जिक्र कर रहे हो, वो मेरा पूर्व जन्म नहीं है। अपने पूर्व जन्म को मैं जानता...।"

"पहले बताया तो था मैंने।" बबूसा की आवाज सुनाई दी—"जिन पूर्व जन्मों का आप जिक्र कर रहे हैं, ये जन्म उन पूर्वजन्मों से भी पहले का है। आप यहां के, इस ग्रह के नहीं हैं राजा देव। आप तो सदूर ग्रह के हैं। वहां के मालिक हैं आप और आपने अपने ग्रह के भले के लिए क्या नहीं किया। आपको ग्रह के लोग चाहते थे। आप सबका ध्यान रखते थे। आप नरम दिल भी थे और बेहद कठोर दिल भी, आप...।"

"तुम्हारी बातें मेरी समझ से बाहर हैं।"

"क्योंकि आपको अभी उस जन्म का कुछ भी याद नहीं। रानी ताशा को देखने पर ही, आपको सब कुछ याद आएगा।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"आप मुझे बता क्यों नहीं देते कि आप कहां रहते हैं?"

"मैं तुम्हें जानता नहीं। तुम जाने किस इरादे से मुझे तलाश कर रहे...।"

"मैं आपका सेवक हूं और आपके भले के लिए आपके पास आना चाहता हूं।"

"हो सकता है तुम ठीक कह रहे हो परंतु मैं तुम्हारे बारे में कुछ नहीं जानता। तुम्हारे इरादों का मुझे पता नहीं।"

"सिर्फ ये ही बात है?"

"ये ही बात है।"

"ठीक है। मैं आपको सतर्क कर रहा हूं कि अगर कोई औरत आपके सामने आकर कहे कि वो रानी ताशा है तो उस पर मोहित मत हो जाइएगा राजा देव। वो बहुत खूबसूरत...।"

"ये बात तुम पहले भी बता चुके हो। जवाब में मैंने भी तुम्हें कहा है कि मेरा दिल मेरी पत्नी नगीना के पास है। उसके अलावा मैं किसी औरत को उन निगाहों से नहीं देखता, बेशक कोई भी मेरे सामने...।"

"ये तो अच्छी बात है राजा देव। परंतु मैं आपको सतर्क कर रहा हूं। जो भी खुद को रानी ताशा कहे, उस पर दीवाने मत हो जाइएगा। वो आपके सदूर ग्रह पर आपकी पत्नी रही है और आपको तकलीफदेह धोखा दे चुकी है। वो बेहद खतरनाक है। उसके प्रेमजाल में कभी मत फंसिएगा। वो आपको सदूर ग्रह पर वापस ले जाने के लिए आ रही है। मुझे खुशी होगी कि अगर आप ग्रह पर जाने को तैयार हो जाएं। परंतु मैं चाहता हूं कि आप अपने होशोहवास में ये फैसला लें। तब आपको पता होना चाहिए कि रानी ताशा ने क्यों आपको सदूर ग्रह से बाहर फिंकवा दिया था।"

देवराज चौहान चुप रहा।

"मेरी बात समझ रहे हैं न राजा देव?"

"हां। परंतु मुझे तुम्हारी किसी बात का यकीन नहीं।"

"कोई बात नहीं। मेरी बातों को आप हमेशा याद रखें। आने वाला वक्त आपको यकीन दिला देगा कि आपके सेवक की कही हर बात सच है। मैं सिर्फ आपका भला चाहता हूं। हो सकता है हमारी मुलाकात, रानी ताशा से पहले हो जाए।"

"वो कैसे?"

"मैं आपको तलाश करने की भरपूर चेष्टा कर रहा हूं। इंस्पेक्टर वानखेड़े को जानते हैं आप?"

"वानखेड़े?" देवराज चौहान बुरी तरह चौंका—"तुम उसे कैसे जानते हो?"

"मैं आपको तलाश कर रहा हूं राजा देव। ऐसे में मुझे पता चला कि इंस्पेक्टर वानखेड़े आपके बारे में कुछ बता सकता है तो मैं उससे मिला। उसे ये ही कहा कि मैं आपका रिश्तेदार हूं और आपके बारे में पूछा।"

"फिर—क्या बताया उसने?"

बबूसा की आवाज नहीं आई।

"बबूसा।" देवराज चौहान ने पुकारा।

"हां राजा देव।"

"वानखेड़े ने तुम्हें क्या बताया?"

"राजा देव।" बबूसा का गम्भीर स्वर सुनाई दिया—"आपसे झूठ कहना नहीं चाहता। सच बोलूंगा नहीं।"

"तुम मुझे राजा देव कह रहे हो और मुझे पूछी गई बात का सही जवाब नहीं दे रहे।"

"क्योंकि मुझे आपका सहयोग नहीं मिल रहा।"

"कैसा सहयोग?"

"आप मेरी बातों पर यकीन नहीं कर रहे और उस जगह के बारे में नहीं बता रहे, जहां आप रहते हैं। ऐसे में मैं अपनी खोजबीन के बारे में आपको बताकर सतर्क नहीं करना चाहता।"

"तुम मुझ तक नहीं पहुंच सकते। वानखेड़े के माध्यम से तो बिल्कुल भी मुझे तलाश नहीं कर सकते।"

बबूसा की आवाज नहीं आई।

देवराज चौहान भी कुछ नहीं बोला।

"मैं अब जाऊं राजा देव?"

"हां। तुम जाओ।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"जो मैंने समझाया है, उस बारे में सतर्क रहिएगा राजा देव।"

"रानी ताशा के बारे में कह रहे हो?"

"जी हां। मैं आपको फिर याद दिला देता हूं कि मैं आपका सच्चा सेवक हूं। आपके एक इशारे पर अपनी जान दे सकता हूं और दूसरों की जान ले सकता हूं। मैं फिर आऊंगा राजा देव।"

उसके बाद बबूसा की आवाज नहीं आई।

"बबूसा।" देवराज चौहान ने पुकारा।

परंतु बबूसा की आवाज नहीं आई।

देवराज चौहान समझ गया कि बबूसा जा चुका है।

दूसरे कमरे से टी.वी. की मध्यम-सी आवाजें आ रही थीं। स्पष्ट था कि जगमोहन अभी तक जाग रहा है। देवराज चौहान उठा और दरवाजा खोलकर बाहर निकला। जगमोहन को फिर से बबूसा के इस तरह आने के बारे में और उसकी कही बातें बताना चाहता था। देवराज चौहान के लिए बबूसा पहेली की तरह बन गया था। जिसकी बातें वो सुन तो पा रहा था परंतु समझ में नहीं आ रही थी।

▭ ▭
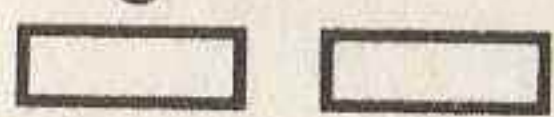
बबूसा ने गहरी सांस ली और आंखें खोल लीं। चेहरे पर गम्भीरता नजर आ रही थी। कुछ पल आंखें खोले वैसे ही बैठा रहा, फिर उठ खड़ा हुआ। अलमारी की तरफ बढ़ा और अलमारी से कमीज पायजामा निकालकर पहना। धरा खाना खा चुकी थी और इस वक्त बेड पर लेटी उसे देख रही थी।

"बात हुई देवराज चौहान से?" धरा ने पूछा।

"हां।" बबूसा ने सिर हिलाया।

"अपना पता बताया?"

"नहीं।" बबूसा आगे बढ़ा और बेड के खाली हिस्से पर आ लेटा।
"क्या कहता है?"
"उसे मेरी बातों पर विश्वास नहीं।"
"विश्वास तो मुझे भी नहीं है।"
"कल सुबह सोहनलाल नाम के उस आदमी के पास जाना है जो देवराज चौहान का पता जानता है।"
"क्या पता वो न जानता हो।" धरा बोली।
"वानखेड़े ने कहा कि सोहनलाल, देवराज चौहान का पता जानता है।" बबूसा ने पुनः कहा।
"कल मैंने चक्रवती साहब से भी मिलना है।"
"मिल लेना, परंतु बाद में। पहले सोहनलाल के पास चलेंगे। उसका पता याद है न?"
"याद है।" धरा ने कहा—"रात को सोते समय मुझे हाथ मत मारना। बाद में कहो कि मैं नींद में था। ऐसा कुछ करने का इरादा रखते हो तो नीचे जाकर सो लो या फिर मैं नीचे...।"
"सो जाओ। मेरा हाथ तुम्हें नहीं लगेगा।" बबूसा ने हाथ बढ़ाकर लाइट ऑफ कर दी।

□ □

बबूसा और धरा सोहनलाल के फ्लैट पर पहंचे। दिन का एक बज रहा था। धरा ने कालॅबेल बजाई। कुछ पलों बाद नानिया ने दरवाजा खोला। दोनों को देखा।
"कहिए?" नानिया कह उठी।
"सोहनलाल जी से मिलना है।" धरा बोली।
"क्यों?"
"कुछ काम है उनसे।"
"वो ही तो पूछ रही हूं कि क्या काम है?" नानिया कह उठी।
"देवराज चौहान के बारे...।"
"ओह, आओ, आओ।" नानिया फौरन पीछे हट गई।
दोनों ने भीतर प्रवेश किया।
नानिया ने दरवाजा बंद किया और ऊंचे स्वर में बोली।
"कोई मिलने आया है आपसे।" फिर उन दोनों से बोली—"बैठिए, खड़े क्यों हैं। मैं पानी लाती हूं।" नानिया चली गई।
धरा और बबूसा सोफे पर जा बैठे।
"ये तो पक्का हो गया कि सोहनलाल, बहुत अच्छी तरह देवराज चौहान को जानता है।" बबूसा बोला।

"कैसे जाना?"

"तुमने देवराज चौहान का जिक्र ही किया कि इस औरत ने फौरन भीतर आने को कहा।"

धरा सिर हिलाकर रह गई।

तभी नानिया पानी ले आई।

"देवराज चौहान भाई साहब कैसे हैं?" नानिया ने पूछा।

"वो-वो-ठीक हैं।" धरा हड़बड़ाकर कह उठी।

नानिया पानी रखकर चली गई।

"ये सोच रही है कि हमें देवराज चौहान ने भेजा है।" धरा ने कहा।

बबूसा खामोश रहा।

तभी सोहनलाल ने भीतर प्रवेश किया। दो अजनबियों को देखकर कुछ ठिठक-सा गया।

"आप...?" पास आता सोहनलाल बोला।

"मैं धरा, ये बबूसा।"

"बबूसा?" सोहनलाल ने बबूसा से हाथ मिलाया—"कुछ हटकर कुछ अजीब-सा नाम है।" सोहनलाल सामने सोफे पर बैठा—"देवराज चौहान ने भेजा है आपको?"

"आपकी पत्नी ने गलत सुना।" बबूसा ने कहा—"हमें देवराज चौहान ने नहीं भेजा।"

"फिर?" सोहनलाल की आंखें कुछ सिकुड़ीं।

"हम देवराज चौहान का पता पूछने आए हैं।" बबूसा बोला।

"देवराज चौहान का पता?" सोहनलाल चौंका।

धरा को लगा बात बिगड़ने जा रही है वो तुरंत कह उठी।

"सोहनलाल जी। हम कुछ काम कराना चाहते हैं देवराज चौहान से।"

"क्या काम?"

"मेरी बहन का आदमी, मेरी बहन को बहुत तंग करता है। एक बार उसकी बढ़िया-सी धुनाई हो जाए तो...।"

"इसके लिए देवराज चौहान की क्या जरूरत है। ये काम तो कोई भी सड़क छाप गुंडा कर सकता है।" सोहनलाल ने कहा।

"ह-हम किसी गुंडे को जानते नहीं, जो ये काम कर...।"

"मैं किसी का नम्बर दे देता हूं, उससे ये काम करवा लो।" सोहनलाल बोला।

धरा ने मुंह लटकाकर बबूसा को देखा।

तभी नानिया वहां आते कह उठी।

"चाय बनाऊं जी?"
"नहीं।" सोहनलाल ने शांत स्वर में कहा।
नानिया चली गई।
"नम्बर नोट कीजिए...।" सोहनलाल ने दोनों को देखा।
"मुझे देवराज चौहान की जरूरत है।" बबूसा का स्वर शांत था।
सोहनलाल व्यंग भरे अंदाज में मुस्कराता कह उठा।
"वो तो मैं पहले ही समझ गया था। कौन हो तुम?"
"बबूसा।"
"बबूसा कौन?"
"तुम मेरे बारे में कुछ नहीं समझ सकते। समझाऊंगा, तब भी नहीं। मैं देवराज चौहान से मिलना चाहता हूं।"
"नहीं मिल सकते।"
"क्यों?"
"कोई खास वजह होनी चाहिए मिलने की, जो मुझे समझ आ सके। किसने बताया कि देवराज चौहान को जानता...।"
"इंस्पेक्टर वानखेड़े ने।"
"वानखेड़े।" सोहनलाल चौंका और सतर्क दिखने लगा—"तुम दोनों को वानखेड़े ने मेरे पास भेजा?"
"उसने तुम्हारा पता बताया था।"
"चले जाओ यहां से।" सोहनलाल खड़ा हो गया—"मैं तुम लोगों से अब कोई बात नहीं करना चाहता।"
धरा फौरन खड़ी हो गई।
परंतु बबूसा बैठा रहा। सोहनलाल को देखता रहा।
एकाएक सोहनलाल को बबूसा खतरनाक लगा।
"बैठ जाओ।" बबूसा बोला।
"तुम चले जाओ...।"
"मैंने कहा बैठ जाओ। मैं इस तरह जाने वाला नहीं। आराम से बैठकर मेरे से बातें करो।"
"मुझसे तुम्हें देवराज चौहान का पता मालूम नहीं...।"
"बैठ जाओ सोहनलाल।"
उलझन में फंसा सोहनलाल बैठ गया।
उसी पल धरा भी बैठ गई। वो कुछ बेचैन दिखी।
"तुम मेरे बारे में जानना चाहते हो?" बबूसा बोला।
"हां।"
"हिमाचल के लाहुल स्पिति इलाके में, बर्फीले पहाड़ों के बीच डोबू

जाति रहती है, मैं वहीं से आया हूं और मेरा सम्बंध एक अन्य ग्रह से है, मैं वहां का रहने वाला हूं।"

"अन्य ग्रह से?" सोहनलाल अजीब-से स्वर में कह उठा।

"हां। मैं तुम्हें पहचान चुका हूं। तुम पूर्वजन्म में देवराज चौहान के साथ थे। गुलचंद नाम होता था तुम्हारा तब।"

"हां।" सोहनलाल हैरान हो उठा।

"तुम देवराज चौहान के खास हो।"

"तो?"

"मैं देवराज चौहान के उस पूर्वजन्म से पहले के जन्म से वास्ता रखता हूं।"

"उससे भी पहले के जन्म से?" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"हां। सदूर नाम के ग्रह से वास्ता है मेरा। कभी देवराज चौहान सदूर ग्रह का राजा होता था। राजा देव कहते थे उसे। मैं बबूसा, राजा देव का बेहद खास सेवक हुआ करता था।" बबूसा गम्भीर स्वर में कह रहा था—"मेरी बात समझ रहे हो न?"

"हां।"

"तब राजा देव की पत्नी रानी ताशा थी। वो सदूर ग्रह की सबसे खूबसूरत औरत मानी जाती थी। राजा देव भी उसकी खूबसूरती के दीवाने थे। राजा देव से उनकी जनता बहुत प्रसन्न रहती थी। राजा देव अपनी जनता का बहुत खयाल रखते थे। फिर एक दिन किले के एक कर्मचारी के चक्कर में पड़कर रानी ताशा ने, राजा देव के साथ मक्कारी की और धोखे से राजा देव को ग्रह के बाहर फिंकवा दिया।"

"ग्रह से बाहर फिंकवा दिया?" सोहनलाल के चेहरे पर हैरानी छाई हुई थी।

"हां। बुरे लोगों को राजा देव ग्रह के बाहर फिंकवा देते थे। इसके लिए उन्होंने एक रास्ता बना रखा था और रानी ताशा ने राजा देव को धोखे से, उसी रास्ते से बाहर गिरा दिया।"

"तुम—तुम्हारा मतलब कि वो राजा देव आज का देवराज चौहान है?" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"हां।"

"ग्रह से बाहर फिंकवा दिया तो फिर देवराज चौहान के साथ क्या हुआ?"

"इस बारे में कोई नहीं जानता।"

"वो दूसरे ग्रह पर, इस दुनिया में कैसे आ गया?"

"इस बारे में राजा देव ही बता सकते हैं।"

"देवराज चौहान को ये सब कुछ याद होगा?"

"नहीं। उन्हें कुछ भी याद नहीं, परंतु रानी ताशा को देखते ही उन्हें सब कुछ याद आने लगेगा। महापंडित ने रानी ताशा के चेहरे पर ऐसी शक्तियां छोड़ रखी हैं कि राजा देव को सब कुछ याद आ जाए।"

"पर रानी ताशा तो अपने ग्रह पर है?"

"हां। परंतु वो जल्दी ही इस ग्रह पर, पोपा में बैठकर आने वाली है।"

"पोपा क्या?"

"तुम लोगों का अंतरिक्ष यान।"

सोहनलाल हैरान-परेशान-सा बबूसा को देखने लगा।

धरा सोहनलाल के मन की दशा समझ रही थी।

"तुमने जो कहा, वो मैं समझा, परंतु ठीक से कुछ भी नहीं समझ पाया। तुम इस धरती पर कैसे आए?"

"राजा देव सदूर ग्रह के सबसे ताकतवर व्यक्ति थे। उनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता था। रानी ताशा बाद में बहुत ज्यादा पछताई कि राजा देव के साथ उसने अपने मतलब की खातिर इतना बुरा सलूक किया। वो राजा देव को फिर से पाने और माफी मांगने के लिए तड़प उठी। तब से रानी ताशा राजा देव को वापस पाने के लिए ताने-बाने बुन रही है। महापंडित ने उसे बता दिया था कि राजा देव दूसरे ग्रह पर जन्म ले रहे हैं और उनसे मुलाकात हो सकती है।"

"महापंडित कौन है?"

"सदूर ग्रह का सबसे विद्वान व्यक्ति। जन्म-मृत्यु उसके हाथ में है।"

"लेकिन ये बात तो बहुत पुरानी है। रानी ताशा जिंदा कैसे हो सकती है?" सोहनलाल बोला।

"महापंडित रानी ताशा को पुनः जीवन देता रहा है। वो तब से किले की रानी ही बनी आ रही है।"

"और तुम, तुम्हारा इस धरती पर आना कैसे हुआ?"

"जैसा कि मैंने तुम्हें बताया कि राजा देव ग्रह के सबसे ताकतवर व्यक्ति थे। वो ही प्रभाव राजा देव के बारे में आज भी ग्रह पर है। रानी ताशा राजा देव को वापस ले जाने के लिए इस ग्रह पर आना चाहती थी। वो राजा देव को समझाकर या जबर्दस्ती, जैसे भी हो, वापस सदूर ग्रह पर ले जाना चाहती है। परंतु राजा देव की ताकत को देखते हुए रानी ताशा ने, महापंडित से कहा कि वो राजा देव की ताकत के बराबर की ताकत के एक व्यक्ति का जन्म कराकर उसे इस धरती पर भेज दे कि वो इस धरती के लोगों में पलकर बड़ा हो और जब वो राजा देव को लेने इस धरती पर आए तो, वो उसकी सहायता

करे। राजा देव पर काबू पाकर, उसे वापस ले जाने में साथ दे। ऐसे में महापंडित ने मेरे से कहा कि वो मेरा जन्म कराकर इस धरती पर भेज देता है। मैं तैयार हो गया। महापंडित ने मेरे शरीर से जान निकाल ली और मेरा जन्म करा दिया तब उसने मेरे में कुछ शक्तियां भी डाल दीं जो इस धरती पर मेरे काम आए। जन्म लेने के महीने भर में ही, जब मैं छोटा-सा बच्चा था, पोपा मुझे डोबू जाति में छोड़ गया। तब मैं वहीं रहा। वहीं पला और...।"

"ये डोबू जाति क्या है?" सोहनलाल ने पूछा।

"इस धरती की पुरानी जाति है। ढाई सौ सालों से हमारा सम्बंध डोबू जाति से है। डोबू जाति वाले हमसे प्रभावित हैं कि हम किसी चीज में बैठकर आसमान से नीचे उतरते हैं। वो पोपा को देवता की तरह मानते हैं और हमारा आदर करते हैं।"

"तो तुम देवराज चौहान को इसलिए ढूंढ़ रहे हो कि रानी ताशा के साथ मिलकर उसे दूसरे ग्रह पर ले जा सको।"

"नहीं। मेरा इरादा ये नहीं है।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"इसी वजह से मैं डोबू जाति से विद्रोह करके, वहां से बाहर आ गया। रानी ताशा धोखेबाज है। उसने राजा देव को जबर्दस्त धोखा दिया था। अब मैं नहीं चाहता कि रानी ताशा जबर्दस्ती या धोखे से राजा देव को वापस ग्रह पर ले जाए। मैं चाहता हूं राजा देव को बीती बातों का और रानी ताशा के बारे में सब ज्ञान हो और वो खुद फैसला लें कि उन्हें क्या करना है। मैं राजा देव को सतर्क करना चाहता हूं परंतु समस्या ये आ रही है कि राजा देव को कुछ भी याद नहीं। उन्हें तब याद आएगा, जब वो रानी ताशा का चेहरा देखेंगे।"

"तो उस वक्त का इंतजार करो जब रानी ताशा आए और देवराज चौहान उसे देखे।"

"ऐसा होने पर एक और खतरा उठ खड़ा होगा।"

"क्या?"

"राजा देव, रानी ताशा की खूबसूरती के दीवाने रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि रानी ताशा को देखते ही राजा देव उस पर बुरी तरह मोहित हो जाएं और उनके सब कुछ जानने से पहले ही रानी ताशा उन्हें सदूर ग्रह पर ले जाए।"

"तुम ऐसा नहीं होने देना चाहते।"

"नहीं। मैं चाहता हूं राजा देव सदूर ग्रह की हर बीती बात से वाकिफ हो जाएं और तब जैसा उनका मन करे, बेशक वैसा करें। मैं उनका खास सेवक रहा सदूर ग्रह पर। मुझे राजा देव की चिंता है कि...।"

बोला—"मैं जरा अपनी पत्नी नानिया से सलाह लेना चाहता हूं। मैं हर काम अपनी पत्नी की सलाह से करता हूं।"

बबूसा ने धरा को देखा।

"ठीक है। तुम अपनी पत्नी से सलाह ले लो।"

सोहनलाल पलटकर फ्लैट के भीतर चला गया।

"ये आसानी से देवराज चौहान का पता बताने वाला नहीं।" धरा धीमे स्वर में बोली।

"मैं खाली हाथ वापस जाने वाला नहीं।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा—"मैं राजा देव का पता मालूम कर लूंगा।"

"कैसे?"

"तुमने पुलिस वालों पर हाथ उठाने को मना किया था। ये पुलिस वाला नहीं है, मैं इसे...।"

"तो तुम इस पर हाथ उठाने की सोच रहे हो। ऐसी गलती मत करना। ये देवराज चौहान का खास साथी है, या फिर दोस्त है। तुमने इसे कुछ किया तो देवराज चौहान को गुस्सा आ जाएगा।"

दस मिनट बीत गए।

पंद्रह मिनट बीत गए।

सोहनलाल नहीं लौटा तो धरा उठते हुए बोली।

"मैं बुलाती हूं उसे।" कहने के साथ ही वो फ्लैट के भीतरी हिस्से की तरफ बढ़ती बोली—"सोहनलाल जी।"

"आ-जा।" भीतर से नानिया की आवाज आई।

धरा आवाज वाले कमरे में पहुंची तो नानिया बेड पर बैठी टिंडे छील रही थी।

"आ बैठ।" नानिया उसे देखते ही बोली—"टिंडे खाकर जाना। मैं बहुत अच्छे बनाती हूं। रोज-रोज भारी सब्जी खाई भी नहीं जाती। सोहनलाल को बहुत पसंद हैं टिंडे।"

"सोहनलाल जी कहां हैं?" धरा नजरें दौड़ाती बोली।

"वो तो गए।"

"गए?" धरा ने नानिया को देखा—"कहां गए?"

"अब आदमी का क्या पता कि वो कहां जाता है। बोला जाना है तो मैंने कहा जाओ। पर जाते-जाते कह गए कि टिंडे रात को खाऊंगा। सोहनलाल का टिंडा प्रेम तो गजब का है।"

"हम वहां बैठे हैं। सोहनलाल जी घर से बाहर नहीं गए। बाहर जाने का दरवाजा उधर से ही है। वो यहीं कहीं छिपे...।"

"पीछे के दरवाजे से गए हैं। नीचे का फ्लैट सोहनलाल ने तभी

तो लिया था कि कभी जाना पड़े तो चुपचाप चला जाए।" नानिया मुस्कराई—"उधर है पीछे का दरवाजा।"

धरा ने उस तरफ जाकर देखा।

पीछे का दरवाजा खुला हुआ था।

वो समझ गई कि सोहनलाल पीछे के दरवाजे से खिसक गया। चेहरे पर गम्भीरता समेटे वो जब भीतर आई नानिया ने मुस्कराकर कहा।

"कह रहा था कोई जरूरी काम याद आ गया है। खैर छोड़ो तुम टिंडे जरूर खाकर जाना और वो जो भाई साहब हैं उन्हें भी टिंडे खाने को कह देना। साथ में ठंडी लस्सी तो और भी अच्छी लगेगी।"

धरा ड्राइंग रूम में पहुंचकर बबूसा से बोली।

"सोहनलाल पीछे के दरवाजे से चला गया है।"

ये सुनते ही बबूसा के चेहरे पर कठोरता के भाव उभरे।

"तुम चिंता मत करो। वो ज्यादा देर घर से बाहर नहीं रह सकता। हम शाम को, रात को फिर आएंगे। उससे जानकर ही रहेंगे कि देवराज चौहान कहां पर रहता है। तब तक मैं चक्रवती साहब से मिल लेती हूं। तुम साथ ही रहोगे न मेरे?"

▭ ▭

धरा कुर्ला के पुरातत्त्व विभाग के अपने ऑफिस में पहुंची जो कि एक पुरानी इमारत में था और काफी बड़ी जगह में था। इमारत के बाद भी आस-पास काफी खाली जगह थी वहां स्टाफ की कारें, मोटरसाइकिलें और स्कूटर वगैरह खड़े थे। बाहर पीली सफेदी पोती हुई थी, जो कि बरसात की वजह से काली पड़ती नजर आ रही थी।

बबूसा धरा के साथ था।

दोनों ऑफिस के भीतरी हिस्से में पहुंचे और राहदारी पार करने के बाद धरा ने एक कमरे के दरवाजे पर लटके पर्दे को हटाया और भीतर प्रवेश कर गई। धरा इस ऑफिस में कई सालों से काम कर रही थी। और लम्बे दिनों के बाद ऑफिस में पांव रखकर इतनी खुश थी कि ये भूल गई कि डोबू जाति के योद्धा उसकी जान लेने की फिराक में हैं।

सामने ही पचपन वर्षीय चक्रवती साहब बैठे थे। धरा को सामने पाकर वो बहुत खुश हुए। आधी बांह की कमीज और काली पैंट में थे। आंखों पर चश्मा था। टेबल पर कुछ फाइलें रखी थीं।

"धरा तुम?" चक्रवती साहब तुरंत उठ गए—"तुम्हें देखकर खुशी हुई।"

"मैं भी आपसे मिलकर बहुत खुश हूं।" धरा की आंखों में आंसू चमक उठे।

चक्रवती साहब के चेहरे पर अफसोस के भाव उभरे।
बबूसा चुपचाप एक तरफ खड़ा हो गया था।
"तुम्हारी मां की मौत का मुझे बहुत दुख है।" चक्रवती साहब ने कहा।
"मेरी मां ही तो थी इस दुनिया में।"
"तुम ठीक कहती हो।" चक्रवती साहब ने दुखी स्वर में कहा—"दिल छोटा मत करो। आज से मुझे अपना पिता मान लो।"
धरा ने आंखों से आंसू साफ किए। बोली।
"मां बुरी मौत मरी न?"
"हां। किसी ने उसका गला काटकर अलग कर दिया था। तुम कहती हो कि डोबू जाति के हत्यारों ने ये काम किया।"
"डोबू जाति वाले उन्हें योद्धा कहते हैं।"
"वो ही...।" तभी चक्रवती साहब का ध्यान बबूसा की तरफ गया—"ये साहब कौन हैं?"
"ये?" धरा ने बबूसा को देखा—"ये मेरे दोस्त हैं।"
"दोस्त? पर तुम्हें तो दोस्त बनाने पसंद नहीं हैं। फिर तुम कल लौटी हो और आज दोस्त भी बना लिया।"
धरा चुप रही।
"खैर, बैठो। आप भी बैठिए।" चक्रवती साहब ने बबूसा से कहा।
धरा और बबूसा कुर्सियों पर बैठ गए।
"कल मां के दाह-संस्कार के वक्त वहां कोई अंजाने-अजनबी लोग भी थे क्या?" धरा ने पूछा।
"मेरे लिए तो सब ही वहां अजनबी थे। मैं किसी को जानता नहीं था।"
धरा ने हाथ में पकड़ा लिफाफा चक्रवती साहब के सामने रखते हुए कहा।
"ये देखिए। डोबू जाति के भीतर की तस्वीरें।"
चक्रवती साहब ने फौरन लिफाफे से तस्वीरें निकालीं और देखने लगे।
बीस मिनट उन्हें तस्वीरें देखने में लग गए। वो ज्यादा थीं।
"शानदार। तुमने अच्छा काम किया।" चक्रवती साहब ने गम्भीर स्वर में कहा—"डोबू जाति वाले तुम्हारे पीछे हैं?"
"हां। उन्होंने ही मां को मारा। वो एकदम गला काट देने की कला को बहुत अच्छी तरह जानते हैं। मैंने जोगाराम का गला कटकर सिर को हवा में उड़ते और गिरते स्पष्ट देखा। तब भी वो घोड़े की सवारी कर रहा था परंतु गर्दन से उसका सिर कट चुका था।" कहते हुए धरा ने झुरझुरी ली—"वो बहुत खतरनाक वक्त था मेरे लिए।"

"मुझे पूरी बात बताओ धरा। सब कुछ सिलसिलेवार। जो तुमने देखा, सुना, महसूस किया। एक मिनट मैं अभी चाय-कॉफी...।"

"किसी भी चीज की इच्छा नहीं है चक्रवती साहब...।"

"लेकिन तुम्हारे दोस्त को...।"

"इसे भी कुछ नहीं...।"

तभी पच्चीस-छब्बीस वर्ष के युवक ने भीतर प्रवेश किया परंतु धरा को देखकर ठिठका।

"आओ प्रकाश।" चक्रवती साहब बोले।

"तुम कब आई धरा?"

"अभी...।"

"मुझे खबर नहीं दी। चक्रवती साहब ने ये जरूर कहा था कि तुम आज आओगी।" प्रकाश ने धीमे स्वर में कहा—"तुम्हारी मां की मौत का मुझे दुख है, परंतु चक्रवती साहब बता रहे थे कि तुम्हारी जान खतरे में है। आखिर क्या बात है।"

"डोबू जाति वाले सामान्य लोग नहीं हैं। वो खतरनाक हैं। वो मेल-जोल पसंद नहीं करते।" धरा ने कहा।

"ऐसा क्या हुआ?"

"तुम भी बैठो प्रकाश।" चक्रवती साहब बोले—"धरा वहां की सारी बातें बताने जा रही है।"

प्रकाश कुर्सी पर बैठा और बबूसा को देखते बोला।

"ये साहब कौन हैं?"

"धरा के दोस्त हैं।" चक्रवती साहब ने कहा।

"धरा के दोस्त?" प्रकाश ने नाराजगी भरी निगाहों से धरा को देखा। "कहो धरा, बताओ सारी बात।"

तब धरा ने टाकलिंग ला से डोबू जाति तक के सफर की सारी बातें बताईं। जो कुछ जोगाराम ने बताया था, वो भी बताया, जो उसने डोबू जाति के लिए, पहाड़ों के भीतर महसूस किया, वो भी कहा। कोई भी बात नहीं छूटी और धरा ने सब बातें बता दीं। बताते हुए कई बार उसने भय से भरी झुरझुरी ली।

आधा घंटा लगा सब कुछ बताने में धरा को।

चक्रवती साहब और प्रकाश गम्भीरता से सब कुछ सुनते रहे।

"तुम्हें इतना बड़ा खतरा अकेले उठाने की क्या जरूरत थी।" प्रकाश बोला—"मुझे बुला लिया होता।"

बबूसा एकदम चुप और शांत बैठा था।

"तब वक्त नहीं था और मेरे मन में था कि पहले मैं जाकर सब देख

लूं। उनसे बात कर लूं। दोस्ती कर लूं। परंतु मैं नहीं जानती थी कि वो लोग कितने खतरनाक हैं। जोगाराम ने मुझे बहुत बार समझाने की चेष्टा की, परंतु मैंने समझा ऐसी बातें कहकर वो मुझे टालना चाहता है, जबकि ऐसा नहीं था। वो हर बात सही कह रहा था तब।"

चक्रवती साहब और प्रकाश के चेहरे पर गम्भीरता नाच रही थी।

"फिर तो तुम डोबू जाति के बारे में काफी ज्यादा जानकारी ले आई जो कि कोई नहीं ला सकता था। इनके बारे में विभाग को सोचना पड़ेगा कि इनसे कैसे बात की जाए। कैसे इन्हें सामान्य जीवन में लाया जा सके।"

"मेरी माने तो ऐसी कोशिश भी मत कीजिएगा चक्रवती साहब।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

चक्रवती साहब ने तस्वीरें प्रकाश की तरफ सरकाईं।

"ये डोबू जाति की तस्वीरें हैं जो धरा लाई है। तुम भी देख लो।"

प्रकाश ने तस्वीरों का ढेर अपनी तरफ सरकाया और देखने लगा।

"डोबू जाति सामान्य लोग नहीं हैं। वो अपने भीतर कई कुछ छिपाए हुए हैं।" धरा ने कहा।

"ये तुम कैसे कह सकती हो?"

"ये मेरा दोस्त जानते हैं कौन है?" धरा ने बबूसा को देखा।

"कौन है?"

"बबूसा।"

"क्या?" चक्रवती साहब की आंखें फैल गईं—"वो ही बबूसा जिसके बारे में तुमने बताया कि ये डोबू जाति से विद्रोह करके वहां से बाहर आ गया। ये वो ही बबूसा है।"

"वो ही है।"

चक्रवती साहब की आंखों में हैरानी उभरी।

प्रकाश तस्वीरें देखना छोड़ के बबूसा को अजीब-सी निगाहों से देखने लगा।

बबूसा शांत बैठा रहा।

"य-ये तुम्हें कहां मिला। ये तो...।"

"कल ही मिला जब मैं स्टेशन से निकली। मेरे पास डोबू जाति का कोई सामान था, जिसकी गंध इसने सूंघ ली और मुझ तक आ पहुंचा। ये भी ये ही कहता है कि डोबू जाति के योद्धा मुझे जिंदा नहीं छोड़ेंगे।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ये हमारी भाषा समझता है?" प्रकाश ने पूछा।

"पूरी तरह। ये कहता है कि मुझे डोबू जाति के योद्धाओं से बचाएगा।"

खामोश बैठा बबूसा शांत स्वर में बोला।
"बचा नहीं सकता। परंतु ज्यादा देर तक बचाए रख सकता हूं।"
"तुम डोबू जाति के बारे में हमें...।" चक्रवती साहब के शब्द अधूरे रह गए।
दरवाजे पर आहट हुई और एक व्यक्ति ने भीतर प्रवेश किया।
उसे देखते ही बबूसा फौरन खड़ा हो गया। होंठ भिंच गए।
वो व्यक्ति गोरे रंग का था और पैंट-कमीज पहने था। चेहरे पर दाढ़ी-मूंछें थीं। उसके पीछे-पीछे तीन अन्य आदमियों ने भीतर प्रवेश किया। उन्हें देखते ही बबूसा की आंखों में खूंखारता के भाव चमक उठे।
चक्रवती साहब, प्रकाश और धरा उन्हें इस तरह भीतर आते पाकर उलझन में पड़े।
"तुम लोग भीतर कैसे आ गए?" चक्रवती साहब के होंठों से निकला।
वो चारों बबूसा को देख रहे थे।
धरा ने फौरन बबूसा को देखा तो धरा सतर्क हो गई। गड़बड़ लगी उसे।
"तुम ठीक नहीं कर रहे बबूसा।" पहले वाले आदमी ने कठोर स्वर में कहा।
"तो अब तुम मुझे समझाओगे कि क्या ठीक है या क्या गलत।"
"अपने लोगों से विद्रोह करके, वहां से चले आना। उसके बाद जाति के दुश्मन का साथ देना।"
"दुश्मन कौन?"
"ये लड़की।" उसने धरा को देखा।
धरा तुरंत उठकर बबूसा के पास आ गई। वो समझ गई कि ये डोबू जाति के योद्धा हैं जो यहां आ पहुंचे हैं। उसके चेहरे पर घबराहट नाच उठी। चक्रवती साहब और प्रकाश उलझन में थे।
"क्या किया है इस लड़की ने?" बबूसा ने कठोर स्वर में पूछा।
"ये पूरे चांद की रात हमारी जगह पर आ गई और...।"
"तो तुम लोगों ने इसकी मां को मार दिया।"
"तुम तो अच्छी तरह हमारी कार्यप्रणाली जानते हो। तुम्हें वापस आ जाना चाहिए।"
"जानते हो मैं क्यों विद्रोह करके आया?"
"ये बात हमें नहीं मालूम।"
अब बबूसा पहनी कमीज के बटन खोलने लगा था।
"जब सही बात तुम्हें नहीं मालूम तो मुझे वापस आने को क्यों कहते हो?"

"ठीक है। तुम्हारा काम तुम जानो। बेहतर होगा कि इस लड़की से दूर हट जाओ।"

"मैंने इसे बचाने की जिम्मेवारी ली है।" बबूसा ने सख्त स्वर में कहा।

"ये गलत बात है। तुम अपनी ही जाति से टकराना चाहते हो। जानते भी हो कि हम काम पूरा करके रहते हैं।"

बबूसा ने कमीज उतारी और एक तरफ गिरा दी।

अब वो ब्राउन कलर की, पतले से लैदर की, शरीर से चिपकी आधी बांह की बिना कॉलर की ऐसी बनियान पहने था कि उसके ऊपर कमीज पहन ली जाए तो, नीचे बनियान का आभास ही नहीं होता था। परंतु उस बनियान का नजारा देखने वाला था। उसके सामने वाले हिस्से में नन्ही-नन्ही लुप्पियां लगी थीं, जिनमें मात्र डेढ़-डेढ़ इंच लम्बे असंख्य चाकू फंसे हुए थे जो कि पलक झपकते ही निकाले जा सकते थे।

"तो तुम हमारा मुकाबला करोगे।" वो व्यक्ति कठोर स्वर में कह उठा।

"अच्छी तरह जानते हो कि तुम लोग मेरा मुकाबला नहीं कर सकते।" बबूसा खतरनाक स्वर में बोला—"मुझसे मत टकराओ और चले जाओ यहां से। इस लड़की को बचाना मेरा काम है।"

"तुम भी अच्छी तरह जानते हो कि काम पूरा किए बिना हम वापस नहीं लौटते। कितनों का मुकाबला करोगे तुम। जल्द ही थक जाओगे।" कहने के साथ ही उसने कमीज के भीतर हाथ डाला और छुरा निकाल लिया। ज्यादा लम्बा और ज्यादा चौड़ा छुरे जैसा वो खतरनाक हथियार था।

धरा के होंठों से दबी-सी चीख निकली। वो बबूसा की ओट में हो गई डर के।

इसके साथ ही बाकी तीनों ने अपने कपड़ों के भीतर से हथियार निकाले। एक के हाथ में टेढ़ा-सा खंजर था तो बाकी दोनों के हाथों में चौकोर-सी कुछ भारी लोहे की पत्ती जैसा हथियार था। उसे जब उंगलियों में फंसाकर तीव्र झटके के साथ फेंका जाता निशाना लेकर तो दो पलों में ही सामने वाले की गर्दन कटकर अलग हो जाती थी और ये दूर तक मारक हथियार था। फेंको तो दूर मौजूद इंसान की गर्दन काटकर भी अलग कर देता था।

बबूसा की नजरें एक साथ इन चारों पर थीं।

"हमें सिर्फ इस लड़की को मारना है बबूसा। तुम बीच में से हट जाओ।" वो बोला।

"नहीं।"

"अगर तुमने हमें नुकसान पहुंचाया तो सारी डोबू जाति तुम्हारी दुश्मन बन जाएगी।"

"मैं किसी से डरता नहीं हूं।"

तभी उन दोनों ने हाथों में थमी लोहे की चौकोर पत्ती को, उंगलियों को झटका देकर फेंका।

अगले ही पल चक्रवती साहब और प्रकाश की गर्दनें कटती चली गईं।

ये देखकर धरा के होंठों से चीख निकल गई।

परंतु उसी पल पलक झपकते ही बबूसा के हाथ तेजी से चले और दोनों हाथ एक साथ हरकत में आए थे पहली बार में दो छोटे चाकू हाथों में चमके और उन लोहे के पत्ती जैसे हथियार फेंकने वालों की छाती में जा धंसे। इससे पहले कि कोई कुछ समझता, दो नन्हे चाकू और चले और अन्य दोनों की छाती में जा लगे। उन्हें कोई वार करने का भी मौका नहीं मिला। चंद सेकंडों में वो नीचे गिरे और शांत पड़ गए।

धरा फटी-फटी आंखों से ये सब देख रही थी।

बबूसा ने कमीज दोबारा पहनी।

वहां का दृश्य भयानक हो रहा था। चक्रवती साहब और प्रकाश के गले कटे सिर, लुढ़ककर फर्श पर गिर पड़े थे। चक्रवती साहब का शरीर टेबल पर पड़ा था। वो कुर्सी पर बैठे थे जबकि प्रकाश का शरीर कुर्सी से नीचे गिर चुका था। उन चारों की लाशें भी वहीं मौजूद थीं।

"चलो।" बबूसा सतर्क स्वर में बोला—"बाहर और लोग भी हो सकते हैं।"

धरा के होश गुम थे।

"सुन रही हो तुम...।" बबूसा ने धरा की बांह पकड़कर हिलाया।

धरा होश में आते ही डरे स्वर में कह उठी।

"उन्होंने चक्रवती साहब को और प्रकाश को...।"

"तुम जिंदा हो, ये क्या कम है।" बबूसा ने धरा की बांह पकड़ी और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

धरा फर्श पर बिखरे खून से खुद को बचाती आगे बढ़ी। उसका दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा था। चक्रवती साहब और प्रकाश की लाशों और कटे सिर वाली लाशों ने उसकी हालत खराब कर दी थी।

"तुम्हारे जरा-जरा से चाकू हैं और लगते ही वो मर गए।" धरा के होंठों से कांपता-सा स्वर निकला।

"उन पर खतरनाक तेज जहर लगा था। वो चाकू से नहीं, चाकू पर लगे जहर से मरे हैं।" बबूसा बोला।

"ओह।"

दोनों कमरे से बाहर निकलकर गैलरी में आगे बढ़े जा रहे थे। आस-पास से और भी लोग आ-जा रहे थे। एक तरफ ऑफिसों के कमरे थे। बबूसा ने धरा की बांह पकड़ी हुई थी। बबूसा की पैनी निगाह हर तरफ जा रही थी। खतरे का एहसास उसे आसपास पूरी तरह हो रहा था। वो जानता था कि इस तरह डोबू जाति के लोगों को मार देने का मतलब था, डोबू जाति को अपना दुश्मन बना लेना। परंतु वो किसी से नहीं डरता था। उसे पूरा विश्वास था कि डोबू जाति उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। लेकिन धरा को बचाए रखने की उसे चिंता थी। धरा ही थी कि जिसके साथ रहकर वो राजा देव को ठीक से तलाश कर सकता था। धरा का चेहरा फक्क-सा था। वो डरी-सहमी सी थी। चक्रवती साहब और प्रकाश की सिर कटी लाशें उसकी आंखों के सामने घूम रही थीं। कैसे, देखते ही देखते गर्दन से उनके सिर कटकर नीचे जा गिरे थे। ऐसे ही तो जोगाराम का सिर कटा था, परंतु अब उसने ये सब होता अपनी आंखों से देखा था। अपनी मां की याद आई कि इन लोगों ने उसकी गर्दन भी इसी तरह काटी होगी। कैसा दहशत भरा नजारा है ये सब होते देखना।

"मेरी बांह छोड़ो।" साथ में तेज-तेज चलते धरा ने कहा।

"चुप रहो अभी खतरा आस-पास ही है।" बबूसा ने भिंचे स्वर में कहा।

"तुमने सबको मार दिया है फिर खतरा कैसा...?"

"बाकी के लोग आस-पास ही हैं। ये लोग कभी भी कम संख्या में हमला नहीं करते। इनका मकसद होता है अपने काम में सफलता पाना। इसलिए कई लोग आते हैं ये शिकार करने, कुछ शिकार करते हैं बाकी आस-पास फैल जाते हैं कि पहले गए लोगों को सफलता न मिले तो वो आगे आकर काम पूरा कर सकें। ऐसे में वो हर तरफ नजर रखते...।"

"तुम्हारा मतलब कि वो पास में ही हैं।" धरा आतंकित हो उठी।

"हां।"

"वो मुझे मार देंगे।"

"चुप रहो। शांत रहो। मैं तुम्हें बचा रहा हूं। मुझे अपना काम करने दो। मुझे बातों में मत लगाओ।" बबूसा का स्वर बेहद कठोर था।

धरा का चेहरा पीला पड़ चुका था।

"वो खतरनाक हैं। मुझे मार देंगे।" धरा ने कांपते स्वर में कहा।

"चुप रहो।"

बबूसा, धरा की बांह पकड़े उस इमारत से बाहर निकला और बाहरी गेट की तरफ बढ़ने लगा। उसकी खतरनाक पैनी निगाह हर तरफ घूम रही थी। इस वक्त वो बाज से भी ज्यादा घातक दिख रहा था।

एकाएक बबूसा ठिठक गया।

सामने गेट के पास ही, एक आदमी मौजूद था और आंखें सिकोड़े उसे देख रहा था।

उसे देखते ही बबूसा की आंखों में वहशी भाव दिखने लगा। वो पुनः आगे बढ़ा।

उस व्यक्ति ने धरा के चेहरे पर भी निगाह मारी।

आसपास से और लोग भी आ-जा रहे थे।

बबूसा, धरा का हाथ पकड़े उस व्यक्ति के पास जा पहुंचा।

"तुम्हें देखकर खुशी हुई बबूसा।" उस व्यक्ति ने गम्भीर स्वर में कहा।

बबूसा के होंठों से गुर्राहट निकली।

उस व्यक्ति ने धरा को देखा और बबूसा से कहा।

"क्या तुम इस लड़की को मेरे हवाले करने जा रहे हो?"

तभी बबूसा का बायां हाथ उसकी तरफ तेजी से बढ़ा और पंजा फैलकर उसकी गर्दन पर जा पड़ा। वो छटपटाया। उसने बबूसा का पंजा अपनी गर्दन से आजाद करने के लिए अपने दोनों हाथों का सहारा लिया।

ये देखकर धरा की आंखें फैल गई थीं।

तभी उसकी गर्दन पकड़े, बबूसा के हाथ ने तीव्रता से दाईं तरफ झटका दिया।

'कड़ाक।'

हड्डी टूटने की आवाज आई। बबूसा ने हाथ हटाया तो वो कटे पेड़ की तरह नीचे जा गिरा।

धरा के होंठों से चीख निकल गई।

आस-पास जाते लोगों ने ये सब देखा तो डर के मारे, दूर हटने लगे।

बबूसा चेहरे पर दरिंदगी समेटे चारदीवारी के गेट से बाहर निकलता चला गया, परंतु अगले ही पल उसने धरा का हाथ छोड़ा और उसकी टांगों पर टांग मारकर धरा को नीचे गिरा दिया। हक्की-बक्की-सी धरा चीख भी नहीं सकी और नीचे गिरते उसने इतना ही देखा कि सामने से कोई छोटी-सी चीज उड़ती हुई उसकी तरफ आ रही है। उसे समझते देर न लगी कि वो, वो ही पत्ती जैसा हथियार है जो पलक झपकते ही गर्दन काट देता है।

उस हथियार को धरा ने अपने ऊपर से जाते देखा।

ये सब दो सेकंडों में ही हो गया।

तभी धरा ने बबूसा के हाथ में वो ही नन्हा चाकू देखा जो कि उसके हाथ की उंगलियों से निकल चुका था। तुरंत बाद ही कमीज के भीतर हाथ डाल उसे दो चाकू बाहर निकालते देखे और एक ही हाथ से दो

अलग-अलग दिशाओं में उसे फेंकते देखा। तीन सेकंडों में धरा ने ये सब देखा।

वो पस्त-सी नीचे गिरी पड़ी थी कि बबूसा ने आस-पास देखते हुए सतर्क अंदाज में हाथ बढ़ाकर धरा को बांह से पकड़ा और खड़ा किया। धरा की टांगें कांप रही थीं।

वहां नजर आते लोग भय से पीछे हटने लगे थे।

धरा ने तीन व्यक्तियों को नीचे गिरे, शांत पड़े देखा। वो मर चुके थे।

बबूसा धरा की बांह पकड़े एक तरफ बढ़ा कि उसी पल रुक गया। एक आदमी पर उसकी निगाह टिक गई। वो उसे ही गम्भीर निगाहों से देख रहा था।

बबूसा, धरा की बांह पकड़े उसके पास पहुंचा।

"बबूसा।" वो गम्भीर अंदाज में मुस्कराया।

"कह सोलाम।" बबूसा गुर्राया।

"मुझे नहीं पता था कि तुम इस लड़की के साथ हो।"

"इस लड़की का पीछा छोड़ दो।"

"ये हमारी शिकार है और हम अपने शिकार को कभी नहीं छोड़ते। ये बात तुमसे बेहतर और कौन जान सकता है।" सोलाम बोला।

"तो तुम मेरा मुकाबला करोगे?"

"तुम्हारा मुकाबला करने की मैं कैसे सोच सकता हूं। मैं तुम्हें रोकूंगा नहीं। मेरे पास सरदार ओमारू की तरफ से इस बात की इजाजत नहीं है कि तुम्हारा मुकाबला किया जाए।"

"तो इजाजत ले लो ओमारू से।"

"अवश्य इजाजत लूंगा और वो हां भी कह देगा, क्योंकि तुम हमारे शिकार की हिफाजत करके, हमारे खिलाफ खड़े हो चुके हो।"

"पीछे से वार मत करना सोलाम।" बबूसा गुर्राया।

"कभी नहीं। तुम इस लड़की को ले जा सकते हो।"

बबूसा, धरा का हाथ पकड़े आगे बढ़ गया। पास ही एक कार खड़ी थी और भीतर बैठा आदमी ये सारा मामला समझने की कोशिश कर रहा था।

"तुम कार चलाना जानती हो?" बबूसा ने कठोर स्वर में पूछा।

"ह-हां।"

बबूसा ने कार की स्टेयरिंग सीट पर बैठे आदमी को बाहर निकाला और धरा को वहां बैठने का इशारा करते हुए, दूसरी तरफ से बगल वाली सीट पर, भीतर आ बैठा। घबराई-सी धरा ने कार आगे बढ़ा दी।

बबूसा का चेहरा कठोर हुआ पड़ा था।

"त-तुम बहुत खतरनाक हो।"

"मैं खतरनाक न होता तो तुम्हारी जान नहीं बचती।" बबूसा गुर्राया।

"ये युद्ध कला तुमने डोबू जाति से सीखी?"

"मेरा जन्म कराते समय महापंडित ने युद्ध की हर वो कला मेरे भीतर डाल दी थी, जो राजा देव जानते थे। मैं बबूसा जरूर हूं परंतु मेरे भीतर सब कुछ राजा देव का है। मेरा जन्म ही इसलिए कराया गया कि जब रानी ताशा, राजा देव को इस ग्रह से अपने सदूर ग्रह पर ले जाना चाहे तो उस वक्त मैं राजा देव पर काबू पा सकूं।"

"परंतु तुम अब ऐसा करने से इंकार कर रहे हो।" धरा अभी तक घबराई हुई थी।

"हां, मैं राजा देव का सेवक हूं। उनके खिलाफ नहीं चल सकता। जो करूंगा राजा देव के भले के लिए करूंगा।"

"मैं कैसे अजीब-से हालातों में फंस गई हूं। मां मारी गई। चक्रवती साहब और प्रकाश मारे गए। ओफ्फ ये सब क्या हो रहा है, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा...।"

"अपनी जान की फिक्र करो।" बबूसा के होंठ भिंचे हुए थे।

"तुमने मुझे बचा लिया।"

बबूसा चुप रहा।

"आगे भी मुझे इसी तरह बचा लोगे न?"

"कोशिश करूंगा।"

"मैं मरना नहीं चाहती बबूसा।"

बबूसा ने धरा को देखा और कह उठा।

"तुम्हारे मुंह से अपना नाम सुनकर अच्छा लगा।"

"मुझे बचाने की बात करो। वो फिर आएंगे मुझे मारने।"

"जरूर आएंगे। इस बार ज्यादा तैयारी करके आएंगे और मुझे भी खत्म कर देना चाहेंगे।"

"त-तो क्या होगा?"

"पर वो मेरा मुकाबला नहीं कर सकते। लेकिन वो काफी सारे होंगे। कुछ पता नहीं तब क्या होगा।"

"तो क्या वो मुझे मार देंगे।"

"घबराओ मत। मैं नहीं चाहूंगा कि तुम्हारी जान जाए। क्योंकि तुम राजा देव की तलाश में मेरी सहायता कर रही हो।"

"फिर मुझे मरने मत देना।"

बबूसा ने धरा को देखा और मुस्कराकर बोला।

"फिक्र मत करो। पहले मेरी जान जाएगी। उसके बाद तुम्हारी जाएगी। मैं तुम्हें जरूर बचा के रखूंगा।"

"बस ये ही बात?"

"क्या मतलब?"

"मेरा मतलब तुम सिर्फ अपने मतलब की खातिर मुझे बचा रहे हो या कोई और बात भी है।"

"और क्या बात होगी?"

"कुछ नहीं, मैंने यूं ही पूछा। तुम मुझे बचा लो, इतना ही काफी है मेरे लिए। अब जाना कहां है?"

"सोहनलाल के घर चलो। वो...।"

"अभी उसके पास जाना ठीक नहीं होगा। उसके पास रात को चलें तो ठीक होगा। क्या पता वो घर पर भी न हो अभी।"

"तो होटल चलो। मैं अब आने वाले खतरे के बारे में सोचना चाहता हूं।"

"ये कार हमें छोड़ देनी चाहिए। ये हमारी नहीं है। टैक्सी ले लेते हैं।" धरा ने कहा।

"जैसा तुम ठीक समझो। इस ग्रह का सिस्टम मैं अभी ठीक से जानता नहीं।"

▭ ▭

ओमारू पहाड़ के भीतर उसी मूर्ति वाले हॉल में, चबूतरे के पास बैठा दो लोगों से बात कर रहा था कि एक आदमी उसके पास आता कह उठा।

"ओमारू। हमारा एक योद्धा, युद्ध कला सीखते हुए अभी-अभी जान गंवा बैठा।"

"बुरा हुआ।" ओमारू ने अफसोस भरे स्वर में कहा—"पर ये कैसे हो गया?"

"हथियार लिए दूसरे योद्धा से मुकाबला कर रहा था और फुर्ती से खुद को बचा न सका।"

"इससे दूसरों को सबक जरूर मिलेगा कि मौत के इस खेल में फुर्ती जरूरी है। बोबला से कहो उसे बाहर दफन कर दे।"

वो चला गया कि उसी समय सामने से होम्बी आती दिखी।

ओमारू फौरन खड़ा हो गया।

सात फुट लम्बी होम्बी ने कंघा पकड़ रखा था और काले बाल आगे को किए उस पर कंघा कर रही थी। चेहरे पर झुर्रियों भरी लकीरें झूल रही थीं। ओमारू तुरंत उसके पास पहुंचकर बोला।

"कहो जादूगरनी?"

"सोलाम तेरे से बात करने वाला है।" होम्बी ने कहा।

"सोलाम? ओह उसने लड़की को जरूर खत्म कर दिया होगा। मुझे बताना चाहता होगा।"

होम्बी के चेहरे पर न समझ में आने वाली मुस्कान उभरी।

"मुझे उस कमरे में जाना चाहिए।" कहने के साथ ही ओमारू आगे बढ़ गया।

ओमारू पास ही मौजूद उस कमरे में पहुंचा, जहां दीवार पर दो स्क्रीनें लगी हुई थीं। एक स्क्रीन रोशन थी और उस पर झिलमिलाहट नजर आ रही थी। तीन आदमी बोर्ड पर लगे स्विचों पर व्यस्त थे।

"सोलाम ने हमसे सम्पर्क बनाया?" ओमारू ने पूछा।

"नहीं।" एक ने कहा।

"जादूगरनी कहती है कि वो सम्पर्क बनाने वाला है।" ओमारू बोला।

"तो सम्पर्क बनते ही पता चल जाएगा।"

"रानी ताशा की तरफ से कोई संदेश आया?" ओमारू ने पूछा।

"नहीं। हम वो ही चैक कर रहे हैं। बीस दिन से अभी तक उन्होंने हमसे बात नहीं की।"

"रानी ताशा व्यस्त होगी। तभी हमसे बात नहीं कर...।"

उसी वक्त एक तरफ लगा छोटा-सा बल्ब जलने-बुझने लगा।

"किसी ने हमसे सम्पर्क बनाया है।" वो आदमी बल्ब की तरफ बढ़ता बोला।

"सोलाम होगा।" ओमारू बोला।

उस आदमी ने बल्ब के पास लगे स्विच को दबाया और नीचे रखा, तारों से जुड़ा हैडफोन जैसी चीज उठाकर सिर पर रख ली तो उधर से सोलाम की आवाज कानों में पड़ी।

"हैलो—हैलो।"

"कौन हो तुम?" उस व्यक्ति ने पूछा, हैडफोन लगाए।

"मैं सोलाम हूं। ओमारू से बात कराओ।"

"बात करो। ओमारू यहीं पर है।" कहने के साथ ही उसने हैडफोन उतारकर ओमारू की तरफ बढ़ाया—"सोलाम है।"

ओमारू ने फौरन हैडफोन लगाकर बात की।

"कहो सोलाम? लड़की को मार दिया क्या?" ओमारू ने कहा।

"बबूसा ने बहुत समस्या पैदा कर दी है। उसने हमारे कई योद्धा मार दिए...।"

"ये कैसे हो सकता है।"

"बबूसा उस लड़की को अपने साथ रखे हुए, उसे हमसे बचा रहा है।" सोलाम की आवाज आई।

"बचा रहा है?" ओमारू के माथे पर बल पड़े—"लड़की का बबूसा से क्या रिश्ता?"

"ये मैं नहीं जानता। परंतु लड़की को बबूसा का संरक्षण मिला हुआ है। वो हमारे उन लोगों को मार रहा है जो लड़की को मार देना चाहते हैं। बबूसा हमारे खिलाफ उठ खड़ा हुआ है।"

"ये असम्भव है सोलाम। बबूसा ऐसा नहीं कर सकता।" ओमारू परेशान-सा कह उठा।

"वो ऐसा ही कर रहा है।"

"तुम्हारी बबूसा से बात हुई?"

"थोड़ी-सी। वो लड़की को बचाए रखने को कहता है।"

"ये तो गलत कर रहा है बबूसा। सीधा-सीधा हमारे खिलाफ मैदान में उतर रहा है। वो पागल तो नहीं हो गया?"

"वो पूरे होश में था और ठीक था। उसने मुझे भी चेतावनी दी।"

"ओह।" ओमारू का चेहरा कठोर हो गया—"तो लड़की के साथ बबूसा को भी खत्म कर दो।"

"ऐसा किया तो सदूर ग्रह वाले नाराज हो सकते हैं। बबूसा उन्हें प्यारा है।"

"लेकिन बबूसा हमारे नियमों के खिलाफ चल रहा है। उसे लड़की को नहीं बचाना चाहिए।"

"उसने हमारे आदमी भी मारे।" उधर से सोलाम की आवाज आई।

ओमारू के होंठों से गुर्राहट निकली।

"मुझे बताओ ओमारू अब हम क्या करें?" सोलाम की आवाज आई।

"बबूसा कहां है?"

"उसे हम ढूंढ लेंगे। तुम मुझे हुक्म दो कि अब हम क्या करें?"

"मैं तुमसे कुछ देर बाद बात करता हूं। जादूगरनी से सलाह लेनी पड़ेगी।"

"एक घंटे बाद दोबारा सम्बंध बनाऊं?"

"हां।" ओमारू ने कहा और सिर से हैडफोन जैसा यंत्र उतारकर रखा और बाहर निकल गया।

होम्बी मूर्ति वाले चबूतरे पर बैठी थी। अभी भी सिर के बाल आगे की तरफ करके कंघी फेर रही थी। उसकी निगाह इधर-उधर जाते कामों में व्यस्त अन्य लोगों पर फिर रही थी कि नजर ओमारू पर टिक गई, जो कि उसकी तरफ आ रहा था। होम्बी के चेहरे पर व्यंग भरी मुस्कान नाच उठी। मूर्ति वाले चबूतरे पर सिर्फ होम्बी ही बैठ सकती थी। कोई और वहां नहीं बैठ सकता था। ओमारू भी नहीं। होम्बी को डोबू जाति में विशेष दर्जा प्राप्त था।

"जादूगरनी मैं कुछ परेशान हो रहा हूं।" पास पहुंचकर ओमारू ने सख्त स्वर में कहा।

"पता है मुझे।"

"पता है—क्या पता है?"

"वो लड़की तेरे लिए मुसीबतें खड़ी कर रही है। मैंने तो पहले ही कह दिया था कि ऐसा होगा। वो ही हो रहा है। तूने मेरी बात सुनकर भी कोई इंतजाम नहीं किया था पूरे चांद की रात। ये तेरी गलती थी। मैंने तो पहले ही कह दिया था कि पूरे चांद की रात कोई मुसीबत आने वाली है। तू मेरी बात सुनकर सतर्क रहता तो आज सब ठीक होता।"

"तुम सही कहती हो, ये गलती जरूर मेरे से हुई।"

"तो अब भुगत भी...।"

"बबूसा उस लड़की को मुम्बई में बचा रहा है। उसने हमारे कई योद्धा मार डाले हैं।"

होम्बी मुस्कराई। नजरें ओमारू पर थीं।

"मैंने तुझे ये भी कहा था कि बबूसा को यहां से मत जाने देना।"

"पर बबूसा को रोक पाना आसान नहीं था।" ओमारू गुस्से से बोला।

"तू सरदार है यहां का। तेरे लिए क्या कठिन है।" होम्बी मुस्कराई।

"मैंने तब बबूसा पर ज्यादा सख्ती इसलिए नहीं की कि सदूर ग्रह वाले नाराज न हो जाएं।"

"तो बबूसा की शिकायत सदूर ग्रह वालों से कर।"

"मुझे सलाह दो जादूगरनी।"

"बोल।"

"सोलाम पूछता है कि अब वो क्या करे? बबूसा लड़की को बचाता जा रहा है। वो हमारे रास्ते में आ रहा है। उसने हमारे कई योद्धाओं को मार दिया है। मैं चाहता हूं कि बबूसा को मारने का आदेश दे दूं।" ओमारू बोला।

"दे दे।"

"परंतु सदूर ग्रह वाले बबूसा को चाहते हैं। बबूसा मर गया तो वो हमसे नाराज हो सकते हैं। जब भी वो पोपा पर आते हैं तो हमें ढेर सारी काम की चीजें देते हैं। हमारे आदमी मुम्बई से हमसे फौरन बात कर लेते हैं तो ये यंत्र भी हमें सदूर ग्रह वालों ने ही दिए हैं। उन यंत्रों को चलाने के लिए हमें बिजली देते हैं। वो हमारे दोस्त हैं जादूगरनी।"

"तो तू क्या चाहता है सरदार?"

"मैं अब क्या करूं?"

"तेरे को सदूर ग्रह के लोग प्यारे हैं या अपनी जाति और जाति के नियम?"

"अपनी जाति से प्यार है जादूगरनी।"

"तो सोलाम से कह दे कि बबूसा को भी मार दे।" जादूगरनी मुस्कराई।

"बबूसा मरा तो सदूर ग्रह वाले हमसे नाराज...।"

"वो नाराज नहीं होंगे।" होम्बी हंस पड़ी—"बबूसा मरेगा तो वो नाराज होंगे, परंतु मैं देख रही हूं वो नहीं मरेगा।"

"नहीं मरेगा?" ओमारू के दांत भिंच गए—"ये कैसे हो सकता है, हमारे कितने ज्यादा योद्धा वहां पहुंच चुके हैं। किस-किस से बचेगा बबूसा। कोई-न-कोई वार तो उस पर सफल होगा ही।"

होम्बी ने आंखें बंद कर लीं।

ओमारू की निगाह होम्बी के झुर्रियों वाले चेहरे पर टिकी रही।

मिनट भर बाद होम्बी ने आंखें खोली और कहा।

"सोलाम से कह दे कि बबूसा को कैद करने की कोशिश करें, ऐसा न हो सके तो उसे मार दें।"

"हम लोग बबूसा को मारने में सफल हो जाएंगे न?"

"नहीं।" होम्बी ने गम्भीर निगाहों से ओमारू को देखकर कहा—"बबूसा का बाल भी बांका नहीं होगा। मैं जिस तूफान को उठते हुए देख रही हूं तू अभी तक उस तूफान की हवा को भी महसूस नहीं कर पाया। बबूसा राजा देव को तलाश कर रहा है और तूफान तब उठेगा जब राजा देव उसके सामने होगा। मैं रानी ताशा का भी आभास पा रही हूं। वो आने वाली है यहां और उसके साथ एक बेहद खतरनाक इंसान होगा, जिसे कोई भी संभाल नहीं पाएगा। शायद उसी से बबूसा परास्त हो सकेगा। परंतु अभी ज्यादा स्पष्ट नहीं देख पा रही हूं भविष्य में। लेकिन जो कहा है वो पूरी तरह सही है, ज्यों-ज्यों वक्त करीब आता जाएगा, मेरे लिए भविष्य में देखना स्पष्ट हो जाएगा। राजा देव जो भी है वो अपने आप में खतरनाक इंसान है। जब वो बबूसा से मिलेगा तो उसके बाद खतरनाक वक्त शुरू हो जाएगा।"

ओमारू होम्बी को देखे जा रहा था।

"तू आजाद है। सोलाम को जो भी आदेश दे। परंतु कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

"मैं सोलाम को बबूसा को मारने का आदेश दूंगा।"

"दे दे।"

"और उस लड़की का अंत कब तक होगा?"

"ये सवाल मेरे से क्यों पूछता है।" होम्बी मुस्कराई—"क्या तेरे को अपने योद्धाओं पर भरोसा नहीं रहा?"

"पूरा भरोसा है।"

"तो सब कुछ मेरे से मत पूछ। जा...।"

ओमारू खड़ा रहा।

"अब क्या है?"

"जादूगरनी मेरे दिमाग में एक बात आई है। सलाह दे मुझे।" ओमारू बोला।

"कह...।"

"बबूसा, राजा देव को ढूंढ़ रहा है। तो क्यों न हम राजा देव को उठाकर यहां ले आएं।"

"उससे क्या होगा?"

"राजा देव के यहां होने की खबर पाकर, बबूसा यहां आएगा तो हम बबूसा को पकड़कर तब तक के लिए कैद कर लेंगे जब तक रानी ताशा पोपा में बैठकर इधर नहीं आ जाती। इस तरह हम बबूसा की तरफ से खड़ी होने वाली परेशानियों से बच सकते हैं। इस तरह बबूसा भी जिंदा रहेगा और...।"

"सरदार।" होम्बी बोली—"राजा देव, बबूसा से भी खतरनाक है। उसे पकड़ना तो दूर तुम लोग उस तक पहुंच भी नहीं पाओगे। अगर राजा देव को पकड़कर यहां ले आए तो ये जगह नष्ट हो जाएगी।"

"नष्ट हो जाएगी—वो कैसे?"

"राजा देव के खास साथी हैं वो पीछे-पीछे यहां आएंगे और उनके पास हमारा मुकाबला करने को अजीब-अजीब से खतरनाक हथियार होंगे। वो हमारे इन खोखले पहाड़ों को भी तबाह-बर्बाद कर देंगे। ऐसा वो इसलिए करेंगे कि वो राजा देव के सच्चे साथी हैं। राजा देव को छुड़ाकर ले जाएंगे। इस काम में बबूसा उनकी सहायता करेगा। इसलिए व्यर्थ की सोच मन में मत लाओ। राजा देव यहां से जितना दूर रहे, उतना ही बेहतर है।"

"तुम हमारे योद्धाओं को कम तो नहीं आंक रही जादूगरनी?" ओमारू कठोर स्वर में बोला।

"मैं कुछ भी नहीं आंकती सरदार।" होम्बी मुस्कराई—"मुझे सिर्फ पूर्वाभास हो जाता है और मैं तुम्हें सतर्क कर देती हूं। अगर तुम्हें मेरी बातों पर यकीन नहीं तो अपनी मर्जी से काम कर सकते हो। मैं तुम्हें रोकूंगी तो नहीं।"

"मुझे तुम्हारी बात पर यकीन है जादूगरनी।"

होम्बी मुस्कराती हुई ओमारू को देखने लगी।

"अभी सोलाम फिर बात करेगा तो उसे कहूंगा कि बबूसा को कैद करने या फिर मारने की चेष्टा करे और उस लड़की को खत्म कर दे कि वो किसी को हमारे बारे में खुलासा तौर पर कोई बात न बता सके। रानी ताशा के लोगों ने कहा था कि स्क्रीनों वाला कमरा कोई बाहर का आदमी न देख सके, वरना हमारे लिए परेशानी खड़ी हो जाएगी।"

होम्बी उसी मुद्रा में ओमारू को देखती रही।

ओमारू पलटकर वापस चला गया।

'बेकार में ही परेशान हो रहा है ओमारू। सारे खेल की डोर तो बबूसा के हाथ में है।' होम्बी बड़बड़ा उठी।

▭ ▭

देवराज चौहान और जगमोहन की निगाह सोहनलाल पर थी।

सोहनलाल के चेहरे पर गम्भीरता दिख रही थी।

सोहनलाल ने बबूसा और धरा के बारे में उन्हें सब बता दिया था और देवराज चौहान ने भी उसे बबूसा के बारे में बताया कि किस तरह वो बिना शरीर के, उसके पास आकर बात करता है। परंतु इस वक्त सबसे खास बात तो ये थी कि सोहनलाल, बबूसा को आमने-सामने देख चुका था।

"बबूसा कैसा लगता है देखने में। उसका हुलिया बताओ।" देवराज चौहान ने कहा।

"वो सत्ताईस-अट्ठाइस वर्ष का सांवले रंग का युवक है। शरीर तगड़ा है जैसे कि तमाम उम्र वो कसरत करता रहा हो। नैन-नक्श तीखे हैं और वो आकर्षक है। मैंने जो महसूस किया, वो कुछ कठोर जैसा है। जैसे कि मरने-मारने पर उतारू हो। मैंने उसे तुम्हारे बारे में नहीं बताया तो उसने मुझ पर सख्ती करने का इरादा बना लिया था। ये बात मैंने भांप ली और घर से खिसक आया। वो डरने वाला इंसान नहीं है।" सोहनलाल ने सोच भरे स्वर में कहा।

"उसने जो बातें तुम्हें कहीं, उस दौरान उसके बारे में तुमने क्या महसूस किया?"

"वो गम्भीरता से अपनी बात कह रहा था। उसके साथ धरा नाम की जो लड़की थी, वो उसकी बात पर सहमति जता रही थी कि वो सच कह रहा है। जबकि लड़की से उसका वास्ता ज्यादा पुराना नहीं है। मेरे खयाल में लड़की, उसे तुम तक पहुंचाने के लिए, अपनी कोशिशों में लगी हुई है।"

"उसकी बातें सच लगी तुम्हें?"

"शायद।" सोहनलाल ने सिर हिलाया—"मुझे तो वो सच कहता लगा, परंतु उसकी बातें ऐसी थी कि उस पर यकीन करना आसान नहीं

है। तुम किसी सदूर ग्रह के राजा—वहां की रानी ताशा ने तुम्हें धोखा देकर, ग्रह से बाहर फिंकवा दिया था। अब वो तुम्हें लेने आ रही है। इस बारे में जाने कब से वो तैयारियां कर रही है। इसी तैयारी के तहत बबूसा का जन्म कराकर उसे इस ग्रह पर छोड़ दिया गया। और भी कई बातें हैं, पर कौन विश्वास करेगा उन पर।"

"बबूसा ने मुझे कहा था कि रानी ताशा ने उसका जन्म ही इसलिए कराया था कि, वो मेरे मुकाबले पर उतारा जा सके।" देवराज चौहान बोला—"क्या पता वो किस सोच के तहत मुझ तक पहुंचना चाहता है।"

"तुम्हें लगता है कि वो तुम्हें नुकसान पहुंचा सकता है?" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला।

"ऐसा भी सम्भव है। तुम्हें नहीं लगता क्या?"

"कुछ भी हो सकता है। परंतु तुम्हें बबूसा के सामने तो जाना ही होगा। वो तुम्हें ढूंढ़ने की पूरी चेष्टा कर रहा है।" वानखेड़े से मिला। सोहनलाल के पास गया। ऐसे में वो तुम्हारा पता लगा लेगा।"

"तुम्हें उससे मिल लेना चाहिए।" सोहनलाल बोला—"अगर उसके इरादे बुरे हैं तो उसे संभाल लिया जाएगा।"

"वो मिलने पर भी ये ही बातें करेगा जो अब कर रहा है। जबकि मेरा उन बातों से कोई वास्ता नहीं है। उसकी कही किसी भी बात का मैं भरोसा नहीं कर सकता। मेरी, बबूसा की मुलाकात का कोई फायदा नहीं होगा। अगर उसकी बातें मेरी समझ में आ रहीं होतीं तो अब तक मैं उससे मिल चुका होता।" देवराज चौहान ने कहा।

"वो बिना शरीर के तुम्हारे पास आकर बातें कैसे कर लेता है?" सोहनलाल ने पूछा।

"इस बात के जवाब में वो कहता है कि समाधि लगाकर ऐसा करता है और उसके जन्म के समय किसी महापंडित ने उसके भीतर कुछ शक्तियां डाल दी थीं, जिससे कि वो ऐसा कर पाता है।" देवराज चौहान ने बताया।

"हैरानी की बात है।" सोहनलाल मुस्करा पड़ा।

"ये ही तो बात है कि बबूसा की कोई बात गले से नीचे नहीं उतर रही कि उससे मिलने का फायदा हो...।"

"परंतु उसके व्यक्तित्त्व को हम हल्के में भी नहीं ले सकते।" जगमोहन बोला—"मुझे नहीं लगता कि वो कोई मजाक कर रहा है ऐसा करके। या तो उसे अपनी बात कहनी नहीं आ रही कि वो...।"

"वो अपनी बात बहुत अच्छी तरह से समझा रहा है।" सोहनलाल ने कहा—"उसने अदृश्य स्थिति में देवराज चौहान से बातें कीं। मेरे सामने बैठकर बातें कीं। परंतु बातों का मतलब तो एक ही निकलता है। बात

सिर्फ ये है कि देवराज चौहान कभी किसी सदूर ग्रह का राजा था और उसका वो जन्म अब वहीं के लोगों के साथ सामने आ रहा है, इन सब बातों पर हमें भरोसा नहीं हो रहा। जबकि बबूसा कहता है कि वो राजा देव का खास सेवक हुआ करता था।"

"मेरे खयाल में तो एक बार बबूसा से मिल लेना चाहिए।" जगमोहन ने कहा।

देवराज चौहान ने सोच भरे ढंग से सिग्रेट सुलगाई।

खामोशी-सी आ ठहरी।

"मेरे खयाल में तो मिलने में कोई हर्ज नहीं है।" सोहनलाल कह उठा।

"परंतु मैं जरूरत नहीं समझता।" देवराज चौहान बोला—"वजह सिर्फ ये ही है कि उसकी कही बातें मेरे गले से नीचे नहीं उतर रहीं। मिलने पर भी उसने ऐसी ही बातें करनी हैं जिसका मेरे पास कोई जवाब नहीं होगा, बात करने के लिए।"

"तो तुम बबूसा से नहीं मिलना चाहते?"

"मुझे जरूरत महसूस नहीं हो रही। मुझे ढूंढने में, जब वो थक जाएगा तो चुप बैठ जाएगा।"

सोहनलाल ने फिर कुछ नहीं कहा।

जगमोहन भी इस बारे में चुप रहा।

"मैं आज रात यहीं रहूंगा।" सोहनलाल बोला।

"क्यों?" जगमोहन ने मुंह बनाया।

"वो बबूसा मेरे पास जरूर आएगा दोबारा। दमदार बंदा है वो। मैं उसके हाथों में नहीं पड़ना चाहता।" सोहनलाल मुस्कराया।

तभी सोहनलाल का फोन बजने लगा।

"हैलो।" सोहनलाल ने बात की। दूसरी तरफ नानिया थी।

"मैंने टिंडे बना दिए हैं।" नानिया ने छूटते ही कहा।

"टिंडे?" सोहनलाल ने सकपकाकर देवराज चौहान और जगमोहन को देखा।

दोनों के चेहरों पर मुस्कान आ ठहरी।

"आप ही तो कह रहे थे कि टिंडे आपको बहुत अच्छे लगते हैं। बना दूं। बहुत बढ़िया बने हैं। टमाटर डालकर...।"

"मैंने तुम्हें मना किया था कि टमाटर डालकर टिंडों का स्वाद खराब हो जाता है।"

"आपने तो कहा था पर मेरे से टमाटर के बिना खाए नहीं जाते। बहुत स्वादिष्ट बने हैं, खाकर तो देखिए।"

"टमाटर डाल दिए तो डाल दिए। अब खाने ही पड़ेंगे।"

"मुझे पता था आप खा लेंगे। तभी तो टमाटर डाल दिए। अब घर आ जाओ।"

"वो आया तो नहीं?"

"दोबारा नहीं आया।"

"वो जरूर आएगा और अभी मेरा वापस आना ठीक नहीं। मैं देवराज चौहान के यहां हूं।"

"मिल गया बहाना घर से बाहर रहने का।"

सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

"कब आओगे?"

"रात यहीं रहूंगा। सुबह तुम्हारे पास आकर ही नाश्ता करूंगा। उसका ध्यान रखना, वो आ सकता है मुझे पूछने।"

"उसकी आप फिक्र मत करो। मैं संभाल लूंगी।" कहकर नानिया ने फोन बंद कर दिया था।

सोहनलाल ने फोन बंद करके जेब में रखा और कह उठा।

"नानिया खबर दे रही थी कि टिंडे बन गए हैं।"

"तो टिंडे बन जाना भी खबर होती है।" जगमोहन मुस्कराया।

"औरतें ऐसी खबरें ही देती हैं। तूने शादी की होती तो ऐसी बातों का अनुभव हो चुका होता।"

"तुम्हारी बातें सुनकर बिना शादी के ही अनुभव हो रहे हैं।"

सोहनलाल ने देवराज चौहान को देखते हुए कहा।

"बबूसा से मिलने का तुम्हारा कोई इरादा नहीं है?"

"उसकी बातों पर मुझे विश्वास नहीं है। तुम्हें भरोसा है तो कहो।" देवराज चौहान बोला।

"मुझे भी नहीं है।"

"तो बबूसा को भूल जाओ।" देवराज चौहान ने कहा और उठ खड़ा हुआ।

▭ ▭

बबूसा और धरा होटल के कमरे में पहुंचे।

बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता ठहरी हुई थी। जबकि धरा अपने ही विचारों और भय में उलझी हुई थी। चक्रवती साहब और प्रकाश के सिर कटे शरीर उसे बार-बार कंपा रहे थे। उन दोनों की मौत का उसे दुख था परंतु उसकी अपनी जान पर बनी हुई थी। वो महसूस कर चुकी थी कि डोबू जाति के योद्धा कितने खतरनाक हैं। इस बार तो बबूसा ने उसे बचा लिया परंतु जरूरी तो नहीं कि अगली किसी बार भी बबूसा उसे बचा ले।

बबूसा कुर्सी पर बैठ गया था।

धरा व्याकुल-सी बबूसा का हाथ पकड़कर कह उठी।
"शुक्रिया तुमने मुझे बचा लिया।"
बबूसा कुछ पल धरा को देखता रहा, फिर मुस्कराकर बोला।
"ये तो शुरुआत है।"
धरा ने उसका हाथ थपथपाकर छोड़ा और कहा।
"मतलब कि वो फिर आएंगे?"
"वो बार-बार, तब तक आते रहेंगे, जब तक कि वो सफल नहीं हो जाते।"
"ओह।" धरा ने गहरी सांस ली—"मतलब कि वो हर हाल में मुझे मार के ही रहेंगे।"
"मैं तुम्हें बचाऊंगा।"
"कब तक। एक दिन तो वो मुझे मारने में सफल हो ही जाएंगे।"
"इसमें कोई शक नहीं।"
"उनसे माफी मांग लेने का कोई रास्ता नहीं है?" धरा ने सोच भरे स्वर में कहा।
"तुमने वहां पर बिजली वाला कमरा देखा।" बबूसा बोला।
"हां।"
"स्क्रीनें देखीं?"
"हां।"
"उसकी वजह से ही वो तुम्हें मारना चाहते हैं कि, तुम उस बारे में किसी को बता न सको। वो जानते हैं कि उनके पास ऐसी चीजें होने की भनक, बाहरी लोगों को मिलेगी तो उनके पास कई लोग आएंगे, ये जानने के लिए कि उन चीजों का वो क्या करते हैं। वो नहीं चाहते कि उनके रहस्य लोग जानें।"
"वो उन चीजों का क्या करते हैं?"
"उन चीजों से वो सदूर ग्रह वालों से सम्पर्क बनाते हैं, बात करते हैं। सदूर ग्रह वाले भी उनसे बात करते हैं।"
"पर वहां बिजली तो है नहीं?"
"सदूर ग्रह वालों ने डोबू जाति को बिजली दे रखी है।"
"ये भला कैसे सम्भव है?"
"पता नहीं कैसे सम्भव है। पर वो ही बिजली देते हैं। छोटा-सा डिब्बा जैसी कोई चीज है, उसमें तारें जोड़ देने से बिजली आ जाती है। वो डिब्बा कई साल तक काम देता है। ऐसे कई डिब्बे उन्होंने डोबू जाति को दे रखे हैं कि जब बिजली का एक डिब्बा खत्म हो जाए तो दूसरे में तारें लगा लें।" बबूसा ने बताया।
"फिर तो वो बैटरी जैसी कोई चीज होगी।" धरा कह उठी।

"तुमने अभी मेरा हाथ पकड़ा था।"
"हां।"
"फिर से पकड़ो।"
"क्यों?" धरा ने बबूसा को देखते होंठ सिकोड़े।
"मुझे अच्छा लगता है।" बबूसा का स्वर शांत था।
"क्या पहले कभी किसी औरत ने तुम्हारा हाथ नहीं पकड़ा?"
"मैंने किसी को पकड़ने नहीं दिया। मैं औरतों से दूर रहता था।"
"डोबू जाति में?"
"हां।"
"और अपने ग्रह पर?"
"वहां तो मैंने शादी कर रखी थी। परंतु वो रिश्ता खत्म हो गया। महापंडित ने मेरा नया जन्म कराने के लिए मेरे प्राण ले लिए और वो जीवन मेरा समाप्त हो गया। अब इस जीवन में तुम्हारा स्पर्श मुझे अच्छा लगा।"
धरा, बबूसा को देखती रही।
"मेरा हाथ पकड़ो।" बबूसा ने पुनः कहा।
धरा ने कदम आगे बढ़ाया और बबूसा का हाथ पकड़ लिया।
कुछ पल बबूसा शांत बैठा रहा, फिर उसने आंखें बंद कर लीं।
धरा उसका हाथ हटाते कह उठी।
"मेरे स्पर्श से तुम आंखें बंद करके मजा ले रहे हो।"
जवाब में बबूसा मुस्कराया। उसे देखता रहा। कहा कुछ नहीं।
"मेरे ये कपड़े मैले हो चुके हैं। मुझे नए कपड़े खरीदने पड़ेंगे।" धरा ने कहा।
"जब भी बाहर निकलेंगे। तुम कपड़े ले लेना।"
"कॉफी लोगे तुम?" इंटरकॉम की तरफ बढ़ती धरा कह उठी।
"हां।"
धरा ने इंटरकॉम पर दो कॉफी के लिए कहा और नहाने के लिए बाथरूम में चली गई।

▭ ▭

धरा नहा आई थी। कपड़े वो ही पहन लिए थे। वो अभी भी चुप-चुप सी थी। रह-रहकर वो सिहर उठती थी चक्रवती साहब और प्रकाश की लाशों का हाल देखकर कि उसके देखते ही देखते, कैसे उनकी गर्दनें कटकर सिर से अलग जा गिरे थे और वहां से खून-ही-खून निकलने लगा था।
"कॉफी ले लो।" बबूसा ने कहा।
धरा ने देखा बबूसा के हाथ में कॉफी का प्याला था। उसका प्याला सैंटर टेबल पर रखा था।

धरा सोफे पर बैठी और कॉफी का प्याला उठा लिया।

"तुम चिंतित किस वजह से हो?" बबूसा ने पूछा।

"मैं डर रही हूं डोबू जाति के लोगों से।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"इस तरह डरने से काम नहीं चलेगा। मैं हूं तुम्हारी रक्षा के लिए।"

"तुम कब तक मुझे बचा सकोगे। एक दिन तो वो कामयाब हो ही जाएंगे।"

"जब तक जिंदा हो, जीवन का आनंद लो। डरकर जिया नहीं जा सकता।" बबूसा बोला—"वो तुम्हें मार देंगे या तुम मर जाओगी, ये सोचना छोड़कर ये सोचो कि तुम अभी जिंदा हो।"

धरा ने कॉफी का घूंट भरा। चुप रही।

"शाम होने वाली है। अंधेरा होते ही सोहनलाल के घर जाना है। उससे राजा देव का पता पूछना है।"

"हां।" धरा ने सिर हिलाया—"वो न बताए तो थोड़ी-सी सख्ती करना उससे। परंतु उसकी जान नहीं लेना।"

"तब वो खिसक नहीं गया होता तो अब तक मैं राजा देव के पास पहुंच गया होता।"

"वो जरूर सीधा देवराज चौहान के पास गया होगा। उसे तुम्हारे बारे में सब बता दिया होगा।"

"मैं इन बातों की परवाह नहीं...।" कहते-कहते बबूसा ठिठक गया। उसने एक-दो गहरी सांसें लीं जैसे हवा में कुछ सूंघने की कोशिश कर रहा हो फिर उसके होंठों से निकला—"वो आ गए।"

"क-कौन?" धरा का स्वर कांप उठा।

बबूसा ने शांत भाव से कॉफी का प्याला टेबल पर रखा और बोला।

"डोबू जाति वाले। वो मेरा रहने का ठिकाना पहले से ही जानते हैं। वो आएंगे, जानता था परंतु इतनी जल्दी आ जाएंगे पता नहीं था। ओमारू से बात कर ली होगी सोलाम ने। ये ही हुआ होगा।"

"ओमारू कौन?"

"डोबू जाति का सरदार।"

"सरदार क्या मुम्बई में है?"

"सरदार कभी भी अपने ठिकाने से दूर नहीं जाता।"

"तो सोलाम ने बात कैसे...।"

"सदूर ग्रह वालों ने कुछ यंत्र दे रखे हैं डोबू जाति को। उसी के सहारे बातचीत की जाती है।"

"वो—वो मुझे मारने आए हैं न?"

"इस बार तो वो मुझे भी मारने आए हैं।" बबूसा मुस्कराया, परंतु

चेहरे पर खतरनाक भाव दिखे—"तुम्हें बचाने के लिए मैंने डोबू जाति के योद्धाओं को मारा है। ये बात सरदार को बहुत बुरी लगी होगी।"

धरा का चेहरा फक्क हो गया। उसने कॉफी का प्याला रख दिया।

बबूसा उठा और अपनी कमीज खोलते बोला।

"इस मुकाबले के बाद हम इस होटल में नहीं रह पाएंगे। तुम्हारे पास कोई जगह हो तो याद कर लो। जगह नहीं भी है तो कोई जगह सोच लो जहां हम रुक सकते हैं। अगर कोई भी इंतजाम नहीं है तो तब भी कोई बात नहीं। हम मिलकर किसी जगह का इंतजाम कर लेंगे।" बबूसा ने कमीज उतारकर एक तरफ फेंक दी। उसके सीने पर बनियान जैसे चिपके लैदर पर सैकड़ों नन्हे चाकू फंसे दिखने लगे।

धरा अभी तक घबराई-सी खड़ी थी।

"डरो मत। वरना मर जाओगी।" बबूसा बोला—"अपने को मजबूत रखो। वो करीब आ पहुंचे हैं।"

"करीब कहां?" धरा के होंठों से सूखा-सा स्वर निकला।

बबूसा की खतरनाक निगाह दरवाजे की तरफ बढ़ी।

तभी दरवाजा थपथपाया गया।

बबूसा के होंठों से गुर्राहट निकली। कह उठा।

"तुम हर पल मेरे करीब ही रहना। तभी तुम्हें बचा पाऊंगा।" इसके साथ ही वो दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

धरा तुरंत उसके साथ चल दी। टांगों में कम्पन-सा हो रहा था। मौत का भय उसकी आंखों में स्पष्ट नजर आ रहा था। दिल धाड़-धाड़ बज रहा था।

पास पहुंचकर बबूसा ने दरवाजा खोला तो सोलाम को खड़े पाया।

दोनों की नजरें मिलीं।

बबूसा के चेहरे पर कठोरता थी और सोलाम गम्भीर दिखा। वो मुस्कराया। बोला।

"मैं आ गया बबूसा।"

"तुम अकेले तो नहीं होगे?" बबूसा ने शब्दों को चबाकर कहा।

"तुम जानते ही हो कि शिकार करते वक्त हम समूह में रहते हैं। मेरे योद्धाओं ने ये जगह घेर रखी है।"

बबूसा के चेहरे पर खतरनाक भाव उभरे।

"ये कहकर तुम मुझे डराने की चेष्टा कर रहे हो सोलाम?"

"मैं जानता हूं बबूसा किसी से नहीं डरता। मैंने तो तुम्हारे सवाल का जवाब दिया है।"

बबूसा वहीं खड़ा कहर भरी निगाहों से सोलाम को देखता रहा।

"मुझे भीतर आने दो।" सोलाम बोला—"कुछ बात हो जाए।"
"क्या बात?"
"ऐसी बात कि जिसमें हम दोनों का भला हो।"
"इस स्थिति में तुम मेरा भला नहीं सोच सकते।"
"मैंने कहा है ऐसी बात जिसमें हम दोनों का भला हो।"
बबूसा दरवाजे से पीछे हटा। सोलाम भीतर आया।
बबूसा ने दरवाजा बंद किया और पीछे हटता चला गया।
सोलाम कमीज-पैंट पहने था। उसकी आधी बांह की कमीज, पैंट से बाहर झूल रही थी।
धरा खुद को बबूसा की ओट में रखने की चेष्टा करती बार-बार सोलाम को देख रही थी।
सोलाम के चेहरे पर गम्भीरता थी।
बबूसा बेहद सतर्क और खतरनाक नजर आ रहा था।
"हमने एक साथ युद्ध कला सीखी बबूसा। एक साथ ही बड़े हुए।" सोलाम बोला।
बबूसा की निगाह सोलाम पर ही रही।
"हममें झगड़ा होना अच्छी बात नहीं होगी। मैं जानता हूं कि युद्ध में तुम मेरे से कहीं बेहतर हो। तुमने युद्ध कला को बहुत तेजी से सीखा। मेरे से ज्यादा काबिल हो तुम। मैं ज्यादा देर तुम्हारे मुकाबले पर नहीं ठहर सकता।"
बबूसा उसे देखता रहा।
"हमारी जाति के नियम तो तुम जानते ही हो। दुश्मन का साथ देने वाला भी दुश्मन मान लिया जाता है। तुमने इस लड़की को बचाने के लिए हमारे कई योद्धाओं की जान ले ली। गलत किया तुमने। ऐसा क्यों किया बबूसा?"
"मुझे डोबू जाति पसंद नहीं।"
"सारा जीवन तुमने वहीं बिताया है।"
"परंतु अब पसंद नहीं।" बबूसा गुर्राया—"मैं तुम लोगों में से नहीं हूं।"
"सुना तो मैंने भी है कि तुम पोपा पर सवार होकर आए थे। वो लोग तुम्हें हमारे पास छोड़ गए। तब तुम नन्हे-से बच्चे थे। ऐसा क्यों किया तुम्हारे लोगों ने। तुम्हें यहां क्यों छोड़ा?"
"ये तुम्हारे जानने लायक बात नहीं है।"
सोलाम ने बबूसा को देखा और गम्भीर स्वर में बोला।
"मैंने सुना है रानी ताशा पोपा पर बैठकर इस ग्रह पर आने वाली है। वो किसी को अपने साथ अपने ग्रह पर ले जाना चाहती है।"

"तुम्हारे लिए ये बातें जाननी जरूरी नहीं है सोलाम। मतलब की बात करो।" बबूसा ने कठोर स्वर में कहा।
"तुम इस बारे में सब जानते हो?" सोलाम ने पूछा।
"हां।"
"किसने बताया?"
"किसी ने नहीं। मेरे भीतर ही कुछ है, जो मुझे मेरा हाल बता देता है।"
"तुम्हारी जाति से विद्रोह करने का कारण भी, इन्हीं बातों से वास्ता रखता है?"
"ऐसा ही समझो।"
"रानी ताशा को जानते हो?"
"अच्छी तरह से।"
"राजा देव को?"
"उन्हें भी बेहतर ढंग से जानता हूं। हम सब एक ही ग्रह के हैं। काम की बात बोलो सोलाम।"
"मैंने कुछ देर पहले ओमारू से बात की। वो तुम्हें मार देने को कहता है।" सोलाम बोला।
"तो सोचते क्या हो सोलाम, वार करो।" बबूसा के होंठों से फुंफकार निकली।
"सामने बबूसा हो तो सोचना पड़ता है।" सोलाम मुस्कराया—फिर गम्भीर हो गया—"ये लड़की मुझे दे दो।"
ये सुनते ही धरा कांप उठी।
"क्यों?"
"तुम बेहतर जानते हो क्यों? ये हमारे निवास में आ गई। इसने वहां सब कुछ देखा और...।"
"अब ये मेरी पनाह में है।"
"जाति के दुश्मन को जो पनाह देगा वो हमारा दुश्मन बन जाएगा।"
"मैं इसे कुछ नहीं होने दूंगा।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा।
सोलाम, बबूसा को कुछ पल देखता रहा फिर बोला।
"इस लड़की से तुम्हारा मतलब क्या है?"
"मुझे किसी की तलाश है, ये मेरी सहायता कर रही है। ये मुझे ठीक से समझती है।"
"तुमने इस लड़की को हमें न दिया तो झगड़ा होगा बबूसा।"
"करो झगड़ा।"
"मैं तुमसे झगड़ा नहीं चाहता।"

"हिम्मत रखो और मेरे साथ रहो। हमें इस कमरे से निकल जाना चाहिए।"
"क-कैसे निकलेंगे, बाहर तो वो लोग...।"
तभी खुले दरवाजे से एक के बाद एक छः लोग भीतर आ गए। किसी के हाथ में खंजर था तो कोई तलवार जैसा हथियार लिए हुए था। दो के हाथ में चौकोर लोहे की मोटी पत्ती थी, जो कि गला पलक झपकते ही काट देती थी। कमरे में पहुंचते ही वो इधर-उधर फैलते चले गए।
बबूसा ने मौत भरी निगाहों से उन्हें देखा। सबको पहचानता था वो।
तभी चौकोर पत्ती लिए दोनों व्यक्तियों ने बेहद फुर्ती के साथ उसकी तरफ पत्ती फेंकी।
बबूसा ने उसी पल धरा को जोरों का धक्का दिया, और खुद भी नीचे जा गिरा।
धरा के होंठों से जोरों की चीख निकली और वो 'धड़ाम' से नीचे जा गिरी थी।
दोनों पत्तियां उनके सिरों से गुजरकर दीवार से जा टकराईं।
उसी पल एक ने अपने हाथ में दबा लम्बा चाकू बबूसा पर फेंका।
बबूसा करवट ले गया।
वो चाकू फर्श से टकराया और दूर गिरता गया।
दोबारा मौका नहीं दिया बबूसा ने। उसके हाथों में, जादू की भांति शरीर से चिपकी लैदर की बनियान से निकलकर चाकू आए और हवा में लहराते उनकी तरफ लपके। पूरे छः चाकू फेंके थे।
पांच के शरीरों में जा धंसे।
छठा बच गया। उसके हाथ में छोटी तलवार जैसा हथियार था।
नन्हे चाकू छातियों में धंसते ही, दो पलों बाद वो एक-एक करके नीचे गिरने लगे। देखते ही देखते वो मृत होते चले गए। चाकू पर लगे तीव्र जहर ने अपना असर दिखा दिया था।
बबूसा तुरंत उठ खड़ा हुआ।
आखिरी बचा व्यक्ति कुछ परेशान हो गया था, कुछ घबरा गया था।
बबूसा उसकी तरफ बढ़ा।
उसने फौरन तलवार जैसा हथियार फेंका और तेज स्वर में कह उठा।
"मुझे मत मारना।"
बबूसा उसके पास पहुंचा। दायां हाथ आगे बढ़ाया। गर्दन पकड़ी और झटके के साथ गर्दन को एक तरफ मोड़ा तो 'कड़ाक' की आवाज आई। गर्दन छोड़ी तो वो गुड़मुड़-सा जा नीचे गिरा था।
बबूसा के चेहरे पर दरिंदगी नाच रही थी। वो धरा की तरफ पलटा।

"तो चले जाओ।"

"इस लड़की के लिए जाति से दुश्मनी मत लो।"

"तुम लोग, मेरे लोग नहीं हो। रानी ताशा ने मुझे किसी योजना के तहत यहां भेजा था।"

"मुझे सरदार का हुक्म मानना है कि लड़की को खत्म करो। जो रास्ते में आए उसे भी मार दो।"

"तो ओमारू के हुक्म का पालन करो।" बबूसा ने दांत पीसकर कहा।

"झगड़ा होगा बबूसा?"

"लड़की मांगोगे तो झगड़ा होगा।"

"हमारी संख्या बहुत है। तुम अकेले हो। लड़की को बचा नहीं सकोगे।" सोलाम बोला।

"मैं तुम सबको खत्म कर दूंगा।" बबूसा ने सोलाम की आंखों में झांका।

"तुम मेरी बात नहीं मान पाए तो झगड़ा अब होगा ही।" सोलाम ने गम्भीर और चिंता भरे स्वर में कहा।

उसी पल बबूसा के हाथ में नन्हा-सा चाकू चमका और तेजी से हवा में सोलाम की तरफ लपका।

सोलाम खड़ा रहा।

चाकू उसकी छाती से जा टकराया और नीचे जा गिरा।

बबूसा की आंखें सिकुड़ गईं।

"तुमने सुरक्षा कवच पहन रखा है।" बबूसा के होंठों से निकला।

"ये ही मेरा बचाव है।" सोलाम का स्वर कठोर हो गया—"वरना तुम्हारे जहर से बुझे चाकू मुझे जिंदा कहां रहने देंगे।" कहने के साथ ही सोलाम दरवाजे की तरफ बढ़ा।

तभी बबूसा ने दूसरा चाकू उसकी टांग की तरफ फेंका।

सोलाम सावधान था। चाकू से बच गया और दरवाजा खोला, फुर्ती से बाहर निकल गया।

बबूसा का चेहरा दहक उठा।

"ये—ये अब क्या करेगा?" धरा ने कांपते स्वर में कहा।

"सोलाम बहुत खतरनाक है।" बबूसा गुर्राया—"उसकी अगुवाई में योद्धा बाहर मौजूद हैं। वो हमें मारने की कोशिश करेंगे।"

"त-तो?"

"तुम फिक्र मत करो। हमें मारना आसान नहीं होगा उनके लिए। मुझे तुम्हारी चिंता है।"

"व-वो मुझे—मार देंगे।" धरा की हालत बुरी हो रही थी।

धरा नीचे पड़ी, आंखें फाड़े सब देख रही थी।
"खड़ी हो जाओ।"
धरा तुरंत खड़ी हो गई। उसकी टांगें कांप रही थीं। चेहरा फक्क था।
"संभालो खुद को।" बबूसा का स्वर पहले जैसा था—"बाहर और भी हैं।"
"अ-अब क्या होगा?"
"हमें यहां से निकलना है। इस कमरे में मुकाबला करना कठिन है।" बबूसा ने दांत पीसते हुए कहा और कमरे की खिड़की की तरफ बढ़ा और खिड़की खोलकर नीचे देखा।
सामने सड़क थी। वाहन आ-जा रहे थे।
खिड़की से ठीक नीचे एक टैम्पू खड़ा था, जिस पर कि होटल की मैली चादरें, पर्दे, वगैरह धोने के लिए ले जाए जा रहे थे। ऐसे कपड़ों से टैम्पू भरा पड़ा था।
"इधर आओ।" बबूसा कहते हुए पलटा। अगले ही पल तेजी से नीचे झुक गया।
दरवाजे पर दो लोग थे और एक ने चौकोर पत्ती बबूसा पर फेंकी थी।
नीचे झुकते ही चौकोर पत्ती खिड़की से टकराई और लकड़ी में धंसकर अटक गई। तब तक बबूसा के दो चाकू निकल चुके थे, जो कि उन दोनों को लगे और वो नीचे गिर गए।
बबूसा उनके पास पहुंचा।
तब तक वो नीचे गिर चुके थे।
दोनों को पकड़कर कमरे में खींचा, फिर दरवाजे के बाहर झांका। वहां कोई नहीं था। बबूसा ने दरवाजा बंद किया और पलटकर धरा को देखा, जो सफेद चेहरे से उसे देख रही थी।
"हमें यहां से निकल चलना होगा, वरना बचना कठिन हो जाएगा।" कहते हुए बबूसा खिड़की के पास पहुंचा।
"हम निकलेंगे कैसे, बाहर तो वो लोग हैं।" धरा भय से चीख उठी।
बबूसा खिड़की से बाहर झांकने के बाद बोला।
"इधर आओ।"
धरा लड़खड़ाती टांगों से बबूसा के पास पहुंची।
"क-क्या है?"
"खिड़की से बाहर कूद जाओ। बाहर टैम्पो...।"
"मैं नहीं कूद सकती। मुझमें इतनी हिम्मत नहीं है।" धरा के होंठों से निकला।

"नीचे लांड्री वाला टैम्पो खड़ा है। उसमें चादरें भरी हैं।" बबूसा ने कहा—"चोट नहीं लगेगी।"

"मैं नहीं कूद...।"

"वक्त नहीं है इतना।" बबूसा के होंठ भिंच गए।

तभी बाहर से दरवाजा खटखटाया गया।

धरा ने घबराकर दरवाजे की तरफ देखा।

"अगर खुद कूदोगी तो चोट नहीं लगेगी। मैंने उठा के फेंका तो हाथ-पांव टूट सकता...।"

"क्या? तुम मुझे फेंकोगे।"

दरवाजे को तोड़ा जाने लगा।

बबूसा ने दांत भींचकर धरा को बांह से पकड़ा उठाया।

धरा चीखी।

उसने धरा को खुली खिड़की की चौखट पर जबरन खड़ा किया।

"मैं मर जाऊंगी।" धरा की आंखों से आंसू निकल गए।

"कूदो। नीचे देखो—टैम्पो में।"

सामने सड़क पर जाते दो-तीन लोगों ने खिड़की की चौखट पर धरा को खड़े देखा तो वो थम गए और मामला समझने का प्रयास करने लगे।

भय से कांपती धरा ने नीचे चादरों से भरे टैम्पो को देखा।

"देखा टैम्पो को। वो चादरों से भरा है। तुम्हें चोट नहीं लगेगी। कूदो...।"

"न-हीं...।"

तभी पीछे से दरवाजा टूटने की आवाज आई।

बबूसा ने फौरन धरा को धक्का दे दिया।

देखते-ही-देखते धरा खिड़की पर से गायब हो गई। फिर उसकी चीख सुनाई दी।

उसी पल दरवाजा टूट गया। वहां दो-तीन लोग दिखे।

बबूसा के हाथों में जहर से बुझे नन्हे चाकू चमके और एक के बाद एक हाथों से निकलते चले गए। जो दरवाजे से भीतर प्रवेश हो रहे थे, उनके जिस्मों में जा धंसे। वहां देखने के लिए बबूसा रुका नहीं, वो तुरंत खिड़की पर चढ़ा और नीचे खड़े टैम्पो पर कूदता चला गया।

धरा तब तक टैम्पो से उतर चुकी थी। उसे एक खरोंच भी नहीं आई थी। टैम्पो के पास खड़े होटल के दो कर्मचारी हैरानी से धरा को देख रहे थे कि बबूसा टैम्पू पर आ कूदा। लेकिन संभलते ही तुरंत बनियान जैसी जैकिट में फंसे कुछ चाकू हाथ में आए और अलग-अलग दिशाओं से इधर आते चार लोगों को जा लगे।

बबूसा टैम्पू से नीचे कूदा और धरा का हाथ पकड़कर चिल्लाया।

"भागो।"

दोनों तेजी से सड़क की तरफ भाग निकले। परंतु तभी बबूसा ने धरा को बांह से अपने साथ समेटा और नीचे गिरता चला गया। धरा के होंठों से चीख निकल गई। वो नहीं समझ सकी कि क्या हुआ लेकिन अगले ही पल उसके रौंगटे खड़े हो गए। पांच कदमों की दूरी पर एक आदमी का सिर नीचे आ गिरा था, फिर उसने बिना सिर वाले एक शरीर को भी नीचे गिरते देखा।

धरा स्तब्ध सी रह गई। तब तक कई लोगों की उसने चीखें सुनीं।

ये ही वो पल था कि बबूसा ने कुछ कदमों की दूरी पर खड़े व्यक्ति पर चाकू फेंका था, जो कि उसके कंधे पर जा लगा था। तब वो दूसरी वाली चौकोर घातक पत्ती वाला हथियार फेंकने जा रहा था। बबूसा ने अगर वक्त रहते उसे देख न लिया होता तो अब तक उसकी या धरा की गर्दन कटी होनी थी। परंतु उन दोनों के नीचे गिर जाने से उस घातक हथियार ने आगे जाते व्यक्ति की गर्दन अलग कर दी थी। बबूसा और धरा उठे और पुनः सड़क की तरफ भाग निकले। उसी पल बबूसा ने सोलाम को देखा जो दोनों हाथ कमर पर रखे, कुछ दूरी पर खड़ा उन्हें देख रहा था।

उसी पल दौड़ते दो आदमी सोलाम के पास पहुंचे। एक बोला।

"बबूसा हम लोगों को मार रहा है और तुम खड़े मुंह देख रहे हो सोलाम।"

"मैं लड़की को खत्म करने की तरकीब सोच रहा हूं।"

"खड़े रहकर?" दूसरा नाराजगी से बोला।

"तुम लोग सबसे कह दो कि बबूसा को उस लड़की से अलग करने की कोशिश की जाए।"

"इससे क्या होगा?"

"बबूसा के रहते, हमें सफल होने में परेशानी आएगी। जैसे कि अब आ रही है। वो हमारे योद्धाओं को मार रहा है।"

"अब बबूसा भी तो हमारा अपराधी है।"

"पहले लड़की को खत्म करना है। उसके बाद बबूसा को देखेंगे। जल्दी जाओ।"

दोनों उसी तरफ भागते चले गए जिधर बबूसा और धरा गए थे।

इस दौरान सोलाम ने अपने कई योद्धाओं को बबूसा और धरा के पीछे जाते देख लिया था। कुछ पल सोलाम गम्भीरता से खड़ा रहा फिर वो भी उसी तरफ भाग निकला। वहां मौजूद लोग दहशत से भर चुके थे। सामने सिर कटी लाश पड़ी थी।

बबूसा ने धरा का हाथ कसकर पकड़ा हुआ था। दोनों ने किसी तरह भागते हुए, वाहनों से भरी उस सड़क को पार किया। कई कारों के पहिए ब्रेकों से चीख उठे थे। धरा हांफ रही थी, परंतु पूरी हिम्मत से बबूसा के संग भाग रही थी।

वो जान चुकी थी कि मौत करीब है। बबूसा के संग न भागी तो मारी जाएगी। पीछे कोई आ रहा है या नहीं, ये देखने का उसे होश नहीं था। लेकिन बबूसा यदा-कदा नजर पीछे डाल लेता था। वो जानता था कि पीछे योद्धा आ रहे हैं। सोलाम भी पीछे है। उसे मालूम था कि सोलाम जिद्दी इंसान है। वो हर काम को पूरा करने की अंत तक कोशिश करता था। वो इतनी जल्दी उसका पीछा नहीं छोड़ेगा। धरा को खत्म करने का काम हाथ में लिया है तो काम को हर हाल में पूरा करने की चेष्टा करेगा।

तभी पुलिस सायरन सुनाई देने लगा।

"ये पुलिस सायरन की आवाज है।" धरा ने ऊंचे स्वर में बबूसा को बताया।

बबूसा उसका हाथ पकड़े भागता रहा।

"इस तरह कब तक भागते रहेंगे। हमें कार चाहिए।" धरा बोली।

"वो तुम देखो।" बबूसा ने कहा।

उसी समय बाईं तरफ दस फुट चौड़ी गली दिखी तो बबूसा उस तरफ मुड़ गया।

पुलिस सायरन की आवाज ठीक उनके पीछे आ गई।

"पुलिस हमारे पीछे है।" धरा चीखी—"हे भगवान मैं कहां फंस गई।" दौड़ते-दौड़ते धरा ने कहा।

वो गली में प्रवेश कर गए।

पुलिस कार भी उनके पीछे गली में आ गई।

धरा ठिठकने लगी तो बबूसा उसे खींचते हुए बोला।

"रुको मत, भागो।"

"पुलिस से बचकर कहां भागेंगे—रुक जाओ।"

"डोबू जाति वाले पुलिस से ज्यादा खतरनाक...।"

परंतु धरा रुक गई। बबूसा को भी रुकना पड़ा। दोनों पलटे।

पीछे पुलिस कार आ रुकी थी। सायरन अब भी बज रहा था कि एकाएक सायरन बजना रुका और पुलिस कार का दरवाजा खुला। एक पुलिस वाला बाहर निकला। हाथ में रिवॉल्वर थी। जिसका रुख उनकी तरफ था।

"हाथ ऊपर उठा लो। तुम लोगों ने गला काटकर एक आदमी की हत्या की है। हाथ ऊपर...।" पुलिस वाला कठोर स्वर में बोला।

उसी वक्त कार चलाने वाला पुलिस वाला भी बाहर निकला। उसके हाथ में पिस्तौल दबी थी।

बबूसा के होंठ भिंचे थे। उसकी लैदर की बनियान पर फंसे नन्हे चाकू नजर आ रहे थे।

धरा का चेहरा फक्क हो उठा था।

"हिलना मत। हाथ ऊपर।" पहले वाला पुलिस वाला पुनः कठोर स्वर में कह उठा।

"हमने किसी को नहीं मारा।" धरा तेज स्वर में कह उठी—"हम तो खुद जान बचाकर भाग रहे हैं। वो लोग...।"

"चुप रहो।" दूसरा पुलिस वाला कह उठा—"अपने हाथ पीछे की तरफ करो और पीठ हमारी तरफ कर लो।"

पहले वाले ने कार में से हथकड़ी निकाल ली।

परंतु धरा और बबूसा खड़े पुलिस वालों को देखते रहे।

"जैसा कहा है, वैसा करो, वरना हमें तुम दोनों की टांगों पर गोली मारनी पड़ेगी।"

धरा ने घबराकर बबूसा को देखा।

"ये हमें नहीं छोड़ेंगे।" धरा रो देने वाले स्वर में बोली—"ये सोचते हैं हमने उसकी गर्दन काटी है।"

"इन्हें मारना होगा।"

"न-हीं। ये पुलिस वाले...।"

"मेरे रास्ते में जो आएगा, वो...।" कहते-कहते बबूसा ठिठका। उसकी निगाह पुलिस वालों के पीछे गली के किनारे पर जा टिकी, जहां से अभी-अभी तीन व्यक्तियों ने तेजी से भीतर प्रवेश किया था और वहीं रुक गए थे।

बबूसा सतर्क हो उठा।

वो डोबू जाति के योद्धा थे।

"वो लोग यहां पहुंच गए।" बबूसा ने दबे स्वर में कहा।

धरा ने भी उन्हें देखा फिर पुलिस वालों से कह उठी।

"उन लोगों ने वो हत्या की है।"

दोनों पुलिस वालों ने उनकी तरफ रिवॉल्वर ताने, गर्दन घुमाकर पीछे देखा। तब तक उन तीनों ने फुर्ती से अपने हाथों को कपड़ों के भीतर डालकर हथियार निकाले और तेजी से उन पर चला दिए। दो ने चौकोर पत्ती फेंकी थी और एक ने लम्बा खंजर।

चौकोर पत्तियां किसी पंखे की भांति हवा में तेजी से घूमती उनकी तरफ बढ़ी।

खंजर तो दिखा ही नहीं कि वो हवा में कहां पर है।

"नीचे बैठ जाओ।" बबूसा, धरा का हाथ पकड़े नीचे बैठता कह उठा।

धरा घबराकर कूल्हों के बल नीचे जा गिरी।

तभी उन्होंने एक पुलिस वाले की गर्दन कटकर उड़ती, उछलकर एक तरफ गिरते देखी।

दूसरे पुलिस वाले की पीठ में पूरा का पूरा खंजर आ धंसा।

एक अन्य फेंकी गई पत्ती बबूसा और धरा के सिरों पर से निकल गई और उसके कहीं गिरने की आवाज आई। गर्दन कटे पुलिस वाले का शरीर बेजान-सा नीचे जा गिरा था।

दूसरा पुलिस वाला भी नीचे जा गिरा था।

"भागो।" बबूसा दांत भींचे गुर्रा उठा।

धरा जल्दी-से उठ बैठी।

परंतु तब तक बबूसा के हाथ में दो नन्हे चाकू चमक उठे।

"ये क्या कर रहे हो।" धरा बोली—"भाग जाते हैं यहां से।"

"हम भागे तो वो आसानी से हमारा निशाना ले लेंगे। तुम उन्हें ठीक से नहीं जानती। वो पक्के निशानेबाज हैं।" कहने के साथ ही बबूसा ने हाथ में दबे चाकुओं को खास अंदाज में झटका दिया।

चाकू बबूसा के हाथ से निकल गए।

अगले ही पल उन्होंने दो को चाकू लगते देखा।

तीसरा फौरन गली से बाहर भागा और पास की दीवार की ओट में हो गया।

तब तक वो दोनों नीचे गिर चुके थे।

"चलो।" बबूसा के होंठों से गुर्राहट निकली।

दोनों उठे और पलटकर गली में भाग निकले।

"तुम चाकू से निशाना बहुत अच्छा लगाते हो।" धरा भागते हुए कह उठी।

बबूसा ने कुछ नहीं कहा।

"चाकुओं पर लगा जहर कैसा है जो फौरन असर कर जाता है।" धरा बोली।

"बहुत घातक जहर है, खून में मिलते ही फौरन असर कर देता है।" बबूसा बोला।

दोनों तब तक गली से बाहर आ गए थे। शाम हो चुकी थी। गली पार करते ही उधर दूसरी तरफ की सड़क थी, जहां वाहन आ-जा रहे थे। वो

दोनों बिना रुके सड़क पार करने लगे। ऐसा होते ही कई वाहनों के ब्रेक लगे। टायर चीखे। हॉर्न पर हॉर्न बजने लगे। परंतु वो सड़क पार करते, इस तरह भागते रहे, जैसे मैदान हो।

सड़क पार कर गए। दूसरी तरफ मार्किट थी।

बबूसा ने ठिठककर गर्दन घुमाई और पीछे देखा।

परंतु उसे कोई नहीं दिखा।

"कितने हैं पीछे?" धरा ने जल्दी से पूछा।

"एक भी नहीं दिखा, परंतु वो पीछे हैं। वो पीछा नहीं छोड़ेंगे।"

"टैक्सी लेते हैं, उधर आगे टैक्सी स्टैंड है।"

दोनों तेजी से आगे बढ़ गए।

बबूसा बार-बार पीछे और आसपास देख रहा था।

"तुम चाकू पर लगाने के लिए जहर कहां से लाए?" धरा बोली।

"डोबू जाति के पहाड़ों से दूर जंगल में खास जाति के जहरीले सांपों को पकड़कर निकाला था।"

"तुम्हारे चाकू कम होते जा रहे हैं। खत्म हो गए तो कहां से और...।"

"बहुत हैं मेरे पास। चाकू भी जहर भी। मैं पूरी तैयारी के साथ निकला था डोबू जाति से। मैं जानता था कि कैसी भी समस्या आ सकती है। परंतु तब ये नहीं सोचा था कि डोबू जाति के योद्धाओं से ही मुकाबला करना पड़ेगा।"

"परंतु उनसे तो तुम मेरी वजह से लड़ रहे हो।"

"मुझे गुस्सा है उन पर।"

"क्या?"

"वो रानी ताशा की सहायता कर रहे हैं राजा देव के खिलाफ। रानी ताशा बहुत चालाक औरत है। उनकी सहायता से राजा देव को वो वापस सदूर ग्रह पर ले जा सकती है और राजा देव धोखे में फंस सकते हैं। सबसे ज्यादा चिंता तो मुझे इस बात की है कि राजा देव, रानी ताशा के रूप जाल में न फंस जाएं।"

"मैं तो बहुत उलझन में और मुसीबत में आ फंसी हूं जबसे डोबू जाति में गई हूं।"

बबूसा और धरा तेजी से आगे बढ़ते रहे।

"तुमने जहर और चाकू कहीं रखे हुए हैं?"

"हां। जिस होटल में मैं ठहरा था उसी के वेटर को अपना सामान संभाल के रखने को दिया था। मैंने उसे काफी पैसे भी दिए थे। उसके घर का पता और फोन नम्बर जानता हूं। जब लेना होगा, सामान मिल जाएगा मुझे।"

"तुमने अपना सामान उसे रखने को क्यों दिया?"

"क्योंकि मेरे लिए वो कीमती था। होटल के कमरे को मैंने कभी भी सुरक्षित नहीं माना। मुझे डर था कि डोबू जाति वाले मुझे ढूंढ़ते वहां तक आ सकते हैं। डोबू जाति से बाहर आकर मैंने रानी ताशा से विद्रोह किया है। ऐसे में रानी ताशा डोबू जाति के सरदार ओमारू को मेरे बारे में कैसा भी आदेश दे सकती है।"

"लेकिन ऐसा कुछ हुआ नहीं।" धरा बोली—"मेरी वजह से डोबू जाति से तुम्हारा झगड़ा खड़ा हो गया।"

बबूसा ने कुछ नहीं कहा। बातों के दौरान चलते हुए वो आस-पास और पीछे भी नजरें दौड़ा रहा था। शाम का वक्त था और सड़कों पर लोगों का आना-जाना बढ़ गया था।

"कोई दिखा?"

"नहीं। परंतु वो हमारे पास ही हैं। उन्हें कभी भी अपने से दूर मत समझना। वो अपना काम पूरा करके ही रहते हैं।"

"तो क्या वो मुझे मार देंगे?" धरा ने थके स्वर में कहा।

बबूसा चुप रहा।

टैक्सी स्टैंड आ गया। धरा ने वहां से टैक्सी ली और ड्राइवर को एक दूर की जगह बता दी कि वहां जाना है। दोनों पीछे बैठ गए। टैक्सी आगे बढ़ गई।

बबूसा की निगाह हर तरफ घूम रही थी और अंत में उसने टैक्सी स्टैंड के पास एक आदमी को खड़े देखा। वो डोबू जाति का था और टैक्सी को जाता देख रहा था। बबूसा के होंठ भिंच गए।

"सोहनलाल के घर भी जाना है।" धरा कह उठी।

"पहले इन लोगों से तो बच लें। ये काफी संख्या में हैं।" बबूसा ने सख्त स्वर में कहा।

"तुम मेरे लिए काफी परेशानी उठा रहे हो। है न?" धरा ने बबूसा के हाथ पर अपना हाथ रख दिया।

बबूसा ने धरा को देखा।

"तुम न होते तो अब तक उन्होंने मेरी जान ले ली होती। तुमने ही मुझे बचाए रखा हुआ है।"

"आगे पता नहीं क्या होगा।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला।

"तुम आगे भी मुझे बचाए रखोगे।"

"कोशिश करूंगा। परंतु वो हमेशा ही संख्या में बहुत होते हैं। वो कभी भी सफल हो सकते हैं।"

"मुझे यकीन है कि तुम उन्हें हरा दोगे।"

बबूसा ने अपने हाथ पर पड़े धरा के हाथ को देखते हुए कहा।
"तुम जब मुझे छूती हो तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।"
धरा ने हाथ को फौरन पीछे कर लिया।
"हाथ क्यों हटाया?"
"मैं नहीं चाहती कि इन हालातों में तुम्हारा ध्यान मेरी तरफ हो जाए।" धरा बोली।
"मैं तुम्हें कैसा लगता हूं?"
"पता नहीं।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा।
"क्या मतलब?"
"मैंने तुम्हारे बारे में ऐसा कुछ कभी भी नहीं सोचा। सोच ही नहीं पाई। सोचने का मौका ही नहीं मिला। वो लोग मेरी जान ले लेना चाहते हैं। मेरी मां की जान ले ली उन्होंने। चक्रवती साहब और प्रकाश को मेरे ही सामने मार दिया। इन सब बातों के होते हुए मैं तुम्हारे बारे में कभी भी सोच नहीं पाई।"
"ठीक कहती हो।" बबूसा गम्भीर था—"तुम बहुत तनाव में हो। मैं समझता हूं।"
"जब से डोबू जाति में मैंने कदम रखा है, मेरा चैन, आराम, परिवार सब खत्म हो गया।" धरा का स्वर भर्रा उठा—"मैं घर से बेघर हो गई। हर समय डरी रहती हूं कि मेरी जान चली जाएगी...।"
"मैं तुम्हें बचाए रखने की पूरी चेष्टा करूंगा।"
"कब तक बबूसा।" धरा ने थकी-सी सांस ली—"तुम भी कब तक मुझे बचाए रख सकोगे।"
"तुमने मेरा नाम लिया तो मुझे बहुत अच्छा लगा।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला।
धरा ने बबूसा को देखा, परंतु कहा कुछ नहीं।
टैक्सी सड़क पर ट्रैफिक के बीच दौड़े जा रही थी।
"तुमने शादी क्यों नहीं की?" बबूसा ने पूछा।
"कभी इस बारे में सोचा नहीं।" धरा बोली—"डोबू जाति में तो शादी नहीं होती। किसी से भी सम्बंध बनाया जाता है वहां।"
"हां ऐसा होता है। परंतु ये बात मुझे कभी भी पसंद नहीं आई।"
"क्यों?"
"सदूर ग्रह पर भी शादी होती है। तभी औरत मिलती है। वहां दो शादियां की जा सकती हैं।"
"नया जन्म लेने के बाद भी तुम्हें सदूर ग्रह के बारे में सब पता है?" धरा ने पूछा।

"महापंडित ने मेरा जन्म कराते समय मेरे दिमाग में ऐसा कुछ डाल दिया था कि मुझे इन बातों का ज्ञान रहे।"

"महापंडित जो भी है, बहुत समझदार है।"

"बहुत। वो विद्वान है। अक्लमंद है, परंतु अब उसकी बुद्धि ठीक से काम नहीं कर रही।"

"क्यों?"

"वो रानी ताशा का साथ दे रहा है। वो सब जानता है कि रानी ताशा ने कभी कैसा धोखा दिया था राजा देव को। परंतु वो रानी ताशा की हर बात मान रहा है और रानी ताशा, राजा देव को वापस सदूर ग्रह पर ले जाने का षड्यंत्र रच रही है। जबकि मैं चाहता हूं कि राजा देव इस बारे में स्वयं फैसला लें और वो फैसला तभी ले सकते हैं जब उन्हें बीती बातों का ज्ञान हो।"

"ज्ञान कैसे होगा?"

"जब वो रानी ताशा का चेहरा देखेंगे तो उस जन्म की बातें उन्हें याद आने लगेंगी।"

"ऐसा क्या है रानी ताशा के चेहरे में जो...?"

"महापंडित ने इस बार रानी ताशा का जन्म कराते समय उसके चेहरे पर ऐसा कुछ डाला था कि जिससे चेहरा देखते ही राजा देव को सब कुछ याद आ जाए। महापंडित को ज्ञान हो जाता है कि भविष्य में क्या होने वाला है, तभी...।

"तुम्हारी बातों पर तो देवराज चौहान भरोसा ही नहीं कर रहा।" धरा बोली।

"तभी तो समस्या आ रही है। अगर राजा देव ने मेरी बात का भरोसा कर लिया होता तो फिर रानी ताशा की राह कठिन हो जाती। छः महीने की चेष्टा के बाद मैं राजा देव की गंध पाने में कामयाब हो सका। समाधि के सहारे, महापंडित की दी शक्तियों के दम पर राजा देव से बात की, परंतु कोई फायदा नहीं हुआ। अब तो सोहनलाल ही मुझे राजा देव तक पहुंचा सकता है। राजा देव से मेरा सामना हो जाए तो शायद उन्हें अपनी बातों का विश्वास दिला सकूं।"

"रानी ताशा कब इस ग्रह पर पहुंचने वाली है?"

"कभी भी। रानी ताशा के इस ग्रह पर आने का समय हो चुका है।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"वो जानती है कि तुमने उनसे विद्रोह कर दिया है।"

"अवश्य। सरदार ओमारू ने यंत्रों के सहारे बात करके, उन्हें तभी बता दिया होगा। अब रानी ताशा, इस धरती पर आकर राजा देव पर

काबू पाने के लिए डोबू जाति के योद्धाओं का सहारा लेगी। बुरा वक्त आने वाला है। मुझे तो सबसे बड़ी चिंता ये है कि कहीं राजा देव पहले की तरह रानी ताशा के रूप के दीवाने होकर, सब कुछ भूल न बैठें। पहले भी राजा देव की दीवानगी का रानी ताशा ने खूब फायदा उठाया था। अब भी कहीं ऐसा न हो जाए।"

"क्या किया रानी ताशा ने?"

बबूसा ने धरा को देखा और कह उठा।

"इस बारे में तुम्हें कुछ नहीं बता सकता।"

"क्यों?"

"ये राजा देव का मामला है। उनकी बात मैं किसी को नहीं बता...।"

तभी टैक्सी जोरों से लड़खड़ाई। उन्हें तीव्र झटके लगे। ड्राइवर ने टैक्सी को कठिनता से संभाला और उसे रोका। पीछे आती कारें अगल-बगल से रास्ता बनाकर निकलने लगीं।

"साब जी।" टैक्सी ड्राइवर दरवाजा खोलता बोला—"लगता है टायर ब्रस्ट हो गया है।"

धरा ने घबराकर बबूसा को देखा।

बबूसा के चेहरे पर खतरनाक भाव दिखे। दरवाजा खोलते धरा से बोला।

"बाहर निकलो।"

बबूसा बाहर निकला तो ड्राइवर परेशान-सा कह उठा।

"साब जी। ये तो किसी ने टायर पर चाकू मारा है।"

बबूसा ने टैक्सी के पिछले टायर में छोटा-सा खंजर धंसे देखा। इस खंजर को वो बाखूबी पहचानता था।

'डोबू जाति के योद्धा आस-पास ही हैं।' बबूसा बड़बड़ा उठा।

दूसरी तरफ से धरा टैक्सी से बाहर निकली। दरवाजा बंद किया और टैक्सी के संग घूमकर दूसरी तरफ खड़े बबूसा की तरफ जाने लगी कि तभी उसे गर्दन के पिछले हिस्से पर, हवा की तीव्र लहर के टकराने का एहसास हुआ। वो तुरंत पलटी तो अगले ही पल ठक की आवाज उभरी और धरा ने जो देखा, उससे उसकी आंखें फैल गईं।

लोहे की कुछ भारी चौकोर पत्ती, टैक्सी के दरवाजे के ऊपर बॉडी में धंस चुकी थी और तेजी से हिलती कांप रही थी। धरा फौरन समझ गई कि बाल-बाल बची है वरना उसका गला कट चुका होता।

धरा का चेहरा दहशत से भर उठा।

"बबूसा।" वो गला फाड़कर चीखी और टैक्सी के गिर्द भागकर बबूसा के पास जा पहुंची।

"तुम इतना क्यों डर रही...।"
"वो—वो मेरा गला—गला कटते-कटते बचा है।" धरा कांपती-सी कह उठी।
बबूसा की निगाह फौरन आस-पास घूमी।
ड्राइवर न समझने वाली निगाहों से बबूसा को देख रहा था।
"ये खंजर।" तभी धरा की निगाह टायर में धंसे खंजर पर पड़ी—"ऐसे खंजर मैंने डोबू जाति के यहां देखे थे।"
"वो लोग हमारे पास ही हैं।" बबूसा गुर्रा उठा और धरा का हाथ थामते बोला—"आओ।"
बबूसा, सड़क से धरा को खींचता एक तरफ बढ़ गया। लोग अजीब-सी निगाहों से बबूसा और धरा को देख रहे थे। बबूसा की लैदर जैसी बनियान पर फंसे छोटे-छोटे चाकू सबको नजर आ रहे थे।
धरा ये बात महसूस करके कह उठी।
"तुम्हें कमीज पहन लेनी चाहिए। नाहक ही तुम लोगों की नजरों के आकर्षण का केंद्र बन रहे हो।"
"तुम सिर्फ अपनी जान की सोचो। लोगों को ये नहीं पता कि तुम कभी भी मारी जा सकती हो।"
सड़क के किनारे पर आते ही बबूसा, धरा का हाथ पकड़े भागने लगा।
धरा ने उसका पूरा साथ दिया।
उसी पल धरा के सिर पर हवा देता कुछ निकला और उसके कुछ आगे मौजूद एक व्यक्ति के सिर पर जा लगा। पलक झपकते ही उस व्यक्ति का आधा सिर कटकर अलग हो गया।
धरा के होंठों से चीख निकल गई।
आसपास के और लोगों ने भी ये नजारा देखा तो दहशत से चीखें निकल गईं उनकी।
वो व्यक्ति 'धड़ाम' से नीचे जा गिरा।
परंतु बबूसा रुका नहीं। धरा का हाथ थामे भागता चला गया।
धरा की हिम्मत जवाब देने लगी थी। उसे अपनी मौत दिखाई दे रही थी। वो समझ चुकी थी कि डोबू जाति के योद्धा उसकी जान लिए बिना मानने वाले नहीं। कब तक बच सकेगी वो।
अब शाम का अंधेरा फैलना शुरू हो गया था।
वे दोनों भागते जा रहे थे।
"तुम इन्हें मार क्यों नहीं देते?" धरा दौड़ते-दौड़ते कह उठी।
"वो संख्या में ज्यादा हैं। इस भीड़ भरी जगह पर उनका मुकाबला किया तो बेकार में कई लोग मरेंगे।" बबूसा ने कहा।

"दो बार मेरी गर्दन कटते-कटते बची है।"

"इतना खतरा तो रहेगा ही।"

आगे मोड़ आया।

दोनों मुड़े और एक आठ फुट चौड़ी गली में प्रवेश करते चले गए।

"रुकना मत।" बबूसा दौड़ते हुए कह उठा—"ये गली पार कर लो।"

गली दो सौ फुट लम्बी थी। वो पार की। तब तक अंधेरा काफी फैल चुका था। पार करते ही बबूसा दाईं तरफ की दीवार से सट कर गया। धरा ने भी ऐसा ही किया। वो जोरों से हांफ रही थी।

"अब—अब—वो यहां भी आ जाएंगे।" हांफते हुए धरा ने कहा।

"वो आ रहे हैं।" बबूसा गुर्राया—"तुम दीवार के साथ नीचे लेट जाओ।"

"क्यों?"

"ताकि बच सको। अंधेरे का फायदा हमें मिलेगा। नीचे लेटकर हिलना नहीं। इस तरह उन्हें पता नहीं चलेगा कि तुम भी यहीं हो। मैं उन्हें खत्म करने की चेष्टा करता हूं।" बबूसा ने सतर्क स्वर में कहा।

"तुम मुझे बचा लोगे?"

"हां। नीचे लेट जाओ वो आ रहे हैं।"

धरा फौरन दीवार के साथ नीचे जा लेटी। चेहरा इस तरफ कर लिया कि देख सके। इस वक्त वो नीचे लेटी अंधेरे का हिस्सा लगने लगी थी। बबूसा वैसे ही दीवार के साथ सटा खड़ा था और उसके दोनों हाथों में तीन-तीन नन्हे चाकू आ गए थे। चंद पल बीते कि गली में से भागते कदमों की आवाजें आने लगीं।

बबूसा सतर्क हो गया।

देखते-ही-देखते चार लोगों ने गली से बाहर कदम रखा।

बबूसा ने अपने दाएं हाथ को झटका दिया।

तीनों चाकू हाथ की उंगलियों से निकलकर उन चारों की तरफ लपके और तीन के जिस्म में जा धंसे। दो पल बीते कि वो तीनों एक-एक करके नीचे गिरने लगे।

तब तक चौथे की निगाह उस पर पड़ चुकी थी।

उसी पल बबूसा ने बाएं हाथ को झटका दिया तो उंगलियों में दबे तीनों के तीनों नन्हे चाकू हवा में उसकी तरफ लपके और उसके शरीर में प्रवेश कर गए। अब तक गली से और भागते कदमों की आवाजें आने लगीं।

चौथा भी नीचे जा गिरा था।

बबूसा ने अपनी जगह छोड़ी और गली के मुहाने पर जा खड़ा हुआ।

गली से पांच-छः लोग भागकर आते दिखे। बेशक अंधेरा था परंतु उन्होंने बबूसा को पहचान लिया था। उनमें से दो तो रुके नहीं, भागते आते सीधा बबूसा से आ टकराए। बबूसा के पांव उखड़ गए। वो पीछे को नीचे जा गिरा। वो दोनों भी गिरे।

परंतु तीनों उसी पल खड़े हो गए।

बबूसा एक पर झपटा और उसके सिर के बाल पकड़कर, गले पर कैरेट चॉप मारी तो कड़ाक की आवाज उभरी। उसे छोड़ा तो वो नीचे जा गिरा। तब तक दूसरा खंजर हाथ में थामे बबूसा पर झपट चुका था। बबूसा ने उसका खंजर वाला हाथ पकड़ा और उसके पेट की तरफ घुमा दिया।

वो खंजर स्वयं उस व्यक्ति के ही पेट में जा घुसा।

बाकी के पांच जो अभी गली के किनारे पर ही खड़े थे, वो अपने-अपने हथियार निकालकर खतरनाक अंदाज में बबूसा की तरफ बढ़ने लगे।

बबूसा शांत-सा खड़ा रहा।

तभी एक ने लोहे की चौकोर पत्ती उस पर फेंकी। उसके हाथ की हरकत देखते ही बबूसा को पता चल गया था कि वो क्या करने जा रहा है। बबूसा ने फौरन खुद को नीचे गिराया और उसी फुर्ती से उठकर खड़ा हो गया। लोहे की वो चौकोर पत्ती ऊपर से निकल चुकी थी। इसके साथ ही बबूसा चौंका।

उसने धरा को एकाएक खड़े होकर, एक तरफ भागते देखा और उसके पीछे दौड़ते एक आदमी को देखा तो बबूसा समझ गया कि धरा देखी जा चुकी है। उसकी जान खतरे में है। एकाएक वो खूंखारता से भर गया। पलक झपकते ही उसके हाथों में नन्हे चाकू चमकते और सामने वालों को लगते रहे।

वो पांचों नीचे गिर चुके थे।

बबूसा ने एक की कमीज उतारी और उसे पहनते हुए तेजी से उस तरफ दौड़ पड़ा जिस तरफ धरा और वो आदमी दौड़े थे। बबूसा हर हाल में धरा को बचा लेना चाहता था।

तभी पीछे से बबूसा की पीठ पर कोई आ गिरा।

बबूसा जोरों से लड़खड़ाया। परंतु संभल नहीं पाया और नीचे जा गिरा। पीठ पर पड़े आदमी ने उसकी गर्दन पर बांह लपेट ली और उसे जोर से भींच लिया।

बबूसा के होंठों से गुर्राहट निकली और तेजी से करवट ले ली। उसकी पीठ पर पड़ा आदमी उसके नीचे दब गया, बांह कुछ ढीली हुई तो बबूसा

ने उसकी बांह को अलग किया और छिटककर लुढ़कता चला गया और फुर्ती से उठ खड़ा हुआ। वो आदमी भी तब तक खड़ा हो चुका था।

बबूसा ने इस अंधेरे में भी उसे पहचाना, वो डोबू जाति का योद्धा था।

एकाएक बबूसा ने दाएं हाथ की दो लम्बी उंगलियां किसी खंजर की भांति सीधी की कि तभी सामने वाला व्यक्ति बहुत तेजी के साथ उस पर झपट पड़ा। बबूसा ने खंजर के समान तनी उंगलियों को खास अंदाज में टेड़ा किया और हाथ को आगे कर दिया।

अगले ही पल वो व्यक्ति करीब आकर चीख उठा।

बबूसा की खंजर समान तनी उंगलियां उसके पेट के भीतर तक धंस गईं। तभी बबूसा ने उंगलियों को मरोड़ा और पूरी ताकत के साथ वापस खींच लिया।

वो व्यक्ति पुनः गला फाड़कर चीख उठा।

बबूसा के हाथ में मांस का बड़ा-सा टुकड़ा, उसके पेट का आ गया था। वो पेट थामे चीखता हुआ नीचे गिरा और तड़पने लगा। बबूसा ने हाथ में पकड़े मांस के टुकड़े को फेंका और तेजी से उस तरफ भागा, जिधर धरा गई थी। हर तरफ अंधेरा फैला था। वहां आते-जाते लोगों ने चीखें सुनी थीं, परंतु समझ नहीं पाए कि बात क्या है, तब तक बबूसा वहां से जा चुका था। बबूसा भागता रहा। भागता रहा।

धरा की चिंता थी उसे।

उसने देखा था कि उसके सामने डोबू जाति का योद्धा उसके पीछे भागा था।

धरा खतरे में थी।

बबूसा वहां, आस-पास की जगहों में दौड़ता रहा। धरा को ढूंढ़ता रहा। भरपूर कोशिश की बबूसा ने धरा को पा लेने की। परंतु धरा कहीं भी नहीं दिखी। पसीने से भरे बबूसा ने ठिठककर धरा की गंध का एहसास पाने के लिए तेज-तेज सांसें लीं, परंतु सफलता नहीं मिली। बबूसा के होंठों से गुर्राहट निकली। धरा का इस तरह से हाथ से निकल जाना, उसकी हार थी और उसे हार पसंद नहीं थी। उसे लगा कि धरा को उसने हमेशा के लिए खो दिया है।

▭ ▭

धरा दौड़ती जा रही थी।

सांस फूल चुकी थी। टांगें कांप रही थीं। सिर से पसीना निकलकर चेहरे पर लकीरें बनकर बह रहा था। शरीर में पसीने के दौड़ते रहने का एहसास हो रहा था, परंतु वो भागे जा रही थी। वो जानती थी कि उसके पीछे मौत है। डोबू जाति का योद्धा उसकी जान लेने के लिए उसके पीछे

है। बबूसा का उसे बहुत सहारा था। परंतु बबूसा का साथ छूट चुका था। उस वक्त वो न भागती तो तभी पीछे आने वाले ने उसकी जान ले लेनी थी।

भागते-भागते धरा पुनः उसी सड़क पर आ गई थी, जहां वाहन तेजी से आ-जा रहे थे। वो बदहवास-सी कारों-गाड़ियों के साथ-साथ सड़क पर तेजी से भागने लगी। उसके पास इतना भी वक्त नहीं था कि एक बार गर्दन घुमाकर पीछे देख पाती कि उसका दुश्मन उससे कितनी दूरी पर है।

तभी धरा एक कार के नीचे आते-आते बची।

कार के ब्रेक चीखे। धरा लड़खड़ाई। कार रुक गई।

धरा को और तो कुछ समझ नहीं आया वो पागलों की तरह पलटी और कार तो दरवाजा खोलती, ड्राइवर की बगल वाली सीट पर बैठती तेज स्वर में बोली।

"भगवान के लिए कार दौड़ा दो। वो मेरी जान लेना चाहता है।" इसके साथ ही दरवाजा बंद कर दिया।

ड्राइविंग सीट पर जगमोहन बैठा था।

"मैं तुम्हारे पीछे आते आदमी को पहले ही देख चुका हूं।" जगमोहन ने कहा और कार दौड़ा दी।

उसी पल तेज आवाज के साथ, कार का पिछला शीशा तोड़ती पत्ती भीतर आई और जगमोहन के सिर के ऊपर कार की छत में आ धंसी। लगा जैसे कार में भूचाल आ गया हो।

"ये—ये क्या है?"

धरा समझ सकती थी कि वो क्या है।

"कार—कार मत रोकना।" धरा ने कांपते स्वर में कहा।

कार की स्पीड कम नहीं की थी जगमोहन ने।

तभी कार के पीछे बॉडी पर किसी चीज के लगने का एहसास हुआ।

"वो आदमी क्या फेंक रहा है?" जगमोहन ने पूछा।

"कार भगाते रहो।" धरा हांफ रही थी।

जगमोहन के होंठ भिंच चुके थे। वो मामले की गम्भीरता को समझ गया था। समझ चुका था कि अगर ये लड़की उसकी कार में न बैठी होती तो यकीनन जान गंवा बैठी होती।

"कौन हो तुम?" जगमोहन बोला—"वो तुम्हारी जान क्यों लेना चाहता है?"

धरा गहरी-गहरी सांसें लेती रही। बोली कुछ नहीं।

जगमोहन समझ गया कि लड़की डरी हुई है।

ट्रैफिक के बीच जगमोहन की कार दौड़ती रही। अब पीछे उसकी

कार पर कुछ नहीं हुआ था, लगता था जैसे पीछे आने वाला, काफी पीछे छूट चुका है।

धरा अब धीरे-धीरे संयत होने लगी थी। वो सीधी बैठी। जगमोहन को देखा, फिर पीछे की तरफ नजर मारी, तो पीछे का शीशा काफी सारा टूटा पाया। पीछे कारों, गाड़ियों की हैडलाइटें चमक रही थीं। इसके अलावा धरा को कुछ नहीं दिखा। वो पसीने से भीगी हुई थी अभी तक।

"थैंक्स।" धरा फीके स्वर में बोली—"आपने मुझे बचा लिया। वो मुझे मार देना चाहता था।"

"कौन था वो?"

चंद पलों की चुप्पी के बाद धरा ने कांपते स्वर में कहा।

"मैं नहीं जानती वो कौन था परंतु कुछ लोग मेरी जान के पीछे पड़े हैं।"

"तुम्हें किसी पुलिस स्टेशन के सामने उतार दूं।" जगमोहन बोला।

"पुलिस?" नहीं पुलिस कुछ नहीं कर पाएगी। उन लोगों को पकड़ना नामुमकिन है। उनका कोई पता-ठिकाना नहीं। वो यहां के लोग नहीं हैं। वो किसी से डरते नहीं हैं और खतरनाक हैं। सुनिए—मैं मुसीबत में हूं। इस वक्त मेरे पास रहने की कोई जगह नहीं है। क्या आप रात भर के लिए मुझे रहने की जगह दे सकते हैं?"

"सॉरी मैडम।" जगमोहन बोला—"इससे ज्यादा मैं आपकी सहायता नहीं कर सकता।"

"ओह।" धरा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

जगमोहन ने अपने सिर के ऊपर, कार की छत में धंसी चीज पर निगाह मारी। वो आठ इंच चौड़ी और आठ इंच लम्बी चौकोर पत्ती जैसी कोई चीज लगी, जो कि आधी छत में धंसी हुई थी। जगमोहन समझ नहीं पाया कि वो क्या है और अपना ध्यान कार ड्राइविंग पर लगाते हुए कहा।

"आपको कहां उतारूं?"

"दूर। जितनी दूर आप मुझे उतार दो, उतना ही ठीक रहेगा।" धरा ने कहा।

"मेरा घर पास में ही है। आपको यहीं उतारूंगा।"

धरा ने सिर हिला दिया।

कुछ देर बाद जगमोहन ने कार रोकी तो धरा दरवाजा खोलकर बाहर निकल गई। दरवाजा बंद किया। भयभीत निगाहों से आसपास देखा और जगमोहन से बोली।

"थैंक्स।"

तभी जगमोहन ने उसकी तरफ पांच सौ के कुछ नोट बढ़ाते हुए कहा।

"ये रख लो। इनसे तुम किसी होटल में रात भर के लिए कमरा ले सकती हो।"

धरा ने नोट थाम लिए तो जगमोहन कार आगे बढ़ाता, लेता चला गया।

धरा ने परेशान निगाहों से आसपास देखा।

अब पीछे कोई नहीं था। परंतु वो जानती थी कि डोबू जाति के योद्धाओं का कुछ पता नहीं चलता कि वो कब करीब आ जाएं। धरा तेजी से एक तरफ बढ़ती चली गई। उसे बबूसा का ध्यान आया कि वो कहां होगा? क्या उसे ढूंढ़ रहा होगा? उसे पास न पाकर वो क्या सोच रहा होगा? उसे जरूर ढूंढ़ा होगा। धरा तेजी से आगे बढ़ी जा रही थी। कपड़े अभी भी पसीने से भीगे हुए थे। परंतु वो सोच रही थी कि रात उसने कहां पर बितानी है। क्या किसी परिचित के घर चला जाए या किसी होटल में?

परिचित के घर जाने से वो उसकी जान भी खतरे में डाल सकती है। डोबू जाति के योद्धाओं का कोई भरोसा नहीं कि वो कब, उसे ढूंढ़ निकालें। ऐसे में उसके साथ जो लोग होंगे, वो उन्हें भी खत्म कर देंगे। तो क्या उसे किसी होटल में चले जाना चाहिए। इन्हीं सोचों में उलझी वो फुटपाथ पर आगे बढ़ी जा रही थी। रह-रहकर उसे बबूसा याद आ रहा था कि वो पास था तो बहुत निश्चिंत थी। भगवान करे उसे फिर से बबूसा मिल जाए। धरा की आंखों में आंसू चमक उठे कि वो कितनी बेबस हो गई है। मां नहीं रही। घर पर जाने में डर लग रहा था कि वहां उसके इंतजार में डोबू जाति के योद्धा मौजूद न हों। उसके लिए तो डोबू जाति श्राप बन गई है। उसका चैन-आराम सब कुछ छीन लिया है उन लोगों ने।

तभी सड़क किनारे वाहनों में फंसी एक टैक्सी उसके पास आ रुकी।

वो ठिठकी और यूं ही टैक्सी को देखने लगी।

परंतु टैक्सी से जो निकला, उसे देखकर उसके होश उड़ गए।

वो सोलाम था।

सोलाम टैक्सी से निकला। दरवाजा बंद किया तो टैक्सी आगे बढ़ गई। और धरा उस पल पूरी ताकत से भाग खड़ी हुई। उसकी सांस पुनः फूलने लगी। पीछे से आती कदमों की आहट मौत के डंके के समान उसके कानों में पड़ रही थी। बहुत तेजी से भाग रही थी धरा। मौत सिर पर थी। उसे जोगाराम की बात याद आ गई कि डोबू जाति के योद्धा भूतों की तरह अचानक ही सामने प्रकट हो जाते हैं और जान खत्म हो जाती है। जोगाराम ने उसे कितना रोका था कि वो डोबू जाति की तरफ न जाए। परंतु तब उसने उसकी एक बात भी नहीं मानी थी और नतीजा सामने था। अपनी जान बचाने को भागी फिर रही थी।

अब फिर मौत का परकाला बना सोलाम पीछे आ गया था।

आगे फुटपाथ खत्म हुआ और बाईं तरफ मोड़ आ गया। वो तीर की तरह भागती बाईं तरफ मुड़ती चली गई। भागे जा रही थी वो कि बस उसे भागते ही रहना है। इधर का रास्ता सुनसान था। बहुत कम लोग आ-जा रहे थे। बहुत दूर सामने फ्लैट बने दिख रहे थे। उनकी लाइटें जल रही थीं और इन हालातों में धरा सोच रही थी कि उन फ्लैटों में बैठे लोग कितने सुखी हैं। कितने खुश हैं। वो भी कभी ऐसे ही अपने घर में मां के साथ चैन से रहा करती थी।

पीछे से कानों में पड़ने वाली कदमों की आवाज अब तेज हो गई थी।

सोलाम उसके करीब आ पहुंचा था।

धरा ने पागलों की तरह और भी तेज भागने की चेष्टा की।

परंतु हिम्मत जवाब दे गई। और तेज न भाग सकी।

सोलाम सिर पर आ पहुंचा।

अब धरा में मौत से बचकर भागने का दम नहीं बचा था। वो रुक गई। ठिठक गई। हांफते हुए नीचे बैठती चली गई। मुंह खोले सांसें ले रही थी। सोलाम उसके पास आकर रुक गया था। धरा ने खुद को हालातों के हवाले कर दिया था। मौत से बचकर भागने की ताकत खत्म हो चुकी थी। वो इन लोगों का मुकाबला नहीं कर सकती थी।

वहीं बैठी रही। हांफती रही। सांसें लेती रही। सोलाम की तरफ से कोई वार होने का इंतजार करती रही।

दो मिनट बीत जाने पर भी सोलाम की तरफ से कोई वार नहीं हुआ।

धरा ने गहरी-गहरी सांसें लेते सिर उठाकर सोलाम को देखा। यहां अंधेरा था। सोलाम का चेहरा स्पष्ट तो नहीं दिखा परंतु वो दिखा। वो उसे ही देख रहा था।

"खड़ी हो जा लड़की।" सोलाम का गम्भीर स्वर उसके कानों में पड़ा।

धरा का शरीर कांपा और वो खड़ी होने की चेष्टा करने लगी। आंखों में आंसू चमक उठे। मौत सामने खड़ी पाकर, उसने खुद को मौत के हवाले कर दिया था। सोलाम खड़ा उसे देखता रहा, परंतु उसने उसके खड़े होने में कोई सहायता नहीं की। धरा खड़ी हो गई। परंतु उसकी टांगें कांप रही थीं। बदन में रह-रहकर ठंडी सिहरन दौड़ रही थी।

धरा ने आंसुओं भरी निगाहों से सोलाम को देखा।

सोलाम एकटक उसे देख रहा था।

"बबूसा से तेरा क्या रिश्ता है लड़की?" सोलाम ने गम्भीर स्वर में पूछा।

धरा, सोलाम को देखती रही।

"जवाब दे। मैं किसी से फालतू बात नहीं करता लेकिन तेरे से करनी पड़ रही है, क्या रिश्ता है तेरा बबूसा से?"

"क-कुछ नहीं।" धरा के होंठों से खरखराता स्वर निकला।

"सच बोल?"

"सच कहा है मैंने।" धरा की आवाज में फीकापन और कम्पन भरा था।

"तू हमारे पहाड़ों वाली जगह में आई, क्या उससे पहले तू बबूसा को जानती थी?" सोलाम ने पूछा।

"नहीं।"

"उसके बाद तू बबूसा से मिली?"

"हां।"

"कहां मिली?"

"मुम्बई में, उसने ही मुझे ढूंढ़ निकाला था।" धरा की आवाज कांप रही थी।

"बबूसा से तेरा क्या रिश्ता है?"

"क-कुछ नहीं।"

"वो तेरे को क्यों बचा रहा है?" सोलाम ने पूछा।

"पता नहीं। बबूसा कहता है कि डोबू जाति उसे पसंद नहीं, इसलिए...।"

"तेरे कारण उसने डोबू जाति से दुश्मनी मोल ली है, ये बहुत बड़ी बात है हमारे लिए भी और बबूसा के लिए भी।" सोलाम ने गम्भीर स्वर में कहा—"तेरे में उसने ऐसा क्या देखा, जो उसने ऐसा कर डाला?"

"म-मैं नहीं जानती।"

"तेरे को प्यार है बबूसा से?"

"प्यार—बबूसा से—नहीं। सिर्फ पहचान है।" धरा ने सूखे स्वर में कहा।

"बबूसा तेरे से प्यार करता है?"

"न-नहीं। ऐसा उसने कभी नहीं कहा।" धरा बोली।

सोलाम कुछ पल धरा को देखता रहा फिर कह उठा।

"वो तेरे से प्यार करता है लड़की। तेरी खातिर उसने डोबू जाति से दुश्मनी ले ली। हमारे योद्धाओं को मारने लगा कि तू बची रहे। बबूसा एक योद्धा है और योद्धा इसी तरह प्यार जताते हैं। योद्धा कभी भी अपने मुंह से प्यार का इजहार नहीं करते। हर इंसान का प्यार दिखाने का अपना ढंग होता है, परंतु डोबू जाति के योद्धा प्यार का इजहार भी अपनी युद्ध कला के द्वारा करते हैं। ये बबूसा का प्यार ही है तेरे लिए कि वो तेरे को हर

हाल में बचाए रखना चाहता है। मैं तो कहूंगा कि ये सिर्फ उसका पागलपन है। डोबू जाति से दुश्मनी नहीं लेनी चाहिए थी उसे। माना कि वो श्रेष्ठ योद्धा है। परंतु जाति की उसे इज्जत करनी चाहिए। परंतु तेरे लिए उसने जाति से भी झगड़ा मोल ले लिया।" सोलाम गम्भीर था।

धरा, सोलाम को देखने लगी। उसकी बातों का मतलब समझने लगी।

सोलाम एकटक उसे देखे जा रहा था।

धरा अब सोचने लगी कि आखिर सोलाम चाहता क्या है?

"बबूसा कहां है?" धरा ने कांपते स्वर में पूछा।

"वो जहां भी होगा, जाति के योद्धाओं की नजर में होगा।" सोलाम ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैंने बबूसा के साथ बचपन से लेकर जवानी तक का वक्त बिताया है दोस्तों की तरह। युद्ध कला हमने एक साथ सीखी। मुझे वो हमेशा पसंद आया। परंतु अब अचानक ही जाति छोड़ने के बाद उसे जाने क्या हो गया है। पर मैं तेरे को बबूसा के नाम पर छोड़ता हूं।"

"क्या?" धरा को जैसे कुछ समझ न आया हो।

"बबूसा तुझे पसंद करता है तो मैं उसकी पसंद की जान नहीं लूंगा। ये सिर्फ मेरा ही फैसला है और मेरे तक ही रहेगा। बाकी के योद्धाओं से तुम्हें बचना होगा। वो तुम्हें मार सकते हैं। तूने बहुत बड़ी भूल कर दी, डोबू जाति के भीतर पांव रखकर। जो भी हो, तू ज्यादा देर नहीं बची रह सकती।" सोलाम का स्वर कठोर हो गया।

"तु-तुम मुझे नहीं मारोगे?"

"बबूसा की खातिर तुझे नहीं मारूंगा। वो तुम्हें प्यार करता है, तभी तो तुम्हें बचा रहा है।"

धरा ने सोचा। परंतु उसे कहीं से भी नहीं लगा कि बबूसा उसे प्यार करता है, या उसके मन में बबूसा के लिए ऐसी भावनाएं उठीं। परंतु सोलाम का कहना है कि एक योद्धा ऐसे ही अपना प्यार दिखाता है।

धरा ठीक से सोच नहीं पाई।

एकाएक सोलाम पलटा और तेजी से एक तरफ बढ़ता चला गया।

धरा उसे जाते देखती रही और वो अंधेरे में निगाहों से ओझल हो गया।

वो ठगी-सी खड़ी रह गई। उसे यकीन नहीं आया कि वो बच गई है। उसे छोड़ दिया सोलाम ने। परंतु सोलाम की ये बात भी उसे याद आई कि ये उसका अपना फैसला है। दूसरे योद्धा उसकी जान ले सकते हैं। खतरा अभी भी सिर पर था।

☐ ☐

देवराज चौहान, जगमोहन और सोहनलाल ने कार में फंसी लोहे की चौकोर पत्तियों का निरीक्षण किया। कार इस वक्त बंगले के पोर्च में खड़ी थी और जगमोहन लड़की (धरा) से वास्ता रखती सारी बात बता चुका था। एक पत्ती कार का पिछला शीशा तोड़कर ड्राइवर के सिर के ऊपर कार की छत में धंसी थी और दूसरी पत्ती कार की डिग्गी में आधी धंसी हुई थी। तभी देवराज चौहान पीछे हटता बोला।

"इन पत्तियों को हाथ मत लगाओ।"

"क्यों?" सोहनलाल ने कहा।

"ये ब्लेड की धार की तरह तेज है। हाथ लगते ही हाथ कट जाएगा। इसे कपड़े से पकड़कर, खींचकर निकालना होगा।"

"परंतु ये कैसा हथियार है।" जगमोहन बोला—"ये सब मैंने पहले तो नहीं देखा। लोग किसी की जान लेने के लिए चाकू या रिवॉल्वर का इस्तेमाल करते हैं परंतु ये पत्ती मुझे समझ नहीं आ रही।"

देवराज चौहान बंगले के भीतर गया और एक मोटी पैंट ले आया। उसी पैंट के कपड़े से पत्तियों को पकड़ा और खींचकर बाहर निकाला। दो पत्तियों को बाहर निकालने में काफी वक्त लगा। पैंट के कपड़े के ऊपर रखकर ही देवराज चौहान ने पत्ती का निरीक्षण किया जो आठ इंच चौड़ी, आठ इंच लम्बी थी।

"इसे खास लोग ही इस्तेमाल कर सकते हैं।" निरीक्षण करने के बाद देवराज चौहान ने कहा।

"खास लोग?"

"ऐसे लोग जिन्होंने लम्बे समय तक इन हथियार जैसी पत्तियों को फेंकने की प्रेक्टिस की हो। कोई अनाड़ी इन्हें हाथ में लेगा तो अपना ही हाथ कटवा बैठेगा।" देवराज चौहान ने पत्ती को देखते गम्भीर स्वर में कहा—"ये बेहद घातक हथियार है। चारों तरफ से इसकी धार ब्लेड की तरह पैनी है और धार के बाद ये पत्ती कुछ मोटी होती चली जाती है। बीच का हिस्सा सबसे ज्यादा मोटा है, इसलिए कि जब इसे फेंका जाए तो ये आसानी से, तेजी से अपने लक्ष्य की तरफ बढ़े। इसका वजन ढाई-तीन सौ ग्राम के करीब है। इस जैसा खतरनाक हथियार मैंने पहले कभी नहीं देखा। कोई एक्सपर्ट गर्दन का निशाना लेकर फेंके तो गर्दन फौरन कट जाएगी। जाहिर है कि इसे इस्तेमाल करने वाले एक्सपर्ट ही होंगे।"

"जिस तरह ये पत्ती कार के भीतर, मेरे सिर के ऊपर, कार की छत में आ धंसी, उससे तो ये ही लगता है कि इसे फेंकने वाला बेहद एक्सपर्ट रहा होगा। तब मैं ध्यान नहीं दे पाया था कि ये कैसे हथियार हैं। परंतु

अब सोचता हूं कि अगर ये पत्ती तीन-चार इंच नीचे होती तो मेरा सिर, मेरी गर्दन कट जानी थी।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला।

"वो लड़की किसी बड़े खतरे में फंसी थी।" सोहनलाल ने कहा।

"मैं उसकी ज्यादा सहायता करने की स्थिति में नहीं था। वो मुझे कुछ नहीं बता रही थी कि मामला क्या है। पीछे लगे लोग कौन हैं। वो आंधी की तरह मुझसे मिली और तूफान की तरह चली गई।" जगमोहन ने कहा—"अगर वो मुझे कुछ बताती तो हो सकता था मैं उसकी ज्यादा सहायता कर पाता।"

"उसके पीछे खतरनाक लोग थे। क्या पता वो जिंदा भी नहीं बची हो।" देवराज चौहान बोला।

"इस चौकोर पत्ती जैसे हथियार को देखकर तो लगता है कि शातिर लोग उसके पीछे थे।"

"इस हथियार के इस्तेमाल की कला आनी चाहिए तो ये जबर्दस्त हथियार है। जब इसे शिकार पर फेंका जाता है कोई आवाज नहीं होती। ये हवा में होती होगी तो अपनी रफ्तार की वजह से किसी को दिखाई नहीं देगी। निशाना सही होगा तो दो पलों में शिकार का काम कर देगी। सिर पर लगे, गर्दन पर लगे या शरीर के किसी हिस्से पर लगे, सब कुछ काटकर रख देगी।"

"मान गए इस हथियार को।" सोहनलाल गहरी सांस लेकर बोला।

"तुम कल कार को ठीक करा लेना। पीछे का शीशा भी नया लगवा लेना।" देवराज चौहान ने कहा—"वो वक्त निकल चुका है परंतु मुसीबत में फंसी उस लड़की की तुम्हें सहायता करनी चाहिए थी।"

"वो कुछ नहीं बता रही थी कि मामला क्या है।" जगमोहन बोला।

"तब भी उसकी सहायता करनी चाहिए थी। उसकी जान खतरे में थी। वो भाग रही थी। डरी हुई थी तो ऐसे में वो तुम्हें क्या बताती कि क्या मामला है। पहले उसे सुरक्षित कहीं पर पहुंचाते, तब इस बारे में उससे बात करते।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"भविष्य के लिए याद रखो कि पहले इंसान को मुसीबत से निकालो फिर उससे सवाल करो।"

▭ ▭

बबूसा रात 12.30 बजे थका-हारा एक होटल में पहुंचा और कमरा ले लिया। अब तक वो धरा को ढूंढ़ता रहा था। परंतु धरा की कोई खबर उसे नहीं मिल पाई थी! मन-ही-मन उसे यकीन हो चुका था कि डोबू जाति के योद्धाओं ने उसे जिंदा नहीं छोड़ा होगा। वो उनके हाथों से नहीं बच सकी होगी। रह-रहकर धरा का चेहरा उसकी आंखों के सामने आ

रहा था। उसने धरा को सलामत रखने की जिम्मेवारी ली थी, परंतु वो ये भी जानता था कि धरा हर वक्त खतरे में रहेगी। डोबू जाति के योद्धा कहीं से भी उस पर सफल वार कर सकते हैं। धरा के साथ होने का उसे हौसला था कि राजा देव की तलाश में वो उसकी मदद करेगी।

परंतु धरा का साथ अब खत्म हो चुका था।

बबूसा गुस्से में था परंतु दुख में भी भरा था।

होटल में सबसे पहले वो नहाया फिर अंडरवियर पहने कमरे के एक कोने में बैठकर समाधि लगाने का प्रयत्न करने लगा। वो राजा देव से बात कर लेना चाहता था।

▭ ▭

रात का एक बज रहा था।

जगमोहन और सोहनलाल ताश खेल रहे थे। पास ही टी.वी. चल रहा था। जब उसे धरा मिली थी तब वो होटल से खाना पैक कराकर ला रहा था। तीनों खाना खा चुके थे। देवराज चौहान अपने बेडरूम में था। सोहनलाल घर नहीं गया था कि बबूसा, देवराज चौहान को पूछने उसके पास फिर से आ सकता है। सोहनलाल को बबूसा खतरनाक लगा था, इसलिए उसके सामने नहीं पड़ना चाहता था। जो बात टल जाए वो ही अच्छी।

देवराज चौहान घंटा भर पहले बेड पर लेटा था और नींद में डूबने के प्रयत्न में था। इन दिनों कोई काम हाथ में नहीं लिया हुआ था। जगमोहन वो सब कामों को देखने में व्यस्त था जहां-जहां उनका पैसा लगा था। कुछ दिन पहले ही मॉरीशस से लौटे थे वहां शानू और सारंगल का मामला निबटाया था। साथ में रवि गावड़े, अतुल और खान भी थे। (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें **अनिल मोहन** का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'मुखबिर'**।)

और जब देवराज चौहान आधा नींद में डूब चुका था तो उसे कमरे में किसी के चलने की सरसराहट आई। देवराज चौहान ने फौरन आंखें खोलीं। आसपास देखा। नाइट बल्ब की रोशनी में उसे कोई नहीं दिखा। अगले ही पल देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ गईं। होंठो से निकला।

"बबूसा?"

"हां राजा देव।" बबूसा का धीमा स्वर कानों में पड़ा।

देवराज चौहान ने हाथ बढ़ाकर लाइट ऑन कर दी।

"मेरे पास बार-बार आने का कोई फायदा नहीं बबूसा।" देवराज चौहान ने कहा।

"क्यों राजा देव?"

"मुझे तुम्हारी कही बातों का भरोसा नहीं। तुम पर भी यकीन नहीं कि तुम मुझसे क्यों मिलना चाहते हो?"

"मैं आपका सेवक हूं राजा देव। मेरे इस जन्म में तो आपके वो सारे गुण मुझमें डाले गए हैं जो तब आप में थे, जब आप राजा देव हुआ करते थे। सिर्फ मेरा चेहरा ही आपसे अलग है।"

"मैं तुम्हारी किसी बात पर यकीन नहीं करूंगा।"

"ये तो आप जिद कर रहे हैं राजा देव। एक बार मेरा भरोसा करके तो देखिए।"

"तुमने ही कहा था कि तुम्हारा जन्म महापंडित ने रानी ताशा के कहने पर इसलिए कराया है कि मेरा मुकाबला कर सको।"

"हां राजा देव। परंतु मैंने रानी ताशा से अब विद्रोह कर दिया है।"

"क्या भरोसा कि तुम कहीं मुझे मारने के लिए तो नहीं ढूंढ़ रहे मुझे।"

"इतना अविश्वास बबूसा पर राजा देव।" आवाज कानों में पड़ी।

देवराज चौहान चुप रहा।

"परंतु राजा देव। आप तो किसी से डरने वाले नहीं हैं। मेरे से भी डरकर नहीं छिप सकते।"

"तो?"

"मुझे मिलने का मौका दीजिए। सच-झूठ आपके सामने आ जाएगा।"

"मैं किसी नई मुसीबत को अपने गले नहीं डालना...।"

"मुसीबत में तो आप पड़ने वाले हैं। रानी ताशा कभी भी यहां पहुंच सकती है। सिर्फ मैं ही आपका सच्चा सेवक हूं जो इस मौके पर आपकी सहायता कर सकता हूं। आपके लिए तो मैंने रानी ताशा से विद्रोह किया है।"

"मैं तुम्हारी इन बातों पर विश्वास नहीं करता।"

"राजा देव।" बबूसा की आवाज में गम्भीरता आ गई—"मुझे डर है कि रानी ताशा के सामने पड़ते ही आप उसकी खूबसूरती को देखकर, अपने होश न गंवा बैठें। जबकि मैं आपको रानी ताशा का सच दिखाना चाहता हूं। वो वक्त याद कराना चाहता हूं जब रानी ताशा ने आपको धोखा देकर ग्रह से बाहर फेंक दिया था। वो...।"

"तुमने कहा था कि रानी ताशा का चेहरा देखते ही मुझे वो वक्त याद आने लगेगा।"

"जी राजा देव। मैंने ऐसा ही कहा था।"

"तो फिर चिंता क्यों करते हो। रानी ताशा को देखने के बाद...।"

"और आप पहले की तरह रानी ताशा की खूबसूरती में गुम हो गए तो याद आने का कोई फायदा नहीं होगा। आपके दिल और दिमाग पर

रानी ताशा सवार हो चुकी होगी। उसे पाने के लिए उसकी हर बात को नजरअंदाज कर देंगे। जबकि मैं आपको पूरे होश में रखना चाहता हूं, इसलिए आपके पास आ जाना चाहता हूं। मैं पास रहूंगा तो आपको होश में रखने का प्रयत्न अवश्य करूंगा। पहले की तरह अब भी आपको ठीक-गलत बताता रहूंगा। मेरे पास रहने पर रानी ताशा को ज्यादा चालाकियों का मौका नहीं मिल सकेगा। मेरे सामने रानी ताशा सतर्क रहेगी। क्योंकि मैं उसकी असलियत से वाकिफ हूं। इस बात को रानी ताशा भी जानती है। परंतु आपने उस ग्रह से लेकर, इस ग्रह तक का लम्बा सफर तय किया है। बीच रास्ते में क्या हुआ, वो आप ही जानते हैं। इस सफर के दौरान आप उस जन्म की हर बात भूल चुके हैं जबकि मैं चाहता हूं कि रानी ताशा से वास्ता रखती आपको हर बात मालूम रहे। आप रानी ताशा को देखकर, उसकी खूबसूरती में सब कुछ भूल न जाएं।"

"इसके जवाब में मैं तुम्हें पहले भी कह चुका हूं मेरे दिल में सिर्फ मेरी पत्नी नगीना है। कोई और उसकी जगह नहीं ले सकती।"

"अवश्य राजा देव। मैं जानता हूं कि आपका निर्णय पक्का है। आप गलत नहीं कह रहे। परंतु उस वक्त को क्या कहेंगे जब रानी ताशा आपके सामने आएंगी तो आप सब भूल जाएं।" बबूसा की आवाज सुनाई दी।

"तुम ऐसा क्यों सोचते हो?"

"क्योंकि मैं जानता हूं ऐसा हो जाना, सम्भव है। मैं वो वक्त भूला नहीं हूं जब आपने सदूर ग्रह पर रानी ताशा को पहली बार देखा था। मेरी आंखों के सामने है वो सब कुछ लेकिन आप भूल चुके हैं। उस वक्त के बारे में सोचता हूं तो डर आ जाता मन में कि कहीं अब भी ऐसा हो गया तो क्या होगा। तब भी मैं आपको कितना कहता था राजा देव, परंतु आप मेरी बातों की परवाह ही नहीं करते थे और हंसकर टाल देते थे। मुझे अब भी किसी बात पर एतराज नहीं हैं। मैं आपका सेवक हूं। मैं तो बस इतना चाहता हूं कि रानी ताशा की किसी बात पर यकीन न करें। सबसे पहले आपको ये जान लेना चाहिए कि रानी ताशा ने सदूर ग्रह पर आपके साथ क्या किया। आपको ग्रह से बाहर कैसी साजिश रचकर फेंका। तब असल में क्या हुआ था। उसके बाद आप जो फैसला लेंगे, मुझे क्यों एतराज होगा। मैं नहीं चाहता कि हकीकत से वाकिफ हुए बिना आप रानी ताशा के साथ वापस सदूर ग्रह चले जाएं और बाद में आपको दुख हो।"

"तो तुम नहीं चाहते कि मैं वापस जाऊं?" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

"ये आप क्या कह रहे हैं राजा देव। मैं तो सबसे ज्यादा प्रसन्न होऊंगा

अगर आप वापस सदूर ग्रह पर आ जाएं। आप वहां के मालिक हैं। राजा हैं। सब राजा देव को देखने की चाह मन में बसाए हुए हैं। आप तो...।"

"रानी ताशा ने क्या किया था मेरे साथ?" देवराज चौहान ने पूछा।

बबूसा की आवाज नहीं आई।

"रानी ताशा ने मुझे ग्रह से बाहर क्यों फेंका, जबकि मैं वहां का राजा था।" देवराज चौहान ने पुनः कहा।

"आपके खिलाफ जबर्दस्त साजिश रची गई थी।"

"उस साजिश के बारे में मुझे बताओ।"

"तो आपको मेरी बातों का भरोसा हो गया राजा देव?" बबूसा का गम्भीर स्वर आया।

"नहीं। तुम बातें कर रहे हो तो मैं भी बातें कर रहा हूं। जबकि मुझे तुम पर जरा भी भरोसा नहीं।"

"जब भरोसा ही नहीं राजा देव तो ये बात बताने का क्या फायदा कि रानी ताशा की साजिश क्या थी।"

"मतलब कि मैं कहूं मुझे तुम पर भरोसा है तो तुम इस बारे में बता दोगे?"

चंद पलों की चुप्प के बाद बबूसा की आवाज आई।

"अब नहीं बताऊंगा राजा देव।"

"क्यों?"

"आप मेरे मुंह से रानी ताशा की साजिश के बारे में सुनने के लिए, झूठ भी तो कह सकते हैं कि आपको मुझ पर भरोसा है।"

देवराज चौहान मुस्कराया।

"इस बात का जवाब तो अब आपको आने वाला वक्त ही देगा।" बबूसा की आवाज आई।

"आने वाला वक्त?"

"जब रानी ताशा से आपका सामना होगा और आपको वो जन्म याद आने लगेगा। मुझे लगता है कि अपनी चिंता में मैं कुछ जल्दी कर रहा हूं आपसे मिलने की। छः महीने से मैं आपको ढूंढ़ रहा हूं इस शहर में। महापंडित की दी शक्तियों के सहारे सिर्फ आपकी गंध से, समाधि में ही आपको ढूंढ़ पाया और बात कर सका। आपको सामने देख पाने का वक्त नहीं आया अभी। परंतु मैं आपको ढूंढ़ लूंगा। ये ही तो काम है मेरा कि आपके पास पहुंचना और आपकी सेवा करना। हर बुरी शय से आपको बचा के रखना। मैं तो आपका पुराना सेवक हूं और आप मुझे बहुत पसंद किया करते थे। मेरे को हमेशा अपने संग ही रखते थे। कोई भी बात होती तो आप बबूसा को ही फौरन याद करते। मैं तो हमेशा...।"

एकाएक बबूसा की आवाज आनी बंद हो गई।
देवराज चौहान उसकी आवाज सुनने के इंतजार में रहा।
परंतु कमरे में गहरी खामोशी आ ठहरी।
"चले गए बबूसा।" देवराज चौहान ने कहा।
बबूसा के गहरी सांस लेने की आवाज आई।
"क्या हुआ?"
"ये क्या है राजा देव?" बबूसा के सुनाई देने वाले स्वर में कुछ तेजी आ गई थी।
"क्या?"
"ये—ये राजा देव। ये हथियार...?"
देवराज चौहान की निगाह तुरंत चौकोर पत्तियों पर जा टिकी। जो कि उसने एक तरफ छोटे से टेबल पर खड़ी हुई थी। चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।
"तुम इन चौकोर पत्तियों की बात कर...।"
"ये हथियार है राजा देव। खतरनाक और घातक हथियार डोबू जाति के, जहां मैं पला और बड़ा हुआ।"
"क्या?" देवराज चौहान चौंका।
"डोबू जाति के बारे में मैं आपको पहले बता ही चुका हूं। ये आपके पास कैसे आए? हैरानी है कि ये आपके पास देख रहा हूं।"
जवाब में देवराज चौहान ने उसे बताया कि ये हथियार उसके पास कैसे पहुंचे।
"वो—वो धरा थी राजा देव।"
"कौन धरा?"
"यहां पर वो मेरी सहायता कर रही थी आपकी तलाश में। वो मुझे समझती थी, क्योंकि वो डोबू जाति तक हो आई थी और अब डोबू जाति वाले उसे खत्म कर देना चाहते हैं कि उनके यहां देखी बातें धरा किसी और को न बता दे।"
"ऐसा क्या था वहां पर?"
"सदूर ग्रह से बात करने का सामान वहां पर मौजूद है। बाहरी दुनिया को ये सब पता चलेगा तो वो जरूर चाहेंगे कि डोबू जाति में क्या हो रहा है और ये बात डोबू जाति को कैसे पसंद आएगी।"
"तुम भी तो उसी जाति से सम्बंध रखते हो।"
"मेरा सम्बंध इतना ही है कि मैं वहां पला और बड़ा हुआ। आपको बता चुका हूं कि सदूर ग्रह का पोपा मुझे डोबू जाति में छोड़ गया था कि मैं यहां के लोगों की तरह पलकर बड़ा हो जाऊं और वक्त आने पर आपको

वापस सदूर ग्रह ले जाने के लिए रानी ताशा की सहायता करूं। परंतु मैं अब इन बातों से विद्रोह कर डोबू जाति छोड़ चुका हूं। ये सब मैंने आपके लिए किया। मैं नहीं चाहता कि रानी ताशा आपको धोखे में रखकर वापस सदूर ग्रह ले जाए। मैं आपको सब कुछ बता देना चाहता था परंतु आप हैं कि मेरी बातों का विश्वास नहीं कर रहे। बबूसा पर भरोसा नहीं करेंगे तो किस पर भरोसा करेंगे राजा देव।"

"मैं तुम्हें नहीं जानता।"

"जब तक मुझसे मुलाकात नहीं करेंगे, तब तक मुझे कैसे जान पाएंगे। एक बार तो मुझसे...।"

"जरूर मिलता। परंतु तुम्हारी बातें मेरी समझ से बाहर हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"राजा देव। डोबू जाति के इन हथियारों का आपके पास पहुंच जाना संयोग नहीं, संकेत है। इस बात का संकेत कि आपके तार रानी ताशा से जुड़ते जा रहे हैं। वक्त आपको और रानी ताशा को करीब ला रहा है। रानी ताशा इस धरती पर कभी भी पहुंचाने वाली है और जल्द ही उससे आपका सामना होने वाला है।"

"मुझे जरा भी यकीन नहीं कि ऐसा कुछ होने वाला है।"

"राजा देव आपको अब तक मेरी किसी भी बात पर यकीन नहीं आया? जरा भी नहीं?"

चंद पल चुप रहकर देवराज चौहान बोला।

"कभी-कभी बातों के दौरान यकीन आने लगता है, परंतु अविश्वास का भार ज्यादा है, इन बातों पर।"

"एक बार मुझसे मिल तो लें?"

"नहीं। मुझे लगता है कि तुम जो भी हो, थककर खुद ही इन बातों से पीछे हट जाओगे।"

"आपका सेवक बबूसा कभी नहीं थकता राजा देव। आप तो जानते ही हैं कि आपका हर हुक्म फौरन पूरा करता हूं।"

"तुम मेरे लिए अंजान हो।"

"समझ गया राजा देव। मेरी बातें आपको आसानी से समझ नहीं आने वालीं।" बबूसा के गहरी सांस लेने की आवाज आई—"परंतु मैं पीछे हटने वाला नहीं और आपकी तलाश बराबर जारी रखूंगा।"

"तुम मुझ तक नहीं पहुंच सकोगे।" देवराज चौहान मुस्कराया।

कुछ क्षणों की खामोशी के बाद बबूसा की आवाज आई।

"धरा जब तक जगमोहन के साथ रही, जिंदा रही तब तक?"

"हां।"

"उसे जगमोहन ने कहां पर कार से उतारा था।"

"क्यों?"

"मैं वहां से उसकी गंध पाकर, उस रास्ते पर चल सकूंगा, जहां-जहां से वो जहां-जहां गई है। इस तरह मुझे पता चल जाएगा कि डोबू जाति वालों ने कहां पर उसकी हत्या की, या वो जिंदा है तो कहां पर है।" बबूसा की आवाज आई।

"ये बात मुझे जगमोहन से पूछनी पड़ेगी कि उसने धरा को कहां पर उतारा?"

"पूछकर बता दीजिए। मेहरबानी होगी राजा देव।"

देवराज चौहान उठा और कमरे से बाहर निकल गया।

उस खाली कमरे में बबूसा की मध्यम-सी सांसें गूंजती रहीं।

पांच मिनट के बाद देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया।

"कुछ बताया राजा देव?" बबूसा की बेसब्र-सी आवाज सुनाई दी।

देवराज चौहान ने बताया कि जगमोहन ने धरा को कहां उतारा था।

"अब मैं जान लूंगा कि धरा के साथ क्या हुआ। तो मैं जाऊं राजा देव।"

तभी जगमोहन और सोहनलाल ने कमरे में प्रवेश किया।

देवराज चौहान ने दोनों को देखा।

"बबूसा है या चला गया?" जगमोहन ने पूछा।

"शायद है।"

सोहनलाल और जगमोहन की निगाह कमरे में घूम रही थी।

"बबूसा।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में पुकारा।

"कहो जगमोहन।" बबूसा की आवाज आई।

"आखिर तुम हमसे चाहते क्या हो?"

"राजा देव को मैं सब कुछ बता चुका हूं।" बबूसा की आवाज आई।

"वो मैं भी जानता हूं परंतु हमें तुम्हारी बातों पर यकीन नहीं।"

"ज्यादा वक्त बाकी नहीं रहा। बहुत जल्दी सबको यकीन आ जाएगा। हालात बदलने लगे हैं। अब तो डोबू जाति की चीजें भी तुम लोगों के पास पहुंचने लगी हैं। वक्त कम होता जा रहा है...।"

"कैसी चीजें?"

"वो हथियार, जो तुम्हारी कार में आ धंसे थे। वो डोबू जाति के हैं। राजा देव तुम्हें सब बता देंगे। ये इस बात का संकेत है कि राजा देव और रानी ताशा के बीच की दूरी कम होने लगी है। सम्भव है रानी ताशा पोपा में बैठकर सदूर ग्रह से इस तरफ के लिए चल दी हो। बहुत कुछ होने वाला है अब। तुम लोग अंजान हो। मुसीबतों की ऐसी आंधी आने वाली

□ □

बबूसा की समाधि भंग हुई।

उसने आंखें खोल दीं। वो तुरंत उठा। कपड़े पहने और होटल से बाहर निकलता चला गया। रात का डेढ़ बज रहा था, परंतु उसे धरा की चिंता थी। वो जान लेना चाहता था कि धरा पर क्या बीती। होटल के बाहर से ही उसे टैक्सी मिल गई तो वो उस जगह की तरफ चल पड़ा, जहां जगमोहन ने धरा को उतारा था।

चालीस मिनट में टैक्सी वहां पहुंची तो बबूसा ने टैक्सी वाले को पैसे देकर टैक्सी छोड़ दी और फुटपाथ पर खड़ा होकर कुछ सूंघने की चेष्टा करने लगा कि तुरंत ही बड़बड़ाया।

'ओह, धरा यहीं थी। उसकी गंध मिल गई है मुझे, वो इस तरफ गई।'

बबूसा तेजी से आगे बढ़ गया। ये फुटपाथ था। सड़क पर से बहुत कम वाहन आ-जा रहे थे रात के इस वक्त। बबूसा तेज-तेज कदमों से आगे बढ़ता जा रहा था। आगे जाकर बाईं तरफ मोड़ आया तो बबूसा धरा की गंध का पीछा करते हुए उसी तरफ मुड़ गया। चलता रहा। इस तरफ सुनसान जैसा इलाका था। दूर फ्लैट बने नजर आ रहे थे। बबूसा हवा में गंध लेता आगे बढ़ता रहा।

कुछ आगे जाकर बबूसा एक जगह ठिठक गया।

ये वो ही जगह थी, जहां धरा से सोलाम मिला था।

'ओह ये तो सोलाम की गंध है।' बबूसा बड़बड़ाया—'तो सोलाम ने धरा को पकड़ लिया।'

उसी पल बबूसा की निगाह नीचे जमीन पर फिरने लगी। आस-पास अंधेरे में देखा। परंतु धरा का मृत शरीर उसे कहीं न दिखा। न ही बिखरे खून की गंध आई।

'सोलाम ने धरा के साथ क्या किया?' बबूसा परेशानी से बड़बड़ा उठा।

फिर उसने महसूस किया कि सोलाम की गंध गायब हो गई है।

परंतु जीवित धरा की गंध अभी भी वहां मौजूद थी।

उसने गंध को दूसरी तरफ जाते पाया तो बबूसा आगे बढ़ गया।

'हैरानी है।' बबूसा बड़बड़ाया—'सोलाम ने धरा को जिंदा कैसे छोड़ दिया। वो चला क्यों गया?'

धरा की गंध के सहारे बबूसा आगे बढ़ता रहा।

मुख्य सड़क पर जा पहुंचा। ठिठका।

अगले ही पल उसने धरा की गंध को तेजी से एक तरफ जाते महसूस किया तो वो समझ गया कि धरा यहां से किसी कार जैसे वाहन पर सवार

होकर गई है। पंद्रह मिनट के इंतजार के बाद बबूसा को खाली टैक्सी मिली तो वो टैक्सी पर सवार होकर आगे की तरफ बढ़ गया। रह-रहकर खिड़की के बाहर सिर निकालकर धरा की गंध को महसूस करता और ड्राइवर को उसी दिशा में आगे जाने को कहता। ड्राइवर को ये सब अजीब-सा लग रहा था परंतु उसने ये ही सोचा कि सवारी ने कोई नशा कर रखा है। चुपचाप वो बबूसा का कहना मानता रहा कि आधे घंटे बाद एकाएक बबूसा ने टैक्सी रोकने को कहा।

टैक्सी रुकी। उसने ड्राइवर को पैसे दिए और सड़क किनारे आगे बढ़ने लगा।

अब धरा की गंध धीमी रफ्तार से आगे बढ़ रही थी।

स्पष्ट था कि यहां से धरा पैदल ही आगे बढ़ी थी।

बबूसा धरा की गंध को महसूस करता आगे बढ़ता रहा कि आगे चौराहा आ गया। कुछ पल के लिए वो ठिठका, गंध को महसूस किया फिर चौराहा पार करते सामने की इमारत की तरफ बढ़ गया। वो मध्यमवर्गीय होटल था। बबूसा होटल में प्रवेश कर गया। धरा की गंध को वो बराबर महसूस कर रहा था। एक तरफ छोटा-सा रिसैप्शन था। वहां कुर्सी पर बैठा व्यक्ति काउंटर पर सिर रखे गहरी नींद में था।

गंध लेता बबूसा होटल में प्रवेश करके पहली मंजिल की सीढ़ियां चढ़कर ऊपर पहुंचा और पतली-सी गैलरी में आगे बढ़ा और एक बंद दरवाजे पर जा ठिठका। धरा की गंध इस कमरे के भीतर से आ रही थी। बबूसा के चेहरे पर सख्ती और गम्भीरता नजर आ रही थी। उसने दरवाजा थपथपाया।

परंतु भीतर से कोई आहट न उभरी।

बबूसा ने पुनः दरवाजा थपथपाया तो इस बार भीतर से कुछ सरसराहट-सी उभरी।

"धरा।" बबूसा ने धीमे स्वर में कहा—"मैं बबूसा—दरवाजा खोलो।"

तुरंत ही भीतर से आहटें उभरीं और दरवाजा खोला गया।

सामने धरा थी। घबराई-सी। परेशान-सी। वो सोई उठकर आ रही थी। बबूसा को देखते ही उसकी आंखों से आंसू बह निकले और बबूसा से लिपट गई।

"तुम—तुम आ गए। कहां थे तुम?" धरा रो पड़ी।

बबूसा ने उसके कंधे को थपथपाया और उसे अपने से अलग किया।

"घबराओ मत, मैं आ गया हूं।" बबूसा ने राहत भरे स्वर में कहा।

धरा पीछे हटी। बबूसा भीतर आया और दरवाजा बंद कर दिया। ये

साधारण-सा कमरा था। एक तरफ बेड और दो कुर्सियां रखी थीं। छत पर लगा पंखा चल रहा था।

"तुमने मुझे कैसे ढूंढ़ निकाला?" धरा अपने आंसू पोंछते कह उठी—"तुम्हारे बिना तो मेरे हाथ-पांव फूले पड़े हैं। उस वक्त मुझे उठकर भागना पड़ा, क्योंकि एक ने मुझे दीवार के पास अंधेरे में लेटे देख लिया था।"

"राजा देव की वजह से ही मैं तुम तक पहुंच सका।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"राजा...देवराज चौहान तुम्हें मिल गया क्या?" धरा के होंठों से निकला।

"नहीं। समाधि लगाकर मैंने राजा देव से बात की थी। तुम्हें एक आदमी मिला था भागते वक्त। उसने तुम्हें कुछ दूर तक छोड़ा था जिसकी कार के भीतर चौकोर पत्ती जैसा हथियार आ धंसा था।"

"हां, उसने मुझे कुछ पैसे देकर कहा था कि मैं किसी होटल में ठहर सकती हूं।"

"वो जगमोहन था, जो आज राजा देव का खास साथी है।"

"जगमोहन? देवराज चौहान का साथी?"

"ये सब मुझे राजा देव से ही पता लगा। उन्होंने जगमोहन से पता करके बताया कि उसने तुम्हें कहां छोड़ा था। जहां उसने तुम्हें छोड़ा था, वहीं से तुम्हारी गंध के सहारे मैं यहां तक आ पहुंचा। मैं तो सोच रहा था कि योद्धाओं ने तुम्हें मार डाला होगा। तुम्हें जिंदा पाकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।" बबूसा मुस्कराया—"परंतु एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही कि सोलाम तुम तक पहुंच गया था, उसके बाद भी तुम जिंदा कैसे?"

धरा ने हैरानी से बबूसा को देखा।

"तुम्हें कैसे पता कि सोलाम ने मुझे पकड़ लिया था?" धरा बोली।

"कुछ देर पहले तुम्हें तलाश करते वक्त मैंने एक ही जगह पर तुम्हारी और सोलाम की गंध को पाया।"

"तुम किसी की गंध को कैसे महसूस कर लेते हो?"

"महापंडित ने गंध से वास्ता रखती शक्ति तब मेरे भीतर डाली थी, जब मेरा जन्म कराया गया था। महापंडित बहुत बातें पहले ही जान लेता है कि भविष्य में क्या होगा। परंतु शायद वो ये नहीं जान पाया कि एक दिन मैं रानी ताशा से विद्रोह करूंगा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा—"सोलाम ने तुम्हें क्यों छोड़ा। वो हाथ आया शिकार कभी छोड़ेगा नहीं।"

"उसने अजीब-सी बात की वजह से मुझे छोड़ा।"

"कैसी बात?"

"वो कहता है कि बबूसा तुम्हें प्यार करता है तभी तुम्हें बचा रहा है। उसने कहा कि बबूसा को उसने हमेशा ही पसंद किया है। उसने तुम्हारे साथ बचपन-जवानी का वक्त बिताया। इसलिए उसने तुम्हारे प्यार को जिंदा छोड़ दिया।"

"प्यार?" बबूसा ने अजीब से स्वर में कहा—"मेरा प्यार तो मेरे हथियार हैं। मेरा मकसद है। मैं तुम्हें प्यार नहीं करता।"

"ये ही बात मैंने कही, परंतु सोलाम को यकीन है कि तुम मुझे प्यार करते हो।"

"वो गलत सोच रहा है।"

"मैं जानती हूं कि ऐसा कुछ नहीं है। मुझे भी तुमसे कोई प्यार नहीं है। तुम मुझे बचा रहे हो और मैं देवराज चौहान को ढूंढ़ने में तुम्हारी सहायता कर रही हूं। हमारे बीच बस ये ही एक रिश्ता है।" धरा कह उठी—"पर सोलाम समझता है कि तुम मुझे प्यार करते हो। जाने क्यों उसे इस बात का यकीन है।"

बबूसा मुस्करा पड़ा।

"सोलाम कुछ भी सोचे। मुझे इसकी परवाह नहीं है। लेकिन ये अच्छा रहा कि उसने तुम्हें मारा नहीं।" बबूसा बोला।

"वो कहता है कि मुझे बाकी योद्धाओं से बचकर रहना होगा। नहीं तो मारी जाऊंगी।"

"तुम्हें कुछ नहीं होगा।" बबूसा ने विश्वास भरे स्वर में कहा—"मैं पहले भी तुम्हारे साथ था और अब भी तुम्हारे साथ हूं। सुबह ही मैं होटल के उस वेटर के पास जाकर अपने हथियार ले आऊंगा, परंतु मुझे कोई ठिकाना चाहिए। कोई जगह जहां मैं निश्चिंत होकर टिक सकूं। ऐसी किसी जगह का इंतजाम तुम ही कर सकती हो।"

"अभी मैं अपने होश में नहीं हूं।" धरा कांपकर बोली—"बहुत बुरे वक्त से बचकर निकली हूं।"

"घबराओ मत। मैं हर पल तुम्हारे साथ रहूंगा।"

"हमें सोहनलाल के घर जाना था। सब कुछ बीच में ही रह गया।"

"सोहनलाल के घर जाने का कोई फायदा नहीं। वो राजा देव के यहां रह रहा है।"

"ओह, तो अब?"

"मेरी तलाश चलती रहेगी। मैं राजा देव को ढूंढ़कर रहूंगा। तुम मेरे साथ, मेरे होटल में चलो। तुम मेरा साथ देना और मैं कल से राजा देव को ढूंढ़ने की चेष्टा करूंगा।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"देवराज चौहान तुम्हारी बात नहीं मान रहा तो मुलाकात करके कैसे मान जाएगा। तब भी वो...।"

"तब मैं राजा देव को यकीन दिलाने की पूरी चेष्टा करूंगा। अब मैं समाधि के सहारे उनसे बात करता हूं। परंतु जब शरीर के साथ उनके सामने होऊंगा तो उन्हें समझाने के और भी कई ढंग मेरे सामने होंगे।" बबूसा ने कहते हुए सिर हिलाया—"तुम मेरे साथ मेरे होटल में चलो।"

▭ ▭

"बबूसा।"

एकाएक कमरे में मोटी-भारी-सी आवाज गूंजी।

धरा फौरन उठ बैठी। आस-पास देखने लगी। कमरे की खिड़की से बाहर धूप दिखाई दी। दिन कब का निकल आया था। उसने डबल बेड के दूसरे हिस्से पर सोए बबूसा को देखा। धरा को पूरा यकीन था कि किसी की आवाज सुनकर उसकी आंख खुली है। परंतु कमरे में उनके अलावा कोई नहीं था।

धरा लम्बे पलों तक बेड पर ही बैठी रही।

"बबूसा।" वो ही आवाज पुनः गूंजी।

धरा ने चौंककर आस-पास देखा।

परंतु कोई नहीं दिखा तो हड़बड़ाकर उसने बबूसा का कंधा पकड़कर हिलाया।

"क्या है?" बबूसा फौरन उठ बैठा। उसकी आंखों में नींद भरी थी।

"क-कोई है।" धरा ने घबराए स्वर में कहा।

"कौन?"

"प-पता नहीं, पर कोई तुम्हें पुकार रहा है।"

बबूसा की आंखें सिकुड़ीं। वो कह उठा।

"कौन है?"

"मैं हूं बबूसा।" वो आवाज पुनः कमरे में गूंजी।

"महापंडित।" बबूसा हैरान-सा बेड से उतरकर खड़ा हो गया।

"हां मैं, महापंडित। तुझे हैरानी क्यों हो रही है?" महापंडित की वो ही आवाज पुनः उभरी।

"तुझसे तो पिछले जन्म में बात की थी जब तूने मेरा नया जन्म कराकर मुझे डोबू जाति में भेजा था।"

"मैंने नहीं भेजा था। रानी ताशा के हुक्म से और तुम्हारी रजामंदी से ही ऐसा किया गया था।" वो आवाज आई।

"तब मैं हकीकत को समझ नहीं सका था।" बबूसा के होंठों से निकला।

"तो क्या अब हकीकत को समझ गया?" महापंडित के हंसने की आवाज आई।

"हालातों को करीब से देखा तो हकीकत समझ में आई। तू बुरा है महापंडित।" बबूसा की आवाज तीखी हो गई।

धरा बेड पर बैठी हैरान-परेशान-सी बातें सुन रही थी।

"मैं बुरा कैसे हो सकता हूं बबूसा।"

"पहले तू मुझे नजर आ। मैं जानता हूं कि तेरे में इतनी शक्तियां हैं कि तू सामने आ सकता है।"

"इतनी दूर से नहीं बबूसा। एक ग्रह से दूसरे ग्रह तक मेरी शक्तियां ठीक से काम नहीं करतीं, पर ये ले। अब सामने की दीवार पर देख। मेरी परछाईं तुझे दिखेगी।"

बबूसा और धरा की निगाह सामने की दीवार पर गई।

वहां एक मोटे और गोल से आदमी की परछाईं दिखने लगी, जिसके बाल गर्दन तक लम्बे दिखाई दे रहे थे। परछाईं में वो आधा-अधूरा ही नजर आ रहा था।

"देख लिया मुझे।" महापंडित की आवाज आई। बात करते वो परछाईं हिल उठती थी।

"तुझे देखकर ज्यादा खुशी नहीं हुई।"

"क्योंकि मैं बुरा हूं। तू ये ही कहता है न बबूसा।" महापंडित का स्वर वहां गूंज रहा था।

"इसमें कोई शक नहीं। अब मैंने तुझे पहचाना है। तू राजा देव के साथ दगाबाजी कर रहा है।" बबूसा सख्त स्वर में बोला।

"वो कैसे?"

"रानी ताशा ने राजा देव को कैसा धोखा देकर, ग्रह से बाहर फेंका था, भूल गया क्या?"

"महापंडित कभी, कुछ नहीं भूलता।"

"तो तू अब रानी ताशा का साथ क्यों दे रहा है?"

"कैसा साथ बबूसा?"

"रानी ताशा, राजा देव को वापस सदूर ग्रह पर ले जाना चाहती है।"

"इसमें बुरा क्या है। क्या तू नहीं चाहता कि राजा देव फिर से पहले की तरह अपने ग्रह के लोगों को संभालें। ये ग्रह राजा देव का ही तो है। राजा देव ने ही पोपा का निर्माण किया था। अपने ग्रह के लिए, जनता के लिए राजा देव ने क्या नहीं किया। वो वापस आ गए तो ग्रह की किस्मत बदल जाएगी।"

"परंतु रानी ताशा को सजा कौन देगा, राजा देव को दिए धोखे की?"

"वो सजा राजा देव ही तय करेंगे।"

"तो ऐसे में राजा देव को पता तो होना चाहिए कि रानी ताशा ने उन्हें कैसा धोखा दिया था।"

"सही कहा, जरूर पता होना चाहिए।"

"तो फिर रानी ताशा तुम्हारे साथ मिलकर राजा देव को जैसे भी हो वापस सदूर ग्रह पर क्यों ले जाना चाहती है। तुम भी रानी ताशा का पूरा साथ दे रहे हो, जबकि तुम्हें चाहिए कि राजा देव को अपना वो जन्म याद आ जाए कि...।"

"वो जन्म राजा देव को जरूर याद आएगा। पृथ्वी ग्रह पर याद आए या सदूर ग्रह पर, इसमें क्या फर्क पड़ता है।"

"बहुत फर्क पड़ता है महापंडित। ये चालाकी होगी राजा देव से कि उन्हें धोखे में डालकर सदूर ग्रह पर...।"

"मैंने एक बार तुमसे कहा था कि रानी ताशा को देखते ही, राजा देव को अपना वो जन्म याद आने लगेगा।"

"परंतु याद आने से पहले ही राजा देव पहले की तरह रानी ताशा की खूबसूरती में गुम हो गए तो क्या होगा?"

"तो राजा देव जब सदूर ग्रह पर पहुंचेंगे, तभी उन्हें पहले के जन्म के बारे में बता दिया जाएगा।"

"ये ही तो धोखा है। ये ज्ञान तुम राजा देव को पहले क्यों नहीं दे रहे? क्या इसलिए कि कहीं राजा देव सदूर ग्रह पर वापस जाने का इंकार न कर दें या रानी ताशा को इसी ग्रह पर सजा न दे दें। तुम रानी ताशा को बचाने की चेष्टा में हो महापंडित। परंतु राजा देव को मेरे से ज्यादा कोई नहीं जानता। मैं हमेशा ही राजा देव के करीब रहा हूं। राजा देव को धोखेबाजी से हमेशा ही घृणा रही है। वो रानी ताशा को फौरन कड़ी-से-कड़ी सजा देंगे, बीते जन्म की सच्चाई जानते ही। तुम तो महाज्ञानी हो महापंडित। तुम्हारे पास तो भविष्य की पूरी जानकारी रहती है कि आगे क्या होने वाला है। तुम अब भी सब कुछ जानते हो।"

"सदूर ग्रह और पृथ्वी ग्रह की दूरी इतनी है कि मेरी शक्तियां ठीक से पृथ्वी ग्रह पर काम नहीं कर रहीं। ऐसे में मैं ठीक से नहीं जान सकता कि पृथ्वी ग्रह पर आने वाले वक्त में क्या होगा। भविष्य की आधी-अधूरी जानकारी ही मैं पकड़ पा रहा हूं। मैं कुछ भी ज्यादा बताने और समझने में असमर्थ हूं।" महापंडित का गम्भीर स्वर कानों में पड़ा—"लेकिन मैं जो भी कर रहा हूं सदूर के भले के लिए कर रहा हूं। मैं चाहता हूं कि राजा देव वापस आकर अपना ग्रह संभालें और राजा बनकर रहें।"

"जबकि मैं चाहता हूं कि रानी ताशा को जब राजा देव देखें तो वे रानी

ताशा की इस हकीकत से वाकिफ हों कि रानी ताशा उनकी पत्नी थी। पत्नी बनकर उन्हें कैसा धोखा दिया और ग्रह से बाहर फिंकवा दिया। मैं नहीं चाहता कि राजा देव भ्रम की स्थिति में रहें। वो फिर से रानी ताशा की खूबसूरती के साम्राज्य में खो जाएं। तुम और रानी ताशा चाहती है कि मैं उनका साथ दूं कि राजा देव को जैसे भी जाल बुनकर या ताकत से वापस पोपा में बैठाकर सदूर ग्रह ले जाया जा सके। परंतु मैं तुम्हारा या रानी ताशा का जरा भी साथ नहीं दूंगा।"

"तुम वचन से बंधे हो।"

"जरूर। मैंने जन्म लेने से पहले तुम्हें वचन दिया था कि मैं रानी ताशा का साथ दूंगा और हम राजा देव को वापस सदूर ग्रह पर ले आएंगे। लेकिन अभी तुम्हें बताया है कि हकीकत के करीब पहुंचकर मुझे सही हालातों का ज्ञान हुआ कि मैं राजा देव को धोखा नहीं दे सकता। मैं उनका सच्चा सेवक रहा हूं। बेशक ये ग्रह हो या सदूर ग्रह, मैं राजा देव के लिए जिया हूं और मरूंगा भी राजा देव के लिए। ये ही वजह रही कि मैंने डोबू जाति से विद्रोह किया और वहां से निकलकर राजा देव को ढूंढ़ने लगा। ताकि राजा देव को बता सकूं कि एक बार फिर रानी ताशा उन्हें धोखा देने की फिराक में है और महापंडित, रानी ताशा का साथ दे रहा है। तुम भी सजा के हकदार हो चुके हो महापंडित।"

खामोशी-सी आ ठहरी वहां।

महापंडित की तरफ से कोई आवाज नहीं आई। दीवार पर परछाई स्थापित रही।

धरा स्तब्ध-सी बैठी, सब कुछ सुनते, परछाई को देखे जा रही थी।

बबूसा के चेहरे पर क्रोध और कठोरता नाच रही थी।

"चुप क्यों हो गए महापंडित। तुम्हारी तर्कशक्ति तो अथाह गहरी है।" बबूसा कह उठा।

"इस वक्त तर्कशक्ति नहीं, समझदारी की जरूरत है बबूसा।" महापंडित की आवाज आई।

"समझदारी का भी भंडार है तुममें महापंडित। तुम युद्ध को छोड़कर हर तरफ से मेरे आगे हो।"

"इसमें दो राय नहीं कि रानी ताशा ने राजा देव के साथ बुरा व्यवहार किया। बुरा धोखा दिया। मैं तुमसे सहमत हूं।"

"तो असहमति कहां पर है?" बबूसा बोला।

"परंतु उसके बाद रानी ताशा तब से आज तक पश्चात्ताप में जलती रही कि उन्होंने राजा देव के साथ बुरा व्यवहार किया। वो जीवन पूरा करके मरती रही और मैं उन्हें पुनः नया जीवन देता रहा। तब से आज

तक उनका पांचवां जन्म अब चल रहा है। परंतु इन पांच जन्मों में रानी ताशा अपनी गलती को कभी नहीं भूल पाई और पश्चात्ताप करती रही। पश्चात्ताप भी ऐसा कि रानी ताशा ने किसी मर्द को अपने करीब नहीं आने दिया, साथ ही वो इस बात की योजना तैयार करने लगी कि राजा देव को कैसे सदूर ग्रह पर वापस लाया जा सके। पहले दो जन्म तो रानी ताशा ये ही सोचती थी कि राजा देव जिंदा नहीं रहे होंगे परंतु जब मैंने रानी ताशा को इस बात का संकेत दिया कि राजा देव जिंदा हैं और उनका पता लगाकर उन्हें वापस लाने का प्रयत्न किया जा सकता है तो वो बहुत खुश हुई। राजा देव को वापस सदूर ग्रह पर लाने को रानी ताशा हमेशा पागल रही। पश्चात्ताप में भी रही और खुश भी। रानी ताशा अपने किए की सजा भुगत चुकी है पश्चात्ताप करके। किसी मर्द को पास न आने देकर और राजा देव की वापसी की कोशिशें करके। तुम्हें इस बात को समझना चाहिए बबूसा कि रानी ताशा, राजा देव से धोखा करके खुश नहीं रही। वो ग्रह की रानी रही, चाहती तो एक से एक अच्छे मर्द को ग्रहण कर सकती थी परंतु ऐसा सोचा भी नहीं रानी ताशा ने। रानी ताशा के सब जन्मों के कर्मों की कुंडली मेरे पास है। ये कहकर मैं रानी ताशा की तरफदारी नहीं कर रहा।"

"तुमने जो कहा, वो सब बातें मैं पहले से ही जानता हूं।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तो फिर तुम्हें रानी ताशा की कोशिशों पर एतराज क्यों?"

"मैं तो सिर्फ इतना चाहता हूं कि राजा देव को हर बात की जानकारी हो, जब रानी ताशा से सामना हो।"

"तो तुम राजा देव को याद दिलाए रखना चाहते हो कि रानी ताशा ने उनके साथ धोखा किया।"

"हां।"

"तो फिर तुम्हें ये भी बताना होगा कि रानी ताशा ने किस तरह पश्चात्ताप किया।"

"ये भी बताऊंगा।"

"परंतु मुझे कुछ-कुछ संकेत मिल रहे हैं कि राजा देव से तुम्हारी मुलाकात नहीं हुई।"

"सही कहा महापंडित। तुम्हारी दी शक्तियों से मैंने अवश्य राजा देव से बात की है।" बबूसा बोला।

"क्या ये अच्छा नहीं होगा कि राजा देव को सदूर ग्रह पर पहुंच लेने दो। उसके बाद तुम उन्हें जो याद दिलाना चाहते हो, याद दिला देना। रानी ताशा की कोशिशों को सफल होने दो।"

"कभी नहीं। मैं पहले ही राजा देव को सब कुछ याद दिला...।"

"तुम इतनी जिद क्यों कर रहे हो बबूसा?"

"मुझे उस धोखे का बहुत दुख है। मैं वो जन्म कभी भूल नहीं पाया। रानी ताशा मुझे भी धमकियां दिया करती थी। एक-एक बात याद है मुझे तो आज मैं रानी ताशा की किसी चालबाजी को सफल नहीं होने दूंगा। मैं इस बात का पूरा ध्यान रखूंगा कि वो राजा देव को धोखे में रखकर, सदूर ग्रह न ले जा सके।"

"रानी ताशा तुमसे भी कई बार माफी मांग चुकी है बबूसा।"

"मैं राजा देव का सेवक रहा हूं, रानी ताशा का नहीं। जब तक राजा देव, रानी ताशा के प्रति अपना फैसला नहीं सुना देते तब तक रानी ताशा अपराधी ही बनी रहेगी। ये देखना राजा देव का काम है कि रानी ताशा के अपराध का भार ज्यादा है या पश्चात्ताप का। मैं रानी ताशा का साथ हरगिज नहीं दूंगा महापंडित।"

"साथ बेशक मत दो। परंतु रानी ताशा की राह में बाधा तो पैदा न करो।"

"अब तुम बुरे बनने लगे हो महापंडित।"

"कैसे?"

"तुम रानी ताशा के बारे में तो सोच रहे हो परंतु राजा देव के बारे में नहीं।"

"राजा देव इस वक्त पृथ्वी ग्रह पर किसी और का दिया जन्म जी रहे हैं। उन्हें उस वक्त का पूरी तरह कुछ भी याद नहीं। राजा देव अभी पूरी तरह हमारे नहीं हैं। जब उन्हें इस ग्रह पर लाया जाएगा तो मैं उन्हें नया जन्म दूंगा। तब वो पूरी तरह सदूर ग्रह के फिर से राजा बन जाएंगे और हम सब उनके अधीन रहकर कार्य करेंगे। अभी तो....।"

"तुम ऐसा सोचते हो, पर मैं ऐसा नहीं सोचता। क्योंकि मैं उनका सच्चा सेवक हूं। मेरे लिए वो हर हाल में राजा देव हैं। बेशक इस ग्रह पर जन्म लें या उस ग्रह पर। मेरा काम उनकी सेवा करना है। तुम बुरे हो जो राजा देव को पूरी तरह राजा देव नहीं मान रहे। मैं ये बात राजा देव से जरूर कहूंगा।"

"मेरी बात को गलत मत लो बबूसा, मेरा ये मतलब नहीं था।"

"मैं ये बातें यहीं खत्म कर देना चाहता हूं।"

"मैं तो तुमसे ये कहना चाहता था कि तुम रानी ताशा का साथ दो। राजा देव जब सदूर ग्रह पर पहुंच जाएंगे तो तुम कुछ भी करने को आजाद होगे। तुम जैसा कहोगे मैं वैसा ही करूंगा।" महापंडित की आवाज आई।

"मैं सिर्फ राजा देव का साथ दूंगा।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा।

"फिर तो मुझे इस बात का दुख है कि मैं तुम्हें दोबारा कभी देख नहीं पाऊंगा।"

"क्या मतलब?" बबूसा की आंखें सिकुड़ीं।

"छः महीने पहले तुम विद्रोह करके डोबू जाति से बाहर आ गए। तुमने रानी ताशा के आने का इंतजार नहीं किया। तब मैंने जान लिया था कि तुमने विद्रोह क्यों किया? तुम रानी ताशा की बातों से सहमत नहीं हो कि जैसे भी हो राजा देव को सदूर ग्रह पर वापस लाया जाए, तुम राजा देव को आगाह करना चाहते हो कि रानी ताशा धोखेबाज है। मैंने ये सारी बातें रानी ताशा को बता दीं तो रानी ताशा ने मुझसे कहा कि मैं एक ऐसा व्यक्ति तैयार करूं जो बबूसा से कहीं ज्यादा ताकतवर हो। मेरे पास वक्त कम था, रानी ताशा तब पोपा में बैठकर, पृथ्वी ग्रह पर जाने की तैयारियों में लगी थी, इतना समय नहीं था कि मैं किसी का ताकतवर आदमी के रूप में जन्म कराता और फिर उसके बड़े होने का इंतजार किया जाता। ऐसे में मैंने एक आदमी (रोबॉट) बनाया। सर्वगुण से भरा आदमी, जिसे मैंने सोमाथ नाम दिया। सोमाथ की मृत्यु नहीं हो सकती। ये मेरा नया आविष्कार है। उसकी बांह टूटेगी तो अपने शरीर के भीतर से ही वो बांह की पूर्ति कर लेगा और नई बांह आ जाएगी। गर्दन टूटेगी तो वो चंद पलों में जुड़ जाएगी। वो अपनी क्षति को खुद ही कवर कर लेगा। वो जिस हाल में भी रहे, वो मरेगा नहीं। सोमाथ के भीतर मैंने बहुत चीजें डाली हैं। बेहतरीन दिमाग डाला है। उसे सामान्य इंसानों की तरह बनाया है मैंने और वो रानी ताशा के अधीन काम करेगा। सिर्फ उनका ही हुक्म मानेगा। सोमाथ की ताकत का मुकाबला नहीं किया जा सकता। अगर तुम रानी ताशा के हक में काम नहीं करोगे तो सोमाथ तुम्हें मार देगा। सोमाथ में ढेरों हैरतंगेज चीजें डाली हैं। वो कभी भी हारेगा नहीं। अब फैसला तुमने खुद ही करना है बबूसा।"

बबूसा के चेहरे पर बेहद कठोर मुस्कान नाच उठी।

"तो तुम सोमाथ नाम के आदमी (रोबॉट) को मेरी हत्या के लिए भेज रहे हो महापंडित।" बबूसा हंसा।

"वो चल चुका है। रानी ताशा, सोमाथ के साथ चार दिन पहले ही पोपा में बैठकर पृथ्वी ग्रह की तरफ चल चुकी है। साथ में रानी ताशा के खास लोग और भी हैं। अगले पांच दिनों तक वे पृथ्वी ग्रह पर डोबू जाति में पहुंच जाएंगे। तुम सोच ही सकते हो कि रानी ताशा के साथ विद्रोह करने पर, तुम्हें सोमाथ से मुकाबला करना होगा और सोमाथ तुम्हारी जान ले लेगा। उसके सामने तुम कुछ देर भी टिक नहीं पाओगे।"

"तुमने तो बहुत कमजोर मान लिया मुझे महापंडित।"

"मैं बेहतर जानता हूं कि तुम सोमाथ के सामने कमजोर हो। क्योंकि तुम्हारा जन्म मैंने कराया है। मैंने ही तुममें ताकत और शक्तियां भरी हैं और सोमाथ को मैंने तुमसे कहीं ज्यादा ताकतवर बनाया है। उसे बनाने में मैंने ऐसी-ऐसी चीजों का इस्तेमाल किया है कि देखकर हैरान रह जाओगे। तुम बहुत कमजोर हो सोमाथ के सामने।"

"तुमने मुझे राजा देव के बराबर ताकतवर बनाकर मेरा जन्म कराया था।"

"हां।"

"मेरी समझ भी राजा देव जैसी रखी थी।"

"हां।"

"और मैं राजा देव की ताकत और समझदारी से हमेशा ही प्रभावित रहा हूं। मुझे खुशी है कि इस जन्म में मेरे भीतर वो सब कुछ है जो कभी राजा देव के भीतर हुआ करता था। मुझे यकीन है कि मैं सोमाथ को टक्कर दूंगा।

"ये तुम्हारी भूल है बबूसा। तुम बहुत कमजोर हो।"

"मेरी चिंता न कर महापंडित। मेरे साथ राजा देव हैं।"

"राजा देव अब वो नहीं रहे जो कभी वो हुआ करते थे। उनकी ताकत पहले से बहुत कम हो चुकी है। वो पृथ्वी ग्रह पर कई जन्म ले चुके हैं और कमजोर होते जा रहे हैं। राजा देव के भरोसे कोई फैसला मत ले।"

"मेरा काम सच्चे मन से राजा देव की सेवा करना है।" बबूसा ने कहा—"परंतु अब ये बात स्पष्ट हो गई है कि तू किस तरह अंधा होकर राजा देव के खिलाफ रानी ताशा का साथ दे रहा है। तू और रानी ताशा चाहते हैं कि ऐसे का ऐसे ही राजा देव को सदूर ग्रह पर पहुंचा दिया जाए। वहां पहुंचकर तो राजा देव वापस जाने को नहीं कह सकते और वहीं रह जाएंगे। परंतु मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। मैं राजा देव को पहले ही बता दूंगा कि रानी ताशा ने उन्हें किस प्रकार का धोखा दिया था और फिर ग्रह से बाहर फेंका, साथ ही मैं राजा देव को, वो जन्म याद आने का इंतजार करूंगा। सब कुछ याद आने पर तब राजा देव स्वयं ही फैसला करेंगे कि उन्हें रानी ताशा की बात माननी है या नहीं, या फिर उनके साथ कैसा व्यवहार करना है। मैं राजा देव को सब कुछ याद करा के रहूंगा और महापंडित तू भी नहीं बचेगा राजा देव के कहर से। तेरी सारी करतूतें राजा देव को बताऊंगा कि...।"

"मैं तो कुछ भी बुरा नहीं कर रहा।"

"तू सब कुछ बुरा कर रहा है। तू रानी ताशा के बारे में सोच रहा है, राजा देव के बारे में नहीं। मेरा मुकाबला करने के लिए तूने सोमाथ को

बनाया, ये तेरी सबसे बड़ी काली करतूत है। राजा देव तुझे सजा जरूर देंगे।"

"मैं कुछ भी गलत नहीं कर रहा।"

"बबूसा कहता है कि तू गलत कर रहा है तो गलत कर रहा है, मत भूल इस जन्म में मेरा दिमाग राजा देव जैसा है। मेरा कोई भी फैसला गलत नहीं हो सकता। मैं राजा देव को सब कुछ बता के रहूंगा कि...।"

महापंडित के हंसने की आवाज आई।

"तेरे को, तेरे इरादों में सफलता नहीं मिलेगी।" महापंडित का स्वर आया।

"वो क्यों?" बबूसा के दांत भिंच गए।

"इस बार जब मैंने रानी ताशा का जन्म कराया था तो उनके चेहरे पर मैंने ऐसा प्रभाव छोड़ा था कि राजा देव रानी ताशा को देखते ही दीवाने हो जाएं। बबूसा—तू तो राजा देव की, रानी ताशा के प्रति दीवानगी को जानता ही है कि राजा देव को रानी ताशा के अलावा और कुछ दिखता ही नहीं।"

"तो ये चाल भी चल दी तूने।"

"राजा देव, रानी ताशा को देखेंगे तो उसके साथ खिंचे चले आएंगे सदूर ग्रह पर।"

"मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।"

"ये होकर रहेगा। राजा देव, रानी ताशा को देखते ही दीवाने हो जाएंगे और...।"

"मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।"

"तुम सोमाथ के हाथों ही नहीं बचोगे। तुम कुछ भी नहीं कर सकोगे। तुम्हारी मौत के बाद ये काम जारी रहेगा बबूसा।"

"तो तुमने मेरी मौत के बारे में भी सोच लिया?" बबूसा के दांत भिंच गए।

"रानी ताशा से विद्रोह करोगे तो तुम्हारी मौत होने की सम्भावना खड़ी हो जाती है।" महापंडित की आवाज आई।

"ठीक है महापंडित, ऐसा ही सही।" बबूसा गुर्रा उठा—"तुम अपनी करो और मैं अपनी करूंगा।"

"अगर बाद में तुम्हारा विचार बदले तो रानी ताशा के सामने सिर झुका देना।"

"इस स्थिति में बबूसा का सिर रानी ताशा के सामने नहीं झुकेगा। मैं सिर्फ राजा देव का सेवक हूं।"

"तुम्हें सब कुछ समझाकर, तुम्हारा नया जन्म कराकर, पोपा तुम्हें

पृथ्वी ग्रह पर डोबू जाति के पास छोड़ आया था और अब वक्त आया तो तुम विद्रोह पर उतर गए। तुम तो बहुत कमीने हो बबूसा।"

"हकीकत को करीब पाकर राजा देव के प्रति मुझे अपना फर्ज याद आ गया।"

"सोमाथ तुम्हारा ये जन्म खत्म कर देगा। चूंकि तुम पृथ्वी ग्रह पर जान गंवाओगे तो ऐसे में सदूर ग्रह पर कभी भी नहीं आ पाओगे। उसके बाद तुम्हारा जन्म होगा तो पृथ्वी ग्रह पर ही। राजा देव की तरह तुम भी सदूर की यादों को भुला बैठोगे।"

"राजा देव की सेवा में मुझे कैसी भी मृत्यु स्वीकार है।"

"तुम्हारी इच्छा।"

"एक बात तो तुम्हें पता ही होगी महापंडित।"

"क्या?"

"रानी ताशा ने राजा देव को सदूर ग्रह से बाहर फेंक दिया। ऐसे में तो राजा देव की मृत्यु हो जानी चाहिए थी परंतु वो पृथ्वी ग्रह पर जिंदा हैं, जन्म पर जन्म ले रहे हैं। राजा देव पृथ्वी ग्रह पर कैसे पहुंचे?"

"इसकी जानकारी मुझे भी नहीं है कि पाइप में फेंके जाने के बाद राजा देव पर क्या बीती, वो इतनी दूर पृथ्वी ग्रह पर कैसे पहुंचे।" महापंडित की आवाज आई—"तुम्हें ये बात जानने की क्या जरूरत पड़ गई।"

"ऐसे ही।"

"राजा देव से ये सवाल पूछना कि वो जीवित कैसे रहे।"

"उन्हें याद होगा क्या?"

"शायद नहीं। तुम्हें सोमाथ के बारे में सोचना चाहिए। तुमने रानी ताशा का साथ नहीं दिया तो वो रानी ताशा के इशारे पर तुम्हारी जान...।"

"चले जाओ महापंडित।" बबूसा एकाएक गुर्रा उठा—"तुम्हारी कमीनगी मैंने देख ली है। सोमाथ को बनाकर तुमने गलत किया।"

उसी पल दीवार से महापंडित की परछाईं गायब हो गई।

बबूसा दांत भींचे दीवार को देखता रहा। पलटा तो धरा को अपनी तरफ देखते पाया।

"तुम्हारे लिए तो मुसीबतें बढ़ती जा रही हैं।" धरा बोल उठी।

बबूसा गुर्राया।

"ये सोमाथ क्या है?"

"जो भी है, बेहद खतरनाक होगा। महापंडित ऐसे जानलेवा इंसानों का निर्माण करता रहता है जो किसी के काबू में नहीं आते। सोमाथ भी

महापंडित के किसी नए निर्माण का हिस्सा होगा। ये ठीक नहीं किया महापंडित ने।" बबूसा दांत भींचकर बोला।

"अब क्या करोगे बबूसा?"

"रानी ताशा पोपा में बैठकर सदूर ग्रह से चल चुकी है। सोमाथ भी साथ में है और रानी ताशा के खास लोग भी साथ हैं। चार दिन हो चुके हैं उन्हें चले और अगले चार-पांच दिन में वो पृथ्वी ग्रह पर पहुंच जाएंगे।" बबूसा के चेहरे पर कठोरता नाच रही थी—"समय बहुत कम है। बहुत खतरनाक वक्त आने वाला है और मैं कुछ कर नहीं पा रहा।"

"मेरे खयाल में तुम्हें इतनी चिंता नहीं करनी चाहिए।" धरा कह उठी।

"क्यों?"

"रानी ताशा अपने राजा को वापस अपने ग्रह ले जाना चाहती है तो उन्हें ले जाने दो। बुरा क्या है?"

"सब कुछ तो बुरा है इसमें।"

"कैसे?"

"तुम्हें पता है रानी ताशा ने तब राजा देव के साथ क्या किया था?"

"नहीं पता, क्या किया था?"

"मैं तुम्हें नहीं बता सकता। परंतु जो किया था, वो सब कुछ राजा देव की जानकारी में होना चाहिए जो कि वो भूल चुके हैं, अगर राजा देव को वो वक्त याद आ जाए तो वो रानी ताशा के दीवाने नहीं होंगे। सतर्क हो जाएंगे।"

"तो तुम चाहते हो कि राजा देव, वापस सदूर ग्रह पर न लौटे।"

"मैं ऐसा क्यों चाहूंगा। उनके वापस लौटने पर सबसे ज्यादा खुशी तो मुझे ही होगी। परंतु मैं राजा देव को रानी ताशा की असली तस्वीर दिखा देना चाहता हूं कि रानी ताशा ने उनके साथ क्या किया था।" बबूसा शब्दों को चबाकर कह उठा—"राजा देव के इशारे के बिना ग्रह का पत्ता तक नहीं हिलता था और रानी ताशा की साजिश, राजा देव पर सफल हो गई। मुझे या राजा देव को हवा तक नहीं लगी कि रानी ताशा कुछ करने जा रही है, परंतु मुझे एक-दो बार रानी ताशा पर शक जरूर हुआ कि जैसे कुछ गलत हो रहा है, परंतु फिर मैंने इस विचार को वहम समझकर टाल दिया। राजा देव से कुछ नहीं कहा और ये ही मेरी भूल थी। अगर मुझे रानी ताशा की चाल का आभास हो गया होता तो मैं राजा देव को अवश्य सतर्क कर देता और वो सब कुछ न हुआ होता जो हो गया था। उसका आभास तो मुझे हुआ, परंतु देर हो चुकी थी तब।"

धरा बबूसा को देखती रही।

बबूसा के चेहरे पर गुस्सा और गम्भीरता दिख रही थी।

"एक बात तो बताओ बबूसा।"

"कहो।" बबूसा ने धरा को देखा।

"उस जन्म के बाद रानी ताशा कई जन्म ले चुकी है जैसा कि महापंडित ने कहा और मैंने सुना। रानी ताशा को अपने किए का बहुत पश्चात्ताप हो रहा है। तुम भी इस बात को स्वीकारते हो—है न?"

"तो?"

"रानी ताशा ने किसी भी जन्म में किसी मर्द का साथ हासिल नहीं किया। वो सिर्फ राजा देव को ही वापस लाने के बारे में सोचती रही, जबसे महापंडित ने उसे बताया कि राजा देव जिंदा है। ये ही हुआ न बाद में?"

बबूसा ने सहमति से सिर हिलाया।

"फिर तो रानी ताशा ने अपनी करनी का काफी ज्यादा पश्चात्ताप कर लिया है। वरना वो चाहती तो ग्रह की रानी होने का पूरा फायदा उठा सकती थी। क्या नहीं कर सकती थी। ग्रह का एक से एक बढ़िया आदमी उसके कदमों में होता और...।"

"वो सब मुझे पता है।"

"पता है तो फिर तुम्हें रानी ताशा का साथ देना चाहिए कि...।"

"मैं रानी ताशा के खिलाफ नहीं हूं।"

"तो?"

"मैं बस राजा देव को ये बताना चाहता हूं कि तब रानी ताशा ने उनके साथ क्या किया था। राजा देव वो वक्त भूल चुके हैं और रानी ताशा उनके सामने आने वाली है। मैं तो सिर्फ अपना फर्ज पूरा कर रहा हूं। राजा देव के साथ मेरे सम्बंध बहुत अच्छे थे। वो मुझे दोस्त मानते थे और वो बातें भी मेरे साथ कर लेते थे, जो कि रानी ताशा को भी पता न होती थीं।"

"तुम्हारा सोचना अपनी जगह सही है और रानी ताशा भी अपनी जगह सही है परंतु समस्या तो यहां आ रही है कि राजा देव यानी कि देवराज चौहान तुम्हारी बातों पर यकीन नहीं कर रहा कि तुम सही कह...।"

"राजा देव मेरी बातों का यकीन जरूर कर लेंगे। अगर वो मेरे सामने पड़ जाएं तो मैं उन्हें विश्वास दिला दूंगा कि मैं जो कह रहा हूं वो सच है। राजा देव को अब जल्दी से ढूंढ़ना पड़ेगा। तुम मेरा साथ दो धरा राजा देव को ढूंढ़ने में।"

"मैं तुम्हारे साथ हूं। जा भी कहां सकती हूं, डोबू जाति के लोग तो मेरी जान के पीछे हैं। तुम्हारे साथ रहकर ही बची रह सकती हूं। तुमसे अलग हुई तो तभी मार दी जाऊंगी।" धरा गम्भीर और परेशान स्वर में कह उठी।

"तुम्हें कुछ नहीं होने दूंगा।"

"देवराज चौहान को ढूंढ़ोगे कैसे?"

"उनकी गंध से। इसके लिए मुझे पूरे शहर में घूमते रहना होगा। राजा देव जहां रहते हैं, वहां से बाहर भी निकलते होंगे। वो मेरे से एक खास दूरी पर हुए तो मैं उनकी गंध पा लूंगा। बस ये ही एक रास्ता है मेरे पास।"

"इस तरह तो बहुत देर लग जाएगी देवराज चौहान को ढूंढ़ने में।"

"मैं और कर भी क्या सकता हूं।" बबूसा ने कठोर स्वर में कहा।

"सोहनलाल के यहां भी हो लेते हैं, शायद वो...।"

"वो, राजा देव के पास है।"

"क्या पता वो वापस अपने घर आ जाए अब तक। नहा-धोकर हम निकलेंगे। उसके घर पहुंचते-पहुंचते दोपहर का एक बज जाएगा। शायद सोहनलाल हमें वहीं मिल जाए। एक बार देख लेने में क्या हर्ज है।"

▭ ▭

नाश्ते में जगमोहन और सोहनलाल ने मिलकर पनीर वाले परांठे बनाए थे और देवराज चौहान के साथ मिलकर नाश्ता किया था। नाश्ता करते-करते दिन के बारह बज गए थे। ऐसे में दोपहर के लंच का तो मतलब ही नहीं था। उसके बाद जगमोहन ने कॉफी बनाई। देवराज चौहान अपना प्याला लेकर बेडरूम में चला गया था और डोबू जाति के चौकोर पत्तियों वाले हथियार को फिर से ध्यानपूर्वक देखने लगा था।

सोहनलाल ने कॉफी का घूंट भरने के बाद कहा।

"तुम्हारा क्या खयाल है कल वो लड़की बच गई होगी या नहीं?"

"कह नहीं सकता।" जगमोहन को धरा का चेहरा याद आ गया।

"जैसे हथियारों से तुम पर वार किया गया, उसे देखकर तो महसूस होता है कि उन्होंने पीछा नहीं छोड़ा होगा।"

"क्या पता। मुझे तो पीछे आता कोई दिखा नहीं। डोबू जाति के लोग रहस्यमय बनकर हमारे सामने आ रहे हैं। वो...।"

"और बबूसा?"

"वो भी।" जगमोहन ने सिर हिलाया—"अपने बारे में वो कहता है कि वो किसी सदूर ग्रह का है। उसका जन्म वहीं हुआ, परंतु जब वो कुछ ही दिन का था कि पोपा उसे डोबू जाति में छोड़ गया था।"

"पोपा क्या?"

"वो लोग अंतरिक्ष यान को पोपा कहते हैं।"

"समझा।" सोहनलाल सोच भरे स्वर में बोला—"मैंने बबूसा को अपने सामने बैठे देखा है। उससे बातें कीं। वो हम जैसा ही है। परंतु

फिर भी उसमें मुझे कुछ खास लगा। जैसे कि वो खतरनाक लगा। लड़ने-झगड़ने और न डरने वाला लगा। उसके चेहरे पर मैंने ऐसे भावों को मौजूद देखा जैसे तपती आग से बाहर निकला हो। यकीनन उसमें कुछ खास है।"

"कैसा खास?"

"कह नहीं सकता। बयान नहीं कर सकता। समझा नहीं सकता। परंतु बबूसा में मैंने कुछ खास एहसास पाया था। एक ही निगाह में उसे देखते ही मुझे महसूस हुआ कि इस पर काबू नहीं पाया जा सकता। तभी तो मैं वहां से खिसक आया था।"

"उसकी बातों पर भरोसा नहीं होता।" जगमोहन ने कहा।

"पर मुझे वो काफी हद तक सच्चा लगता है।"

"कैसे कह सकते हो?"

"जब उसने मुझसे बात की तो मैंने उसकी बातों में बनावट नहीं पाई। वो गम्भीर था और यकीन से अपनी बात कह रहा था। परंतु पहली बार में जो भी उसकी बातें सुनेगा, कभी भी यकीन नहीं करेगा। मैंने उसके चेहरे के हाव-भाव देखे हैं, कभी-कभी वो मुझे सच्चा लगता है।"

"वो लड़की धरा क्यों उसके साथ है?" जगमोहन सोच-भरे स्वर में बोला।

"रात देवराज चौहान ने बबूसा से बात करके जो बताया और धरा के साथ होते जो तुम्हारे साथ बीता, इन सब बातों को सुनकर तो ये ही लगता है कि वो खुद खतरे में है। डोबू जाति वाले उसे मार देना चाहते हैं, जबकि बबूसा उसे बचा रहा है उनसे।"

"मैंने पूछा है कि वो धरा नाम की लड़की, बबूसा के साथ क्यों है।"

"क्या पता बबूसा और धरा के बीच क्या चल रहा है। तुम कल धरा से अनजान थे कि वो बबूसा के साथ की लड़की है।"

"वो अपने बारे में कुछ बताती तो उसके बारे में जान पाता।"

"अब बबूसा देवराज चौहान से बात करेगा तो मुलाकात तय हो जाएगी। हम मिलकर उससे बात करेंगे। तब...।" सोहनलाल अपनी बात पूरी न कर सका और मोबाइल बज उठा।

सोहनलाल ने फोन निकालकर नम्बर देखा, दूसरी तरफ नानिया थी।

"कहो नानिया।" सोहनलाल ने बात की।

"मूसा आया था अभी, साथ में लड़की भी थी।" नानिया ने उधर से कहा।

"मूसा?" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"वो ही जिसकी वजह से कल तुम घर से खिसक गए...।"

"बबूसा।"

"हां-हां, वो ही। अभी वो गया है। तुम्हें पूछ रहा है उसके साथ जो लड़की थी वो कह रही थी कि तुमसे फोन पर ही बात करा दूं।"

"करा देती।" सोहनलाल कह उठा।

"करा देती?" नानिया का तेज स्वर सोहनलाल के कानों में पड़ा—"कराती तो तुम कहते क्यों कराई।"

"अब वो बात नहीं है।" सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

"क्या बात नहीं है?"

"देवराज चौहान बबूसा से मिलने को तैयार हो गया है।"

"तो मुझे क्या पता। या तो तुम पहले ही बता देते।"

"छोड़ो अब...।"

"नाश्ता कर लिया?" उधर से नानिया ने पूछा।

"हां।"

"क्या खाया?"

"पनीर के परांठे।"

"कुछ तो खयाल करो अपना। इस उम्र में पनीर के परांठे हजम कैसे होंगे।"

"इस उम्र में—क्या हुआ है मेरी उम्र को?" सोहनलाल सकपका उठा—"जगमोहन की उम्र का ही तो हूं।"

जगमोहन ने मुस्कराकर सोहनलाल को देखा।

"मैंने टिंडे बना रखे हैं और तुम परांठे खा रहे हो। घर आओ टिंडे खिलाती हूं।"

"तुम बार-बार टिंडों का नाम क्यों ले रही हो?"

"वो तुमने कहकर बनवाए थे कि टिंडे तुम्हें बहुत अच्छे लगते हैं वो तो तुम्हारे गले में डालकर रहूंगी।"

सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

"घर आ जाओ अब, बैठे क्या कर रहे हो?"

"घर पर भी क्या करूंगा। शाम तक आ जाता हूं। कुछ लाना हो तो बता दो।"

उधर से नानिया ने फोन बंद कर दिया।

सोहनलाल ने फोन बंद करके जेब में रखते हुए कहा।

"बबूसा कुछ देर पहले धरा के साथ मेरे को पूछने नानिया के पास गया था।"

"इसका मतलब धरा रात को बच गई।" जगमोहन बोला—"बबूसा ने उसे ढूंढ़ निकाला।"

"बबूसा देवराज चौहान को तलाश करने की पूरी कोशिश कर रहा है। वो थकने वाला नहीं लगता।"

"अब तो मेरा मन भी बबूसा से मिलने का हो रहा है। देखूं तो सही कि वो अपनी बात को कैसे सामने रखता है।" जगमोहन कह उठा।

"उसके सामने सतर्क रहना। वो खतरनाक है।"

▭ ▭

बबूसा और धरा दिन भर टैक्सी में बैठे मुम्बई की सड़कों पर घूमते रहे। बबूसा, देवराज चौहान की गंध पा लेना चाहता था कि देवराज चौहान पास में कहीं से गुजरे तो गंध उसे मिल जाए।

परंतु अपनी कोशिशों में उसे कामयाबी नहीं मिली।

धरा थक चुकी थी। जबसे डोबू जाति के ठिकाने पर गई थी तब से उसे एक पल का भी आराम नहीं मिला था और भागती ही रही थी। बहुत मन कर रहा था घर जाने का, परंतु घर जाने से उसे डर लग रहा था कि डोबू जाति के योद्धा उसकी जान लेने की खातिर वहां न छिपे हों। बबूसा के साथ ही खुद को सुरक्षित महसूस कर रही थी वो।

जब दिन ढला तो बबूसा ने धरा के मोबाइल फोन से उस होटल के वेटर को फोन किया, जिसके पास उसने डोबू जाति के हथियार रखे हुए थे। बबूसा अब उन हथियारों को अपने पास रख लेना चाहता था। क्योंकि हालातों की गम्भीरता का अंदाजा उसे होने लगा था। रानी ताशा सदूर ग्रह से कब की निकल चुकी थी। पोपा तेजी से पृथ्वी की तरफ बढ़ रहा था। आने वाला वक्त उसके लिए कठिनाइयों से भरा था, जबकि अभी तक राजा देव के पास नहीं पहुंच पाया था वो। उसे मन-ही-मन इस बात की चिंता थी कि कहीं रानी ताशा, उससे पहले ही, राजा देव तक न पहुंच जाए और राजा देव पहले की तरह रानी ताशा के दीवाने होकर सब कुछ भूल जाए। ऐसे में उन्हें सदूर ग्रह का वो वक्त भी याद नहीं आएगा कि तब रानी ताशा ने क्या किया था उनके साथ।

वेटर ने उसे बताया कि इस वक्त वो ड्यूटी पर है और उसका दिया थैला घर पर रखा है। रात 12 बजे उसकी ड्यूटी खत्म होगी, तब वो थैले को वापस दे सकता है।

बबूसा ने कहा कि वो उसे कल सुबह फोन करेगा।

धरा ने अपने थकने की बात कही तो बबूसा होटल आ पहुंचा कि धरा आराम कर सके।

बबूसा के चेहरे पर गम्भीरता नाच रही थी। चेहरे के भाव बन-बिगड़ रहे थे। धरा बेड पर जा लेटी थी और इंटरकॉम का रिसीवर उठाकर उसने दो कॉफी और सैंडविच मंगा लिए थे।

"तुम आराम कर लो।" बबूसा बोला—"उसके बाद हम फिर राजा देव की तलाश के लिए बाहर जाएंगे।"

"मैं थक चुकी हूं।" धरा बोली।

बबूसा के चेहरे पर सोच के भाव उभरे फिर कह उठा।

"तुम आराम करो, मैं राजा देव को गंध के माध्यम से, बाहर जाकर ढूंढ़ता हूं।"

"नहीं।" धरा तुरंत उठ बैठी—"मैं तुम्हारे साथ जाऊंगी।" चेहरे पर कई रंग आकर गायब हो गए।

"हां, तुम मेरे साथ ही रहोगी। तुम खतरे में हो।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं तुम्हारे साथ जाऊंगी।"

बबूसा ने सहमति से सिर हिला दिया।

धरा अभी भी बबूसा को देख रही थी। चेहरे पर सोच के भाव थे। वो कह उठी।

"रात तुमने मुझे गंध के सहारे ढूंढ़ निकाला था।"

"तो?"

"इस तरह तुम देवराज चौहान को भी गंध के सहारे ढूंढ़ सकते हो।"

"ये सम्भव नहीं।"

"क्यों?"

"जब तक मुझे राजा देव की गंध किसी जगह पर नहीं मिलेगी, तब तक मैं राजा देव को तलाश नहीं कर पाऊंगा। जैसे कि मैं सोहनलाल के घर गया। वहां पर बीते चंद दिनों में राजा देव आए होते और मुझे उनकी गंध मिल जाती तो मैं गंध का पीछा करके मालूम कर सकता था कि राजा देव वहां से कहां गए हैं। मतलब कि तब तो मैं हर हाल में राजा देव को ढूंढ़ लेता, परंतु सोहनलाल के यहां राजा देव की गंध न मिलने का मतलब है कि लम्बे समय से राजा देव सोहनलाल के घर नहीं आए।" बबूसा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"इसका मतलब कि जहां पर देवराज चौहान गया हो, ऐसी एक जगह का तुम्हें पता चल जाए तो तुम देवराज चौहान तक पहुंच सकते हो।" धरा बोली—"परंतु ये कैसे पता चलेगा कि देवराज चौहान कहां-कहां जाता है।"

"बीते चंद दिनों में जहां राजा देव गए हों। ताकि उनकी गंध वहां के वातावरण में मौजूद हो।"

"ऐसी किसी जगह को हम ढूंढ़ें कैसे?"

"ये तुम सोचो। तुम इस ग्रह की हो। मेरी सहायता कर सकती हो।" बबूसा ने कहा।

"ये बात तो देवराज चौहान की जान-पहचान का आदमी ही बता सकता है कि बीते कुछ दिनों में देवराज चौहान कहां-कहां गया और हमारे सामने सोहनलाल ही है परंतु वो बताने वाला नहीं।" धरा सोच भरे स्वर में बोली।

"वो अगर मेरे हाथ लग जाता तो मैं उसके मुंह से सब निकलवा लेता।" बबूसा गुर्रा उठा।

"तुम हर वक्त लड़ाई-झगड़े की ही क्यों सोचते हो?"

"तुम नहीं समझती कि कितनी देर होती जा रही है।" बबूसा हवा में हाथ लहराकर बोला—"मुसीबत का वक्त करीब आता जा रहा है। रानी ताशा पोपा में बैठकर आ रही है। आने वाला वक्त कितना खतरनाक होगा, ये मैं ही समझ सकता हूं परंतु तुम्हें नहीं समझा सकता। अगर मुझे राजा देव तक पहुंचने में देर हो गई तो बबूसा अपने फर्ज से हार जाएगा। राजा देव को मैं चौकन्ना कर देना चाहता हूं ताकि वो रानी ताशा की किसी चाल में, या उसकी खूबसूरती के जाल में न फंसे। मैं वो वक्त कभी भी नहीं भूल सकता जब रानी ताशा ने राजा देव को धोखा दिया और चालाकी से सदूर ग्रह से बाहर फिंकवा दिया।"

"भला किसी को ग्रह से बाहर कैसे फेंका जा सकता है?" धरा कह उठी।

"हमारे ग्रह की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि ग्रह से बाहर फेंका जा सकता है। जिसे भी ग्रह से बाहर फेंकना होता है उसे उस पाइप में फेंक दिया जाता है। पाइप का वो रास्ता कभी राजा देव ने ही तैयार किया...।"

"कैसी पाइप?"

बबूसा ने धरा को देखा और कह उठा।

"मैं व्यर्थ की बातों में पड़ गया, मुझे राजा देव के बारे में सोचना...।"

तभी दरवाजा खटखटाया गया।

बबूसा ने दरवाजे को देखा और आगे बढ़कर दरवाजा खोल दिया।

वेटर कॉफी और सैंडविच ले आया था।

▭ ▭

बबूसा और धरा शाम के गए रात एक बजे लौटे। परंतु बबूसा को देवराज चौहान की गंध कहीं से नहीं मिली। धरा थक चुकी थी और आते ही सो गई, परंतु बबूसा जागता रहा, सोच-विचार करता रहा। रह-रहकर उसकी निगाह गहरी नींद में डूबी धरा की तरफ भी उठ जाती थी।

इसी तरह तीन दिन बीत गए।

आज चौथा दिन था। महापंडित के कहे मुताबिक आज रानी ताशा का पोपा पृथ्वी ग्रह पर पहुंच सकता था। बबूसा जब सोया उठा तो बहुत

परेशान दिखा। वो मात्र दो घंटे ही सो पाया था। धरा इन दिनों बहुत ज्यादा थक चुकी थी। हर वक्त वो बबूसा के साए में रहकर भागती रहती थी। मन-ही-मन उसे इस बात का चैन था कि डोबू जाति के योद्धा उसे नहीं ढूंढ़ पाए। परंतु डर भी था कि वो कभी भी सामने आ सकते हैं।

"तुम इतने परेशान क्यों हो?" धरा ने सोए उठने पर, बबूसा को देखा तो कह उठी।

"सम्भव है आज रानी ताशा का पोपा पृथ्वी ग्रह पर पहुंच जाए और मैं राजा देव को नहीं ढूंढ़ पाया। वक्त करीब आ चुका है परंतु मुझे सफलता नहीं मिल रही।" बबूसा गुस्से से कह उठा।

"ये पक्का है कि रानी ताशा आज पृथ्वी पर पहुंच जाएगी?" धरा बोली।

"महापंडित ने ऐसा ही कहा था।"

"वो झूठ भी तो कह सकता...।"

"ये बात वो झूठ नहीं कहेगा। इससे उसे कोई फायदा नहीं मिलेगा।" बबूसा गुर्रा उठा—"मेरी गैरमौजूदगी में अगर रानी ताशा, राजा देव के पास पहुंच गई तो फिर जाने क्या होगा...।"

"तुम अपनी परेशानियां खत्म कर सकते हो बबूसा।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"कैसे?"

"अपने इरादे से पीछे हट जाओ। रानी ताशा का साथ दो और राजा देव को सदूर ग्रह पर ले जाओ।"

"दोबारा ऐसा कभी मत कहना।" बबूसा ने बेहद कठोर निगाहों से धरा को देखा।

धरा कुछ सहम-सी गई।

"तुम अभी कुछ नहीं जानती। उस असलियत से बहुत दूर हो जब रानी ताशा ने राजा देव को धोखा दिया था। उस धोखे को रानी ताशा का कैसा भी पश्चात्ताप कम नहीं कर सकता। वो वक्त माफी के लायक नहीं है, बेशक रानी ताशा ने चार जन्मों तक ही क्यों न अपने किए का पश्चात्ताप किया हो। राजा देव को जब अपने उस जन्म का होश आएगा और वो सब कुछ जानेंगे तो रानी ताशा को कभी माफ नहीं करेंगे और कठोर से कठोर सजा देंगे।"

"ऐसा क्या कर दिया था रानी ताशा ने?" धरा के माथे पर बल पड़े।

"तुम बातों में मेरा वक्त बर्बाद मत करो। मुझे राजा देव को तलाश करना है। तुम्हारे साथ मैं इस आशा में हूं कि तुम मेरी सहायता करोगी राजा देव की तलाश में...।"

"सहायता कर तो रही...।"

"मुझे राजा देव चाहिए। मैं जल्द-से-जल्द उनसे मिलना चाहता हूं।" बबूसा का चेहरा क्रोध से तप रहा था।

"आज फिर देवराज चौहान को ढूंढ़ने निकलते हैं। तुम समाधि के द्वारा देवराज चौहान से बात करके देखो।"

"कोई फायदा नहीं होगा। कितनी बार तो बात की है परंतु राजा देव अपनी जिद से हिल नहीं रहे। उन्हें मेरी बातों का भरोसा नहीं है। मुझे वो पहचानते नहीं हैं मुझसे मिलने को भी तैयार नहीं हैं। वो आने वाले खतरे को समझ नहीं रहे। मुझे लगता है कि जैसे देर हो चुकी है। सिर्फ आज का दिन ही बाकी है। उसके बाद रानी ताशा कभी भी पृथ्वी ग्रह पर आ जाएगी और...।"

"तो इतनी जल्दी वो कैसे देवराज चौहान तक पहुंच सकती है। हम कितने दिन से उसे ढूंढ़ रहे...।"

"महापंडित।" बबूसा के दांत भिंच गए—"तुम महापंडित को भूल रही हो।"

"मैं समझी नहीं कि महापंडित...।"

"महापंडित बैठा है रानी ताशा को रास्ता दिखाने वाला। वो रानी ताशा को राजा देव तक पहुंचने का सीधा रास्ता बता देगा। महापंडित सच में बहुत बड़ा ज्ञानी है, जैसे सब कुछ उसके बस में हो।"

"परंतु महापंडित तो कहता था कि सदूर ग्रह और पृथ्वी ग्रह में दूरी बहुत है। यहां उसका बस नहीं चल रहा...।"

"वो सब रास्ते निकाल लेता है। रानी ताशा की सहायता करने के लिए तो वो कुछ भी कर सकता है। परंतु वो बबूसा को भूल रहा है जो राजा देव का ही दूसरा रूप है और उसी ने ही मेरा जन्म कराया है। बेशक वो सोमाथ का निर्माण करके, उसे रानी ताशा के साथ भेजा है, लेकिन बबूसा हारेगा नहीं। इन बातों का तभी फायदा है जब मैं राजा देव को तलाश करके, उनके पास वक्त रहते पहुंच जाऊं, नहीं तो अनर्थ भी हो सकता...।"

"तैयार होकर यहां से निकलते हैं बबूसा और जैसे भी हो देवराज चौहान को तलाश करते हैं।" धरा उठते हुए कह उठी—"मैंने पहनने को कपड़े भी लेने हैं। ये बहुत मैले हो चुके हैं। क्या तुम मेरे घर पर चल सकते हो?"

"घर पर—क्यों?"

"वहां से मैं कपड़े ले सकती हूं।"

"मेरे पास वक्त बहुत कम रह गया है। वहां डोबू जाति के योद्धा भी

तुम्हारे इंतजार में मौजूद हो सकते हैं, ऐसे में बात बढ़ जाएगी और समय व्यर्थ होगा। बेहतर है तुम कपड़े बाजार से खरीद लो।"

बबूसा और धरा तैयार होने लगे। वे नहा लिए। नाश्ते के बारे में धरा ने कहा कि वो बाहर कहीं से नाश्ता कर लेंगे, होटल में खाने का ऑर्डर देने में वक्त लगेगा।

तब वो कमरे से बाहर निकलने वाले थे कि बबूसा वहीं रुक गया।

उसने चंद गहरी सांसें लीं।

"तुम रुक क्यों गए।" धरा बोली—"चलो अब...।"

"वो फिर आ गए।" बबूसा के होंठों से गुर्राहट निकली।

"क-कौन?" धरा घबरा उठी।

"डोबू जाति के योद्धा।" बबूसा ने दांत भींचकर कहा—"वो बाहर ही हैं।"

धरा के चेहरे का रंग सफेद पड़ गया।

"तुम बाथरूम में जाओ।" बबूसा गुर्राया।

"लेकिन।"

"मेरी बात फौरन मानो, जल्दी...।"

धरा पलटी और दौड़ती हुई बाथरूम में प्रवेश कर गई। दरवाजा बंद कर लिया। बबूसा की खतरनाक निगाह कमरे के दरवाजे पर जा टिकी।

तभी दरवाजा थपथपाया गया।

बबूसा के शरीर में अजीब-सा तनाव भर आया। वो आगे बढ़ा और दरवाजे के पास पहुंचकर दरवाजा खोल दिया फिर पीछे हटता चला गया। तुरंत ही दरवाजा खुला और एक के बाद एक डोबू जाति के सात योद्धाओं ने भीतर प्रवेश किया और कमरे में फैलते चले गए। उन्हें मौत भरी निगाहों से देखते बबूसा ने पहनी कमीज उतारी तो नीचे लैदर की बनियान जैसी चीज छाती से लिपटी दिखी, जिसमें ढेरों नन्हे-नन्हे चाकू फंसे थे और करीब आधी जगहों पर चाकू नहीं थे। वो इस्तेमाल हो चुके थे।

बबूसा उन सातों को पहचानता था।

"वो लड़की कहां है बबूसा?" एक ने सख्त स्वर में पूछा।

"यहीं है।" बबूसा का स्वर बेहद खतरनाक था।

"हमें तुमसे कोई दुश्मनी नहीं। हम सिर्फ उस लड़की को मारना चाहते हैं। ओमारू का आदेश है।"

"मेरे होते तुम लोग लड़की का कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

"तुम एक मामूली-सी लड़की की वजह से जाति के दुश्मन बनते जा रहे हो।"

"मैं तुम लोगों में से नहीं हूं। मुझे परवाह नहीं तुम्हारी जाति की।" बबूसा गुर्राया—"रानी ताशा पोपा पर आज आ रही है। मैं उन लोगों में से हूं। रानी ताशा के आने की खबर तो होगी तुम लोगों को।"

उसी पल एक ने पलक झपकते ही बबूसा पर छलांग लगा दी।

वो बबूसा से आ टकराया।

ये होते ही बाकी सब भी बबूसा पर झपट पड़े।

बहुत तेजी से सब कुछ हुआ और बबूसा को संभलने का मौका नहीं मिला। वे सातों मकड़ी के पैरों की भांति बबूसा से आ चिपके कि बबूसा अपने हथियारों का, या हाथ-पैरों का इस्तेमाल न कर सके।

बबूसा गुर्राकर रह गया।

दो ने उसकी टांगें पकड़ रखी थीं। दो ने उसकी बांहें पीछे करके जकड़ ली थीं। एक उसकी कमर से लिपटा हुआ था। दो पास में सतर्क से खड़े थे। बबूसा फड़फड़ा रहा था।

"लड़की को देखो, वो कहां है, वो कमरे में ही कहीं है।" टांगें पकड़ने वाले ने कहा।

बाकी दो तेजी से कमरे में धरा की तलाश करने लगे।

बबूसा ने अपनी बांहों को आजाद करने की चेष्टा की।

लेकिन उनके बंधन बेहद जबर्दस्त थे।

बबूसा पूरी ताकत लगाकर भी सफल नहीं हो पा रहा था। उसके होंठों से गुर्राहट निकल रही थी। वो समझ चुका था कि इस बार इनका प्लान उस पर वार करने का नहीं, उस पर काबू पाने का था, तभी वो धोखे में फंस गया।

धरा को ढूंढ़ते एक बाथरूम के दरवाजे पर पहुंचा। दरवाजे को धक्का दिया तो वो नहीं खुला। उसने जोरों से दरवाजा थपथपाया। दूसरा भी उसके पास आ गया। उनकी नजरें मिलीं।

"वो भीतर है।" एक ने कठोर स्वर में कहा।

"दरवाजा तोड़ दो।"

अगले ही पल दरवाजे को धक्का दिया जाने लगा।

इधर बबूसा आजाद होने के लिए पूरी ताकत लगा रहा था परंतु इन योद्धाओं की पकड़ से बच पाना भी आसान नहीं था। निःसंदेह इनके बंधन लोहे की जंजीरों से भी मजबूत थे और पांच-पांच लोगों ने बबूसा को जकड़ रखा था। बबूसा इन योद्धाओं की ताकत को बखूबी जानता था।

एकाएक बबूसा ने अपना शरीर ढीला छोड़ दिया। जैसे हार मान ली हो।

वो दोनों बाथरूम के दरवाजे को धक्के दे रहे थे।

इस शोर को सुनकर बाहर से निकलता एक वेटर, खुले दरवाजे से भीतर आ गया।

वेटर ने भीतर का नजारा देखा तो चौंका।

"ये क्या कर रहे हो।" वेटर कह उठा—"मैं अभी मालिक को खबर करता...।"

तभी बाथरूम के दरवाजे को धक्का देते एक के हाथ में खंजर चमका और अगले ही पल हवा में तैरता वेटर की छाती में जा धंसा। वेटर दरवाजे से टकराया और नीचे गिरता चला गया। वो आदमी तुरंत उसके पास पहुंचा। वेटर को टांग से पकड़कर भीतर खींचा और दरवाजा बंद कर दिया। फिर उसने वेटर की छाती में धंसे खंजर को एक ही झटके में बाहर खींच लिया। वेटर जोरों से तड़पा और शांत पड़ता चला गया। उसने वेटर के कपड़ों से खंजर का फल साफ किया और उसे कमीज के भीतर कहीं रखते बाथरूम की तरफ बढ़ गया।

"जल्दी करो।" बबूसा की टांग पकड़े, एक योद्धा सख्त स्वर में कह उठा।

"तुम लोग मेरी जान क्यों नहीं ले रहे?" बबूसा गुर्रा उठा।

"सोलाम ने कहा है कि बबूसा पर काबू करो और लड़की को मारो। परंतु हम तुम्हें मार भी सकते हैं बबूसा अगर तुम हमसे बेकाबू हुए तो, तुमने हमारे बहुत से योद्धा साथियों को मार दिया है।"

"तुम लोग भी मेरे हाथों ही मरोगे।"

"अब ये काम खत्म होने जा रहा है। लड़की मार दी जाएगी। वो हमारे ठिकाने पर पहुंचकर बहुत-सी बातें जान चुकी है। उसे जिंदा नहीं छोड़ा जा सकता। तुम जाने क्यों डोबू जाति से दुश्मनी मोल ले रहे हो।"

"रानी ताशा कब आ रही है?" बबूसा ने पूछा।

"रानी ताशा का तो नहीं पता परंतु पोपा आने वाला है। सोलाम ने बताया था।"

"कब आएगा पोपा?"

"बस आने वाला है आज-कल में...।"

तभी बबूसा ने देखा...बाथरूम का दरवाजा एकाएक खुलता चला गया और भीतर से कांपती-घबराई-सी धरा बहुत तेजी से बाहर निकली। बाहर खड़े योद्धा को उसने पूरी ताकत से धक्का देकर पीछे कर दिया था। इसके साथ ही उसकी निगाह बबूसा के हाल पर पड़ी तो पास ही पड़ी लकड़ी की कुर्सी उठाकर पूरी ताकत से बबूसा की तरफ फेंकी और दरवाजे की तरफ दौड़ी। परंतु बाथरूम के दरवाजे पर खड़े योद्धा के हाथों से खंजर निकल चुका था। कुर्सी फेंककर धरा दरवाजे की तरफ दौड़ी जब

तो खंजर से भी बच गई। उसने वो जगह छोड़ दी थी और खंजर उसी रास्ते को पार करता बेड पर जा लगा और लुढ़कता हुआ नीचे जा गिरा था। तेज आवाज उभरी थी।

परंतु धरा की फेंकी कुर्सी ने अंजाने में बहुत बड़ा काम कर दिया था। लकड़ी की कुर्सी उन तीन पर जा गिरी, जो बबूसा की टांगें थामे थे और एक ने कमर से थाम रखा था।

उन तीनों पर कुर्सी गिरते ही उनकी चीखें और कराहें गूंजीं।

बबूसा के बंधन ढीले हुए कुछ कि उसी पल बबूसा ने टांगों को तीव्र झटका देकर, उन तीनों को छिटक दिया। इस दौरान हाथ पकड़ने वालों के बंधन भी पल भर के लिए ढीले हुए, बबूसा ने बांहों का जोर आगे को लगाकर उन्हें सामने खींचा और उसी पल उसकी एक बांह आजाद हो गई। बबूसा ने पास खड़े आदमी के चेहरे पर घूंसा जड़ दिया और जिसने अभी भी बांह थाम रखी थी बबूसा के एक ही घूंसे ने उसे दूर गिरा दिया। उसके साथ ही बबूसा वहां से तीन कदम दूर खड़ा हुआ और हाथ में नन्हा-सा चाकू चमका जो कि उसी पल हवा में लहराता उस व्यक्ति की तरफ लपका, जो कि चौकोर पत्ती जैसा हथियार धरा पर फेंकने जा रहा था, और तब धरा कमरे का दरवाजा खोल चुकी थी और बाहर निकल जाने को तैयार थी।

अगले ही पल बबूसा का फेंका चाकू उस व्यक्ति की कनपटी पर जा धंसा। उसका पत्ती वाला हाथ उठा ही रह गया। धरा बाहर निकलती चली गई।

तभी बबूसा ने छः और नन्हे चाकू तूफानी अंदाज में फेंके जो कि उन सबके शरीरों में जा धंसे। उनका हाल देखने के लिए बबूसा रुका नहीं और बाहर निकलता चला गया। सामने धरा भागती दिखी।

"रुको धरा।" बबूसा ने ऊंचे स्वर में पुकारा।

बबूसा की आवाज सुनते ही धरा ठिठकी। पलटी। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

बबूसा पास पहुंच गया। दोनों तेजी से आगे बढ़ गए।

"अभी खतरा टला नहीं है।" बबूसा के होंठों से गुर्राहट निकली—"मैंने पहले भी तुम्हें बताया था कि ये जब शिकार पर हमला करते हैं तो काफी संख्या में होते हैं ताकि शिकार बच न सके।"

"तो वो बाहर होंगे।" धरा हांफती-सी कह उठी।

"यकीनन।"

"तुम तो फंस ही गए थे। तुम्हें फंसा पाकर मैं घबरा गई और कुर्सी फेंक दी। मैं क्या करती...।"

"तुमने बहुत अच्छा काम किया। तुम्हारे कुर्सी फेंकने की वजह से ही मैं बच पाया और सब ठीक हो गया। वो तुम्हें मार देना चाहते थे। मुझे पकड़ रखा था कि मैं तुम्हें बचा न सकूं। मैं इस बारे में सतर्क नहीं था कि वो इस तरह मुझे पकड़ेंगे। अगर जरा भी अंदेशा होता तो वो मुझे न पकड़ पाते। मैं तो तब उनके दूसरे वारों के प्रति सतर्क था।"

"तुम देखना बबूसा।" धरा की आंखों में आंसू चमके—"एक दिन वो मुझे मारने में सफल हो जाएंगे।"

"जानता हूं। परंतु मैं तुम्हें जब तक उनसे बचाए रख सकूंगा, बचाऊंगा।" बबूसा के कठोर स्वर में गम्भीरता आ गई—"मैंने तुम्हें पहले भी कहा था कि उनसे बचना मुमकिन नहीं। वो तुम्हें मारने में, पक्का सफल होकर रहेंगे।"

"मैं मर जाऊंगी बबूसा?" धरा का चेहरा रोने के भावों से भर गया।

बबूसा ने धरा को देखा और बोला।

"मेरे बस में होता तो मैं तुम्हें कभी भी मरने नहीं देता।"

"तुम रानी ताशा का साथ दो तो तब वो मुझे छोड़ देंगे।"

"भूल में मत रहना। तब भी वो तुम्हें मार के ही रहेंगे और मैं रानी ताशा का साथ कभी नहीं दे सकता। मेरे लिए राजा देव महत्त्वपूर्ण हैं। मैं सिर्फ उनका सेवक हूं। रानी ताशा को मैं बुरा मानता हूं।"

"तुम रानी ताशा से खार खाते हो क्या?"

"नहीं। परंतु वो राजा देव की अपराधी है। जब तक उस अपराध की समस्या हल नहीं होगी, तब तक मैं चैन से नहीं बैठूंगा।"

"अपराध की समस्या?"

"हां। राजा देव को सब पता होना चाहिए कि रानी ताशा ने उनके साथ कैसा धोखा किया था और सामने रानी ताशा हो। उसके बाद राजा देव पर है कि वो क्या फैसला लेते हैं। रानी ताशा ने जो अपराध किया है उसकी सजा उसे जरूर मिलनी चाहिए।"

वे दोनों सीढ़ियों से नीचे पहुंचे और होटल के मुख्य रास्ते से बाहर निकले। यहां छोटा-सा पार्किंग स्थल था और सामने ही कारों के बाहर जाने का रास्ता था। दोनों ठिठक गए। उनकी नजरें घूमीं।

तुरंत ही उन्हें वहां मौजूद डोबू जाति के योद्धा दिखने लगे।

इन दोनों को देखकर वो सब सतर्क हो गए। वे इधर-उधर फैले हुए थे।

बबूसा ने गिनती की वो पांच थे।

"तुम मेरी ओट में रहो।" बबूसा सख्त स्वर में कह उठा।

धरा तुरंत बबूसा के पीछे जा छिपी।

बबूसा की निगाह हर तरफ जा रही थी।

"तुम अब कार चलाओगी।" बबूसा बोला।

"लेकिन कार है कहां?" धरा कह उठी।

"मेरे साथ आओ।" कहने के साथ ही बबूसा ने धरा की कलाई पकड़ी और उसे ओट में रखते चंद कदमों के फासले पर खड़ी ऐसी कार की तरफ बढ़ गया, जिसका ड्राइवर भी कार के पास ही टहल रहा था।

तभी, उसी पल...बबूसा ने धरा के थाम रखे हाथ को जोरों का झटका दिया और खुद को 'धड़ाम' से नीचे गिरा लिया। धरा तेजी से लड़खड़ाकर चार कदम दूर गिरती चली गई।

तभी 'उफ' की आवाज उभरी और दूर खड़ी एक कार में लोहे की पत्ती वाला हथियार धंसा दिखने लगा।

बबूसा ने फुर्ती से करवट ली और हाथ में दो नन्हे चाकू दबे नजर आए जो कि खास अंदाज में झटका देते ही हाथ से निकलते चले गए और बीस कदमों की दूरी पर खड़े एक योद्धा की छाती में जा धंसे। उसी ने वो पत्ती वाला हथियार फेंका था। चाकू लगते ही उसका शरीर कांपा और चंद पल खड़ा रहने के बाद, नीचे बैठता चला गया और जमीन पर जा लुढ़का। पास से जाते लोगों ने उसे गिरते देखा तो वे उसकी तरफ लपके।

बबूसा खड़ा हो चुका था। उसकी निगाह बाकी के चारों योद्धाओं पर फिर रही थी कि कहीं वो कुछ करने का इरादा तो नहीं रखते। बबूसा की निगाहों में चुनौती के भाव थे। बबूसा ने कमीज नहीं पहन रखी थी और बनियान जैसा लैदर का वो टुकड़ा शरीर से चिपका, स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उसमें फंसे चाकू देखने वालों के लिए उलझन खड़ी कर रहे थे।

दो आदमी नीचे गिरी धरा की तरफ लपके।

बबूसा की बाज की तरह पैनी आंखें योद्धाओं पर जा रही थीं।

एक आदमी बबूसा के पास पहुंचा और शरीर से चिपके लैदर जैसे टुकड़े को देखता बोला।

"ये तुमने क्या पहन रखा है? इसमें छोटे-छोटे चाकू भी फंसा रखे हैं। जैसे खिलौने चाकू हों।"

बबूसा ने उस व्यक्ति को देखे बिना, धरा की तरफ बढ़ गया। वो दोनों आदमी धरा का हाल-चाल पूछ रहे थे कि गिरने से उसे चोट तो नहीं लगी। बबूसा धरा को लिए उस कार के पास पहुंचा और पास खड़े ड्राइवर से बोला।

"कार की चाबी दो।"

"क्यों?" ड्राइवर ने उलझन भरी निगाहों से बबूसा को देखा।

"हमें कार की जरूरत है।" बबूसा बोला।

"पागल तो नहीं हो गए क्या। मैं तुम्हें ये कार क्यों दूं? मैं तो...।"

तभी बबूसा का हाथ घूमा और उसके सिर पर पड़ा। उसके होंठों से कराह निकली और नीचे जा गिरा। बबूसा तुरंत उसके पास पहुंचा। उसकी जेब चैक करके चाबी निकाली और घबराई-सी खड़ी धरा को देते हुए कहा—"कार स्टार्ट करो। तब तक मैं इसकी कमीज उतारकर पहन...।"

बबूसा के शब्द मुंह में ही रह गए। मात्र एक पल के लिए उसकी निगाह सामने की तरफ उठी थी कि हवा में किसी चीज को आते देखा और उसी समय समझ गया कि मौत का खतरा है।

बबूसा ने धरा को धक्का दिया और उसी पल अपनी जगह से भी हट गया।

तभी धरा के होंठों से तेज चीख निकली।

बबूसा ने दांत भींचकर धरा को देखा।

धरा के गले से खून की लकीर उभर रही थी।

बबूसा की निगाह दूसरी तरफ गई तो पत्ती वाले हथियार को उधर की दीवार में धंसे, उसे हिलते पाया। बबूसा ने उस तरफ देखा जिधर डोबू जाति के योद्धा मौजूद थे। वहां अब कई लोग इकट्ठे हो चुके थे। क्योंकि उसके फेंके गए चाकू से एक की मौत हो चुकी थी। बबूसा ने धरा के गले का घाव चैक किया। वहां से अब खून बाहर आना शुरू हो गया था। घाव ज्यादा गहरा नहीं था। वो एक लकीर के समान था। बबूसा अगर सही वक्त पर धरा को धक्का न देता तो यकीनन इस वक्त उसकी गर्दन कटकर अलग पड़ी होती। बाल-बाल बची थी वो। बबूसा ने जेब से रूमाल निकाला और गले से बहते खून को बंद करने के लिए गले को बांधता बोला।

"घबराओ मत। सब ठीक है। तुम जल्दी से कार चलाओ। हमें यहां से निकल जाना चाहिए।"

धरा कांपती टांगों से कार के स्टेयरिंग पर जा बैठी। कांपते हाथों से चाबी लगाकर कार स्टार्ट की। तब तक बबूसा उसकी बगल में बैठ चुका था। धरा ने कार आगे बढ़ा दी। उसका चहरा फक्क पड़ा हुआ था।

बबूसा की बाज जैसी निगाह हर तरफ घूम रही थी।

कार होटल के मेन गेट से बाहर निकलती चली गई।

बबूसा की आंखें पीछे का नजारा करने लगीं कि तभी उसने एक और कार को बाहर निकलते और पीछे आते देखा।

बबूसा का चेहरा कठोर हो गया। वो सीधा बैठता बोला।

"वो हमारे पीछे आ रहे हैं।"

"फि-फिर?" धरा की आवाज लड़खड़ा रही थी।

"मैं उनका मुकाबला कर लूंगा। तुम कार चलाती रहो।" सख्त स्वर था बबूसा का।

धरा कुछ नहीं बोली। चेहरा पीला पड़ा था।

बबूसा ने उसके गले पर बंधे रूमाल को चैक किया। रूमाल से भी कुछ खून बाहर आ गया था। परंतु खून बहना रुक चुका था। वरना अब तक तो गल पर बंधे रूमाल ने पूरा गीला हो जाना था।

"तुम डॉक्टर के पास जाना चाहती हो?" बबूसा ने पूछा।

"घाव घातक है क्या?" धरा ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"नहीं। खून बहना रुक चुका है। दो-तीन दिन में घाव ठीक होने लगेगा।" बबूसा ने पुनः पीछे देखा।

पीछे काफी वाहन थे। उसने उस कार को देख लिया, जो उसके पीछे आ रही थी।

"तुमने मुझे बचा लिया।" धरा ने सूखे स्वर में कहा—"नहीं तो चक्रवती साहब या प्रकाश की तरह मेरी गर्दन भी कट जाती।"

"ऐसी बातें मत सोचो, बस तुम जिंदा हो, सलामत हो।" बबूसा ने सीधा होते हुए कहा।

"तुम मेरे लिए भगवान बनकर आए हो।"

"मैं भगवान नहीं, बबूसा हूं। पृथ्वी ग्रह पर लोग भगवान को बहुत मानते हैं।"

"क्या तुम नहीं मानते?"

"सदूर ग्रह पर भगवान नहीं है। वहां सिर्फ अपने कामों को ही महत्त्व दिया जाता है।" बबूसा बोला।

"तुम जानते हो हम लोग भगवान किसे कहते हैं?"

"किसी मूर्ति को खड़ा करके, उसकी पूजा करने को भगवान कहते हैं।"

ऐसी बुरी स्थिति में भी धरा के होंठों पर मुस्कान रेंग गई।

"तुम्हें अभी नहीं पता कि भगवान किसे कहते हैं।"

"मुझे सिर्फ अपने कामों से वास्ता है, भगवान से नहीं। मेरा वक्त बहुत बर्बाद हो रहा है। सिर्फ आज का दिन ही बाकी है मेरे पास और मैं राजा देव को ढूंढ़ नहीं पा रहा। रानी ताशा कभी भी पृथ्वी पर पहुंच सकती है। पोपा पहुंचने ही वाला होगा।"

"रानी ताशा डोबू जाति में पहुंचेगी न?"

"हां। वो ऐसी जगह है, जहां पर पोपा को उतरते नहीं देख सकता कोई। रानी ताशा और महापंडित ने बहुत सोच समझकर डोबू जाति से सम्बंध जोड़ा था। रानी ताशा का पोपा वहीं पर ही पहुंचेगा।"

"फिर तो तुम्हारे पास काफी वक्त है कि तुम देवराज चौहान को तलाश कर सको।"

"कैसे?"

"रानी ताशा, डोबू जाति में पहुंचेगी तो फौरन ही देवराज चौहान से मिलने तो चल नहीं पड़ेगी...।"

"वो तुरंत चल देगी। राजा देव से मिलने, उन्हें देखने को वो बहुत व्याकुल है।" बबूसा ने कठोर स्वर में कहा—"किसी भी हाल में डोबू जाति में रहकर समय नष्ट नहीं करेगी।"

"इतनी भी जल्दी नहीं होगी बबूसा, जितनी कि तुम बता रहे हो।" धरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"चलने की तैयारी भी करनी होगी, जैसे कि तुम बताती हो कि उसके साथ डोबूजाति के योद्धा भी होंगे। कम-से-कम दो दिन तो चलते-चलते लग ही जाएंगे। उसके बाद वहां से मुम्बई तक का सफर काफी लम्बा है। जितनी भी जल्दी की जाए, चार दिन लगेंगे। मतलब कि तुम्हारे पास पांच-छः दिन का वक्त है और हम देवराज चौहान तब तक ढूंढ़ सकते हैं।"

"तुम नहीं समझतीं। ये वक्त भी कम है अगर राजा देव मुझे मिले तो राजा देव को सब कुछ बताना है। उन्हें यकीन दिलाना है कि मैं जो कह रहा हूं वो सच है। तभी तो बात बनेगी परंतु राजा देव मेरी बातों को सत्य नहीं मान रहे। राजा देव से मिलने के बाद भी मुझे काफी परेशानियों का सामना करना होगा।" बबूसा गम्भीर और कठोर स्वर में कह रहा था—"बार-बार ये ही डर मेरे मन में आ रहा है कि कहीं राजा देव पहले की तरह फिर से रानी ताशा की खबूसूरती के दीवाने न हो जाएं। महापंडित ने इस बार रानी ताशा का जन्म कराते समय, उनके चेहरे पर ऐसा कोई प्रभाव डाल दिया था कि राजा देव जब रानी ताशा को देखें तो उसी के होकर रह जाएं। अगर मैंने राजा देव को पहले से ही सतर्क कर रखा होगा तो शायद राजा देव दीवाने होने से अपने को बचा लें। रानी ताशा पूरी तैयारी करके आ रही है कि वो राजा देव को वापस सदूर ग्रह पर ले जाए। महापंडित इस काम में रानी ताशा की भरपूर सहायता करेगा। ऊपर से मुझे सोमाथ की चिंता हो रही है कि महापंडित ने जाने कैसा निर्माण किया है सोमाथ का। महापंडित का कहना है कि उसकी मृत्यु नहीं होगी। बांह कटेगी तो उसकी बांह ठीक हो जाएगी। जाने क्या किया होगा महापंडित ने।"

"वो लोग पीछे आ रहे हैं? धरा ने पूछा।

"हां।" बबूसा ने गर्दन घुमाकर कुछ पलों के लिए पीछे देखा—"वो पीछे ही हैं।"

"कार में पैट्रोल खत्म होने वाला है।" धरा बोली।
"कहीं से भी डलवा लो।"
"तुम तो पीछे आते डोबू जाति के योद्धाओं में व्यस्त हो। ऐसे में देवराज चौहान तुम्हारे पास से निकले तो तुम्हें पता नहीं चलेगा।"
"फौरन मालूम हो जाएगा।" बबूसा बोला—"राजा देव की गंध को तो मैं फौरन पहचान लूंगा।"
"ओह।" धरा ने सिर हिलाया—"परंतु तुम्हें पीछे आते योद्धाओं के बारे में चिंता करनी चाहिए। उनसे पीछा छुड़ाना चाहिए ताकि देवराज चौहान को तुम तसल्ली से ढूंढ़ सको। जब तक वो पीछे रहेंगे, मुझे भी अपने मरने का डर लगा रहेगा। पता नहीं मैं किस चक्कर में फंस गई। अच्छी-भली चैन की जिंदगी जी रही थी, मां के साथ रहती थी, परंतु सब कुछ खत्म हो गया। कहां से कहां पहुंच गई मैं। इतने लोगों को मरते देख चुकी हूं कि अब मौत भी अपनी लगती है।"
बबूसा के कठोर चेहरे पर मुस्कान उभरी। उसने धरा को देखा।
"तुम्हारी बातें, बता रही हैं कि तुम हारने लगी हो इन हालातों से।" बबूसा ने कहा।
कार चलाते धरा ने बबूसा पर निगाह मारी फिर सामने देखकर गम्भीर स्वर में बोली।
"जब तक तुम मेरे साथ हो, मैं हिम्मत नहीं हारने वाली।"
"तुम हिम्मत से काम लोगी तो मौत तुमसे दूर रहेगी।"
धरा को सामने पैट्रोल पम्प दिखा तो कह उठी।
"पैट्रोल डलवाना जरूरी है। खत्म हो रहा है।"
"डलवा लो।"
"वो जो पीछे आ रहे हैं।"
"तुम उनकी तरफ से निश्चिंत रहो। मेरे होते तुम्हें कुछ नहीं होगा।" बबूसा ने दृढ़ स्वर में कहा।
धरा ने पैट्रोल पम्प पर कार ले जाकर रोकी।
बबूसा की निगाह पीछे की कार पर थी। वो कार पैट्रोल पम्प के सामने ही सड़क पर जा रुकी थी। बबूसा खतरनाक निगाहों से उस कार की तरफ देख रहा था।
पैट्रोल पम्प का कर्मचारी धरा के करीब आया।
"यस मैडम।" वो बोला।
"टंकी फुल कर दो।"
"आपके गले पर क्या हुआ मैडम।" वहां खून...।" पैट्रोल पम्प के कर्मचारी ने कहना चाहा।

"एक बच्चे ने कांच का टुकड़ा फेंका, जो कि मुझे लग गया।" धरा का हाथ अपने गले पर पहुंचा।

"ओह, ये बच्चे भी कितने नासमझ हैं। समझते नहीं कि किसी को चोट लग...।" कर्मचारी वहां से हट गया और पैट्रोल डालने लगा। धरा अभी भी अपने गले पर बंधे रूमाल पर हाथ फेर रही थी और उसे महसूस हो रहा था कि रूमाल पर लगा खून अब सूखने लगा है। मतलब कि खून बहना पूरी तरह बंद हो चुका है।

उस कार को देखते बबूसा ने जेब में हाथ डाला और काफी सारे नोट निकालकर धरा को दिए। धरा ने नोटों को थामा और पैट्रोल डालने वाले का आने का इंतजार करने लगी।

एकाएक बबूसा की आंखें सिकुड़ीं। उसने उस कार का दरवाजा खुलते और भीतर से योद्धाओं को बाहर निकलते देखा फिर कार के सब दरवाजे खुले और चारों योद्धा बाहर निकलकर पैट्रोल पम्प की तरफ बढ़ने लगे।

बबूसा के चेहरे पर खतरनाक भाव नाच उठे।

"वो इधर आ रहे हैं।" वो कह उठा।

धरा की निगाह तुरंत उस तरफ गई। चेहरा पीला पड़ गया।

"वो मुझे मारने आ रहे हैं।" घबराए स्वर में कहा।

"मैं उन्हें जिंदा नहीं छोड़ूंगा। तुम कार में ही रहो।" कहने के साथ ही बबूसा ने कार का दरवाजा खोला और बाहर निकलकर खड़ा हो गया। वो एकटक चारों योद्धाओं को सड़क पार करके आते देख रहा था।

तभी एक पुलिस जिप्सी पैट्रोल पम्प पर आ पहुंची। उसमें चार हथियारबंद पुलिस वाले मौजूद थे और पांचवां जिप्सी चला रहा था। वो पुलिस कार डीजल मशीन के सामने जा खड़ी हुई।

धरा बार-बार अपने सूख रहे होंठों पर जीभ फेर रही थी। उसकी निगाह भी करीब आते योद्धाओं पर ही थी। उन्हें मौत का रूप समझ रही थी। वो जानती थी कि कभी तो वो उसे मार ही देंगे। ये भी जानती थी कि उनसे माफी मांगने या समझाने का कोई असर नहीं होगा। वो सिर्फ मरने-मारने की ही बात जानते हैं।

बबूसा का हाथ कमीज के भीतर लैदर की बनियान में फंसे चाकुओं पर जा पहुंचा और देखते-ही-देखते उसके हाथ की उंगलियों के बीच आठ-दस नन्हे जहर बुझे चाकू आ फंसें हाथ बाहर निकल आया।

वो चारों योद्धा सड़क पार कर चुके थे और अब करीब आने लगे थे। उन चारों के चेहरों पर गुस्सा और दृढ़ता नजर आ रही थी। तभी बबूसा ने उनमें से दो का हाथ कमीज के भीतर जाते देखा। वो समझ गया कि वो हथियार निकालने जा रहे हैं तो बबूसा ने पलक झपकते ही अपना दायां

हाथ ऊपर उठाया और हाथ को बेहद तीव्रता से झटका दिया तो उंगलियों में फंसे सारे नन्हे चाकू तेजी से उन चारों की तरफ लपके।

वे भी सावधान थे।

दो तो बबूसा का उठा हाथ देखकर फुर्ती से नीचे झुक चुके थे।

परंतु बाकी के दो उन चाकुओं की जद में आ गए। चाकू लगते ही वो थमे और फिर नीचे गिरने लगे। बबूसा ने फुर्ती से बनियान में फंसे और चाकू निकाले कि तभी नीचे गिरे एक ने लोहे की चौकोर पत्ती उस पर चला दी। बबूसा तुरंत उछलकर दो कदम हटा।

वो पत्ती चक्री के समान घूमती कार के शीशे पर लगी और भीतर प्रवेश करते ही उसका रुख बदल गया। वो बबूसा वाली सीट की पुश्त से टकराई और पीछे को जा गिरी।

धरा बाल-बाल बची। दहशत से उसकी आंखें फट चुकी थीं।

बबूसा के हाथों में नन्हे चाकू दबे थे। इससे पहले कि वो बचे उन दोनों पर जहर बुझे चाकुओं का वार कर पाता, एक पुलिस वाला गन थामे उसके सामने आ गया।

"खबरदार जो हिले तो।" पुलिस वाला गुर्रा उठा—"तुमने उन दोनों आदमियों पर कोई चीज फेंकी, जिससे कि शायद वो जान गंवा बैठे हैं। मैंने खुद तुम्हें कुछ फेंकते देखा है उन पर।"

एक पुलिस वाला पीछे से आया और नीचे गिरे उन दोनों व्यक्तियों को चैक करने लगा जो कि चाकू लगने से नीचे जा गिरे थे। जो जिंदा बचे थे वो तुरंत खड़े हो चुके थे।

"ये मर चुके हैं।" चैक करने वाले पुलिस वाले ने उससे कहा, जो बबूसा पर गन थामे खड़ा था।

"मैंने तो पहले ही कहा था कि वो मर गए हैं। पुलिस वाले ने बबूसा को घूरते हुए कहा—"मेरी आंखों के सामने तुमने दो ही हत्या की है। हाथ ऊपर करो और खुद को गिरफ्तार समझो। तुम...।"

तभी उन दोनों बचे योद्धाओं में से एक ने फुर्ती से बबूसा पर खंजर फेंका। बबूसा ने उसे हरकत करते देख लिया था। वो तुरंत नीचे झुक गया तो अगले ही पल खंजर कार की बॉडी में आ धंसा। ये देखकर पुलिस वाले चौंके। उनका ध्यान उन दोनों की तरफ हुआ कि तभी एक खंजर उस पुलिस वाले की गर्दन में आ धंसा जो कि बबूसा पर गन ताने खड़ा था। वो उसी पल नीचे जा गिरा। गन उसके हाथ से छूट गई। पल भर में ही दहशत भरा नजारा हर तरफ आ ठहरा। पैट्रोल पम्प पर मौजूद लोग और कर्मचारी ये देखकर हक्के-बक्के रह गए। उन्हें समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है।

उसी पल बबूसा ने कार में धंसा खंजर निकाला और तेजी से उस पुलिस वाले पर फेंक दिया, जो कि अपनी गन को फायरिंग के लिए उठा रहा था। खंजर उसकी छाती में जा लगा। गन उसके हाथ से निकल गई और वो दोनों हाथों से छाती में धंसे खंजर को थामे नीचे बैठता चला गया।

बबूसा तुरंत कार का दरवाजा खोलते चीखा।

"भागो।"

धरा जो कि हक्की-बक्की बैठी थी। कार स्टार्ट थी। उसने कार दौड़ा दी। एक्सीलेटर ज्यादा दब जाने की वजह से कार जोरों का झटका खाया और भाग निकली। धरा के चेहरे का रंग फक्क था।

"ये तुमने क्या किया?" धरा के होंठों से खरखराता स्वर निकला—"पुलिस वालों को मार दिया।"

"वो मुझे मारने वाले थे।"

तभी पीछे से पुलिस सायरन की आवाज गूंज उठी।

"पैट्रोल पम्प पर खड़ी पुलिस कार हमारे पीछे आ रही है।" धरा चिल्लाई।

"मैं नहीं डरता इन लोगों से।" बबूसा गुर्रा उठा।

"ये पुलिस है बबूसा।" कार भगाती धरा चीखी—"ये कभी भी अकेली नहीं होती। कार में वायरलैस सैट होता है। उसी पर ये खबर देकर बाकी पुलिस वालों को बुला लेते हैं। पहले ही रास्ते बंद करा देते हैं। ये एक ऐसी संस्था है जो कि डोबू जाति से भी खतरनाक है। इनकी संख्या असीमित है। ये कानून के दायरे में रहकर काम करते हैं परंतु वक्त आने पर ये कानून को भी पीछे छोड़ देते हैं और बहुत कुछ कर देते हैं। इनका मुकाबला नहीं किया जा सकता। तुमने दो पुलिस वालों की जान...।"

"मैंने एक को मारा है।" बबूसा ने दांत भींचकर कहा।

"उनके लिए तो दो पुलिस वाले मरे हैं। वो हमें गोलियों से भून देंगे।" धरा का शरीर कांप रहा था।

"तुम कहना क्या चाहती हो?"

"हमने अब और भी बड़ी मुसीबत मोल ले ली।"

पीछे सायरन की आवाज बराबर आ रही थी।

धरा को जो भी रास्ता—सड़क साफ मिलती, उस पर कार दौड़ाए जा रही थी।

बबूसा ने कमीज उठाकर लैदर की बनियान में फंसे नन्हे चाकुओं को चैक किया।

"ये चाकू कम होते जा रहे हैं। उस वेटर से मुझे हथियारों का बैग लेना होगा।" बबूसा बोला।

"तुम्हें हथियारों की पड़ी है। पीछे जो पुलिस है वो...।"

"उनकी मुझे चिंता नहीं है।" बबूसा ने कठोर स्वर में कहा।

"तुम्हें पुलिस की चिंता जरूरी होनी चाहिए। वो हमें नहीं छोड़ेंगे।" धरा तेज सांसें लेती बोली।

बबूसा ने गर्दन घुमाकर पीछे देखा।

सौ-डेढ़ सौ कदमों की दूरी पर पुलिस कार दौड़ी आ रही थी।

कुछ पल देखता रहा फिर बोला।

"मेरे खयाल में वो सिर्फ दो हैं। मैं आसानी से उन्हें संभाल...।"

"उनसे बचने की सोचो, उन्हें मारने की मत सोचो।"

तभी पीछे आती पुलिस कार की स्पीड एकाएक तेज हो गई।

फासला कम होने लगा।

"वो तेजी से हमारे करीब आ पहुंची है।" बबूसा बोला।

"मैं और तेज नहीं चला सकती।" धरा चीखी।

"मुझे कार चलानी नहीं आती।" बबूसा की निगाह पीछे ही थी—"नहीं तो—ओह वो पीछे...।"

उसी पल पीछे से पुलिस कार ने उनकी कार को जोरदार टक्कर मारी।

कार तेजी से बहक उठी। धरा चीखी। बगल में जाती एक कार को साइड लगी।

बबूसा का सिर खिड़की के शीशे से टकराया। वो तुरंत सीधा हुआ।

धरा ने कार संभाल ली, परंतु वो बदहवास हो चुकी थी। कार की रफ्तार भी कम हो गई थी। इससे पहले कि धरा कार को तेजी से भगाती पीछे से पुनः पुलिस कार ने जोरों से टक्कर मारी।

कार, धरा के कंट्रोल से बाहर हो गई।

तुरंत ही स्टेयरिंग घूमा और फुटपाथ से टकराती कार के अगले दोनों पहिए फुटपाथ पर जा चढ़े। इसके साथ ही कार रुक गई। धरा के हाथ-पांव कांप रहे थे। वो बुरी तरह नर्वस हो चुकी थी। इन झटकों से बबूसा ने खुद को संभाल लिया था और कठोर निगाहों से धरा को देख, जैसे सब कुछ उसकी गलती की वजह से हुआ हो।

धरा की हालत बेकाबू-सी हुई पड़ी थी।

"तुम एक कार को नहीं भगा सकीं।" बबूसा ने सख्त स्वर में कहा।

"मैं, मैं...।" धरा कुछ कह न सकी।

तभी कार के गिर्द दो पुलिस वाले दिखे। एक के हाथ में गन थी, दूसरे

के पास रिवॉल्वर। गन वाला कार के आगे की तरफ सतर्क-सा आ खड़ा हुआ था। रिवॉल्वर वाला साइड में था।

"बाहर निकलो।" गन वाला चिल्लाया।

"मैं इन्हें संभाल लूंगा।" बबूसा कार का दरवाजा खोलता गुस्से से कह उठा।

"इन्हें मारना नहीं।" धरा ने थरथराते स्वर में कहा।

बबूसा ने धरा को घूरते हुए कहा।

"तो क्या मैं मर जाऊं। ये मुझे मार दें।"

"तुम खुद को इनके हवाले कर दो।"

"तो ये मेरा क्या करेंगे?"

"स-सजा देंगे।"

"सजा? क्या ये मुझे कैद कर लेंगे?"

"हां।"

"तो फिर राजा देव का क्या होगा। मेरी कोशिशों का क्या होगा। मैं कैद हो गया तो मेरी सारी मेहनत मिट्टी में मिल जाएगी। मैं तुम्हारी बात कभी नहीं मान सकता। तुम मुझे गलत रास्ता दिखा रही हो। ऐसे वक्त में मैं राजा देव के काम न आया तो कब...।"

तभी धरा के होंठों से चीख निकली। आंखें फैल गई उसकी।

बबूसा ने फौरन पुलिस वाले की तरफ नजरें घुमाईं।

तुरंत ही बबूसा की आंखें सिकुड़ीं। उस पुलिस वाले की कनपटी में खंजर धंसा हुआ था।

बबूसा ने फौरन खंजर को पहचाना, वैसा खंजर बबूसा जाति वाले ही इस्तेमाल करते हैं फिर उसने पुलिस वाले को नीचे गिरते देखा। तभी पास ही गोली चलने की आवाज आई। बबूसा तुरंत बाहर निकल आया तो थम गया।

चार कदमों की दूरी पर दूसरा पुलिस वाला रिवॉल्वर लिए खड़ा था। गोली उसने ही चलाई थी और बबूसा के देखते-ही-देखते एक खंजर उसकी छाती मे आ धंसा था।

वो कार से टकराया। रिवॉल्वर हाथ से छूट गई। बबूसा ने उसी पल नजरें घुमाईं तो माथे पर बल आ ठहरे। पंद्रह कदमों के फासले पर सोलाम खड़ा था।

सोलाम बबूसा को देखकर मुस्कराया।

परंतु बबूसा सोलाम को होंठ भींचे देखता रहा। चेहरे पर उलझन नजर आ रही थी।

ठीक इसी वक्त एक और कार वहां आकर रुकी और उसमें से वो ही

दो योद्धा बाहर निकले जो पैट्रोल पम्प पर जीवित बच गए थे। वो तेजी से सोलाम की तरफ बढ़े। सोलाम की निगाह भी उन पर जा टिकी थी। चूंकि ये सब चलती सड़क पर हो रहा था, इसलिए लोगों की भीड़ इकट्ठी होने लगी थी।

वाहनों की लम्बी कतार लगती जा रही थी। दो पुलिस वालों की लाशें नीचे पड़ी थीं। उनके हथियार पास गिरे पड़े थे। जनता में आतंक पैदा करने के लिए इतनी बात बहुत थी।

बबूसा की एकटक नजरें सोलाम पर थीं।

दोनों योद्धा सोलाम के पास पहुंचे।

"अब बबूसा बचना नहीं चाहिए सोलाम।" एक ने कहा।

"मार दो।" सोलाम कठोर स्वर में बोला।

"ये हमारे बहुत योद्धाओं को मार चुका है। तुम हमसे बेहतर हो, तुम इसे खत्म कर दो सोलाम।"

"बेहतर।" कहने के साथ ही सोलाम ने अपने कपड़ों में से खंजर निकाला और हाथ ऊपर करके पलक झपकते ही खंजर का फल उस कहने वाले योद्धा के सिर में धंसा दिया।

योद्धा का शरीर जोरों से कांपा। आंखें जैसे फटकर फैल गईं।

सोलाम ने चाकू की मूठ को नहीं छोड़ा था और झटके से उसे बाहर निकाला तो वो योद्धा नीचे जा गिरा और शांत पड़ गया। सोलाम के चेहरे पर दरिंदगी नाच रही थी।

ये दृश्य देखकर, वहां इकट्ठे हो चुके कुछ लोगों के होंठों से चीख निकली। वो पीछे होने लगे।

दूसरा योद्धा ठगा-सा खड़ा, सोलाम को अविश्वास भरी निगाहों से देखने लगा।

"ये क्या सोलाम।" योद्धा के होंठों से निकला—"ये तुमने क्या किया।"

उसी पल सोलाम का खंजर वाला हाथ तेजी से हवा में लहराया और नोंक योद्धा की गर्दन को काफी हद तक काटती चली गई। वो तड़प उठा। गर्दन को थामे वहां से भागा परंतु ज्यादा कदम न उठा सका और नीचे जा गिरा। सोलाम के चेहरे पर दरिंदगी नाच रही थी।

बबूसा हैरानी से सोलाम को देख रहा था।

सोलाम ने नीचे पड़े व्यक्ति के कपड़ों से खंजर साफ किया और वापस कमीज के भीतर कहीं फंसाते हुए बबूसा को देखा। पुनः उसके चेहरे पर मध्यम-सी मुस्कान उभर आई थी।

बबूसा आगे बढ़ा और सोलाम के पास पहुंचते कह उठा।

"तुमने तो मुझे हैरान कर दिया सोलाम।"

"हम बचपन के दोस्त हैं बबूसा।" सोलाम ने कहा।

"तुम चाहते क्या हो?" बबूसा उलझन में था।

"मैं अब वापस जाति में नहीं जाऊंगा। ये शहर मुझे अच्छा लगा। मैं यहीं रहूंगा।"

"वो तुम्हें ढूंढ़ लेंगे। मार देंगे। मेरी बात और थी कि उन्होंने मुझे कुछ नहीं कहा। क्योंकि मैं उनमें से नहीं हूं।"

"इस शहर का जीवन मुझे अच्छा लगा जिंदगी जीने के लिए। मैं कहीं छिपकर जीवन बिता लूंगा। डोबू जाति में जीवन बेकार-सा लगता है इस शहर में आने के बाद। यहां खाने को बहुत कुछ है। बहुत लोग रहते हैं यहां। सबसे बात करके अच्छा लगता है। यहां कोई योद्धा नहीं है सब सामान्य लोग हैं। यहां मुझे अच्छा लगता है।"

"तुम्हारा विद्रोह खतरनाक है। वो तुम्हें ढूंढ़ लेंगे। तुम समझदार हो। जैसा चाहो, वैसा करो।" बबूसा ने कहा और पलटकर वापस कार तक जा पहुंचा। धरा अभी तक स्टेयरिंग सीट पर बैठी, कांप-सी रही थी।

लोगों की भीड़ उत्सुक निगाहों से उन्हें देख रही थी।

"चलो।" बबूसा धरा का दरवाजा खोलता बोला—"हमें यहां से चले जाना चाहिए।"

"ल-लोग हैं बाहर—वो...।"

"आओ।" बबूसा ने उसकी बांह पकड़कर उसे बाहर निकाला—"ये हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

धरा के शरीर में रह-रहकर कम्पन उठ रहा था। बबूसा धरा का हाथ थामे, लोगों पर निगाह मारता तेजी से एक तरफ बढ़ता चला गया। सोलाम की तरफ देखा, परंतु वो कहीं नहीं दिखा।

"स-सब ठीक हो गया?" धरा ने घबराए स्वर में पूछा।

"ह-हां।"

"वो पुलिस वाले...।"

"सोलाम ने उन्हें मारा, मैंने नहीं।" बबूसा ने कठोर स्वर में कहा।

"सोलाम, व-वो तो तुम्हारा दुश्मन है।"

"तुम अपने बारे में सोचो। उसने गले के घाव को डॉक्टर को दिखाओ। मुझे बताओ डॉक्टर कहां मिलेगा। उसके बाद हमने राजा देव को भी ढूंढ़ना है। रानी ताशा का पोपा पृथ्वी पर पहुंचने ही वाला होगा।" बबूसा गम्भीर स्वर में बोला।
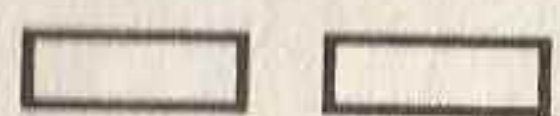
शाम के सात बज रहे थे। अभी दिन की रोशनी बाकी थी। जगमोहन ने बांद्रा की एक पार्किंग में कार रोकी और इंजन बंद कर बगल में बैठे देवराज चौहान को देखा। देवराज चौहान ने सिग्रेट का कश लिया और शीशा नीचे करके सिग्रेट बाहर फेंकी और दरवाजा खोलकर बाहर निकला।

जगमोहन भी बाहर निकला। कार को रिमोट से लॉक करके दोनों सामने बने माल की तरफ बढ़ गए। सोहनलाल चार बजे ही अपने घर चला गया था। जगमोहन ने अपने तीन सूट सिलाई के लिए दे रखे थे। चार दिन से दो बार फोन आ गया था कि सूट ट्राई के लिए तैयार है तो देवराज चौहान और जगमोहन सूट ट्राई के लिए इधर आ पहुंचे थे और उसके बाद रात को किसी अच्छी जगह डिनर करने का प्रोग्राम बनाया था जगमोहन ने। इन दिनों दोनों फुर्सत में थे। जबकि जगमोहन बेसब्री से बबूसा के इंतजार में था कि वो समाधि में जैसे कि, देवराज चौहान से बात करता है, वैसे फिर करे तो देवराज चौहान उससे मिलने की बात करे। जगमोहन के मन में अब बबूसा से मिलने की इच्छा खड़ी हो चुकी थी।

"बबूसा ने दोबारा तुमसे बात नहीं की?" जगमोहन ने कहा।

"इतने बेचैन क्यों हो रहे हो बबूसा को लेकर।" देवराज चौहान मुस्काराया—"उसकी बातों में कोई दम नहीं है।"

"एक बार मिलकर देखें तो सही कि वो कैसा है।"

"समाधि के माध्यम से उसने फिर मेरे से बात की तो तब उससे मिलने की बात भी तय हो जाएगी।"

"क्या पता वो सोहनलाल के घर फिर पहुंच जाए।"

"सोहनलाल अब घर पर ही है। बबूसा वहां गया तो सोहनलाल बबूसा को बता देगा कि हम उससे मिलना चाहते हैं।"

"तुम्हें बबूसा की बातों पर जरा भी यकीन नहीं?" जगमोहन ने पूछा।

"ये गलत होगा कहना कि जरा भी यकीन नहीं।" देवराज चौहान ने सोच भरे स्वर में कहा—"उसकी बातें मेरी समझ से दूर है परंतु उसमें कुछ तो है तभी तो वो दिखाई नहीं देता और अपनी आवाज के माध्यम से बात करता है। जिसे कि वो समाधि लगाने और किसी महापंडित की दी शक्तियों का जिक्र करता है कि उस वजह से वो ऐसा कर पाता है। अब लगता है कि कुछ बात तो उसमें है ही, बाकी उससे मिलने पर पता चलेगा कि वो असल में है क्या।"

"कल मेरी मुलाकात धरा से हुई, जब वो जान बचाती भाग रही थी।

तब वो चौकोर पत्तियों जैसे हथियार हमारी तरफ फेंके गए। और बबूसा कहता है कि वो डोबू जाति के हथियार हैं।"

"ये भी सोचने वाली बात है।" देवराज चौहान ने कहा—"हम नहीं जानते कि डोबू जाति कहां है, है भी या नहीं। परंतु धरा की जो हालत तुमने देखी, जिस प्रकार के हथियारों से हमला किया गया, वो हथियार सामान्य नहीं हैं। हर कोई उन हथियारों का इस्तेमाल नहीं कर सकता। उन्हें हाथ में पकड़ना भी खतरे से खाली नहीं, जबकि वो लोग उसे तूफानी गति से निशाने पर फेंकते हैं। इसके लिए तो सालों के अभ्यास की जरूरत है।"

"तो तुम मानते हो कि कहीं पर डोबू जाति है और वो ऐसे हथियार इस्तेमाल करते हैं।" जगमोहन गम्भीर स्वर में बोला।

"हां कहने का दिल नहीं करता और इंकार करना भी आसान नहीं है।" देवराज चौहान ने सोच भरे स्वर में कहा—"मेरे खयाल में जब तक हम बबूसा से नहीं मिल लेते, उसे और उसकी बातों का समझ नहीं लेते, तब तक इन बातों पर कोई विचार कायम नहीं किया जा सकता।"

"एक मिनट के लिए हम बबूसा की बातों को सच मान लें तो तब हालातों की क्या स्थिति होगी?" जगमोहन कह उठा।

"तुम्हारा मतलब कि ये मान लें कि बबूसा जो कहता है वो सही है। मैं राजा देव था कभी। रानी ताशा का भी अस्तित्त्व था और कोई महापंडित भी है और अब रानी ताशा मुझे वापस ले जाने के लिए कि सदूर ग्रह से पृथ्वी ग्रह पर आ रही है। नहीं, इन बातों को नहीं माना जा सकता। मुझे तो लगता है कि असल बात कुछ और ही है, बबूसा जब मेरे सामने आएगा तो तभी असल बात का पता चलेगा।"

जगमोहन के चेहरे पर गम्भीरता थी। वो बोला।

"मैं कभी-कभी ये सोचने लगता हूं कि ये बातें सच भी हो सकती हैं। तो उस स्थिति में क्या होगा।"

"तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो ऐसा सोचने लगे हो।" देवराज चौहान मुस्कराकर कह उठा।

दोनों मॉल के भीतर प्रवेश करते चले गए।

▭ ▭
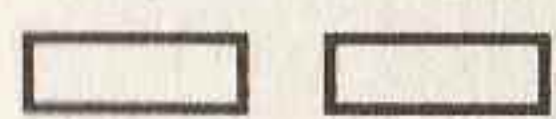
डोबू जाति का ठिकाना।

रात का अंधेरा फैल चुका था। बाहर ठंडी हवा चल रही थी। सर्द मौसम था। परंतु आज यहां का नजारा कुछ और था। डोबू जाति के लोगों में हर्ष-उल्लास का माहौल था। जाति के अधिकतर लोग खोखले पहाड़ से बाहर, खुले आसमान के नीचे मौजूद थे और रह-रहकर वो आसमान

की तरफ देख रहे थे। स्क्रीन वाले यंत्रों पर कुछ देर पहले ही ओमारू की बात हुई थी पृथ्वी की तरफ आते पोपा के भीतर मौजूद लोगों से। उन्होंने कहा था कि वो कुछ ही देर में पृथ्वी पर पहुंच जाएंगे। ओमारू के लिए आज की रात बहुत महत्त्व रखती थी क्योंकि पोपा में बैठकर रानी ताशा खुद उनके पास आ रही थी, नहीं तो आज तक रानी ताशा से सिर्फ यंत्रों पर ही बात होती रही थी। रानी ताशा इससे पहले कभी पृथ्वी पर नहीं आई थी।

ओमारू रानी ताशा के स्वागत की तैयारियां पूरी कर चुका था। रानी ताशा के लिए खाने के तरह-तरह के सामान तैयार किए गए थे। योद्धा रानी ताशा के स्वागत के लिए दूर के इलाके से फूल लाए थे। पहाड़ को भीतर अच्छी तरह साफ-सफाई करके चमका दिया था। सब बाहर मौजूद रहकर पोपा के आ पहुंचने की राह देख रहे थे।

एकाएक ओमारू पलटा और पहाड़ के भीतर प्रवेश कर गया। भीतर भी लोग थे और अपने-अपने कामों में व्यस्त आ-जा रहे थे। हर कोई जैसे पोपा की ही बात कर रहा था। उत्साह भरा था रानी ताशा को देखने के लिए। ओमारू उस चबूतरों के पास पहुंचा जहां मूर्ति लगी थी। ओमारू चबूतरे के पीछे वाले हिस्से की तरफ पहुंचा जहां संकरा-सा रास्ता आगे को जा रहा था। वो उस रास्ते पर आगे बढ़ गया। वो टेढ़ा-मेढ़ा-सा रास्ता कुछ मिनटों बाद एक कमरे जैसी जगह पर जाकर खत्म हुआ। जहां होम्बी मौजूद थी। होम्बी छातियों से लेकर कमर तक एक कपड़ा लपेटे बैठी थी फर्श पर। वहां मशाल जैसी चीज जल रही थी और होम्बी का चेहरा सुनहरी-सा होकर चमक रहा था। उसके खुले काले बाल पीठ को पार करते फर्श पर बिछ रहे थे। उसका झुर्रियों से भरा चेहरा मशाल की रोशनी में चमक रहा था। बंद आंखों को आहट पाकर खोला।

"आ गया ओमारू।" होम्बी शांत-सी कह उठी।

ओमारू होम्बी के सामने घुटनों के बल बैठ गया।

"सब ठीक है? रानी ताशा का पोपा आने वाला है। आज का वक्त तो खुशी से भरा है जादूगरनी।" ओमारू बोला।

"पर मुझे कहीं भी खुशी दिखाई नहीं दे रही।" होम्बी गम्भीर स्वर में बोली।

"मैं समझा नहीं जादूगरनी—क्या हुआ?" ओमारू की निगाह होम्बी के चेहरे पर जा टिकी।

"रानी ताशा का आना हमारे लिए फायदेमंद नहीं है।" होम्बी बोली।

"खुलकर कहो, तुम क्या देख रही हो?"

होम्बी ने ओमारू को देखा।

"हमें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। बबूसा यहां से चला गया, परंतु हमें उसकी ज्यादा परवाह भी नहीं थी क्योंकि वो हमारा नहीं था। पोपा उसे छोड़कर गया था। हमने बबूसा की परवरिश की, परंतु मुझे सोलाम के बारे में अभी-अभी आभास हुआ है, उसने भी विद्रोह कर दिया है।"

"सोलाम? नहीं जादूगरनी, वो विद्रोह नहीं कर सकता। वो हमारी जाति का है। वो...।"

"वो विद्रोह कर चुका है। उसे उस लड़की को खत्म करने भेजा था। योद्धाओं के साथ। परंतु हाथ आने पर भी उसने लड़की को छोड़ दिया। उसने बबूसा की सहायता की और अपने ही दो योद्धाओं को मार दिया।"

"नहीं।" ओमारू के होंठों से निकला।

"सोलाम को वो शहर रास आने लगा है...।"

"मुम्बई।"

"हां मुम्बई। अब वो मुम्बई में ही रहना चाहता है। उसने हमसे नाता तोड़ लिया है। ये सब रानी ताशा की वजह से हुआ। उस लड़की की वजह से हुआ। हमारे लोग शहरों में जाएंगे तो वहां की चमक में गुम हो जाएंगे। पहले हम सही थे, सब यहीं रहते थे। कोई बड़े शहरों में नहीं जाता था। आस-पास की जगहों में ही जाता था।"

"मैं सोलाम को वापस ले आऊंगा जादूगरनी।"

"बात सिर्फ सोलाम की नहीं है। हमारे और भी योद्धा हैं। रानी ताशा को भी राजा देव पर काबू पाने के लिए हमारे योद्धाओं की जरूरत होगी। वो भी बड़े शहर जाएंगे तो उसके बाद यहां उनका मन नहीं लगेगा।"

"तो क्या किया जाए जादूगरनी?"

"इसके अलावा एक और मुसीबत भी रानी ताशा के साथ आ रही है।" होम्बी का झुर्रियों भरा चेहरा हिला।

"वो क्या?"

"सोमाथ नाम है उसका। देखने में वो इंसान ही लगता है, परंतु इंसान नहीं है। वो बिजली की तारों से बना इंसान जैसा (रोबॉट) है। उसकी हड्डियां धातु की बनाई गई हैं। उसके दिमाग की जगह मशीन रखी है। वो सिर्फ रानी ताशा की बात को मानेगा। उसके दिमाग की मशीन में, ये ही समझा रखा है। उसके शरीर में ढेरों तरह के कैमिकल दौड़ रहे हैं। वो अजूबे से कम नहीं है। उसकी मृत्यु शीघ्रता से सम्भव नहीं है। शायद वो मृत्यु को प्राप्त नहीं हो सकेगा। वो बहुत खतरनाक है, उसके सामने हमारे योद्धा भी कमजोर साबित होंगे। उसका कोई अंग नष्ट हो जाए या कर दिया जाए तो शीघ्र ही वो अंग फिर बन जाएगा। उसकी मृत्यु की तरकीब

कोई नहीं जानता। वो कहर ढाने वाला है इस जमीन पर आकर। ऐसा कुछ होने वाला है जो नहीं होना चाहिए।"

"क्या होने वाला है जादूगरनी?" ओमारू परेशान दिखने लगा।

"मुझे स्पष्ट आभास नहीं हो पा रहा इस बारे में। धुंधली-धुंधली-सी आकृतियां हैं, जो मेरे सामने अभी स्पष्ट नहीं हो पा रहीं। परंतु उन आकृतियों में अच्छी बातों का आभास नहीं हो रहा, मुझे।"

"तो मैं क्या करूं जादूगरनी?"

"तू क्या करे, इस बात को मैं भी अभी तक नहीं जान पाई, परंतु कुछ बुरा होने वाला है रानी ताशा के आने पर। उसका आना हमारे लिए अच्छा नहीं है। इस बार पोपा हमारे लिए कष्ट लेकर आ रहा है।" होम्बी गम्भीर थी।

"हमें किससे खतरा है, रानी ताशा से या सोमाथ से?"

"दोनों से। कुछ भी अच्छा नहीं होने जा रहा। क्या होगा, इस बात का आभास भी मुझे नहीं मिल पा रहा। ये तो अनर्थ जैसी बात है कि कुछ होने वाला है और मुझे पता नहीं लग रहा। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।" होम्बी बेचैनी से कह उठी—"ये संकट के आगमन का संकेत है कि मुझे आभास नहीं हो रहा।"

"तुम्हारी बातों ने तो मुझे परेशान कर दिया होम्बी।" ओमारू कह उठा—"मैं तो सोचता था ये खुशी का मौका है। रानी ताशा आ रही है, परंतु तुमने तो मेरे सारे विचार बदल दिए।"

"मुझे सिर्फ कोहरा नजर आ रहा है और कोहरे में न समझ में आने वाली आकृतियां दिख रही हैं। आकृतियां क्या कर रही हैं, मैं समझ नहीं पा रही। कब से ये ही बातें समझने के प्रयास में लगी हूं। आज से पहले कभी ऐसा नहीं हुआ कि मुझे स्पष्ट पता नहीं चल पाया हो, आकृतियां दिखाई देने के बाद भी। जाने क्या हो रहा है और क्या होने वाला है। मैं भविष्य का आभास पाने की चेष्टा में हूं, ओमारू।"

"हां होम्बी।"

"जब तक मैं न कहूं रानी ताशा को मेरे सामने मत लाना। मैं अपने प्रयास में सफल होने की चेष्टा करते हुए भविष्य की घटनाओं को समझ पाने की चेष्टा कर रही हूं। मुझे पूरी तरह एकांत चाहिए।"

"जब तक तुम नहीं कहोगी, मैं रानी ताशा को तुम्हारे पास नहीं लाऊंगा।" ओमारू ने गम्भीर स्वर में कहा—"कहीं तुम खामखाह चिंता तो नहीं कर रही। रानी ताशा हमारी दोस्त है।"

"इस दुनिया में कोई दोस्त नहीं होता। सब अपने मतलब की खातिर दौड़ते रहते हैं। रानी ताशा ने हमें अपना दोस्त बनाया तो सिर्फ इसलिए

कि इस दुनिया में आकर, उसने किसी राजा देव को वापस अपने सदूर ग्रह पर ले जाना है और इसके लिए उसे जगह चाहिए थी। हमारी सहायता चाहिए थी।"

"ये बात थी तो तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया। मैं रानी ताशा से से बातचीत खत्म कर देता।"

"इन बातों का स्पष्ट एहसास मुझे अभी हुआ है परंतु तुम रानी ताशा से ठीक से पेश आना। सोमाथ नाम के उस मशीनी व्यक्ति को मत भूलना जो अथाह ताकतवर है। वो ताकत का सागर है हमारे योद्धा सागर की एक बूंद जैसे हैं उसके सामने। तुम्हें बहुत समझदारी से काम लेना होगा और हर बात अपने मन में रखना। किसी से कहना नहीं।"

"समझ गया। क्या रानी ताशा हमारी दुश्मन है?"

"अभी नहीं बता सकती। मैं भविष्य की घटनाओं को देखने की चेष्टा कर रही...।" होम्बी के शब्द अधूरे रह गए। बाहर से तेज शोर की आवाज उभरी। होम्बी की बूढ़ी आंखें ओमारू की आंखों से मिलीं—"जाओ ओमारू। शायद रानी ताशा का पोपा आ पहुंचा है। इस वक्त तुम्हें स्वागत के लिए वहां होना चाहिए।"

"तुम्हारी बात सुनकर जादूगरनी, मैं बेचैन हो उठा हूं। तुम बताती क्यों नहीं कि अब क्या होने वाला है।"

"तेरे को तो तब बताऊं जब मुझे स्पष्ट आभास हो। मैं इसी कोशिश में लगी हूं। तू बाहर जा और जो मैंने समझाया है, वो याद रखना। रानी ताशा अगर हमारी दुश्मन नहीं तो दोस्त भी नहीं है। कुछ बुरा महसूस हो रहा है मुझे। पता लगते ही तुझे बताऊंगी कि क्या होने वाला है। इतना तो यकीन है कि कुछ अच्छा नहीं होने वाला।"

ओमारू, होम्बी को कुछ पल देखता रहा फिर गम्भीर भाव में उठा और बाहर निकल गया।

आंखें खोले होम्बी सामने की पहाड़ी दीवार को देखती रही फिर बड़बड़ा उठी।

"मुझे बार-बार बबूसा क्यों नजर आ रहा है? आखिर इन बातों में रहस्य क्या है। रानी ताशा का आना और मेरी ताकतों का कमजोर पड़ना और बबूसा का दिखाई देना। क्या मेरी ताकतें कोई संकेत दे रही हैं? मुझे सब कुछ समझने की कोशिश करनी चाहिए। एक बार फिर मुझे अपनी ताकतों को इकट्ठा करके, भविष्य में देखने की चेष्टा करनी होगी।"

ओमारू पहाड़ से बाहर निकला तो रात के काले आसमान को देखते ही थम-सा गया।

ठीक आसमान में काफी बड़ा काला-सा गोल धब्बा नजर आ रहा था

बोबू जाति के लोग उसे देखकर खुशी से चीख रहे थे कि पोपा आ गया, पोपा आ गया। एकाएक उस धब्बे के नीचे की तरफ से लेजर लाइट की तरह रोशनी की तीखी लकीर निकली और नीचे उस पहाड़ और लोगों पर पड़ी। सब कुछ रोशन हो उठा। हल्की नीली रोशनी सब तरफ फैल गई। अंधेरा गुम हो गया। इसके साथ ही शोर थम गया। सन्नाटा-सा आ ठहरा। वो काला धब्बा (पोपा) धीरे-धीरे जमीन के करीब आने लगा। लोग दूर हटने लगे। हमेशा की तरह उन्होंने बीच में काफी बड़ी खुली जगह छोड़ दी कि पोपा नीचे उतर सके। वो धब्बा हर पल बड़ा होता जा रहा था। नीली रोशनी करीब आती जा रही थी और वो पल भी आया जब बड़े से छाते की तरह पोपा सिर पर आ पहुंचा और स्पष्ट दिखाई देने लगा। वो लोग और भी दूर हो गए। कुछ तो वापस पहाड़ के भीतर जा घुसे थे। फिर पोपा की टांगों जैसी कोई चीजें नीचे से खुलती दिखीं, जो कि किसी स्टैंड की तरह थीं और पोपा उन्हीं टांगों जैसी चीज पर, जमीन पर आ खड़ा हुआ। पोपा के इंजन की मध्यम-सी आवाज सबके कानों में पड़ रही थी और धीरे-धीरे वो आवाजें भी आनी बंद हो गईं।

रानी ताशा को लेकर पोपा आ पहुंचा था।

▭ ▭

मुम्बई।

रात के 10.30 बजे थे।

बबूसा और धरा ने कुछ देर पहले ही टैक्सी छोड़ी थी और पैदल ही आगे बढ़ रहे थे। धरा के गले पर पट्टी बंधी थी। डॉक्टर को दिखा दिया था। घाव गहरा नहीं था। गले पर दो इंच लम्बा कट लगा था। देवराज चौहान के न मिल पाने की वजह से बबूसा चिंतित दिखाई दे रहा था जबकि धरा बेहद थक चुकी थी। टांगों में इस कदर थकान भरी थी कि उसका मन तो कर रहा था कि यहीं बैठ जाएं, परंतु बबूसा को व्याकुल देखकर वो ऐसा नहीं कर पा रही थी। इस वक्त वे भरे बाजार से गुजर रहे थे। आधी दुकानें बंद हो चुकी थीं, बाकी होने की तैयारी पर थीं। तभी धरा कह उठी।

"मैं यहां कहीं बैठती हूं तुम...।" कहते-कहते धरा ठिठक गई।

बबूसा को गहरी-गहरी सांसें लेते देखा।

"क्या हुआ?" धरा के होंठों से निकला।

"राजा देव...।" बबूसा कह उठा।

"कहां?"

"पता नहीं, पर मैंने राजा देव की गंध पा ली है। वो यहां कहीं आए थे।" बबूसा कहता जा रहा था—"मेरे साथ आओ।" कहते हुए बबूसा

आगे बढ़ता चला गया—"इस तरफ राजा देव की गंध तेज है, वो इस तरफ गए थे। वो अब मुझे मिल जाएंगे। मैं उन्हें ढूंढ़ लूंगा।" कहने के साथ ही बबूसा एक खास दिशा की तरफ बढ़ता रहा।

धरा उसके पीछे थी।

दुकानें खत्म हो गईं। आगे मॉल आ गया। बबूसा ठिठका और मॉल को देखते बोला।

"ये क्या जगह है?"

"ये शॉपिंग मॉल है। भीतर दुकानें हैं। लोग यहां सामान खरीदने आते हैं।" धरा ने बताया।

"हमें भीतर जाना होगा।"

"परंतु वक्त बहुत हो चुका है। मॉल बंद हो रहा है। अब तक तो ज्यादातर दुकानदार दुकानें बंद करके जा चुके होंगे।"

"राजा देव भीतर हैं।"

"मैं यहीं बैठती हूं। तुम भीतर हो आओ।" धरा बोली।

बबूसा ने एक क्षण भी नहीं गंवाया और मॉल के भीतर प्रवेश करता चला गया। धरा थकी-सी वहीं मॉल की सीढ़ी पर बैठ गई और अपने बारे में सोचने लगीं कि वो किस झंझट में फंस गई है। अगले ही पल ये सोचकर शरीर में झुरझुरी दौड़ गई कि वो यहां पर अकेली है। बबूसा पास नहीं, अगर डोबू जाति के योद्धा आ गए तो...?"

धरा वहां से घबराकर खड़ी हुई और एक तरफ अंधेरे में खड़ी हो गई, जहां फौरन उसे कोई नहीं देख सकता था। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ कि उसे बबूसा के साथ ही रहना चाहिए था। उसके साथ रहने पर ही उसका जीवन बच सकता है।

धड़कते दिल के साथ वो अंधेरे में जमी रही। मॉल के भीतर जाकर बबूसा को ढूंढ़ पाना आसान नहीं था। मॉल काफी बड़ा था। ऐसा न हो कि वो भीतर जाए तो बबूसा बाहर आ जाए और उसे न पाकर चला जाए।

आधे-पौने घंटे के बाद उसने बबूसा को बाहर निकलते देखा।

धरा फौरन उसके पास जा पहुंची और बोली।

"मुझे तुम्हारे साथ ही रहना चाहिए...।"

"राजा देव यहां से बाहर निकले हैं।" बबूसा कह उठा—"मैं उनके बाहर निकलने की गंध को महसूस कर रहा हूं। आओ मुझे गंध के पीछे जाना है। हम जल्दी ही राजा देव तक पहुंच जाएंगे।" बबूसा आगे बढ़ा।

धरा उसके साथ थी।

"उधर, सामने सड़क पार जा रही है राजा देव की गंध।" बबूसा सड़क की तरफ बढ़ गया।

सड़क पार करके दोनों सामने की पार्किंग में पहुंचे। वहां बबूसा कुछ देर इधर-उधर टहलने के बाद बोला।

"राजा देव यहां आए थे, परंतु वो चले गए। उनकी गंध बहुत तेजी से बाहर जा रही है। कार, वो कार पर गए हैं। हमें कार की जरूरत है राजा देव की गंध के पीछे जाना है।"

"कार कहां से मिलेगी। सड़क की तरफ चलो, यहां से टैक्सी मिल जाएगी।" धरा बोली—"देवराज चौहान यहां से निकलकर किस तरफ गया है दाईं तरफ या बाईं तरफ...?"

वे सड़क पर पहुंचे और बांई तरफ इशारा करते बबूसा बोला।

"इस तरफ...।"

▭ ▭

टैक्सी मध्यम रफ्तार से सड़क पर दौड़ रही थी। बबूसा और धरा पीछे की सीट पर बैठे थे और खिड़की के शीशे नीचे कर रखे थे। बबूसा रह-रहकर खुली खिड़की से सिर बाहर निकालता और सूंघने लगता। टैक्सी ड्राइवर ने बबूसा की इस हरकत पर दो-तीन बार सिर घुमाकर पीछे तो देखा, परंतु कहा कुछ नहीं।

बबूसा बताता जा रहा था कि किस तरफ जाना है, किस तरफ मुड़ना है।

चालीस मिनट बाद बबूसा ने टैक्सी रोक देने को कह।

उन्होंने टैक्सी छोड़ दी। वो चली गई।

बबूसा ने वातावरण में दो-तीन गहरी सांसें लीं और फिर सामने की तरफ देखकर बोला।

"वहां, उधर गए हैं राजा देव।"

धरा ने देखा, सामने रैस्टोरेंट था। डी-लावा, रैस्टोरेंट का नाम चमक रहा था।

"वो तो रैस्टोरेंट है।" धरा ने कहा।

"वहां खाने का सामान मिलता है?" बबूसा के चेहरे पर चमक थी।

"हां।"

"राजा देव यहीं गए हैं, गंध उसी तरफ जा रही है। आओ।" बबूसा धरा का हाथ पकड़े उस तरफ बढ़ गया।

"अगर देवराज चौहान यहां से भी चला गया हो तो?" धरा ने पूछा।

"कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं राजा देव को ढूंढ़ लूंगा। उनकी गंध मैं पकड़ चुका हूं। इसी गंध के सहारे मैं उन्हें ढूंढ़ लूंगा अब वो मेरे से बच नहीं सकते। राजा देव मिल जाएंगे।" बबूसा बच्चों की तरह खुश हो रहा था।

दोनों रैस्टोरेंट के प्रवेश द्वार तक पहुंचे।

बबूसा ठिठका और कुछ तेज सांसें लेने के बाद बोला।

"गंध तेज हो गई है। राजा देव भीतर ही हैं।" बबूसा खुशी से हंस पड़ा—"मैंने राजा देव को ढूंढ़ लिया। गंध सूंघने की शक्ति जन्म के समय महापंडित ने ही मुझमें डाली थी। इस शक्ति से आज मेरी कितनी बड़ी समस्या हल हो गई। राजा देव से ढाई सौ वर्ष के बाद मेरा सामना होगा मैं उन्हें अपने सामने देखूंगा। कितना शुभ दिन है आज का। मेरे लिए इससे ज्यादा खुशी की बात और क्या हो सकती है। राजा देव तो...।"

"परंतु देवराज चौहान तो तुम्हें जानता नहीं। न ही वो तुम्हारी बातों का यकीन...।"

"राजा देव मुझे पहचानेंगे भी और मेरी बातों का यकीन भी करेंगे। उन्हें समझाना मुझे आता है।" कहते हुए बबूसा तेज-तेज कदमों से रैस्टोरेंट के प्रवेश द्वार की तरफ बढ़ गया। धरा उसके साथ थी।

दरवाजे के पास खड़े दरबान ने फौरन शीशे का गेट खोल दिया।

दोनों भीतर प्रवेश कर गए। बबूसा के कदम तेजी से आगे की तरफ उठ रहे थे। सामने एक और दरवाजा था उसे धकेलकर जब भीतर गए तो खुद को रैस्टोरेंट के हाल में पाया। ए.सी. की ठंडक फैली थी। पचास से ज्यादा टेबलें लगी थीं। अधिकतर टेबलें फुल थीं। लोग डिनर ले रहे थे। वेटरों की फौज दौड़ती नजर आ रही थी। मसालों की सुगंध वहां फैली थी। मध्यम रोशनी वहां फैली थी और पुरानी फिल्म का गाना 'मैं आवारा हूं...' मध्यम-सी आवाज में वहां बज रहा था। बबूसा के कदम रुके नहीं, तेजी से एक तरफ बढ़ते चले गए।

धरा उसके साथ थी।

उसी रैस्टोरेंट की एक टेबल पर देवराज चौहान और जगमोहन बैठे डिनर ले रहे थे और डिनर समाप्ति पर ही था कि एकाएक बबूसा देवराज चौहान के करीब आकर ठिठका और झुककर देवराज चौहान के बालों को सूंघा।

तब तक जगमोहन की निगाह धरा पर पड़ चुकी थी और उसे यहां देखकर चंद पलों के लिए वो स्तब्ध रह गया था।

देवराज चौहान ने फौरन पलटकर बबूसा को देखा।

बबूसा खुशी से गहरी सांस लेता, सीधा होता कह उठा।

"वो ही गंध। आह—कितने लम्बे समय के बाद करीब से इस गंध का एहसास हो पाया है।"

"कौन हो तुम?" देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।

"आपने मुझे पहचाना नहीं राजा देव। मैं बबूसा। आपका खास

सेवक। महापंडित ने मुझे इस बार आपके ही दिमाग और आपकी ताकत के साथ मेरा जन्म करवाया है। मैं आप ही का रूप हूं। परंतु आपका सेवक हूं। मैंने आपको कहां-कहां नहीं ढूंढ़ा।" एकाएक बबूसा की आंखों में आंसू चमके—"जब रानी ताशा ने आपको धोखा दिया, आपको सदूर ग्रह से बाहर फिंकवा दिया तो मैं कितना रोया था कितना तड़पा था राजा देव। मुझे लगा जैसे किसी ने मेरा अंग काटकर अलग कर दिया हो। परंतु अब वो सब गम भूल गया मैं। आप जिंदा हैं और आपको सामने देख रहा हूं। अब मैं फिर आपकी सेवा करूंगा, पहले की तरह, परंतु राजा देव मुझे लगता है कि आप भारी खतरे में हैं, रानी ताशा आपके लिए पृथ्वी ग्रह पर आ रही है। शायद आज ही—आ चुकी होगी या आ रही है, आ जाएगी। वो आपको वापस सदूर ग्रह पर ले जाने के लिए आ रही है। रानी ताशा और महापंडित आपके खिलाफ गहरी चाल चल रहे हैं कि किसी तरह आपको सदूर ग्रह पर वापस ले जाएं। चाहता तो मैं भी यहीं हूं परंतु मैं आपको इस बात से अंजान नहीं रखना चाहता कि कभी रानी ताशा ने आपके साथ कैसा धोखा किया था। मुझे आपसे बहुत बातें करनी है राजा देव आपको बहुत कुछ बताना है। आप सब कुछ भूल चुके हैं।" बबूसा ने देवराज चौहान का हाथ पकड़ लिया। वो खुशी से कांप रहा था—"मैं बहुत खुश हूं कि आपको फिर से पा लिया। ये मेरा सौभाग्य है कि आपकी सेवा करने का मौका मुझे फिर से मिल गया। महापंडित बुरा है राजा देव, वो पूरी तरह रानी ताशा का साथ दे रहा है इस काम में और उसने किसी सोमाथ (रोबॉट) मानव को तैयार करके उसे बेहद शक्तिशाली बनाकर, रानी ताशा के साथ भेजा है कि वो मेरा मुकाबला करके मुझे मार सके और रानी ताशा की सहायता करे आपको सदूर ग्रह ले जाने में। लेकिन मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। जो आप चाहेंगे, आपकी उसी चाहत का साथ दूंगा। आपके साथ किए धोखे की वजह से रानी ताशा सजा की हकदार है। उन्हें कठोर से कठोर सजा देना राजा देव। तब उन्होंने बहुत बुरा किया था आपके साथ...।"

जगमोहन कभी देवराज चौहान को देखता तो कभी बबूसा को तो कभी धरा को देखने लगता था।

देवराज चौहान हैरानी से बबूसा को देखे जा रहा था।
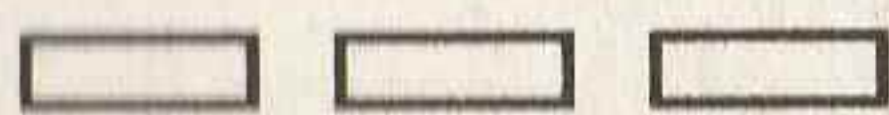
राजा पॉकेट बुक्स

की तरफ से

अनिल मोहन

के देवराज चौहान सीरीज के 'बबूसा' शृंखला के उपन्यासों पर

1,00,000

रुपयों से अधिक की बम्पर ईनामी प्रतियोगिता!!

पहला ईनाम : 1 लेपटॉप (डैल 1540)
दूसरा ईनाम : पांच विजेताओं को सेमसंग गैलक्सी मोबाइल (Galaxy-Y)
तृतीय ईनाम : 10 विजेताओं को एम.पी. 3 प्लेयर (ट्रान्सेंड MP300 4 GB)
चतुर्थ ईनाम : 300 विजेताओं को (12" × 18") अनिल मोहन का हस्ताक्षरयुक्त पोस्टर।

इस ईनामी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आपको क्या करना है, ये बात आप फिर जान लें। अनिल मोहन का **'बबूसा'** के बाद देवराज चौहान सीरीज का आगामी नया उपन्यास **'बबूसा और राजा देव'** है। जिसमें देवराज चौहान के पूर्व से भी पूर्व जन्म की कहानी शुरू हो चुकी है। कहानी से वास्ता रखते सभी उपन्यासों में से दस प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से आपको छः का सही जवाब देना है।

स्पष्ट है कि सही जवाब कई पाठकों के होंगे। ऐसे में हम राजा पॉकेट बुक्स के स्टाफ के सामने विशिष्ट लोगों की उपस्थिति में सही जवाब वाले पाठकों के नामों के कूपन 'सील्ड बॉक्स' में डालकर उनमें

से 'लक्की ड्रॉ' सिस्टम से विजेताओं के नाम के कूपन निकाले जाएंगे। जैसे कि पहले कूपन पर जिस भाग्यशाली पाठक का नाम होगा, वही पहला भाग्यशाली विजेता घोषित किया जाएगा। इसी प्रकार दूसरे और तीसरे विजेता चुने जाएंगे।

प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय ईनाम आपके चहेते लेखक अनिल मोहन द्वारा वितरित किए जाएंगे।

'राजा पॉकेट बुक्स' का वादा है कि देवराज चौहान सीरीज के **'बबूसा'** उपन्यासों की शृंखला के समाप्त होने पर 60 दिन के भीतर विजेता पाठकों के नामों की घोषणा कर दी जाएगी और अगले 30 दिन में ईनाम वितरित कर दिए जाएंगे। इस प्रतियोगिता में जो भी पाठक हिस्सा लेंगे, उनके नाम-पते, अनिल मोहन के **'बबूसा'** शृंखला के अंतिम उपन्यास के बाद के नए उपन्यास में प्रकाशित किए जाएंगे। इस ईनामी प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए अब आप तैयार हो जाएं। आप अपनी प्रति अपने शहर के पुस्तक विक्रेताओं के पास आज ही से सुरक्षित करा दें।

प्रतियोगिता के नियम

1. इस प्रतियोगिता में 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। जिनमें से आपको केवल 6 के सही जवाब देने हैं।
2. जैसा कि हमने 'मिस्ड कॉल' में घोषित किया है कि अनिल मोहन के देवराज चौहान सीरीज की 'बबूसा' सीरीज की शृंखला के हर उपन्यास में एक कूपन छपेगा, इस सीरीज के सभी उपन्यासों में छपे हुए कूपनों को आपको अपने पास संभालकर रखना है। और अंत वाले उपन्यास में छपे कूपन पर इसी सीरीज के सारे कूपन चिपकाकर प्रतियोगिता में छपे प्रश्नों के उत्तरों के साथ किस पते पर भेजना है उसकी जानकारी सीरीज के अंत वाले उपन्यास में दी जाएगी। आप उपन्यास पढ़ चुके हैं तो इस सीरीज का अंत में दिया हुआ पहला कूपन आप अपने पास काटकर सुरक्षित कर लें। या उपन्यास को ही आप अपने पास संभालकर रख लें।
3. जिन सही जवाब देने वाले पाठकों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय ईनाम नहीं मिलता है उन विजेता पाठकों में से 300 पाठकों को सांत्वना पुरस्कार के रूप में 12" × 18" साइज का अनिल मोहन का हस्ताक्षरयुक्त पोस्टर दिया जाएगा तथा उन्हें अनिल मोहन के

उपन्यासों के Brilliant Reader नाम की उपाधि से नवाजा जाएगा। उन 300 विजेताओं के नाम का कूपन भी अनिल मोहन जी के द्वारा ही निकाला जाएगा।

4. जो भी पाठक हमें कूपन भेजेंगे वे ओरिजनल कॉपी होनी चाहिए। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकृत नहीं की जाएगी।
5. प्रतियोगियों से जो सवाल पूछे जाएंगे, वो 'बबूसा' उपन्यासों की शृंखला में से ही पूछे जाएंगे, प्रतियोगिता के प्रश्न इस सीरीज के अंतिम उपन्यास में प्रकाशित किए जाएंगे।
6. इस प्रतियोगिता में राजा पॉकेट बुक्स का कोई भी कर्मचारी भाग नहीं ले सकता।
7. प्रतियोगिता में भाग लेने वाले पाठकों से विशेष निवेदन है कि वे अपने नाम का कूपन केवल एक ही बार भेजेंगे, एक ही नाम-पते के कई कूपन भेजने पर निर्णायक कमेटी कूपन को निरस्त कर सकती है।
8. प्रत्येक स्थिति में निर्णायक मंडल का निर्णय मान्य होगा।

विशेष नोट : घोषित किए गए प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार यदि किसी कारणवश—मॉडल नम्बर कम्पनी द्वारा बंद किए जाने की स्थिति में अथवा किसी अन्य स्थिति में—उपलब्ध नहीं हुए तो विजेता प्रतियोगियों को प्रथम पुरस्कार लैपटॉप के बदले 30,000 रुपए, द्वितीय पुरस्कार पांच प्रत्येक विजेताओं को गैलेक्सी मोबाइल के बदले 6,500 रुपए व तृतीय पुरस्कार एम.पी.3 प्लेयर के बदले 1,500 रुपए दिए जाएंगे।
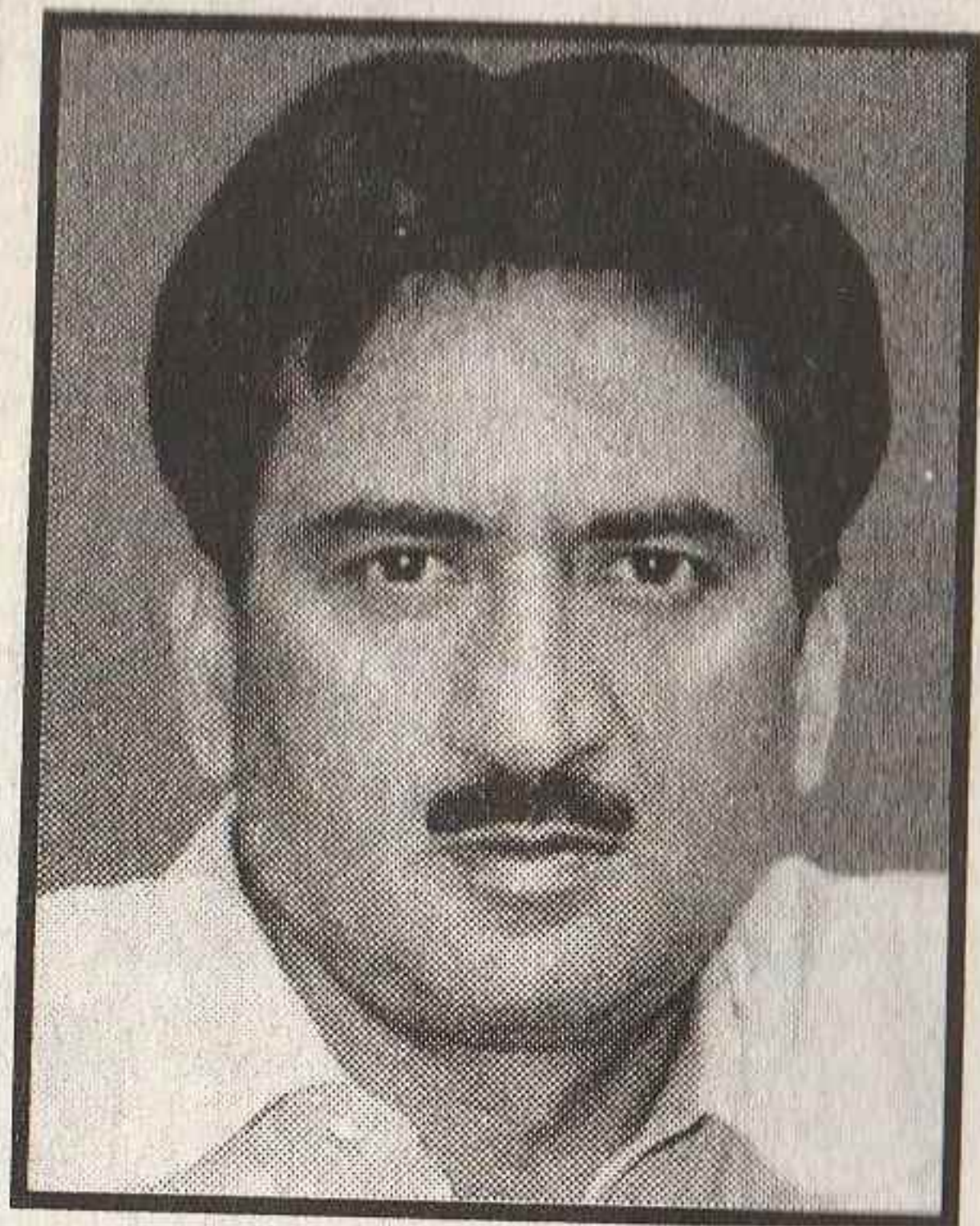
कूपन नम्बर-1

बबूसा

हमारी पृथ्वी पर अभी भी ऐसा बहुत कुछ है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं करते। हम दूसरे ग्रहों को तो खोज रहे हैं परंतु पृथ्वी से अंजान हैं अभी इसी पृथ्वी की एक जाति की चमत्कारी दास्तान है ये, जिसका वास्ता, कहीं दूर दूसरी दुनिया के एक ग्रह से है, ये दास्तान देवराज चौहान से ही सैकड़ों बरसों पहले शुरू हुई थी और अब उसका रुख फिर देवराज चौहान की तरफ मुड़ चुका है।

1,00,000 की ईनामी प्रतियोगिता के साथ शुरू हो चुकी शृंखला की दूसरी कड़ी!

बबूसा और राजा देव

सितम्बर 2012 में प्रकाशित होगा

राजा पॉकेट बुक्स

ISBN : 978-93-80871-51-6

9 789380 871516

Price : ₹ 60

A.H.W. TIGER SERIES